

ऑखर-ऑखर अनुराग

(राजस्थान मे ब्रज साहित्य कला-संस्कृति की विवेचन)

लेखक

डा. विष्णुचन्द्र पाठक



सम्पादक

रामशरण पीतलिया



राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी,

सो-267, माभा मार्ग तिलक नगर, जयपुर



लेखक

डा विष्णुचन्द्र पाठक

अध्यक्ष

राजस्थान प्रजमापा अकादमी, जयपुर



सम्पादक

रामचरण पोतसिया



प्रकाशक

डा रामप्रकाश कुलधेळ

सचिव राजस्थान प्रजमापा अकादमी जयपुर



मूल्य 75-00 रुपये



परी सन्वत् 1991



आवरण

सकेत गोस्वामी



© राजस्थान प्रजमापा अकादमी, जयपुर



मुद्रण स्थल

पोपुलर प्रिंटस महावीर मार्ग, अलवर

विसं-सूची

□ हमारे पुरोधा -

1	ब्रज के महाकवि सोमनाथ	1
2	अग्यात कवि चतुरा अरु पर्यन रासो	21
3	प नन्दकुमार शर्मा के काव्य की मूल्यांकन	31
4	ब्रजभाषा के अमर गायक-कवि नवरत्न	67
5	राष्ट्रीय ब्रज-काव्य प्रणेता प गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'	71
6	डा रामानन्द तिवारी की बाल काव्य	79
7	डा रामानन्द तिवारी जी के जीवन अरु रचना प्रक्रिया के कठ सस्मरन	88
8	ब्रज में रचे वसे कवि श्री जयशंकर चतुर्वेदी	96

□ ये अनुराग के रग रग -

1	मरुभूमि की सरस ब्रज कवि ठाकुर नाहर सिंह	102
2	ब्रजभाषा के वैष्णव कवि बागरोदी बलदेव शर्मा 'सत्य'	107
3	वीर रस के ब्रज कवि श्री निवास ब्रह्मचारी 'श्रीपति'	126
4	समस्यापूर्ति के बेजोड कवि प्रभुदयाल दयाशु'	129
5	आधुनिक समस्यान के कवि राधाकृष्ण 'वृष्ण कवि'	135
6	गुरु कमलाकर की ब्रज काव्य यात्रा एक विवेचन	140
7	ब्रज के सलोन कवि गोपाल प्रसाद मुद्गल	148
8	ब्रज के मधुर चितेरे श्री मोहनलाल मधुकर	153
9	ब्रजभाषा गद्य पद्य के-बेजोड रचनाकार डा रामकृष्ण शर्मा	160
10	श्री रामचरण पीतलिया के व्यक्तित्व-कृतित्व की रेखांकन	169
11	ब्रजभाषा की अग्यात कवयित्री रानी विद्यावती	175
12	वियोग वात्सल्य में डूबी यशोदा शान्ति साधिका	183
13	प्रसाद अरु माधुय गुण के अनुपम चितेरे श्री हीरासास 'सरोज'	191

□	विवेचना भाषा बना कर संहति	
1	प्रजभाषा भर राजस्थान	199
2	प्रज की पाग रग	203
3	प्रजभाषा के भाषा गुरु की समझ	205
4	प्रजभाषा की प्रासंगिकता की भाषा	207
5	मिठास की संहति भर घर	211
6	प्रज संहति में सभी सभी भाषाद्वारा	215
7	प्रज बना संहति भर राजस्थान	227
8	प्रजभाषा की भाषा गुरु व्यवस्था	231
9	प्रजभाषा गुरु की विभाग	239
10	राजस्थान भाषा प्रज भाषा बना भर संहति	243
11	वचन वरग गरी की भाषा गुरु विभाग	256
□	रचना भाषा -	
1	जाट की बुलार (बहानी)	265
2	हृदय (एकाली)	271
3	मिलत काग बुलार गिरधारी (रमाधिन)	281
4	वाक्य मोरम	288



अनुराग-अंतरंग

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी के अध्यक्ष डा विष्णु चंद्र पाठक ने ब्रज शतदल के अवन के सम्पादकीय विचारन में सारगर्भित अरु खोजपूर्ण सामग्री दी है। अकादमी के मोनोग्राफन में सृजनरत साहित्यकारन के व्यक्तित्व अरु कृतित्व पर डा पाठक के विचार भीतई महत्वपूर्ण है। अकादमी की स्थापना पाछै अब तानू के राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी के प्रकासन में डा पाठक की ललित रचनावली के दसन होय। इनके लिखे भये ललित निबन्ध, चहकते रेखाचित्र, मोह बोलते एकाकी, ब्रज सस्कृति माहि रची वसी कहानी, रास रामेस्वर कृष्ण कहैया की सीसा माधुरी कू उबेरते भये सरस ब्रज छंद इनकी बहुआयामी प्रतिभा कू उजागर करै है।

डा पाठक की इन रचनान में एक जागरूक रचनाधर्मो की सब्द मिलै है, सिर उठाती समस्यान की समाधान मिलै है। अरु राजस्थान के कौने कौने में ब्रज रस निरक्षरनी की पीयूष धारा बहायवे बार ब्रजभाषा अनुरागीन की भाव भीनो परिचै मिलै है। ब्रजभाषा के सजनरत साहित्यकारन की परिचै पीथी (मोनोग्राफ) प्रकासन योजना हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के आधुनिक कवि प्रकासन से कम महत्वपूर्ण नाय। व्यक्तित्व कृतित्व रचना रूप, अरु विवेचना भरे इकठोरे सग्रहन के माध्यम से राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी नै भीत महत्वपूर्ण काम हाव में लीनी है।

डा विष्णु चंद्र पाठक ने राजस्थान प्रदेश के कौने कौने में बिखरे भये इन रचनाधर्मीन कू जोडवे की अभूतपूर्व काम कीनी है। सबई मानप्रद आप अमानी कू साथक करते भये इतई आदर, दुलार, सम्मान अरु सनेह उ मुक्त भाव से बाटो है। इनकी विविध रूपा रचनान में ई सत्त्व खूब मुखर भयो है।

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी से जुरे भये ब्रजभाषा साहित्य सेविन की ई सुभाव भीत महत्वपूर्ण मानी गयो कँ इनकी इत बितकू बिखरी भई इन रचनान कू एक सफलन में छाप्यो जाय। प्रसन्नता की विसै है कँ या सफलन के माध्यम से नू सुभाव सफल है रह्यो है।

डा पाठक की सँसी कू उजागर करव वाली इन रचनान कू सुविधा की दष्टि सौ चार भागन में बाट दीनी है। पैले भाग माहि हमारे पुरोधा सफलित कीनै है। इनमें आचार्य सोमनाथ, चतुरा कवि, श्री नंदकुमार जी गिरधर शर्मा नवरत्न डा रामानन्द तिवारी, अरु जयशंकर चतुर्वेदी, के व्यक्तित्व पर प्रकास डारो गयो है। दूसरे भाग माहि ब्रजभाषा के सजनरत साहित्यकारन के व्यक्तित्व अरु कृतित्व कू सजोयो गयो है। राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी की परिचै पीथी (मोनोग्राफ) प्रकासन योजना के अंतगत लिखी गई इन रचनान में चौन्ह ब्रज साहित्यकारन के सद्म अकित कीने है। ब्रज के सोधकर्तान कू राजस्थान के परिप्रेक्ष्य में विशद जानकारी अरु बहुआयामी दृष्टि इन लेखन में रेखाकित कीनी गई है। या ये अनुराग के रंग रंगे भाग में पच्छिमी राजस्थान से लँके धुर पूव यानि ब्रज की राजस्थानी अचल के साहित्यकार सम्मिलित

कीने है। तीसरे भाग माहि ब्रज दशतल की भूमिकान अरु कचन वरत खरी सी चयनित अस लीने है। याम यारे यारे रूपन म ब्रज विवेचना की सी न्य झलक है। ब्रज सत्सृति, ब्रज साहित्य, ब्रजभाषा की मानक सरूप, ब्रजभाषा की प्रासंगिकता के संगई राजस्थान माहि याकी सहज विकास धारा को सरूप हू डा पाठक की पनी बलम की परस पायक वेगवान बन गयो है। इन लेखन म ठौर ठौर प्रसाद ओज अरु माधुर्य की जा त्रिवनी के दमन होय बू लखक की अपनी विसमता है। या विवेचना भाग माहि ग्यारह लेख सकलित है चौथे अरु अंतिम भाग माहि डा पाठक की ललित रचना सौष्ठव रेखांकित कीनी है। या रचना प्राधुरी भाग म जाडे की बुलार, हडताल अरु खेलत फाग कु वर गिरधारी जैसी ललित रचनान कू सजोयो है। याई भाग क अतगत डा पाठक के काव्य अनुराग कू दसायो गयो है। आखर-आखर अनुराग डा पाठक की ब्रज-भाषा की सेवादपन है। पिछन पाच वरसन मे राजस्थान की कौन कौन माहि ब्रजभाषा की अलख जगा जगाकं डा पाठक न ब्रजभाषा की समस्यान ते ममोप की परिचं लीनी है या परिच मे जोधपुर जैसलमर, बाडमेर, बीकानेर, नाथद्वारा मेडता, झालावाड गगापुर, भरतपुर धौलपुर डीग, कामा वर जुरहरा आदि क्षत्रन माहि बसे भय ब्रज अनुरागीन की भीत बडो यागदान है। जोधपुर विश्वविद्यालय म राजस्थानी के विभागाध्यक्ष डा शक्तिदान कविया की तो ह्या तक कहनी है के पच्छिमी राजस्थान के ब्रज काव्य की पुनर्मूल्यांकन आज की सबसे बडी जरूरत है-यात मध्यकालीन साहित्य को सरूप आज ते बदलो भयो दीखेगी। या छेत्र क अज्ञान ब्रज साहित्यकारन कू जानकारी म लायवे की भीन बडा काम अबई सेस है। जाम डा पाठक अनवरत लगे भये हैं।

मध्ययुगीन काव्य चेतना अरु रचना स्तल्प मे डा पाठक की गहरी लगाव है- बिनके कवि सोमनाथ प लिखे भए शोध प्रबन्ध माहि एक बार कू जहां भरतपुर की भाटी की महक है जाई ठौर उत्तर मध्यकालीन रीति परम्परान क विसलेसन की पक्की पकर है। याकी प्रभाव इनकी दो टुक अरु बेबाक सैली पे खूब परयो है। विविधता भरे इन लेखन म डा पाठक की सहज भाव अभिव्यक्ति के दसन होय है। खेलत फाग कु वर गिरधारी बिनकी अपनी मौलिक सैली म लिखी गयो आघरे कवि सूर की हारी की चित्रन है। सूर साहित्य म या तरिया की विवेचना कम मिले है। जाडे की बुलार अरु हडताल मे जीवन की यथाथ झाकतो दीखे है। साची बात तो जि है क इन्न कहानी एकाकी, रेखाचित्र, सलित निबन्ध समालोचनात्मक निबन्ध जा बाऊ विधा पे कलम चलाई इनकी सपाट ययानी बेबाक कथन सली विस ते मेल खाती भाषा सामे आई।

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी के अध्यक्ष रूप माहि पाच वरस के थोरे समय मे इन्न जितनी लेखन अनुशीलन सशोधन मागदसन कीनी है बू चेतना की दृष्टि से भीत महत्वपून है। इनकी आखर आखर अनुराग, त भरो भयो है। भरोसो है पुस्तक रूप मे आखर-आखर अनुराग ठौर ठौर अनुराग की सदेसी देक मेल मिलाप बहुत्व अरु समर-सता मे भावन कू आग बढ़ावेगी।

कामा (भरतपुर)

1 माघ 1991

- रामशरण पीतलिया

निवेदन

अकादमी के मंच से सदैव वै ब्रज सहित्य कला अरु सस्कृति के विभिन्न आया-
मन से मोय सोचवे विचारवे अरु मूल्यांकन करवे को ओसर प्राप्त भयो है । अकादमी के
विद्वान सदस्य अरु हमारे परिवार से जुड़े साहित्य अनुरागिन के प्रोत्साहन भरे माग-
दस्तन से बहुत ऐसी खानक बन गयी हैं गत छ बरस से हर तीसरे महिना नियमित रूप
से प्रकाशित ब्रज शतदल के सिंगरे अंकन में विसेश, विसैन से संबधित सामग्री इकठोरी
करी गई है । इन विमन में विस्तार से विचार ब्रज शतदल के सम्पादकीय के रूप में
किगो गयो है । याके अलावा जब मैंने ब्रज कला सस्कृति को राजस्थान की धरती में
एकत्रित करवे को प्रयास कीनी तो माय ई जानके भारी आश्चय भयो के ब्रज कला
सस्कृति की प्रोत्साहन अरु सवद्धन जितके राजस्थान में भयो है बितेक स्यात ब्रजभूमि में
नाय रह्यो । अति प्राचीनकाल से ई मरुभूमि ब्रज कला सस्कृति के उपासक श्री कृष्ण की
की आराधक रही है । घग्घर नदी के किनारे मिलन बारी श्री कृष्ण अरु बिनकी लीलान
से सबधित प्राचीन मट्टी की मूर्तिन से स्पष्ट होय है के राजस्थान की धरती
गुप्तकाल में वैष्णव धर्म की प्रबल उपासक रही है । मध्ययुग में जब ब्रजभूमि में विदेसीन
के एक के पाछे एक लगातार आक्रमण हवे लग तो ब्रज के सिंगरे देवालय राजस्थान की
धरती में आयके आश्रय पा सके । जे ई कारन है के वैष्णव धर्म के प्रमुख निम्बाक,
नरसिंह अरु चैतन्य संप्रदाय के अधिकांश देवालय राजस्थान की धरती में बिबराजे भये
है । वैष्णवन के इन देवालयन के संग ब्रजभाषा के कवि कल वत अरु साहित्यकार
राजस्थान में आये अरु हमेसा हमेसा को ह्यो के हैके रह गये । ऐसे देवालय अरु बिनके
आश्रय में राजस्थान की धरती में फली फूली ब्रज लोक सस्कृति में या सफलन में विस्तार
से लिखो गयो है । याके संगई कविता के क्षेत्र में ब्रज के प्रचुर प्रभाव के कारन अब
तानू ई मानो जाती रह्यो है के ब्रज कोरी कविता की भाषा है । बाको गद्य से कोऊ
लेगी देनी नाय । मैंने अपन कई लेखन में या विचार की पोषण कीनी है के कविता के
प्रचुर प्रभाव के कारन ब्रजभाषा गद्य को प्रचार प्रसार नाय मिल सको जो मिलनी
चह्यो । ई कहनी सवथा अनुचित है के ब्रज केवल पद्य की भाषा रही गद्य से बाको सबध
नाय । ब्रजभाषा सदीन तानू हमार देश के लोगन के बीच गद्य की भाषा रही है । अब-
बर अरु बिनके परवर्ती मुगल बादशाहन के फरमान साधारण जनता तानू पौंचवे को
सदैव ब्रजभाषा गद्य में प्रसारित करै गय है । याके अलावा अकादमी के मंच से राज-
स्थान में ब्रजभाषा के साहित्यकारन की गद्य पद्य की रचनान को वानगी के रूप में एक
स्थान में प्रकाशित करवे के क्रम में हर साहित्यकार के मानोप्राप्त प्रकाशित करवे की

एक महत्वाकांक्षी योजना अपन हाथन में लीनी है। या श्रम में चीन्हा मोनाग्रफ प्रकाशित भये हैं। मन अपन सहयोगिन की सहायता से इन मित्रों साहित्यकारों के ब्रज साहित्य को सकलित कर बिनका विस्तार से मूल्यांकन करने की प्रयत्न विधी है। मेरे मूल्यांकन के ये लेख सम्पादकीय अरु लेखन के रूप में लिखे गये हैं। ये, सिगरी सामग्री एक स्थान पर संकलित करके की आवश्यकता प्रतीत करी गई। जाई कारण 'आँख-आँख' अनुराग सीसक से मेरे ये विचार आपके हाथन में है। आपके मागदशन अरु सुझावन की, मैं बड़ी आतुरता से बाट दे रहा हूँ। अकादमी परिवार से जुड़े मित्रों साहित्यकार भैया भैंन मेरे इन विचारों के प्रेरणा स्रोत रहे हैं। इन तन, मन, धन से समर्पित है व राजस्थान की ब्रज घरादर को जन-जन तक पहुँचायेंगे में जो काम विधी है, बाकी रमरन मात्र पुस्तकित कर आनन्द में डुबाय दे हैं। मेरे इन विनम्र विचारों को पुस्तक रूप देवें में आदरणीय श्री रामशरण पीतलिया जी को परिश्रम माग दशन अरु प्रोत्साहन की प्रमसा शब्दन में सभन नाय। मैं इन सबको सादर प्रणाम करूँ हूँ।

सी-266, भाभा माग
तिलक नगर, जयपुर

डा० विष्णुचन्द्र पाठक
अध्यक्ष
राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी



हमारे पुरोधे



1	सज के महाकवि सोमनाथ	1
2	अग्यात कवि चतुरा अरु पर्यन रासी	21
3	प नन्दकुमार शर्मा के काव्य की मूल्यांकन	31
4	सजभाषा के अमर गायक—कवि नवरत्न	67
5	राष्ट्रीय सज-काव्य प्रणेता प गिरिधर शर्मा 'नवरत्न	71
6	डा रामानन्द तिवारी की बाल काव्य	79
7	डा रामानन्द तिवारी जी के जीवन अरु रचना प्रक्रिया के बल्लु सस्मरन	88
8	सज म रचे वसे कवि श्री जयशङ्कर चतुर्वेदी	96

ब्रज के महाकवि सोमनाथ

बहुमुखी प्रतिभा के धनी आचार्य, अनुवाद कम, प्रबोध कौशल जैसी भीतरी विधान के माध्यम से अपनी काव्य प्रतिभा के एक ते एक सरस सुंदर अरु मनमोहक रूप प्रस्तुत करिबे वाले महाकवि सोमनाथ राजस्थान की साहित्य धरा के ऐसे प्रभावोत्पादक रचना धर्मी हैं जिन्हें ब्रजभाषा काव्य जगत में नयनाभिराम रंग भरै है। सोमनाथ की प्रभावशाली नागरी प्रचारिणी सभा से कोई दस बरस पहले छप चुकी है। पर हमें कुछ के संग लिखनी पड़े है के वर भरतपुर की साहित्यिक धरती की ऊर्जा से जनमे महाकवि सोमनाथ के समग्र साहित्य को जबई तानू मूल्याकत नाय भयो है। सोमनाथ का धौल मिथ, बटुकदत्त अरु कलगी तुरी के असर रचनाकार हरिनारायण जैसे या धरती के समय ब्रजभाषा के साहित्यकार पाण्डुलिपीन के अधिपारे में दुबके पड़े है। महाकवि सोमनाथ को ब्रजभाषा अरु रीतिकाल के प्रसिद्ध रससिद्ध कवि अरु आचार्यन में प्रमुख स्थान रह्यो है। हिंदी साहित्य के अधिकांस आचार्य जब संस्कृत के मजे काव्य शास्त्र के ध्यान के आलोडन विलोडन अरु बिनके सार तत्वन को अपनी प्रतिभा के तराश के हिंदी काव्य शास्त्र के विपुल भण्डार को समृद्ध बनायवे में लगे भये है, बा सभै सोमनाथ आचार्य को सफल अरु साधक कम निर्वाह करिबे के संग संग संहृत भाषा के श्रेष्ठ ध्यान को अनुवाद एव ब्रज में प्रबोधकाव्य जैसी विधा में अनवरत अपनी कलम चलाय रहे हैं। सोमनाथ के सिंगरे साहित्य कौशल में विहंगम दृष्टि वाले तो प्रमानित होय है के ब्रज में रहते भये इन्हें परम्परित दृष्टि काव्य के संग संग राम अरु शिवकाव्य की सरस ब्रजभाषा में रचना करी है। यही तानू के इन्हें ब्रजभाषा में 'मालती माधव' जैसे नाम से नल दमयंती की प्रणय कथा को लैके विसाल नाटक लिखी है। या नाटक में इनके सभै की लोक प्रचलित लोकधर्मी सैली अरु परम्परित संहृत नाट्य सिल्प की गंगा जमुनी मजुन समाहार भयो है। 'माधव विनोद' को कल आलोचक भ्रमरस दोचार स्लोकन को हवालो देवे यात्रु संहृत के मालती माधव नाटक को मात्र अनुवाद बताय हैं। ई सही नाय। आकार अरु प्रकार दोनू दृष्टि से माधव विनोद रचना 'मालती माधव' से काफी अलग भौतिक अस्तित्व की द्योतक है। सही तो जि है के सोमनाथ की माधव विनोद नाटक हिन्दी अरु ब्रज ससार को पैलो ऐसी मौलिक नाटक है जो अपने सभै में जनता के बीच में खेली गयो है। नाटक के रचना प्रसंग में कवि ने स्वयं अपनी लेखनी से आसयदाता के विस में जो सूचना दीनी है बाते ई सिद्ध है के या नाटक

की रचना सोमनाथ ने आत्मयदाता के प्रबल आग्रह पर जनता के बीच में अभिनीत करि दे करी है।

सोमनाथ ने 'सिंहासन बत्तीसी' रामायण', भागवत दामस्त्य उत्तराद्ध', 'अध्यास रामायण' जैसे संस्कृत भाषा के ग्रंथों को अपने आत्मयदाता मुजान सिंह अथवा प्रताप सिंह की आज्ञा या उमश 'मुजान विलास', 'रामचरित रत्नाकर', अजेंद्र विनोद', रामकलाधर' नाम से ब्रजभाषा में अनुवाद की है। ये चारों सङ्ग्रह या भाषानुवाद नाय अपितु कवि ने मूल के भाव या प्रसंग को अपनी वाक्य प्रतिभा में आत्ममात करके अपनी सैली अथवा भाव को सोच से बाध कविता में उतारो है। या कारण मीय तो कई दफे इन रचनानों को अनुवाद रचना कहवें मऊ सकोच हाय है। मूल के भाव को सामनाथ ने इतनी विस्तार दे दीनी है कि मूल भाव को ओर छार भारी प्रयास पाछे पकड़ में नाय आवे है। याई कारण कवि ने इनको नामकरण मूल से हटकर अपने हिसाब से कीनी है। राम कलाधर' अथवा 'रामचरित्र रत्नाकर' जैसे राम काव्य प्रस्तुत करके ब्रजभाषा में 'केशव की रामचंद्रिका पाछे राम काव्य लेखन परम्परा की दूसरी शृंखला में सोमनाथ ने पुन जीवो है। आचार्यत्व अनुवाद कोसल के अलावा महाकवि सोमनाथ रीतिकाल के स्यात इकलौते ब्रजभाषा के ऐसे लाडले कवि हैं जिन्हें 'शशिनाथ विनाद' शीपक से शिवजी के ब्याह के प्रसंग को लेकर एक सफल खण्डकाव्य की रचना करी है। वैसे विष्णु 'शशिनाथ विनोद के अलावा ध्रुव की कथा को लके ध्रुव विनाद' नाम से एक और खण्डकाव्य लिखी है। 'शशिनाथ विनाद' में कवि ने अपने आस पास के परिवेश को जा रचना में ऐसी कुशलता के संग पिरायी है कि ऐसी लग है कि दिनक सवे में शिव जी महाराज ब्याह करिबे हिमालय के घर नाय जाय रह अपितु बा सभे के ब्रजभूमि के काऊ घर में पधार रहे ह। शशिनाथ विनोद में ब्याह के रीति रिवाज बरातीन की भाव भगत हँसी ठट्ठा गारी गरीब, बेमौ, जूटबो, पत्तर में परोसी जायब बारी मिठाई अथवा भात भात के व्यजन, बराती की पत्तर बाधबो आदि के रूप में या रचना में सोमनाथ ने अपने सभे की ब्रजभूमि को साकार कर दीनी है। अगर तीन से बरसपूर्व की ब्रजभूमि के ब्याह सानी के वातावरण अथवा रीति रिवाज को फिल्म की तैरिया साकार देखनी है तो याको शशिनाथ विनोद से उपयुक्त स्थान और अवसर नाय है सक है। याक सगई पञ्चायों भाषा की तज प ब्रजभाषा छद में लिखी गई प्रेम पञ्चीमी नाम की पञ्चीस छंदन की एक छान्नी से इनकी रची एक वृत्ति ई सोचने को मजबूर कर है कि सूफी प्रेम को श्री कृष्ण प आरोपित करके ब्रज की धरती पर इस प्रेम की एक नई गंगा बहाई है। ब्रज के वियोग काव्य ससार में 'प्रेम पञ्चीसी' निगुण प सगुण भक्ति की विजय के सपावपित चण्णबो याद विवाद की वचनवक्ता से हटकर भक्ति सम्प्रदाय में कोसल दूर है। प्रेम पञ्चीसी के प्रभाव साई आन दधन जैसे कविन की 'इस्कवेलि' जैसी रचना आगे चलके कृष्णकाव्य में सात्विक वियोग की एक अलग धारा प्रवाहित करिबे बारी

भोतेरी रचनान म ते एव रही है । 'प्रेम पञ्चीसी' ने कृष्ण बाध्य मे सुफी वियोग की एक अलग धारा प्रभावित कीही हैं जा परम्परा पे अबई हिंदी मसार म विचार होनी बाकी है ।

सोमनाथ विसयक भ्रम—

राजस्थान के लघुप्रतिष्ठित या राजसेयी के नाम जन्म अरु कविता काल के दिसै मे आज तानू भोतेरे भ्रम बन भये है । भ्रमन के निवारन के अभाव म हिंदी साहित्य के इतिहासन म सोमनाथ विसयक भोतेरे विचार अनगतीन ते भरे पडे है अरु नय पुराने सिंगरे साहित्य के इतिहासकार इन असगतीन कू सांच मान के अगीवार करते जाय रये हैं । हिंदी साहित्य के प्रथम इतिहास के रूप म गोबुल कवि के 'दिग्विजय भूषण' ग्रंथ कू या सरिया की ग्रंथ मानी जाय है जाने राजभाषा के कविन के विस म पैली दफ नम-बद्ध कविन के उदाहरन प्रस्तुत करिखे की सफल प्रयास कीनी गयी है । सक्लन की दष्टि सों हिंदी साहित्य के इतिहास लिखवैयान के दिग्विजय भूषण ग्रंथ ने एक माग प्रस्तुत कीनी है । गोबुल कवि म सोमनाथ अरु रागिनाथ नाम के दू असग 2 कविन के उदाहरण देके दू कविन की अस्तित्व मानी है । सामनाथ, नाथ, रागिनाथ, सोमेदवर आदि विविध नामन ते राज बाध्य सृजन कीनी है । वैसे के प्रमुखत घमाक्षरी म स्वय की नाम सोमनाथ अरु सवैया म रागिनाथ रखते है । स्यात जाई बारम गोबुल कवि ने एकई नाम के दू कविन की वरुणना कर डारी है । रास दा तासी ने सो सोमनाथ के अस्तित्व कू तक नवार दीनी अरुते हिंदी साहित्य के इतिहास मे । शिव सिंह सैगर¹ अरु राज प्रियसन² नेऊ गोबुल कवि की भाँत सोमनाथ अरु रागिनाथ नाम की साथकता पे विचार नियो बिना इन नामन के दू अलग कवि बतायके विचारे सोमनाथ के दो दूक कर डारे । मिश्र बाधु विनोद म सबन ते पैले सोमनाथ अरु रागिनाथ नाम ते चले आय रहे दू कविन के भ्रम को निवारण कीनी है । मिश्रबाधु विनोद मेई पैली दफ कवि के आचार्य कम की युगांतकारी रचना 'रस पीयूषनिधि' की उल्लेख भयी है । इस पीयूष निधि के अलावा इन्त कवि की 'रास पाचाध्यायी' अरु 'सुजान विलास' ग्रंथ की उल्लेख कीनी है । रास पाचाध्यायी रचना की मोय कई पाहु लिपीन म कृष्ण लीलावती नामक मिल्यो है ।

हिंदी मसार मे महाकवि सोमनाथ के जनम कू लैवे अबई तानू भ्रम बनी भयो है । हिंदी साहित्य के काऊ इतिहासकार अथवा विद्वान मनीसी ने तकन के आधार पे

1 शिव सिंह सैगर—पृष्ठ 500

2 दो मादन वर्मापुलर लिटरेचर आफ हिंदुस्तान—पृष्ठ 335-36

सोमनाथ के जनम कू निर्धारित करिब की प्रयास नाय कीनी । सबने अपनी मन मर्जी तथा केवल मात्र अनुमान की सहारी लके कवि के जनम विसयक 'यायघोस की तरिया निर्धारण कर दीनी है । कईनै तो मात्र कल्पना को आधार लके जनम की तिथि लिए क खानापूर्ति कर डारी है । या प्रकार की कल्पना की आसरी लीनी है । श्री शिव मिह सगर ने । इन्हे सोमनाथ को जनम सम्बत 1880 लिखके अपनी कल्पनामीनता की भारी परिच दीनी है ।¹ सोमनाथ ने 'रस पीयूषनिधि' ग्रंथ की रचना स 1794 मे कीनी है ।² या तरिया शिवसिंह सरोजकार द्वारा सी बरस पीछे कवि के जन्मकाल की निर्धारण स्वत ई खण्ड खण्ड है जाये है । डा सुयराज कवि को जनम स 1737 माने है ।³ दिग्विजय भूषण के सम्पादक न कवि को जनम 1760 निर्धारित कीनी है ।⁴ आषाय चतुरसेन शास्त्री के मत म कवि को जनम सन् 1738 (स 1795) मे भयी है ।⁵ रसपीयूषनिधि के रचनाकाल के आधार पे शास्त्री की स्वत मन खण्डित है रह्यो है । डा सत्येन्द्र ने कवि को जनम सम्बत 1759 निर्धारित करिब की प्रयास कीनी है ।⁶ आषाय रामचन्द्र शुक्ल अरु नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हिंदी साहित्य के इतिहासकार सोमनाथ के जनम की तिथि कू लके अनुमान तब नाय लगाय सक है । इन मनीषीन के प्रति श्रद्धा अरु विनम्रता रखते भय हम जि लिखबै कू बाध्य है के इन मनीषीन प्रमान अरु तकन के आभाव म अपनी इच्छानुसार कवि के जनम की समै लिख डारी है । मिथ्र बंधुनर्त या सदास जहूर धीरा प्रयत्न कीनी है । इन्हे स्पष्टत कवि के जनम के समै को तो उल्लेख नाय कीनी पर 'रस 'पीयूषनिधि' की बाव्य प्रौढ़ता देखते भयै इन् ई अनुमान लगायी है के 'जि रचना पचास बरस की उमर के आसपास लिखी गई होयगी ।⁷ उक्त अनुमान की दृष्टि से कवि को जनम स 1744 के आस पास निश्चित होय है ।

भरतपुर, बैर नामरीय प्रचारिणी सभा आदि स्थान पे विभि न लोगन के पास सुरक्षित पाण्डुलिपीन के आलीढन विलोढन अरु गहन विचार एव विवेचन कर पाछे

1 शिव मिह सरोज-पृष्ठ 500

2 सत्रह से चौरानवे सम्बत सुमास

गुप्त पक्ष पक्षमी भयी ग्रंथ परकास-तरंग 22/607

3 हिंदी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास-प 217

4 पृष्ठ 94

5 हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास प 353

6 ग्रंथ साहित्य का इतिहास-प 390

7 मिथ्र बंधु विनोद-पृ 704

हमकू महाकवि सोमनाथ के जनम के विसै मे प्रामाणिक जानकारी मिली है। सोमनाथ के वस के जमात स्व रावत चतुर्भुजदास चतुर्वेदी से हमकू स्वयं सोमनाथ के हाथन लिपिबद्ध 'श्री विद्या पद्धति' की प्रति मिली ही। याके अलावा हमकू बैर के दाऊजी के मंदिर में स 1796 की लिपिबद्ध 'रस पीयूषनिधि' की प्रतिलिपि अरु भरतपुर के राजकीय पुस्तकालय में स्वयं कवि द्वारा लिपिबद्ध करी गई कालिदास कवि की बंधु विनोद रचना' एवं भरतपुर राजकीय सग्रहालय में 'सुजान विलास' की कवि द्वारा लिखित मूल प्रति में कवि ने स्वयं कू श्री विद्या को उपासक बताया है। सोमनाथ के बसन स्व उमराव सिंह जी ने सन् 1923 में इनके कछु ग्रंथन की छपवै कू प्रेस कापी बनाई ही। इनमें एक स्थान प इन्हीं अपने परिवार कू श्री विद्या को उपासक बताया है। यातैं ई स्वतः सिद्ध तक स्थापित भयी के महाकवि सोमनाथ के वस में परम्परागत रूप से श्री विद्या की उपासना करी जाती रही है अरु वरु स्वयं श्री विद्या के आराधक ह। श्री विद्या उपासना गृहस्थ अरु सन्यासी समानभाव से कर सकैं है।¹ श्री विद्या पद्धति ग्रंथ की प्रतिलिपि की पुष्पिका में सोमनाथ जी ने अपने जनम के मसै में महत्वपूर्ण सूचना दीनी है। वे स्वयं अपने हाथन से पुष्पिका में लिखे हैं—श्री विद्या पद्धति सोमेश्वर छिरोरा स्वपठनाथ सम्मत 1782 शाके 1647 वर्षी ज्येष्ठ सुदी 4 बुधवासरै श्री विद्या प्राप्ति दिन सम्मत 1747 शाके 1612 चैत्र वृष्णाष्टमी गुरौजमदिनम्।'

यहाँ पैं कवि ने अपने गुरु प्रदत्त जनम की उल्लेख कीनी है। ब्राह्मण कुल में ई जनम विसै महत्व राखे हैं—प्रथम मैया के उदर से अरु दूसरी विधिवत विद्या अध्ययन करवायवे के समै गुरु द्वारा प्रदत्त जनम। जब ब्राह्मण पुत्र उपनयन संस्कार के औसर प बहुत धर्म की दीक्षा लै है तो बा समै गुरु मंत्र के रूप में गुरु बाबू दीक्षा दै है। जेई गुरु द्वारा प्रदत्त नवी जनम मानी जाय है। प्राचीन धार्मिक ग्रंथ अरु परम्परा की दृष्टि से ब्राह्मण कुल में बालक के उपनयन की आयु सीमा आठ बरस निर्धारित कीनी गई है। कवि ने सम्मत 1747 वि कू अपने गुरु द्वारा दियो गयो जनम बताया है। जा समै कवि की आयु आठ बरस की रही होयगी। सम्मत 1747 से आठ बरस घटायवे पैं स 1739 में कवि को जनम निश्चित होय है। अब श्री विद्या प्रतिलिपि के आधार प कवि के जनम के विसै में उपयुक्त प्रामाणिक सामग्री के सटीक उल्लेख के कारण कवि के स 1739 जनम बरस मानवे के विरोध में कोई आपत्ति प्रतीत नाय होय। 'रसपीयूषनिधि' ग्रंथ के आधार पैं 'मिश्रबन्धु विनोद' में कवि को जनम स 1744 निवारो है। हमारी दृष्टि सों सोमनाथ ने 'रसपीयूषनिधि' की रचना पचपन बरस की आयु में कीनी है। जीवन के दीर्घ चिन्तन के पाछ ई गूढ़ विचारन में अभिप्रेरित अरु

संली की सरलता अरु विवेचन की बोधगम्यता आवे है । 'रसपीयूषनिधि' म मम्मट के काव्य प्रकाश के शब्द गति विवेचन कू कवि न किनेक सरल अरु बोधगम्य बनाय दीनी है या सत्य कू पीयूषनिधि ग्रंथ के अध्येता अच्छी तरिया जानै है । अतः कवि को जनम स 1739 माननी सवथा तक सगत अरु प्रामाणिक है ।

जन्म के समानई कवि सोमनाथ के कविता काल के विसै म हिंदी साहित्य जगत माहि जा भाति भरी परी है। प्राति को सबसौ पैले उल्लेख आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने युगा-तकारी हिंदी साहित्य के इतिहास म कीनी है । कहने की आवश्यकता नई के हिंदी साहित्य के इतिहासकारने सोमनाथ की कविता की प्रारम्भिक अरु अंतिम दानू सीमान के प्रति निर्धारित विचार समीचीन नाय । मिश्रबधुनै सबन तै पैले कविकृत तीन ग्रंथन को उल्लेख कीनी है जामे 'रसपीयूषनिधि' कू कवि की पैली कृति मानी है । ता पाछे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल न कवि की एक् अ य कृति माधवविनोद को अतिरिक्त उल्लेख कर के मिश्रबधुन द्वारा कवि विमर्शक विचारन म थोड़ी फेर बदल कीनी है । मिश्रबधुन कवि के जन्म कू जहूर निर्धारित कीनी है पर कविताकाल के विसै म बिनकी लेखनी मौन रही है । शुक्लजीने कवि के प्रथम ग्रंथ 'रसपीयूषनिधि' अरु अंतिम 'माधव विनोद' मानते मये स 1790 स 1710 तानू कवि को कविता काल निश्चित कीनी है । सन 1952 के आसपास हस्तलिपित पुस्तकन की खोज म मुनि कांति सागर भरतपुर आये ह अरु म्हा यिनू कवि की एक् अ य अज्ञात कृति 'सग्राम दपण' मिली ही । मुनिजी ने 'सग्राम दपण' के आधार पे शुक्लजी द्वारा निर्धारित कवि की कविता काल की सीमा कू अमाय ठहराते मये इनै पाकी सीमा म 1786 सो स 1810 तानू निर्धारित कीनी चौके 'सग्राम दपण' की रचनाकाल स 1786 है । स 1786 को कवि न 'सग्राम दपण' म य लगन को बाय पूरी कियो है । अतः स्वाभाविक है कि कवि न या ग्रंथ की समाप्ति के लिए एक् दू बरस को ता मये लियोई होयगी । जा तरिया मुनिजी द्वारा निर्धारित स 1786 सौं कवि न कविता काल को प्रारम्भ स्वतः अप्रामाणिक है जाये है । यिनू जाकी सीमा एक् दू बरस पूव म निर्धारित करनी चइय ई । सम्प्रति गोध अरु अवेपण सौ प्राप्त कवि के ग्रंथ नवाभाविसास' 'ध्रुव विनोद' 'गशिनाथ विनोद', एव 'श्वेता विनोद' के अध्ययन सौ शुक्लजी अरु मुनिजी के कविताकाल सम्बन्धी विचार स्वतः असत्य म परि-निर्णय है जाय है ।

हमारी दृष्टि सौ 'नवाभा विसास' कृति आरगजेव के पुत्र अरु प्रसिद्ध कवि नेवाज क भाग्यदत्ता आजम की प्रोत्पत्ति लिखी गई है । आजमसाँ का जीवन काल म 1653-

ई सो सन 1700 तानू इतिहास में मानो गयी है। इतिहास के सम्यक् अध्ययन से विदित होय है के जीवन के अन्तिम समै में आजम को मथुरा आगरा के आस पास के प्रदेशन से विसस सम्बध रह्यो है। सोमनाथ को जब आजम से परिच भयो है या समै बिनकी आयु अठारह बरस की हो। अत 'नवाबो विलास' की रचना मम्बत 1756 के आस पास होनी चह्ये। जाते जा निनय के विरोध कोई बाधा नाम के सोमनाथ की कविता की प्रारम्भिक सीमा स 1756 से कूती जानी चह्ये। नवाबोविलास' वृत्ति के अब तानू आठ छन्दई मिलै है। इन आठ घनासरी छन्दन की भासा अर सव् योजना आदि से निष्कस निवारो जाय सके है जि रचना कवि के यौवन के प्रवेश के भास पास की होनी चह्ये।

कवि के कविता की अन्तिम सीमा शुक्ल जी अर मुनि जीन स 1810 तक मानी है। 'ध्रुव विनोद', शशिनाथ विनोद ग्रंथ की समाप्ति स्वयं कवि की भासा में स 1812 अर 1813 में भई है। अत शुक्लजी अर मुनि जी के कवि के कविताकाल विसयक विचारन को स्वत ई निरसन है जाये है। हमारे विचार से ब्रजेन्द्र विनोद' अर 'प्रेम पञ्चीसी' कवि की साहित्यिक यात्रा के अन्तिम गतव्य है। ब्रजेन्द्र विनोद' को सृजन कवि ने भरतपुर नरेश सूरजमल (सुजान सिंह) कू करयो है। बैर नरेश प्रताप सिंह की मृत्यु अर माधव विनोद' लोक धर्मी नाटक के प्रनयन के पाछे सोमनाथ भरतपुर आय गय। ब्रजेन्द्र विनोद भागवत दशमस्कंध के उत्तराख को अनुवाद है। या युग के भरतपुर के कविन से आसन्नतातान से ज्यादातर मरुत के श्रेष्ठ ग्रंथन को सरल ब्रजभाषा में अनुवाद करवायो है। ये सासक विसाल मरुत के ग्रंथन के अनुवाद को काम भीत दफै इ अलग-अलग कविन कू सौंप देतै है। जाई तरिया बैर नरेश प्रताप सिंह ने वाल्मीकि रामायण के अनुवाद को काम प्रसिद्ध कवि कृष्णभट्ट कलानिधि अर सोमनाथ कू दियो हो। इन दोनू कविन 'राम चरित रत्नाकार' सीसक से वाल्मीकि रामायण को अनुवाद कीनी है। जाई तरिया भरतपुर नरेश सूरजमल न भागत दशमस्कंध प्रवाद को अनुवाद को काम मोतीराम अर उत्तराख के अनुवाद को काम महाकवि सोमनाथ कू सौंपी हो।

महाकवि सोमनाथ ने याकी नाम 'ब्रजेन्द्र विनोद' दोनी है। 'ब्रजेन्द्र विनोद' के अत में कवि ने याकी रचनाकाल को उल्लेख नाय कीनी है। सगई या रचना में कवि ने सूरजमल के नाम के सग कुवर सन्द को प्रयोग नाय कीनी जब के जय सिगरी रचनान में या सन्द को प्रयोग कीनी है। बाप के जीवित रहत भये हमारे देस की सामन्तवादी सासन व्यवस्था में 'कुवर सन्द को प्रयोग होतो रह्यो है अगर वाला जीवित है तो नाती के नाम के सग 'भवर' सन्द को प्रयोग होय है अर पिता जीवित है तो पुत्र कुवर सन्द से संबोधित करयो जाय है। वैसे जि प्रथा राजपूतन की रही है। पर जाय देखादली

सामंतीपुग के इतर राजा नैऊ अपनाय लियो । जाते जा निस्चय की प्रति कोई विराघ नाप दीख के 'ब्रजेद्र विनोद' की रचना के समे सूरजमल के पिता बदनसिंह को स्वगवाम है चुक्यो हो अत स्पष्ट है के 'ब्रजेद्र विनाद' की रचना बदन सिंह की मृत्यु के उपरांत भई है चोके यामे सूरजमल के पुन राजा के रूप में उद्भूत कीनी है । हमारी दृष्टि सों 'ब्रजेद्र विनाद' की रचना स 1815 व आस पास भई है । स 1815 के पाछे कवि को प्यादातर समे श्री कृष्ण की भक्ति में व्यतीत भयी है । बूदावन में रहते भय अपने सम-कालीन साहित्य सेवा आनंद धन की 'वियोग बेलि' अरु 'इक्षलता' के संग एवसे भावन में हूबे प्रेम की सूफीयाना वृत्ति 'प्रेम पच्चीसी' की रचना कवि ने बूदावन में आराम्य की याद में वियोग हृदय के संग कीनी है । श्री मोहनलाल भणुवर ने 'वियोग बेलि' अरु 'इक्षलता' की सज के प्रेम पच्चीसी' को मानते भय याको सद्यः सभी सम्प्रदाय सों जोडो है । या तरिया को एक लेख विनै सन् 1962 में श्री हिंदी साहित्य समिति की मुख पत्रिका 'समिति वाणी' में प्रकाशित कीनी हो । हमारी दृष्टि में 'प्रेम पच्चीसी' में व्यक्त भाव अरु वियोग की प्रचर तीव्रता की सहज अभिव्यक्ति बहुत सूफीयाना अंदाज में भई है । जा कारण 'प्रेम पच्चीसी' कृष्ण काव्य की विभिन्न सम्प्रदाय के आसोक में बहती वाक्य की गगनमुन धारान के बीच सूफीयानी सुप्त सुरसुती की सी छाई देती दीख है । कवि की अंतिम वृत्ति 'प्रेम पच्चीसी' है । जाकी रचनाकाल स 1816 है । स 1817 के दुरानी के प्रज के आक्रमण के समे आनंद धन के संग बूदावन में रहने भये कलेआम में सोमनाथ की मृत्यु भई है । सोमनाथ के वसजन के जमाना स्व रावत चतुभुज दास चतुर्वेदी की घरबारी में अपने परिवार में पीड़ी दर पीड़ी सोमनाथ की मृत्यु के सुनते आ रहे उपान्यास के क्रम में बताया के सोमनाथ जी बूदावन में शत्रुन के बीच घिर गये हैं । अत बिना कटार निकार के पले अपनी पत्नी फिर अपनी आत्महत्या कर लीनी । दुरानी के कलेआम के वारन ब्रजभूमि की कनकन घराय उठयो हो । बिना अपनी आखिन सों हिंदू समाज की दुगती देखी हो । कदाचित अस्मानित प्रताडित अरु बिंसीन के हाथन मौत प्राप्त करिखे की जोक्षा बिना जा स्वयं आत्महत्या करयो ज्यादा उचित समझ्य बारी बात समझी जा सके है । अत परम्परा के रूप में वसजन में चले आ रहे सोमनाथ ने मृत्यु विमर्शक प्रसंग के नाथ मायो जाय सके है । जा कारण सोमनाथ की कविता की अंतिम सोमा स 1810 की जग में 1817 मानी जानी चड्य । सोमनाथ की मृत्यु के विमर्श में तो एकल साइन साहित्य के इतिहास में नाथ लिखी गई । अस्तुत सोमनाथ की कविता काल संभवत 1856 सों संभवत 1817 तक निर्धारित भयो ।

आथ्रयसाता—सोमनाथ ने अपने अधिकांश ग्रंथन में आथ्रयदातान के प्रति सम्मान अरु स्वाभिमति की भावना व्यक्त कीनी है । इन आथ्रयदातान में डीन नरेख-बदन सिंह का नाम सबसे पहले आवे है । कवि के जनम के आधार पर प्रमानित है के

सोमनाथ आयु मे बदनसिंह के बराबर है अरु बिनते सोमनाथ के सब धरु भीतई मधुर हे जेई कारन है के आश्रयदाता के स्मरण को जहाँऊँ प्रसंग आवै कवि सबसों पहले बदनसिंह के प्रति अपनी आदर की भावनान कू व्यक्त करै है । सोमनाथ के बुढापे मे युवा कवि सूदन ने बदनसिंह अरु बिनके पुरखान को अपने ग्रंथ 'सुजान चरित' मे विस्तार ते उल्लेख कीनी है । कवि सोमनाथ न आश्रयदाता स्मरण के प्रसंग मे या तरियाँ बिनके पुरखान की विरदावली के सम्बन्ध-सम्बन्ध प्रसंग नाय दीने है । सन 1723 मे डीग के पूरे सासन अधिकार मिलै पाछ बदनसिंह के गामै सबते बड़ी समस्या ही के अपनी जनता कू सुसासन प्रदान करवौ । या कारन बदनसिंह ने दूर-दूर त योग्य पुरसन के सग-विद्या अरु बला के प्रचार प्रसार कू कवि कलावत एव साहित्यकारन कू बड़ी बड़ी जागीरी देकै अपने राज्य मे सम्मान के सग बुलायौ । महाकवि सोमनाथज याई क्रम मे डीग आयै अरु बदन सिंह ने अपने बड़े पुत्र मूरजमल की दीक्षा कौ सिंगरौ भार कवि कू सौप दीनी । सोमनाथ के प्रति बदन सिंह की विसवास भरी प्रीति कोई परिनाम है क बिनै नेकऊँ जहाँ आश्रयदाता के स्मरण कौ प्रसंग आवै है म्हा बू सबन त पैले भावना भरे सन्दन सों बिनके प्रति अपने मन के आदर के पावन भावन कू व्यक्त करै हैं । देखी कछु उदाहरन—

भारसिंह भूपति भये सिहि कान्हूर के बश
तेज बहादुर जगत मे, जदुबुल के अवतस ।

तिनके भयो प्रसिद्ध अति बदनसिंह थी लाल

दियौ राज ब्रज को हरपि तिनको श्री नदलाल ।—रस पीयूष निधि 9/10

जगमगै जाको चड कर सो प्रचड तेज,
दुवन उदड जाते लुक्कत रहत है ।

नीति निर्वाह सो निरतर प्रतीत जाके,
रचक न बैन पर पषहि लहत है ।

ऐसे ब्रजमडल बदन सिंह महाराज,
जाको यस सज्ज्यल दिगंतन कहत है ।

देस परदेस के नरेस पग लग्ये आनि,

जग्ये निसि वासर रन सगनि गहत है । —सुजान विलास 1/30

जा तरियाँ कवि ने आश्रयदाता को जाहाऊँ प्रसंग आयो है म्हा सबन सो पहले कवि ने बदन सिंह कोई स्मरण कीनी है । बदनसिंह ने सोमनाथ कू अपने राज को दाना-व्यक्ष पद दीनी हो जो बिनके वसजन पे आजादी ते पैले तानू रह्यो है । आजऊँ सोम-

नाथ के परिवार के बसजन नू राजस्थान सरकार सो दानाध्यक्ष की पैशन मिले है । बदल सिंह पाछे सोमनाथ ने बिनके बड़े पुत्र सूरजमल अरु ल्होरे पुत्र प्रताप सिंह कों बड़ी भावुकता अरु सहृदयता के सग आश्रयदाता प्रसंग म स्मरण कीनी है । निवेदन कीनी के सोमनाथ सूरजमल के अध्यापक ऊ ह । सूरजमल नू राजनीति अरु अय भीतेरे नायनोचित नीति को व्यावहारिक अध्ययन करायवे नू कवि नैं सिंहासन बत्तीसी की मुजान विलास मीसंक सों ब्रजभासा म सरम अर सरल अनुवाद कीनी है ।¹ सूरजमल कट्टर हिंदू नरेस हो । वाके मन मे देशप्रेम कूट कूट के भरो हो ।² नू विक्रमादित्य नू अपना आदस मानतो हो । विक्रमादित्य के व्यक्तिय को स्वय अनुकरण करिबे की प्रयत्न इच्छा सो ओत-प्रोत तय मन सो हैके बाने या ग्रंथ का सोमनाथ के अलावा अखिराम नाम के कवि सोऊ अनुवाद करायी हो । सोमनाथ ने स 1819 मे सूरजमल की आना सो भागवत दशमस्कंध के उत्तराद्ध बोरु 'ब्रजेन्द्र विनोद' सीस र सों अनुवाद कीनी हो ।³ इन द्वै ग्रंथन के अलावा कवि न अपने सिंगरे अ य ग्रंथन म आश्रयदाता प्रसंग मे बदलसिंह के सग सूरजमल की युद्धवीरता दानवीरता, दयावीरता अरु धर्मवीरता की बड़े आदर के सग स्मरण कीनी है । सूरजमल युद्ध क्षेत्र म जहा एक तरफ बड़े बड़े युद्धवीरन के वीरत्व नू बिलखित करतो हो, म्हाई दूसरी तरफ कवि जह विद्वानन नू प्रीतिसाहित करिबे म अपने राजकोस क द्वार खुले हृदय ते मदैव खाल रहती हो । इतिहासकार न सूरजमल नू अत्यधिक मितव्ययी बतायो है पर कविन के प्रति बाने नकळ सोम नाथ कीनी । भक्त कवि शिवराम के संगीत शास्त्र की मौलिक रचना 'राग रस-सार' प गीत के सूरजमल ने छत्तीस हजार रुपया दान म दे दीनै है । जाको कवि शिवराम ने अपने ग्रंथ म भारी हर्ष क सग उल्लेख कीनी है ।⁴ ई वाके कवि कलाव तन के प्रति आकृष्टन अरु उदात्त भाव को द्योतक हो । सोमनाथ, सुदन अखिराम शिवराम सो या युग के प्रसिद्ध कवि है जिन सूरजमल के प्रीतिसाहन सो हिंदी भासा की अद्वितीय सेवा कीनी

1 सभा मध्य इन दिन कही श्री मुजान मुक्कयाय

सोमनाथ या ग्रंथ की भाषा देह बनाय

हुतुम पाय 'शशिनाथ यह रचतु मुजान विलास

जाम विजय गुनकथा है बत्तीस प्रकास ।— सुजान विलास 1/62

2 मुगल साम्राज्य का पतन (दि भाग) पृष्ठ 306

3 इति श्री महाराजाधिराज ब्रजेन्द्र श्री मुजान म्यध हेतवे माधुर कवि सोम नाथ विरचित भागवत दशमस्कंध भाषा या ब्रजेन्द्र विनोद द्वारकादुर्गनिवेगन नाम पञ्चात्रयो अध्याय ।

4 अब ग्रंथ पूरन भयो, तबे करी बकसीस ।

सरे रूपया मान सों, दिये सहम छत्तीस ।—शिवराम राग रस सार पाण्डु

है। महाकवि देवक सूरजमल से सम्मानित भये हैं। स्यात देव न 'सुजान विनोद' ग्रंथ सूरजमल के काजैई लिखी हो।¹ सूरजमल के प्रति कवि के भाव को एक उदाहरण प्रस्तुत है—

उतकट वार रग अग मतवारे चले,
डग दे डरादे शेष सीस विकसतु है।
पबय उखारे भ्रुड दडनि उपारे,
चड बु भनि के क्षारे ग्रहामड उकसतु है।
सोमनाथ जिनकी सुने ते करतूति,
भजबुस पुरहुत कोन पीस उकसतु है।
दिल म उदार सिंह सूरज कुँवार ऐसे,
मोज आए बु जर अपार बकसतु है—माधव विनोद 1/58

कवि ने सूरजमल के राजोचित गुणन का स्वीकार कीनी है।² कवि की भासा म सूरजमल रसिकन कू रिखावे वारे सत्यभासी, अत्यधिक बीर अरु कल्पद्रुम के समान बानी है।³ बदनसिंह ने अपने बड़े पुत्र सूरजमल कू बीग को नरेस बनायो अरु छोटे प्रताप सिंह कू वीर को राज दीनी (बाहुबली तिनके अनुज थी प्रताप सुजान-रस पीयूष-निधि) सोमनाथ ने दोनू भंयान के जेठे अरु बनिष्ठ भाव कोऊ स्मरण कीनी है। (छोटो सूरजमल से श्री प्रताप सुजान-रामचरित्र रत्नाकर-सुन्दर काड 30/46) सूरजमल के पाछे सोमनाथ कू वीर नरेस प्रतापसिंह के आसय म रहवे की भीत जीसर मिली। प्रताप सिंह के आसय मे आदर राग लिखे कवि के हृदय से निकसे कछु भाव देखें—

1 माधुरी सन् 1927 फरवरी अंक।

2 बदन सिंह महाराज के सुंदर पुत्र अनेक।

जेठो सूरजमल है पंडित चारु विवेक।

बुद्धि के आठो अंग अर चौदह गुण राजके

तामे जान सुदृग सुत सूरज युवराज किया—सुजान विलास 1/41-42

3 रसिक रिशैया सत्य वचन कहैया, दल उद्धत रखैया पहरे बास देस के।
जगनि को जेता अग हरप निकेता, अरु नित्य प्रति लेता वित्त रिपुन के देस के।
सोमनाथ बरन उदार कल्पद्रुम से, जाको उग्र और तेज दिवेट दिनेश के।
सपति समार्ज थी सुजान छवि छाजै, नृप मंडल मे गाजै जो समान अमरेश के।

सुजान विलास 1/60

मुन्दर अनत गुनवत सीलवत ओर,
 जाहर दिगत कत कित अवनी के हो ।
 बाके मोहे ताने जान मानत अमाने
 भरदाने परताप सिंह ऐंठ अपनी के हो ।
 आस करि आवे जे व इच्छा फल पावे,
 कवि सोमनाथ सागर गभीरता के नीकें हो ।
 गजन अनी के मन रजन गनी के,
 दुल भजन दुखी के औ इन्द्र अपनी के हो ।

रस वीरूपनिधि 1/20



जगमग आभा जावे आनन कषाघर सी,
 आघी सी अमद अग कु दन बरन है ।
 बुद्धि को निधान औ प्रधान गुनवतन मे ।
 भू पति के सिर को अनूप आभरन है ।
 सील जत मंदिर थी कु वर परताप सिंह,
 सोमनाथ मिश्रन विनोद विस्तरन है ।
 सक्ठ हरन है अरिंद ग्रहरन सदा,
 हिंद को तरन है कविंद को करन है ।

माधव विनोद 1/12



आटी जाम नित चढ करते उदह जग है ।
 जगतु प्रताप मात दीप नवखड है ।
 दीप्त समुद्र थी कु वर परताप सिंह ।
 सोमनाथ बहे मुद्र गुजस अखड है ।
 विजय धमक जावे भरे भुजदडनि म ।
 मदन मही वी स्वम खडन प्रचड है ।

रामचरित्र रत्नाकर मुन्दर वांछ 30/49

प्रताप सिंह की आज्ञा से सोमनाथ ने काव्य शास्त्र के प्रसिद्ध ग्रंथ 'रस पीयूष-निधि',¹ अरु अनुवाद ग्रंथ 'रामचरित्र रत्नाकर'² एवं 'राम कलाधर'³ की रचना कीन्ही ही ।

प्रताप सिंह के पुत्र बहादुर सिंह के पाससे सोमनाथ नू रहवे की ओसर मिल्यो हो । बहादुर सिंह की प्रेरना सों कवि ने माधव विनोद नामक लोचधर्मी नाटक की प्रनयन कीनी हो । निवार प्रसंग बहादुर सिंह की कवि न स्मरण कीनी है—

सजि दल बसतु बहादुर जब,
सेलन सिवार बन बिबर उदारे की ।
सोमनाथ बहे तट्टे पथव्य खिरत,
रनु दब्ये मरतठहि तुरग हुरतारे की ।
उयल पुयल महि मडल सकल हेतु,
ढग मग डिटठ हाठ अडिगड डारे की ।

माधव विनोद-1/18

'माधव विनोद' के पैले अक् के छ 18 म कवि ने सुजान सिंह के पुत्र जवाहर सिंह कोऊ उल्लेख कीनी है । परोक्षरूप सों 'नवाबो विलास' रचता के आधार पं नवाब आलम नू सोमनाथ के आश्रयदाता की सूची मे सामिल करिबो तक सगत है । सोमनाथ के अपने आश्रयदातान सों बडे मधुर मवाध रहे है । प्रतापसिंह अरु सूरजमल मे कई दफँ मन मुटावळ है गयो हो पर सोमनाथ के दानून से बराबर नेहसिक्त मब ध रहे । दोनू अपने बुजुग आदरनीय के रूप में सोमनाथ को आदर करते है ।

1 सो यह कुँवर प्रताप की हुक्म पाय सविलास ।
रस पीयूषनिधि ग्रंथ की वणन सहित हुलास ।—रस पीयूषनिधि 2/10

2 श्री बदन सिंह यजमडल नाइव जग जाकी जस छायो ।
ताको कुवर प्रताप सिंह बर आनदनि अधिकायो ।
तिहि निमित्त कवि सोमनाथ ने रामचरित्र बगायो ।
सग निष्किघा काड नाम बर बास भयो सुहायो ।

राम चरित्र रत्नाकर—निष्किघा काड सग 62

3 इति श्री म महाराज कुमार यदुकुलवत्सल श्री प्रताप सिंह हेतवे माधुर कवि सोमनाथ विरचिते अध्यात्म रामायण भाषायान रामकलाधर बाल काडे अयोध्यापुर प्रवेशन बनन नाम अष्टम मयूष ।

सोमनाथ को राष्ट्र प्रेम— सामंती युग में प्रत्येक व्यक्ति अपने राजा या सामंत के राज्य की सीमाओं को ई अपनी मातृभूमि मानते हैं। बाकी रक्षा अथवा वाके प्रति प्रेम एवं समर्पण की भावना सामनाथ के युग की राष्ट्रीयता ही। सोमनाथ का बचपना मयुरा में व्यतीत गई और सेस भाग डींग अथवा वर में रहके व्यतीत भयो। अतः सामनाथ के काव्य में अपनी घरती व्रजभूमि के प्रति पग पग प स्वाभाविक स्नेह छलकतो चले हैं—

याजन हवकीस के प्रमान व्रजमंडल में ।

छह ऋतु महुके सुगंध मकरंद की ।

रस पीयूषनिधि-1/22

सामंति में द्रुम पुत्र निवृत्त प्रफुल्लित सौरभ की भरनी है ।

चार प्रभाकर की तनया अथवा चार पदारथ की करनी है ।

नित्त जपे शशिनाथ हियें जहें की रजपावन की टरनी है ।

लोकन या वरनी करनी दुख की हर्षो व्रज की घरनी है ।

तिहि व्रज मंडल मध्य है, दीरघ नगर प्रकाश

अथ ताका वरनन करो महित हियें हुलास ।

सोमनाथ में सुजान बिसाल में उपयुक्त काव्य पंक्तियों के अने तर मधुभार छन्द में डींग नगर के तत्कालीन वैभव को बड़े विस्तार के साथ बताने कीनी है। वर के विस में 'रस पीयूषनिधि' ग्रंथ में कवि के भाव देखी—

सुंदर सफल चहु ओर दलित बाग,

अविद महित सरोवर हेम के ।

सैं चारुमो वण जितया जालिष सों,

राजे प्रेम रग साचे बचन सुदेस के ।

जगमग गढ महामहान विलख तहाँ,

राजे श्री प्रताप मानो उदय दिनम के ।

आठहूँ पहर तहें मोद नित नरे होत,

वर पर बारों कोटि सहस्र घनस के ।

रस पीयूषनिधि-1/23

वर के विस में कवि को जित बतान आजऊ देखी जाय सके है। चारो तरफ पठन की हरिमासी अथवा अथ उपवनन में अबसेस आजऊ मौजूद है। प्रतापमिह के महलन

मे छात्रन को स्कूत चल है । भूहा आजऊ एक कमरा म पसग अरु तलवार धरे भये हैं । जहा प्रताप सिंह को आवास मानी जाय है । हिंदी के यशस्वी उपन्यासकार स्व डा रागेय राघव क पुरखा प्रतापसिंह द्वारा स्थापित सीताराम जी के महत हे । डा राघव को परिवार आजऊ वर म या मंदिर को महत है ।

प्रकृति अरु जीवन पद्धति—महाकवि सोमनाथ की प्रकृति बड़ी रसिक अरु सौंदर्य प्रेमी ही । व सुन्दरता के हामी हे । बिनके रसिक सुभाव के विसै मे 'सुजान विलास' ग्रंथ को एकई उदाहरन पर्याप्त होयगो—

महज विलाकिन चित वुरगवे, मृगनैननि निज प्रगट सुभावैं ।

अर मुसवमानि कटाछवि मारे, तब नर कैसे धीरज धारे ।

लिपिबद्ध जीवनी के अभाव मे साहित्यकार के व्यक्तित्व की विसेसतान अरु बाके साहित्य म व्यक्त भाव एव विचारन के आधार प विवेचित कियो जाय है । सोमनाथ अपनी वृत्तित्व क आधार प सुभाव मो व्यंग्यिक मरल अरु विनम्र सिद्ध होय है । विनै अपनी रचनान मे स्वय के दभ कू व्यक्त नाय कीनी । अपन ग्रंथन के प्रारम्भ म कवि परिचै मे बिनै स्वय अपने हाथन सो अपना जो परिच बान्यबद्ध कीनी हे बाते ई तक स्वत सिद्ध हे । वे हमेसा जग जग लिखे है के मने जो कछु सिखी है वू सुकविन के ससग को परिनाम है सगई बिनै गुनी व्यक्ति की परिभासाऊ दे दीनी है ।¹ कतिपय स्थानन प वे तुलसी की तरिया सज्जन अरु दुजन दोनून कू सादर प्रनाम करते भये अपनी विनम्रता को परिचै दे है ।² ई राजपरिवारन के परस्पर बैमनस्य होते भयेऊ सोमनाथ दोनून के कृपाभाजन रहे । याके मूल मे ई कारन है । प्रथम तो सोमनाथ बदन सिंह के आयु के हे । पिता की आयु के प्रबल विसवासी हैवे के कारन सोमनाथ के सबब सुजान सिंह अरु प्रताप सिंह दोनू मो स्नह भरे हे अर दूसरो यावे पाछे सबन ते बढो कारन हो सोमनाथ

- 1 (क) माधुर कवि शशिनाथ की सुकविन को परिनाम

भूल होय सो सोधियो यही गुननि को काम ।— कृष्ण लोलावती 5/75

(ख) जो बछु भूल्यो होऊ तो सीजो सुकवि सुधार-सधाम दपण-छन्द 500

- 2 (क) सज्जन अरु दुजनिहु को मेरी प्रणति अनेक—शशिनाथ विनोद 5/68

(ख) सज्जन दुजन को सदा, सहस गुनी परनाम ।

दया कीजिए दीन लखि, सोमनाथ को नाम— रस पीयूषनिधि-2/11

को स्वयं बिनम्र के संग गगन बबलु त्रिवादास्पद ताय रह । 'रसपीयूषनिधि म एष स्थान
 पे कवि ने आत्मयदानान के प्रति अपन सुभाव र परिनाम को उत्तेज कीनी है—

वचन मद्रूप ऊप परम पीयूष ह त
 बालत मधुर ही के नैम ही " यम य ।
 आक्षर अत मुस्तावसि वे चाह बार
 जिनका न ओछ बाज हरये क चमके ।
 नीर छीर पारे दर्शिन समथ मदा,
 सामनाथ बहै कह बाहु के न कसके ।
 मानमर वर राजवस बवि राजहम,
 है तस इलाज ओ ममाज मजलिंग क ।

सोमनाथ भाग्यवाद की शपेता कमवाद अरु व्यक्तित्व की कमठता प ज्यादा जोर
 देने हे । भाग्यवादी भूतकाल की घटना को स्मरण करके वनमान के प्रति आसावान
 होते भये भविष्य के रगीन सुपने दबे हे । पर सोमनाथ तो कम मे विस्राम
 रखत ह । याई कारण बिप 'सुज्ञान विलास' ग्रंथ मे या सत्य हू या तरिया स्वी-
 कारा है—

गजी जु वस्तु सोर नामु मकुनाहि किजजये ।
 विचार होतरा की न चित्त मौम सिज्जिये ।
 जु वतमान नाय सो समी प्रवीन पाय के ।
 कर विलास नाव ते विपाद को बहाय क ।

सोमनाथ की प्रतिभा विविध विसयन की ग्यान — सोमनाथ द्वारा सरजिद-
 ग्रंथन के पारायन सो ग्यात होय है के इनकू कारयित्री अरु भावयित्री द्रतिमा के रूप म
 दानू प्रतिमान को वर्यहस्त प्राप्त हो । सस्कृत व्रज के ता म प्रकाण्ड पंडित हे ही समई
 'प्रेम पञ्चीसी' के आधार पे विदित होय है के व पजाबी भासा केऊ ममज्ञ ग्याता हे ।
 ज्मातिस बिनकू अपने पिता अरु बाबा सों विरासन म मिली हो । आत्मयदाता सोम
 नाथ क सस्कृत भासा के ग्यान को विभिन्न ममृत क ग्रंथन के व्रज म अनुवाद करवा
 यव म ज्यादा उपयोग कीनी । अगर आत्मयदाना सोमनाथ सो मौलिक ग्रंथन की रचना
 करवात तो कदाचित हिंदी नू ता प्रतिभा द्वारा विमेष दुलभ ग्रंथ प्राप्त होते, जद्यपि
 इनको अनुवाद कायऊ हिंदी भासा के वैभव मण्डन म अद्रिनीय हे । या मत मे द्वे राय
 नाय है सभ । राज्याय्य म रहते भय सोमनाथ ने काव्य सास्त्र के बजोड ग्रंथ 'रसपीयूष—

पनिधि' की रचना करी है अरु 'माधव विनोद' के रूप में लोकधर्मा नाटक एवं शशि-नाथ विनोद', 'ध्रुव विनाद' सोसक सो छण्डकाव्य सिखे हैं। 'शशिनाथ विनोद' तो स्यात रीतिकाल की एकमात्र सिक्क्या प आधारित प्रबध काव्य है। राम भाव की व्यजना बिनके 'रामकलाधर' 'राम चरित्र रत्नाकर' में भई है तो कृष्णभाव के संयोग वियोगभय स्वरूप क्रमस ब्रजेन्द्र विनोद', 'कृष्णलीलावती' अरु 'प्रेम पञ्चीसी' में भई है। 'प्रेम पञ्चीसी' में सुपियाना अदाज में सबैया छंद में पञ्चावी भासा में प्रेम पीर की अभि-व्यजना जा अनूठे ढंग सो करी गई है। वानै हिन्दी साहित्य में व्रज के वियोग प्रेम में फारसी प्रेम पद्धति की परम्परा ते हटके एक अलग सरस पथ की निर्माण कीनी है। रस पीयूषपनिधि' में राम कृष्ण, हनुमान शिव शक्ति के विभिन्न प्रसंगन की ग्रंथ के प्रारम्भ अरु लक्षण के उदाहरण में प्रयोग करके कवि ने अपने मन के सिंगरे देवतान के प्रति भक्तिभावन को प्रकट करिबे के संग संग जेऊ सिद्ध करिबे की प्रयास कीनी है के आराधना के नाम में चाए अलग अलग नाम दिये जाये पर आराध्य के प्रति व आत्मा की चेतना के स्तर में भेद नाय। 'शशिनाथ विनोद' शक्ति की आराधना की पावन प्रबधकाव्य है जो रीतिकाल की शक्तिकाव्य की एकमात्र बेजोड कृति है। कवि की धार्मिक सहिष्णुरूप 'नवाबाबिलास' में चरमोत्कस रूप में मिले है जब के हिन्दू त्यौहारन के संग मुसलमान त्यौहारन को सजीव बनन करे हैं। महाकवि सोमनाथ स्यात या काल के एकमात्र ऐसे कवि है जिन हिन्दू मुसलमानन के भेद को समाप्त कर दोनू के त्यौहारन को बनन करके सामन्तवादी युग में व्रज में रहते भये काव्य की नई मानवीय चेतना को अपनी कविता में उतारो है। बबरीद उरसव मनाते आजम खा गाजी के प्रति कवि के भावन में हमारे उपयुक्त तक को अब आपई जाँव ल्यो-

पंडित परमगुन पंडित विविध धनिय,
उच्चरत विमल कवित्त कुनवेस के।
निरनत अनेक नृत्यकार अमल गनि,
गावत सुधर सब बिनर सुभेन ।।
सोमनाथ कहत गुबार की चहुँ चार,
चायन गो चतुर नरेस देस देस के।
आजम खाँ गाजी की विलोव बबरीद आज,
फोके होत सुदर समाज अमरेन के।

सोमनाथ को मुस्लिम त्यौहारन के अतिरिक्त ज्योतिस सास्त्र अरु ग्रह नक्षत्र की गतीन कोऊ भारी ध्यान हो। बिनकी 'संग्राम दपन' ग्रंथ विभिन्न बापन का सटीक मुहूर्त, मुद्द जीतवे के सनुन विचार अरु ग्रह नक्षत्र की गतीन की मानवीय सुभाव एवं

युद्ध के सांख्यिक पक्ष को बड़ाई विस्तार से बनाने ली गयी है। गुजान विलास में स्थान स्थान पर कवि को परिपुष्टित ज्योतिष ग्याय सुपरित भयो है। अन्त में विस पर कवि के ज्योतिष ग्याय की एक सारणी देखो—

राहिन ते रवि पुत्रवत्त ह्वं कृज के घर म
आवे तो दुन्निह होय नहि गाने घर म—गुजान विलास 25/19

सूदन की तरिया सोमनाथ ने इतिहास के घटनाक्रम को त्रिविध रूप में लिखवै म
रुवि नाथ दिखाई। यस विन अपने प्रथ 'रामचरित्र रत्नाकर' में वर नरेस अरु सोम-
नाथ के आत्मपदाता प्रतापसिंह द्वारा 24 दिग्भ्यः सन 1737 ई. भोगल में निजाम
अरु मरेठान के संग भये युद्ध में निजाम की तरफ त युद्ध लीनी हो। कवि ने 'दक्षिण ते
निजाम जगाय बजाइ क मीर निजामहि लायो' के रूप में प्रताप सिंह के युद्ध में किया-
कलापन को उल्लेख लीनी है।

सोमनाथ की आवायत्व— महाकवि सोमनाथ की रसपीठपनिधि प्रथ रीति-
काल को ऐसी बेजाह प्रथ है जामे वाक्य-सास्त्र के दसाय पच्छ को बड़ी गुबोध सरस
एव शास्त्रीय सभी में विवेचन भयो है। या प्रथ में कुल बाईस तरंगन में विभाजित
कीनी है। प्रथ की शुरुआत गनेस वदना से भई है। अगल छंद में कवि ने अपने
आत्मपदाता प्रतापसिंह के इच्छेव 'जै थी रघुनायक हों। चारणों फल दायक, दुलारे
दमरय के हमारे प्राण प्यारे हों की वदना करी है अरु सबक समीपी रघुवर बलवत
के' के रूप में हनुमान जी एव मुरली बजया ब्रजमो वरसैया आई के रूप में स्पाम
सुंदर की वदना करी है आ तरिया पली तरंग में सात छन्दों में गनेस, राम, महादेव
अरु कृष्ण वदना पाछे 17 पदन में राजकुल ब्रज राजसभा अरु नगर बनन कीनी गयी
है। दूसरी तरंग में ग्यारह पद्य हैं जिनमें सोमनाथ ने अपनी परिच दीनी है। तीसरी ते
पाँचमी तरंग तानू माना अरु छंद सास्त्र अरु विविध छन्द पर विस्तार से विवेचन कीनी गयी
है। याम कुल 185 छन्द हैं। छठी तरंग के पले बारह छंदन में वाक्य लच्छन, प्रयोजन
काव्य सरीर अरु का ग भेद की संक्षेप में चर्चा करी गई है। सातवीं से आठवीं तरंग
सौ कुल चार सौ सत्ताईस छंदन में धुनि को विवेचन भयो है। कवि ने 'असंस्कृत' नाम
प्वनि व भेद के रूप में नवरम नायक नायिका आदि हाव भाव आदि को विस्तार से बनन
भयो है जतीसवीं तरंग में वाक्य दोसन को 47 छंद इक्कीगनी तरंग में 16 छंदन में
गुन अरु सन्दालवार की 40 छंद माहि निरूपन भयो है। आखरी तरंग में 303 छंदन
में सन्दालवार की विवेचन भयो है याने अलावा सिंगार विलास तीसक सौ कवि ने
एक अथ प्रथ कीऊ कवि ने रचना करी है। या प्रथ में रस अरु नायक नायिका निरु-

पन कीनी गयो है । जि ग्रंथ 'रस पीयूषनिधि' ग्रंथ के रस प्रकरण की प्रतिच्छाया है ।
यामे ज्यादातर छंद 'रस पीयूषनिधि' वेई है ।

महाकवि सोमनाथ ध्वनिवादी आचार्य है । सामनाथ की ध्वनि सिद्धांत आचार्य
विश्वनाथ से अनुप्रेरित है । सोमनाथ न 'सगुन पदार्थ दोष बिनु' साहित्य कू सच्चे
अयन में कविता मानो है । सामनाथ पिगल मत अविरुद्ध अर्थात् छंद सास्त्र के विरुद्ध
कविता कू सही अयन में कविताई नाय मानें । 'भूषणतुल' कवि कम कू कवि ने
आखिर में सच्ची कविता कही है । आचार्य सोमनाथ न गुन कू कविता में प्रथम लिखी
है जन के मर्मद न दोस रहित काव्य कू काव्य परिभासा के अंतर्गत मानो है । सोमनाथ
की परिभासा पोजिटिव है मर्मद की नगेटिव एंप्राच माहि आर्व है । निस्वस ने निवे-
दन है के आचार्य सोमनाथ जैसे रीतिवाल के गिनती के ब्रज साहित्य सेवी हैं जिन काव्य
सास्त्र के सिंगरे भागन को एक स्थान प विवेचन कीनी है जैसे सोमनाथ न रसपीयूष
में कीनी है । मर्मद की तरिया सोमनाथ न उत्तम मध्यम अरु अद्यम भेद कीने है । दली
सोमनाथ के उत्तम काव्य को लक्षण—

साक्ष ही ते नैम करि नवल दुकूल सजे,
लहलहे भूलनि की पाँखुरी हरति है ।
सोमनाथ प्रीतम सुजान के वचन पर,
अति ही प्रतीति याते नेंकु न डरति है ।
वीरी बनवाइ कै रचाइ अधरनि आछ,
अतर मगाइ ए उपाइनि करति है ।
पौरि तन उर म अनद भरि इन्दुमुखी,
धूँघट उघारि दृग चचल करती है ।

सोमनाथ ने काव्य सास्त्र में गूढ़ विचारन कू समझायवे में ब्रजभासा गद्य को प्रयोग
कीनी है । उपयुक्त लच्छन के मदन में कवि ने गद्य को नमूना देखो—

'यहा वासक सज्जा नाइका व्यगि है और धूँघट उघारिखे ते प्रकास व्यगि और
दृग चचल करीवे ते बेर-बेर पौरि तन देखिबी व्यग औरहु बहुत विग है या
कविता में ।'

सोमनाथ के उपयुक्त काव्यन के मूल्यांकन से लब्धोलुभाब जि है के कवि की
हि दो साहित्य की दैन कू सदा याद कियो जायगी । आचार्यत्व, प्रबंध पटुता, अनुवाद

अरु नाटक कला के संग संग ज्योतिस जैसे विसय को सोमनाथ नू व्यावहारिक ग्यान हो । प्रबन्ध पटुता म सिव काव्य के रूप सत्ता की थीम नू लियो भयो इनको 'सामिनाथ विनोद हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है । कृष्ण लीलावती' म इन्ने कृष्णवी भक्ति नू चरम उत्कस पै पट्टीचाया तो सगई प्रेम पञ्चसी' म सूफयानी प्रेम नू श्री कृष्ण के प्रम म पैली दर्फ वनन करवे हिंदी साहित्य म नई परम्परान की सुरुआत करी है । सगई कवि को रस पीयूषनिधि ग्र य काव्य सास्त्र की ऐसी दुलभ ग्र थ है जाम दसाग कविता को सुबोध सैली म वनन कीनी गयो है ।



काव्य सौरभ

सुरसुति-

बसर बयारिन सी तरसै जग मगत स नृप की पटरानी ।
नहमयी अनुरागमनी ब्रज जीवन म महक रसखानी ।
तोर धरे जग के सब बधन मोछयी छवि म मुसकानी ।
या बिधि सो मर दै रस सागर जीवन मे मधुरी जगरानी ।



भर द उर म जग की जानी नव भावन की सरिता हरसानी ।
बरूना उपर्ज समगं हिय सी नित नहमयी भर द गुमवानी ।
अनुराग धुरे अमि भाव भरे मरसै मज न खिलत सब प्रानी ।
मन व मुर म भर द ममता गतरग मनी मिमरी जगरानी ।

अग्यात कवि चतुरा अरू बिनको पथैन रासौ

ब्रज भासा के अग्यात काव्य 'गढ़ पथैना रासौ' की अबई हिंदी साहित्य में चर्चा नाय भयी। भरतपुर सहर से तीस किलोमीटर पच्छिम में पथैन नाम की एक गाम हत। जाके जागीरदार सारदूल सिंह के पुत्रन ने सम्मत 1833 में सफतरजग पोता अरू अवध के नबाब के बीच भयानक जुद्ध करी हो। छोटे से जागीरदार के छोरा अरू बिनके भैया बदन ते अपने साहस, मर मिटवे बारी बीरता तै, टिड्डी दल की तरकी बिसाल सेना कूँ धूर जटाय के बिनकी ताकत के गब की मान मरदन कर दीनी हो। जाई जुद्ध की आखी देखो बनन पथैना रासौ' में भयी है। जि जुद्ध साहस की जद्ध हती, अपने प्रातन प खेलवे की जुद्ध हती, सामई खरी मौत कूँ आलिंगन कर धीरज धरके बीरन की तरै मन मिटवे क प्रखर सक्ल्प की भयानक जुद्ध हती। वीन ऐसी होयगो जाके समाई साच्छात मौत खरी होय, बाके दूध पीमत अबोध बच्चा कूँ अरू पूरे परिवार कूँ श्रमवे बारी काल मोहड़ो फलाय खडो होय पर अपनी आन, अपने साहस अरू अपन पिता के नाम की तर धीरता दिलावे की ललक तै अपन सब कछू कूँ दाव पै लगाय के जुद्ध में हूद परे। सली, अभिव्यक्ति अरू जुद्ध बनन की निगाह तै चतुराराम की पथैना रासौ बिल्कुल सुजान चरित्र' की फोटों काफी लगै है। पथैन के जा जुद्ध में भाग लेवे बारे भीत से बीर सीम बरस पैले सुजान सिंह के सग अनेक जुद्धन में भाग ले चुके हत जाकी सूदन ने अपन सुजान चरित्र में उल्लेख करा है। सूदन के बिसै में मिश्र बंधुन न लिखी है—'दिल्ली और दक्षिण दलों की दुर्गति की जो चित्र सूदन ने खींचा है, वह बिल्कुल ठीक फोटो ग्राफी केमरे की वृत्ति से है।' मिश्र बंधुन के सामई पथना रासौ नाय आयी हो। अग्यात वे जाके बिसै मेरू जाई भासा की प्रयोग करते।

बिबबानन की निगाह में चतुराराम — हिंदी साहित्य के ग्रंथन में चतुरा की प्रसंगबस चर्चा मात्र भई है। नागरी प्रचारिणी सभा की खोज रिपोर्टन में 'पथैन रासौ' की नाम आयी हत। भरतपुर राज्य के पले अनजान कविन पै लिखी गयी, डा मांती लाल गुप्ता के सोध प्रबं "मत्स्य प्रदेश की हिन्दी साहित्य की देन" में बिचारै चतुरा की नामक नाय था सकी है। सिवसिंह सैंगर मिसर बंधु आधाय राम चंद्रर सुक्ल बाबू स्याम सुंदर पास, डॉ रामकुमार वर्मा, डॉ गनपति चंद गुप्त, डॉ हजारी प्रसाद दिवेदी एवं नागरी प्रचारिणी सभा तै प्रकाशित हिंदी के विभिन्न इतिहासन में

चतुरा कूँ जगे नाथ मिली । ताज्जुब की बात तो जो है कि हा सत्येन्द्र जी के 'ग्रज साहित्य का इतिहास' में चतुरा छूट गयी । चतुरा के बिस म सबसे पहले याज्ञिक बंधुन ने सन् 1927 व माधुरी पत्रिका म जे सबद लिगे हतै—“चतुरा राय ने पर्येना रासो नाम का एक छाटा सा प्रसंगवस वीर काव्य रचा, जिसम पर्येना निवासी सादू त तिह के बसज ठाकुरो की अद्भुत वीरता का वणन है ।”¹ भरतपुर हिंदी साहित्य समिति के प्रकाशित “स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थ” के “भरतपुर कवि कुममाजति” भाग में चतुरा प प्रवास करी है । जाम लिखी है—“यह जाति के ब्रह्म भट्ट के और महाराज भरतपुर के आश्रम म रहते थे—कवि न बड़ी औजस्य भाषा म इस युद्ध का वणन किया है और साथ ही भरतपुर के महाराजाओं की बसावसी का बखान करत हुए ऐतिहासिकता का परिचय भी दिया है ।”² हिंदी म यम चतुरा प हते कई चरचा भई है । जा चरचा में कई बात तयकन न अपनी भरजी से लिख दीनी हत । जैसे चतुरा न ‘पर्येना रासो म एक जगे ई नाथ लिखी है कि बाकी भरतपुर राज दरबार तऊ सब घ हतौ ।

जनम —चतुरा व जनम अर भरन व बिस म प्रमानिक मामगरी की नितात अनाव हत । कवि की बम एकई रचना मिली है और व है ‘पर्येना रासो । जा ग्रन्थ मऊ कवि न अपन बिमै म केवन नाम के निवाय कछ नाथ लिखी है । कवि न जुद्ध की तिथि का सही जल्लेख करा है । जात पर्येना रासोकार का इतिहास के पच्छ म प्रबल रचि प्रमानित होय, म्हा दूसरी तरफ बाके जनम के विमय में चोरो से प्रमान की आघात मिले है । भाषा भाव अर सैली के तत्वन के आधार प जा अनुमान लगावे के प्रति कोई विरोध नाम रह है कि कवि ने जा वृत्ति कूँ अपन पूर उभरत जीवन म सरजित करी हो । पात्रन की परस्पर वातासाप अर वीरन द्वारा जुद्ध में भाग लेवे की आखिन देखी कवि की कियो गयी चिन्तन ई सिद्ध करे है कि चतुरा ने जुद्ध भूमि मे तरवार लेके एक सिपाई की तरे भाग लिया है । सूदन ने चतुरा के बिसय म लिखी है —

चतुर चतुर चिरजीव चतुरार है—सुजान चरित्र—पृ 2 छ 5

‘यमक अर ‘चिरजीव विमयन ते चतुरा के जनम के बिसय म कछ प्रमान दीखे है । सूदन चतुरा की काव्य प्रतिभा त भीत प्रभावित रह्यो । याही कारन ते बाने यमक

1 माधुरी सन 1917 की अंक प 83

2 भरतपुर कवि कुममाजति (सूदन काल) पृ 45

ते बाकी प्रससा करी है। "चिरजीव" से सून की चतुरा की प्रतिग्रम छनव रह्यो है अरु ई प्रमानित है रह्यो है कि सदन निस्वेई धाके गुरु रहे हुगे।

समत् 1810 की मराठे अरु सुजानसिध की जुद्ध की तैयारी पै आय के 'सुजान चरित्र' रतम है जाय है। जाकी अरथ भयो कि समत् 1909 तक के कविन की सून न अपने ग्रंथ में नाम उल्लेख करी है। चतुरा के अलावा सूनन अपने सग के बाल किसन, बसोधर मोहन आदि कविन के नाम गिनाये है। पर बाने चतुरा के सगई 'चिरजीव' सन्द की प्रयोग करी है। यातें सिद्ध होय है कि चतुरा सून की सिस्थ हो। जा समै जो पक्ति लिखी जा रही बा मौके पै चतुरा की उमर सोलह बरस की रही होगी।

जा हिसाब से पयैना रासो लिखने समै चतुरा की उमर चालीस बरस की होगी। अत बाकी जनम समत् 1793 के आस पास होनी चाहिये।

आकार — "पयना रासो" ग्रंथ म कुल तीन जग हतै। इन जगन कूँ फिर खण्डन मे विभाजित करो गयो है। पलो जग मे दो अक है अरु क्रमस सैतालीस अरु इम्हत्तर छद है। जग दूसरी म तीन खण्ड है जाम क्रमस तेईस, छत्तीस और पैतीप छद है। जग तीसरी सयते थडी हतै। जाम छ खण्ड है जो क्रमस बारह बीस, छत्तीम, तेईस छत्तीस और सैतालीस छदन मे विभाजित हतै। या हिसाब से ई रचना कुल तीन सौ सत्पासी छदन म लिखी गई है।

11422

पयना रासो की कथा — कवि ने ग्रंथ की शुरुआत कविता की अधिष्ठात्री देवी सुरसती अरु मंगल के देवता गणेश के स्मरण से करी हतै।¹ जा के पश्चात कवि ने भरतपुर नरेशन की बसावली को चित्रन कियो है। जाई ठौर पै बाने पयैना के वीर सामंत सादूल सिध की प्रचण्ड वीरता की भूरि-भूरि प्रससा करी है। सफतरजग के पीना सहादत अली ने पयैने पै चौध बसूल की नीयत से आक्रमन करवे कूँ आगरे ते कूँच कीनी। पीछे कवि ने सहादत अली की सेना और बाके अस्त्र सस्त्रन की विस्तार से वनन कीनी है। सादूल सिध के चौदह छोरान बोळ कवि ने स्मरण करो है। पड़ोससिध वर ते सहायता कूँ बहादुर सिध के ढिग जाये। बाने चार हजार रुपया चौध के दक्कें मुलह करवे की सलाह दीनी पोहप सिध वापिस पयैने आए है। पयैने के वीरन ने परस्पर विचार करके जुद्ध करवे की निनय लयी तथा

1 सुमरन सादर माय की गनपति की मिर नाय।

छद पयैने की कियो चतुरा राय बनाय ॥

भयानक दन तूँ जुद्ध में भाग लवे की नोती भज दीनी । जुद्ध गुरु भयो । कुम्हेर ते मानसिध तूँ बुलायी गयी । बुझी सौ वीरन के सग सहायता तूँ पथन आ पहुँचे । जात नबाब घबरा जाय । तू इतक सुलह कर चार हजार रपइया देवे की सलाह फिर दव । पथना के वीर जाये नाय माने । जुद्ध होय और बाभे सहादत अली की भारी हानि हाय है । नबाब फिर बरी सैना तूँ बर के पास ते बुलाय ले । पड़ोपसिध तूँ करौली राधे जी के पास भेजो जाये । पड़ोप सिध की समाचार नाय आय । पथने के वीर आखिरी सराई तूँ तैयार होम अर अपने पुरोहित तूँ बुलाय के बिनके जुद्ध भूमि में परे दूटे मरीरन तूँ बिता देम की कहम और घर की व्ययन की सती है वे की इतजाम करवे की निवेदन करे । बिततूँ मराठान के सनापति राधेजी पड़ोप सिध के स्वागत करके सहायता देम । पथना के वीर कंसरिया बानी धारन करके जुद्ध में कूद परे । घमासान जुद्ध भयो पहाप सिध वीरन के सग आ जाय और अत में सहादत अली पराजित है जाये ।

पथना रासो के जुद्ध बनन—पथना रासो अपनी बात अर आन पै मर मिटवे वारे वीरन के जुद्ध के करतब त भरो परो है । एक तरफ नबाब सहादत अली की बिसाल सैना ही जा अनक राजान के गव तूँ रोन्ती भई पथना प चढ आई, दूसरी तरफ मुटठी भर पथना के लडवैया हत । पथना के इन वीरन ने सुजान सिंह के सग अनेक जुद्धन में भाग लिये हो । वे बिना जुद्ध करे चौथे बसूली कसे करवे दते । बिनके सामे पिता सारदूल सिध की उदाहरन हती जाने भरी सभा में बालाजी बाजीराव तूँ फटकार दीनी, जाय सुनके जयपुर महर को निर्माता सवाई जयसिंह तलक घबरा गयो हो ।¹ जाई बज ते पथन के वीर बर बर एकी बात कहे है ।

(क) बिना जुद्ध ती भूमि छोड़ी न जाई कहा जीवते जगत करि है हसाई जग ।”

(ख) सारदूल के बैम की रक्षक है भगवान एक बार मरनी हमे हुनी सगे न बार ।

(ग) दाम एक नहि दहिग बिना किये सप्राप्त ।

चतुरा न मनन त पंस सहादत अली की सेना की बनन करो है । दली एक एक—

उदाहरन—

सिपाही सजील बडे सल राव ।
मव भी मावस लिये भारी बाव ॥

1 पदु बग-गया निप पृ 101

सीये राम चगी महागर मगरवे ।
चली कू च दर कू च साज सवारी ।
उमड़े चहु आर मो फीज भारी ।
नही वीर जानौ तनक सी पथना ।

जाई तरै पथना न वीरन की कवि न जा प्रकार हाल लिखी है—

खल खण्ड क तू टेस आये मुच्छ ऊ वे को किये ।
हैं हँ धरे तरवार सीखी चाव लरिब को हिये ॥

बलवान तोफा आइयो ल साथ चाहर सग ही ।
जो सबै रन समरय बली भरि काटि डारै जग ही ।

सुला जाट नबला बली भंसेन के सूर ।
दाखिल गढ भीतर भये जिन मुख बरसत नूर ॥
नदाराभ जाटी तई आवन भयो सिताब ।
सेलावत बछवे खरे तेग प ताब ॥
सिन सिन बार सुहावने ठौर-ठौर सी आई ।
राम राम सब सी करी पहुच कचहरी जाई ॥

कवि ने 'पथना रासों मे जुद्ध की आखिन देखी बनन करी है । जाय पढिके ऐसी लगे जसे जुद्ध की फिलम आखिन के सामई चल रही होय । एक एक वीर की नाम ले ले क जुद्ध की बनन कियो गयी है । ऐसी जुद्ध बनन सुजान चरित्र' के अलावा बिबरन साहित्य मे अत्यन्त मिलिबो दुलभ हते । प्रमान कू कछू उदाहरन देखी—

हु ओर ते तुरक न यही बढायो भार ।
मेद सिंघ आयी तबे ज्वान वीस भिसग ॥
फरसे पाय अढाय के रूपे एक ही सग ।
उत सुजान ऊपर गयो बाधे तीर कमान ।
मइया वेटा भानजा करन लगे घमसान ॥

चले वीर आये अली के जुझारु ।
माया राम ता ठौर आयी अगाऊ ।

चलाये दुधारे कँऊ मीर मारे ।
भयो ज्वान जग्गी तऊ नाई हारे ।
वही रत्नसिंघ ममा ठैर ह्याही ॥

जा जुद्ध मे चतुरा कबि नैऊ आगे बढि बढि क विरोधीन के छुक्के छुडावे मे अपनी तरबार के कीमल दिखाये हे । चतुरा की कमल तेई देखी—

छूटेल एक तोफा बह चतुरा सामिल भया ।
वरना बारे मारवा इन सबन कठिन मो हरा सयौ ।

पथीना के लडवय्या जा भूमि कू कैसे छोड सकते । ई घरती बिनकू जुद्ध की बीरता की उपलच्छ तेई तो मिली ही । जुद्ध क कारन मिली भूमि कू बिसाल सैनाय देख कै छोरवे कौ तो जि अरथ होय कि जा बज ते मरदारी ही बाई कू छोर दे । नबाब कौ वकील सवाई राम जब पथेने के बीरन कू अपनी मधुर बानी ते जुद्ध छोर कै चौथ दैवे की सलाह दे तो किसनसिंघ कौ छौरा माफ मना कर दे । चूँकि —

सुन रे सबाइ राम तो सौ कही रेऊ बार है ।
मान मनाये नहीं हम बाजे बिना तरवार है ।
यह भूमि भूष सुजान हमको दई रेऊ लाख सौ ।
ताकी छोडन बन हम वै जग जोरै लाख सौ ।
दीनी दिली पति नै नहीं जानै नहीं मन सूर कौ ।
महिपाल आप सुजम दोनी घरा यह सारदूल कौ ।

बा समै पथेने के बीरान की साख त्रिचण्ड बीर पुस्तन म गिनी जाये ही । उत्तर भारत म अनेक नरेशन अरु दुर्गिनी तलक की मरदानगी की मरदन करिबे भारी सुजान सिंघ के सघ जान हथेली प लकै लरिबे बार अनेक बाके बार पथन कऊ हतै । बिनम ते पहीपसिंह किसनसिंघ, मंडमिंघ, देवीमिंघ रामचंद तोमर घौकलसिंघ फतेराम, मानसिंघ अबई जीवित हते । इन सबन की अद्भुत बीरता के अनेक प्रसंग 'सुजान चरित्र' म आय है । व अपनी बीरता की साख कू नबाब की बिसाल सना के सामई हथियार हार के बीम समर्पित कर मके है । जाई वजै त सीध मब्दन म दूत कू बह दे—

माया हो दीना बनम साख न दीन जान ।
पर यगा अब तक रही अब राख भगवान ।

जाई कारन वे घोरे से मुट्ठीभर धीर आखिरी मश्राम कू ई कह कै तयार है जाये ।
सदन की बात सुनिकै रतनसिंघ राय प्रकट करे जाय सुनिक पयैने के सबते धीर
'वाह वाह' कहिके बाकी पूरा समर्पन करे है —

केसरिया पगड़ी पहर, काट मे बत्ता दोई ।
बरछी ढाल सम्हार कै, मिली सबरा होई ।
बैठि बिहारी पौरि पैं दरस लेव बृजराज ।
काटि काटि तुरकान सिर चली लोक मुरराज ।
वाह वाह सबनै कहौ, भली बही बलवान ।
हम हू मरि है साथ ही, जैस बही मुजान ।

रतनसिंघ कू एगई बात की चिंता हती कै वे सौ सवेरे सरतें सरतें मर जांमिगे
पर घर की बैयरन की का होयगो । आकी निगाह मे बिनके मरिबे वे पस्चात् घर की
सब बैयरन कू जोहर कर लैनी बइये ।¹ तत्काल चौबदार कू भेज कै मदन पुराहित
बुलायो जाय । बाके सामई हाथ जार वे रतनस कहे है—

कर जोरि तब रतनस बोल्हो आज लो रच्छा करी ।
बलि आई सीस सुहावनी कल कठिन कासऊ की घरी ।
दबै काम सरि है आई सा, सो आप खूब निभाइयो ।
मन भूल चूक बिसारि अपनो जान दब सम्हारियो । —
हम मोर ही सब स्वरग चढ़ि है छोरि गढ तिय आपकी ।
जैसे चही जोहर सगइयो लाज इनकी आपकी ।
फिर जाइ रन बल रुड मुडन सोधि सोधि सम्हारियो ।
दैं दाह भइयन की भली गढ बैठ काज सम्हारियो ।

किसनसिंघ आखिरी समै अपन कुल दवता बिहारी जी कू भायो नवावे जाय अर
परस्पर मैया आपस भ मिले । अपने पतिन की आखिरी दफे घर की सबई घप्पर आरती
करे है । बिनके मन भऊ भीत उत्साह हती । जा उत्साह कू बनि ने देखी बिदेस सही
भाव से प्रकट करी है —

1 हम मरि है यह नीक उपाई कहा होई इन तियन उपाई ।
मेरी समझ उचित यह नीकी, जोहर करि मरि है सब पीती ॥

गावत गीत सुहावने चलि आई बहि थान ।
जहा खडे रन रस सने बीर बहादुर जवान ।
बीनी आरती पतिन की मद मद मुसकाई ।
मिले नाथ सुरलोक मे हमहु बेरो घाई ।

जामे मैयाऊ पाछ न ई—

बिये मात सब सुतन के टीके चार बनाई ।
रन ककन बाधे भुजा चले सुरत सिर नाई ॥

अपने प्रान्त नू हथेरी पै लक, केसरिया बानो पहरे, माये पर मैया अरु भोटिया के तिलक एवम् हाथ रज्जा सूत्र पहिर आखिरी जुद्ध लरिये जाते इन बीरान की चित्रनऊ कवि ने बरी बिसाल अरु उदात्त बीनों है । प्रमान के उदाहरन मे एकई छ ब भीत हतै—

चले बीर जोधा सबै सूर घामे मानी बाल ब्यालठ लोटे मढ़ाये ।
परी घूम चारो दिसा भूष दान चने फत्र मानी बिसधर निकाले ।
बिगट सार पड़ी बहु धान तानी सहादत न बड़ी जग ठानी ।

ऐतिहासिकता—पचना रासी की ऐतिहासिकता की निगाह लेऊ बरी महत्त हतै । जाम सम्बन् 1833 के जुद्ध की बनन हतै । 'पघोना रासी' म जिन बीरन के नाम बीरता के और दिसाद्वे म आय हैं बिनये ते अनेक मुमानसिध के बिभिन्न जुद्धन म पावे मग रह चुके हैं । मुमान चरित्र म बिसनसिध¹ पद्मोपसिध² मदसिध³ की नाम जगै जगै प मुद्धन के प्रसंग म आयो हन । बिगनसिध ने जवाहरसिध बऊ संग युद्ध म भाग लीनो हो । गुमाब कवि ने सम्बन् 1824 के जवाहरसिध अरु परवालन के बीच भये जुद्ध बनन म अपनी रचना बहरिया रामा म बिगनसिध की बीरता की भूरि भूरि

1 मुमान चरित्र—अंग 4, अक्ष 6 पृ 115 अंग 3, अक्ष 4 पृ 33

2 अंग 5, अक्ष 3, पृ 121, अंग 6, अक्ष 6 पृ 121

3 अंग 6 अक्ष 5, पृ 208

प्रसन्न करी है ।¹ 'सुरजान चरित्र' के अनुसार हीम में मराठान के विरुद्ध जुद्ध में मेदसिंघ कू सुजानसिंघ ने बिले में चौथे मरहला पे नियुक्त करी हो ।²

'पथैना रासो में जमै जगै किसनसिंघ आदि बीरन की सहायत अली कू धिक्कारी ह । सुजानसिंघ के सग पथैन के बीरन न बुरे दिनन में अपनी सरन आये सफतर जग की भीत सहायता करी हो । अवध के नबाब के सफतर जग ने जब मुगल बादशाह के विरुद्ध बगावत करी हो तो सुजानसिंघ ने अपने बीर सामंत सरदान के सग दोस्ती के नाते बाकी सहायता करी हो ।³ गाजीउद्दीन ने सूरजमल कू सफतर जग को पच्छनई लैवे के भीत प्रलोभन होने और धमकीक दीनी पर बाने जाकी नेकठ परवा नाय कीनी । मई 1753 ई कू सूरजमल की सेना ने दिल्ली को लाल दरवाज्जी तोरि क सहर में प्रवेस करयी । इतिहास प्रमिद्ध जा दिल्ली लूट म पथैने के बीरन नेक सग दीनो हो ।⁴ फिर 18 नवम्बर, मन् 1767 म जवाहरसिंघ के नेतृत्व में पथैने के बीरन कू दिल्ली लूटवे की फिर अवसर मिली हो । जाई बात कू पथैना रासो म पथोपसिंघ बेर-बेर बहादुर सिंघ के सामई कह है—

हम दिल्ली केऊ बार लूटी और लूटी आगरी ।

कोना बहादुर लूट लीनो नीलकठ उजागरी ।

हम रारि गंगा पारि मही सग सफतर जग के ।

जनवरी 1753 म बजीर सफतर जग की सहायता ले कोइस के फौजदार बडगूजर के विरुद्ध सूरजमल की तीन महीना पाछे मिलिवे बारी विजय कोई ऊपर की पक्तीन में उल्लेख करी है ।⁵

सूरजमल के साथ पथैना बीरन ने सफतरजग की भीत सहायता करी हो । अवध की जागीर दिवावे मेऊ इन बीरन न अपने प्रनाम की बाजी लगाय के सग दीनो हो । जाई तरफ 'पथैना रासो' में रतनसिंघ इसारी करे है—

1 चोर काव्य—डा टीकमसिंह, पृ 334

2 सुजान चरित्र पृ 224 यदुवस-प 253

3 मुगल साम्राज्य का पतन सरकार पृ 294

4 सूदन पृ 184-85

5 सरकार—पृ 294

उन कीन हमस रखी वा पुरखन की लाज ।
हम दीन दिलबाय दी गयी अवध की राज ॥

अब अंत में सी ठाकुर रतनसिंघ जा बात कू यहाँ तक कह है—

कहियो सवाई राम माची बात एक नबाब सी ।
तेरो वित्तमहू राखि सीनी हमहि वीर भुजान सी ॥

सीनी बजारत औघि छीनी जोय कहो सुजान सी ।
तब हमई दिल्लीपति दबायो राखिब बा सान को ॥

जा अंत तक मानत रह्यो बड़ बाधु सिंघ सुजान की ।
जा हृदय सी मानत रह्यो उपकार वीर भुजान को ॥

अब आज इत नबाब जू आयो यहा क्यों कहि को ।
सी बार धिक्कार तुझको और तेरे नाम को ॥¹

‘पणेना रामी की हिंदी जगत में अबई चरचा नाय भई है । जा ग्रंथ ते बा सगी के इतिहास की अनक घटनान पक प्रकास पड़े है । प्रसिद्ध इतिहासकार आसीवाँद-लाल सिरीवास्तव ने ‘अवध के दो नबाब गंध में मोहलत अली की वनन करी है पर ब्यापक नाबब के जा जुद्ध की वनन नाय भयी है ।

1 पाठांतर—तेरे बाप का



प. नन्दकुमार शर्मा के काव्य को मूल्यांकन

आधुनिक काल में भरतपुर राज्य में भीतरे राजभाषा के ऐसे कवि कलावत अरु साहित्य सेवी भये हैं जिन्होंने जीवन भर राजभाषा के मंच से मैया सुरसुती की अभूतपूर्व सेवा करी है। आजादी पाछे ज्यो-ज्यो राज के वाग्बिदग्ध कवि सम्मेलन अरु वचन वक्तृता के कविता पाठ के साहित्य की कला को रिवाज रूम होती गयी त्यों त्यों प्रबल साधना के स्कूल सों निकरे तपानिष्ट साहित्य सेवीन की उपक्षा के कारन राज को ललित साहित्य धीरे धीरे विगत युग की कथा बनाती चली गयी। जनता की मांग अरु प्रोत्साहन का अभाव में सदीन की प्रतिभान की तपस्या से अजित राज की काव्य कला ममज्ञ कम होते चले गये। पडत की परम्परा राज की अपनी एक ऐसी विसेमता राजधरा की रही है जाम बाल्यावस्था सों पुराने राज कविन की विमयानुसार श्रेष्ठ कविता याद करा दी जाती ही। एक एक विसै पै सैकड़न छंद याद करवाये जाते हे। होरी के ओसर पै परम्परागत काव्य दगल जन रुचि की रजन के सग सग जनता में मगल नू चरितार्थ करते ह। महरन में काव्य क्षेत्र में गुरू परम्परा की कई साला राज के हर महर में चलती ही। इन गुरन के बेलान में परस्पर समस्यापूर्ति के आधार पै दगल होते हे अरु जनता श्रेष्ठ कविता पूर्ति के आधार पै काव्य गुरन को यग चतुर्दिक् फैलतो है। या सरिया की परम्परा धीरे धीरे समाप्ति भी होती चली गई।

पुरानी परम्परान की साधना के तेज सों निकरे अरु जीवन भर राजभाषा में साहित्य सेवा करिव बारे भीतरे साहित्यकार अबई अग्यानी बन भये हैं। इन साहित्य कारन में भरतपुर अनाह गेट में जनम लने बारे प न द कुमार शर्मा राजभाषा के ऐसेई कवि है जो जीवन भर एकनिष्ठ भाव से अपनी अनुभूतीन के नयनाभिराम सोरम नू राज कविता के विभिन्न रगन में बिखेरत रहे। कछु परिस्थिती अरु मन से वैराग्य के झामी नन्दकुमार जो नू जीवन के अन्तिम सम में लौकिक नसार से पूण वैराग्य है गयी हो। जा कारन घरबार सम्पति अरु सब कछु त्याग के ये सयासी हो गये। वैराग्य के कारन ये इतेक उदासीन हे गये के इन्होंने जीवन भर राज कविता के जो हजारों पन्ना लिखे हैं बिनकी साज सवार नाय है सबी। इनके कई सिस्त्रर्ग पण्डित जी के साहित्य नू अपने सग रख लीनों। भरतपुर के लोगन के कठन में इनके कछु छंद रह गये जो इनके

मुख के काव्य-पाठ के सभै सुनब पाद रह गये हे । आज ऐस लोगऊ या दुनिया ते कू घ कर गये जिनकू पण्डित जी के थ्रैष्ठ छंद स्मृति मे स्थान पाये भये हे । गत बीम बरय ते हम पण्डित नन्दकुमार जी के काव्य के सक्त्तन मे लगे भये हैं । पी एच डी की खातिर जब मै सन् 1966 मे बर भुसावर अरु भरतपुर के पुस्तकालय अरु लोगन के घर घर घूर मे लिपटे पुरानो पाण्डुलिपि के बस्ता कू खोल खोल के पुराने साहित्य की खोज मे लगे भयो हो तो वा सभै मोय भरतपुर के कई अजाने वज कविन मे प न द कुमार जी के कछु कविन अरु सवया देखवे कू मिले । बयाना अरु बर मे मोय कछु पत्रा मिले जिनमे प न द कुमार शर्मा के कछु छंद उतरे भये है । याई सभै भरतपुर के वज के अपने सभै के प्रसिद्ध बयोवृद्ध कवि सूर्यनारायण शास्त्री जीन अपनो साहित्य बतयावे की किरपा करी । सुंदर आखर मे लिखी एक बाबी मे पाँच सात छंद नन्दकुमारजी केऊ बिनके पाम मिले । इन छंदन मेरे मन की नन्द कुमार जी के साहित्य की खोजी उत्सुकता कू औरऊ बढाय दीनी ।

अचानक एक दिना जयपुर सगमाल पाक स्थित प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान मे पाक हज़ार छात्र के एक बेजोड ब्रजभाषा ग्रंथ के विसै मे प्रतिष्ठान के सचालक आचार्य रामचरण ध्याकुल जी ते सूचना मिली । मैने म्हा जाय के देखी तो जि अत्याक्षरी कल्पद्रुम मीसक सों प न दकुमार जी की लिखी भयो ऐसा अदभुत ग्रंथ हो जाके विसै स साहित्य जगत कू अर्बई जानकारी नाय मिली हो । ग्रंथ की प्राप्ति आदि के आधार प वा स्थान की मही जानकारी मिली जहाँ प नन्द कुमार जी के सिगरे ग्रंथन की जानकारी मिली है । बिस्मय है क ब्रजभाषा की ऐसी समय सेवी अब तानू अज्ञान मे कैसै पडा रह्यो या त्रिसै प सबसों पैल आधिकारिक जानकारी ब्रज-शासक के प्रवक्ता मे राधा टुण्ड कर्ज के एक सक्षिप्त लेख के माध्यम सों साहित्य जगत कू पली लके दीनी गई ।

प न दकुमार जी की जनम कालिक सुवल पूनम कू स 1960 तदनुसार सन् 1903 कू प्रतिष्ठित सनाढ्य ब्राह्मण कुल मे अनाह दरबजे मे पिता बिसम्भर नाथ के घर भयो । इनके पिता की म्हात बाल्यग्रन्था भई है गयो । इनकी मैया र बठोर तपस्या करे अपन एकमात्र पुत्र का माला गान किया । इनकी मैया बडी ग्वावहारक अरु साहित्य प्रेमी हो । तुनगी दाम की रामचरितमानस को नित्य परायण थोडी भीत पड़ी इनरी मैया की निय की धामिनी माधना हो । मैया क मानम के पाठ की धामिनी माधना के मानक नन्दकुमार जी के साहित्य के अनुराग की प्रारम्भिक मुहूर्ता करी । 'रामचरितमानस के नियमित पाठ मे मे बचपन, सम्पन्न शक्ति जसे धार्मिक प्रसंगा रामनी बिलगती मैया के हृदय के साहित्यकार के भावने बालक नन्दकुमार कू इतक प्रभावित कीनी के मानन की एक एक पक्ति बिनक काव्य की प्रेरना की श्रोत बन

गयी। शिक्षा के नाम पे बिने एट्रेंस परीक्षा पास कीनी हो। प्रभाकर, साहित्य रत्न की वित्तस योग्यता प्राप्त करके भरतपुर स्टेट की प्रेस की नोकरी कीनी। पत्नी को नाम कमला हो। इनके कोई सतान नाय भई। सन् 1953 के आसपास पहले पत्नी अरू फिर मैया को देहात हे गयी। साहित्यकारन के बीच उठनी बैठनी, दिन रात काव्य सृजन मे दत्त चिन्ता रहनी अरू इनते जो कछु समे बचतो वामे विद्यार्थीन कू हिन्दी पढ़नी ये पण्डित नन्दकुमार जी बे एब प्रकार सो व्यसन बन गयो हो। दिन भर हुक्का पीनी। एक खदिया पे पण्डित जी लेंटे रहते। राजा महाराजा की तरिया हुक्का की नली पास रहती। पढ़ाते या कविता करते हुक्का गुड़गुड़ाते रहते। हुक्का की तमाखू जब चुक जाती तो जब तानू नयो हुक्का लेंयार होतो तब तानू इनायची अरू सुपाही बचायबो बिनकी दिनचर्या को प्रमुख अंग हो। दिनभर बीच-बीच मे चाय की चुस्की अरू सजा कू कविता कामिनी के उपासक कचिन के सग भग पीनी अरू ता पाछे भग की उमडती-घुमडती तरंग मे एक पे एक तैरते कविता सवयान की ठुमकती बहार ते इनको छोटी सो मकान गुँज उठतो हो। घर के काम-काज अरू पत्नी की भीठी मनुहार को पण्डित जी के पास समई नाय हतो। परिनाम स्वरूप इनको गृहस्थ जीवन कछु तो कविता कामिनी की दिनरात आराधना अरू कछु बीतराणी वृत्ति के कारन वियोगी सोई रह्यो ब्रज कविता के भावन के स सार मे खोय या प्रतिभा के धनी कवि की कविता कामिनी की आराधना की सप्तपदी की जि हान हो के घर मे रहते भये सासन तक पत्नी ते इनकी परस्पर बातचीत नाय होती ही।

पत्नी ने पति के पास रहते भये घुट-घुट के वियोगी बनके अपनी सिगरी जीवन व्यतीत करके मौत को आलिगन कर लीनी। सन् 1953 मे पत्नी अरू मैया के देहात के पाछे नन्द कुमार जी के हृदय मे स सार ते मन उचट गयो अरू इनै सत्यास ले लीनी। भरतपुर अनाह दरवज्जे बाहर गोल मोल की बगीची इनकी साधना स्थली बन गयी अरू अथ के पण्डित नन्दकुमार शर्मा ते सत गुरुमुखदास उदासीन बन गये। मही रहते भए पण्डित जी न सम्बत् 2018 सन् 1961 मे या लौकिक ससार को त्याग कर दिया।

श्री नन्दकुमार जी अपने समय मे लौकिक ससार मे पण्डितजी के नाम सों जनता के बीच सम्बोधित किये जाते हे। हमवू इनके लिखे छोटे-मोटे इक्कीस ग्रंथ मिले हैं। इन ग्रंथन मे सात अरू आठ छंदन के अलावा पाँच हजार छंदन सब बेजोड ग्रंथ 'अत्यासरी कल्पद्रुम' तक हे। पण्डित जीनै ज्यादातर ब्रजभाषा मेई काव्य लिखो हे पर बीच बीच मे हिन्दी भाषा की कविता बेऊ इनकी काव्य पुस्तकन मे हमवू दरसन भय हैं याके अलावा इनै भरतपुर के प्राचीन साहित्य सकलन मेंऊ काफी प्रससनीय वाम कीनी हे। भरतपुर हिन्दी साहित्य समिति के मंच सों जब या क्षेत्र के साहित्य कू संवे

एक इतिहास ग्रन्थ लिखने की योजना बनी ही तो डींग के निवासी अरु भरतपुर में सेवारत वैद्य स्व. देवी प्रकाश अरु पण्डित न. दकुमार जी ने वरसन तक भरतपुर के घर-घर जायके प्राचीन पांडुलिपि एकत्रित करके कवि के व्यक्तित्व अरु कृतित्व विषयक सूचना एकत्रित करी ही । इन सूचनान के आधार पर ई आगे चलके हिन्दी साहित्य समिति ने अपनी स्वर्ण जयन्ती के ओसर पर भरतपुर कवि कुसमाजलि' सीसक सो या छत्र के साहित्य की इतिहास प्रकाशित कीनी है । पण्डित जी के सिस्स कवि राधाकृष्ण से प्राप्त इनके समग्र साहित्य व अन्य स्रोतों से हमको जो इनके लिखे पना मिले है बाके आधार पर इनके रचित इक्कीस ग्रन्थों के नाम या तरिया हैं ।

- | | |
|-------------------------|-----------------------------|
| (1) श्री राम विवाह | (2) रुक्मिणी परिणय |
| (3) थोता वत्सा लकन | (4) ज्ञान प्रदीप |
| (5) भावत भागीरथ | (6) श्री गोवधन लीला |
| (7) नेत्र पञ्चोत्ती | (8) चन्द्रव गोपी कुब्जा शतक |
| (9) अलंकार परिचय | (10) श्री राधाकृष्ण सवाद |
| (11) श्री राधिका नल शिल | (12) पीयूष प्रवाह |
| (13) रत्नभाषुक सवाद | (14) श्र गार तिलक |
| (15) अष्टावक्र | (16) अत्याक्षरी कल्पद्रुम |
| (17) भरतपुर की इतिहास | (18) ब्रजपति चरितामृत |
| (19) पञ्च परिजात | (20) गुरुमुख सतक |
| (21) ऋतु सोन्दर्य | |

इन ग्रन्थों में अलंकार परिचय पण्डित जी के कवि के आचार्य कर्म की प्रतिनिधि रचना है । या ग्रन्थ में कवि ने प्रमुख 99 अलंकारों की विस्तार से सुबोध संज्ञा में सहाय अरु उदाहरण दीने हैं । प्रत्येक अलंकार की सब प्रथम विस्तृत विवेचन को एक छोटे से दोहा द्वारा पण्डित जी सहाय समझाये हैं । दोहा में उदाहरण से पुन सहाय की पुष्टि करी जाय है । पुन वे सबया छन्द में सहाय को पुष्ट करते भये उदाहरण और दे है । कई बड़े से एक उदाहरण से जब समुष्ट नाय होय तो पुन कई उदाहरण से अलंकार के सहाय पुष्ट करे हैं । अलंकारों के उपभेदन की ऊँ गिनती करी जाय तो माकी सख्या भीत ज्यादा बढ जायगी, जिनकी विस्तार से या ग्रन्थ में विवेचन भयो है । 'होत है मुदीठ जाय गिरिजा के पास की' अरु बाहिनी है विद्या की अविद्या नासिनी है' जैव भावन से ओल प्रीत घनाक्षरी छन्द में कवि अलंकार शास्त्र की अपनी या

आचाय-कौशल की रचना को आरम्भ करे है । धीरे की हुकार, धनु की टकार, अरु शीणा की झकार की जीवन के विविध पक्षन में उपयोगिता सिद्ध करते भये कवि काव्य कानन में मधु ऋतु लायने कू अलकारन की उपयोगिता बताय के याके प्रयोजन कू सायंक करे है ।¹ शब्दानकारन में अनुप्रास, यमक श्लेष आदि के बनन करै पाछ कवि अर्थालकारन पै आ जाय है । इनके द्वारा विवेचित अलकारन के भेद उपभेदन को नाम-करण अरु बनन या ब्रम सो है—

उपमा, पूर्णोपमा, लुप्तोपमा, धम लुप्ता, वाचक लुप्ता, उपमान लुप्ता, वाचक धम-लुप्ता, धम उपमान लुप्ता धर्मोपमेय लुप्ता, धमवाचकोपमान लुप्ता, मातापमा 1 धर्मा, भिन्न धर्मा, समुच्चयोपमा रसनोपमा 2 उदाहरण 3 अनवय 4 उपमेयोपमान 5 प्रतीप प्रथम प्रतीप-द्वितीय प्रतीप तृतीय प्रतीप, चतुर्थ प्रतीप पञ्चम प्रतीप 6 रूपक अभेद, तद्रूप, सम अभेद अधिक अभेद यून अभेद सम तद्रूप अधिक तद्रूप यून तद्रूप साम निराग परपरित 7 परिनाम 8 उल्लेख प्रथम द्वितीय उल्लेख 9 स्मरण 10 सदेह 11 भ्राति 12 उत्प्रेक्षा वाच्यावस्तु उक्त विषया, अनुक्त विषया, हेतु उत्प्रेक्षा, सिद्ध विषया प्रसिद्ध विषया, फलोत्प्रेक्षा प्रतीयमान 13 अपह्लाति-शुद्धा-हेत्वा पयस्ताऽद्येका कैतवा भ्रात 14 अति-शयोक्ति रूपक भेदक, सम्बन्ध असम्बन्ध कारक जन्म-वपल-अत्यंत 15 अत्युक्ति 16 तुल्ययोगिता प्रथम द्वितीय तृतीय 16 दृष्टा त 17 दीपक 18 आवृत्ति दीपक पदावृत्ति-अर्थावृत्ति पदावृत्ति 19 व्यतिरेक अधिक यून सम 20 विरोधाभास 21 प्रतिवस्तूपमा 22 निदसना प्रथम-द्वितीय-सदय असदय-माला 23 सहोक्ति 24 विनोक्ति प्रथम द्वितीय 25 समासोक्ति 26 परिकर 27 उपमा 28 परिकराकुर 29 अप्रस्तुत प्रससास्वरूप्य निबन्धना-सामाय निबन्धना विशेष निबन्धना-कारण निबन्धना-कपि निबन्धना 30 प्रस्तुताकुर 31 पर्यायोक्ति प्रथम-द्वितीय 32 व्याज स्तुति निदा में स्तुति स्तुति में निदा अय स्तुति में अय स्तुति 33 व्याज निदा 34 विभावना प्रथम द्वितीय-तृतीय-चतुर्थ पञ्चम षष्ठ 35 असम्भव 36 विशेषोक्ति अर्चित्य निमित्ता-उक्त निमित्ता अनुक्ति निमित्ता 37 असंगति प्रथम द्वितीय तृतीय 38 आक्षेप प्रथम द्वितीय-तृतीय 39 निपम प्रथम द्वितीय तृतीय 40 सम प्रथम द्वितीय तृतीय 41 विचित्र 42 अधिक प्रथम द्वितीय-तृतीय 43 अल्प-प्रथम द्वितीय 44 अयो य प्रथम-द्वितीय तृतीय 45 विशेष प्रथम-द्वितीय तृतीय 46 व्या-

- 1 अरि उर तावन को कूरन भजावन को, विरद बडावन ज्यो धीरे की हुकार ।
मेदिनी कैपावन को सिधु उफनावन को, अचर चलावन ज्यो धनु की हो टकार ।
सुख भरसावन को सुधा बरसावन को, हिय हरसावन को ज्यो शीणा की झकार ।
त्यों ही काव्य कानन में मधुरितु लावन को सुमन खिलावन को पावन अलकार ॥

घात प्रथम द्वितीय 47 करण माला-प्रथम द्वितीय 48 एकावलि 49 माता दीपक
 50 सार-प्रथम द्वितीय-तृतीय 51 यथा सख्य 52 पर्याय प्रथम द्वितीय 53 परिवर्ति प्रथम
 द्वितीय 54 परिसरवा 55 विकल्प 56 समुच्चय प्रथम-द्वितीय 57 कारक दीपक 58 समाधि
 59 प्रत्यनीक 60 काव्ययपत्ति 61 काव्यलिङ्ग पदार्थ हेतक काव्याथ हेतक 62 अर्थातरायस
 प्रथम द्वितीय 63 विकस्वर 64 प्रौढोक्ति 65 सभावना 66 मिथ्याध्यवासिति 67 प्रहसन
 प्रथम द्वितीय-तृतीय 68 विपाद 69 उत्सास 70 अवज्ञा 71 अनुपा 72 लेख
 73 मुद्रा 74 रत्नावली 75 तद्गुण 76 पूवरूप प्रथम-द्वितीय 77 अतद्गुण 78
 अनुगुण 79 मोलित 80 सामाय 81 उमीलित 82 विशेष 83 प्रौढोच्चार 84 चित्र
 85 सूक्ष्म 86 विहित 87 व्याजोक्ति 88 प्रौढोक्ति 89 विवतोक्ति 90 युक्ति
 91 लोकोक्ति 92 छेदोक्ति 93 वक्रोक्ति 94 स्थावाक्ति 95 भाविक
 96 उदात्त 97 निरुक्ति 98 प्रतिपेक्ष 99 विधि ।

नन्दकुमार जी को ज्यादातर अलंकार लक्षण अप्य दीक्षित के 'कुवलयानन्द' में
 प्रभावित है। बिना समझाये के सचप्रथम लक्षण के दोहा वे पाछे बिना सर्वथा के
 माध्यम से लक्षण के समझाये के को अनुकरणीय प्रपास कीतो है। यथा पूर्णोपम की
 लक्षण या तरिया इन समझायो है—

वाचक धमूपमान युत, होय जहाँ उपमेय
 ताको देखत ही कबी पुणुपमा कहि देया

यथा

आगम चद्र समान समुज्ज्वल कोकिल से मृदु वन उचारै ।
 दीठ फिरायत ही तनके मनके जनके सब ताप निवारै ।
 देत सदा फल चार उदार गुनोगुन ओर न रच निहारै ।
 मूढ कहो तिहि सों बड़ि को अस स्वामिनि राधिका पाय बिसारै ।

कई स्थानों में वे एक अलंकार के कई-कई उदाहरणों को समझाते हैं। हेतुप्रोक्षा
 के सन्दर्भ में दसो उदाहरण—

जह अहेतु में हेतु की सभावना दिखाय ।
 वहाँ हेतु उत्प्रेक्षा, दीजे मुरत बताय ।

यथा

होय तो
 अनुराग

भीष्म तप तापित दहै, नतरु काम की ज्वाल ।
लाल बसै इन दुगन मनु, भये याहि सो लाल ।

अब औरक स्पष्ट करते भये थे या तरिया डी उदाहरन और दे हैं हेतु-प्रेक्षा
की—

प्राण मिलै न कहू मन बौ जित देखहु जात तितैहि जर्यो है ।
घूरि सो पूर मही नभ लौं घन बागन जीवन हू उजरयो है ।
सीतलता सहखानन मे कछु देख मन अनुमान कर्यो है ।
बीज मनो हिम को भुइ गोइ उगाइवे को बिघिना नें धरयो है ।
आली गये जब सों मथुरा घनस्याम हिये बिच सागी दरार है ।
नीके लगै सुख साज न ये अरु फीकी लगै सब ही घर द्वार है ।
साँध सकै नहि कोटि उपाय अर्यो बिच आय वियोग पहार है ।
ननन नीर है जात बह्यो इहि हेतु मनो इहि जीवन सार है ।

या ग्रन्थ मे कवि ने 97 अलंकारन को बनन कीनी है ।

अगर इनके भेद उपभेदन की चर्चाक करी जाय तो जि सख्या सैकड़न ते ऊपर
पहोच जायगी । अलंकार लच्छन अरु उदाहरन द्वारा बाय समझावे को पंडित जी को
तरीका ऐसी सहज अरु सरल है के पढ़वे बारे के मन के भीतर तानू अलंकार के अर्थ ते
प्रगट हवे बारी मधुर सौरभ सीधो प्रवेस कर रोम रोम कू मक्काय दे है । वचन चातुरी
सों काय सम्पन्न है जाय म्हा सुगंधित पर्यायोक्ति अलंकार के नीचे लिखे उदाहरन मे
अब मुमई देख ल्यो हमारे मत की समथन अरु प्रमाण—

मान किये अलि बैठ उतै बस देखत काहि न दीठ उठाय है ।
भागन सों गन भावन पायकें सो सतराय के ओसर जाय है ।
बातन बाद बढ़ाये कहा कछु आय न हाथ बूया पछताय है ।
योग सयोग बय्यो मल क्यों न हिये हरपाय के अक लगाय है ।

मन नई मर्यो होय या हमारे तक सो आपकू अबई बी या बिसबास नई मर्यो
होय तो एक उदाहरन और देखो सामान्य सो वितेस की पुष्टि करतो अर्थात्तरग्यास
अलंकार को एक उदाहरन—

रीति यही खल की पर बैभव फूटिहु आँखन देख न पाय है ।
ओर की देख बुरी न मरै मन नैव न फूलेहु अग समाय है ।

आपुनी नाक बटै कट जाय पै आन की जान कुसी न कराय है ।
पावस देख हरयो सिंगरी जग द्वेप सो अक जवास जराय है ।

पंडित जी की दूसरी बेजोड ग्रंथ है 'अत्याक्षरी कल्पद्रुम'

पाच हजार दोहा छंद के या ग्रंथ मे ब्रजभाषा में एक एक आखर पै अत्याक्षरी प्रतियागिता के प्रतियोगीन के हिताथ या बिसाल ग्रंथ की रचना करी गई है । कवि ने 'अत्याक्षरी कल्पद्रुम' का सबसे पहलै 'ह' व्यंजन से शुरू करी है । दोहा के अन्तिम वण सो कवि ने गिनती शुरू करी है । जैसे 'ह' अक्षर से दोहा को अन्तिम पद समाप्त होय है तो तैंतीस व्यंजन के हिसाब से ऐसे दू-दू जोड़ान से दोहा बनाये गये हैं । यथा दाहा के पदांत 'ह' को प्रम या तरिया है—

अ-ह, इ-ह, उ-ह, ए-ह, क-ह, ख-ह, ग-ह, घ-ह, च-ह, छ-ह, ज-ह झ-ह-ट-ह-ड-ह,
ढ-ह, त-ह, थ-ह, द-ह, ध-ह न-ह प-ह फ-ह, ब-ह भ-ह म-ह य-ह, र-ह ल-ह, स-ह,
ह-ह । या तरिया प्रत्येक व्यंजन के पदांत के 62 62 दोहान के हिसाब से 2790
व्यंजन के अरु 12 स्वर में प्रत्येक के 62-62 दाहान के हिसाब से 744 दोहा है ।
इनके अलावा 5 आदि जैसे कठिन व्यंजन के दोहा या अद्भुत ग्रंथ मे है । जैसे—
'पदांत' ह ने कछु उदाहरन देखी—

अ-ह

आधि व्याधि सो भरयो यह, विश्व प्रपच लखाहि ।
जो इनसों बचनो चहै, हरि चरनन चित साहि ।
आगत की स्वागत करत जो नहि हिये उमाहि ।
अस पाहन हिय के निकट, सुजन भूस नहि जाहि ।

इ-ह

इष्ट विना सब मिष्ट है केतहु जतन कराहि ।
विना लभ्य साधन न, कोउ तीरदाज बनाहि ।
इच्छा परतहि मुक्ति की मन अभिलाष पुजाहि ।
कमहीन के मनोरथ, मन के मनहि विलाहि ।

उ-ह

उलटे पथ प्रसार ना फूले अग समाहि ।
इन सुधारवादीन को अकर मुकर कहू नाहि ।
उठत न केते मनोरथ, दुबल के उर माहि ।
पै जल बुद बुद सरिस सब, उठ उठ तुरत विलाहि ।

ए-ह

एकहि रूप अनूप जो, प्रतिबिम्बित जग माहि ।
किंतु सखहि बुध बुद सो, मूरख जानत नाहि ।
ऐरे गर की कहा, विधि हू जाय थकाहि ।
मूरख कों उपदेश दै पण्डित कोन रहाहि ।

क-ह

काल बली सो बचहि की, जो जनम्यो सो जाहि ।
जो दसमुख बदी कियो, गयी ताहि ॥ खाहि ।
कमलापति की द्वार तज, दर दर बाद भ्रमाहि ।
नाम धेनु तज मूढ सो, छेरी फिरत दुहाहि ।

ख-ह

खल जम बीछू एक, सम याम नहि सदेह ।
बिन स्वारण मारग चलत, बीचक हो इस लेह ।
खूनस हिये जब सुभत है किहु विधि निकसत ताहि ।
अहि फण कटक लो, भल अग-अग गर जाहि ।

ग-ह

गणिका गणिक दुहुन मे भेद लखै कहू नाहि ।
दोनों ही पजाग की, सदा कमाई खाहि ।
गोली खाये हू लसे, लाखन बीर बचाहि ।
पै बोली की चोट सो, बचत न देखे जाहि ।

घ-ह

घरनी घर के द्वार लौं केवल सग निवाहि ।
परिजन भीत मसान लौ आगे बहू गो जाहि ।
घास पात लुन रात जो, तिनम इतो सनेह ।
पटरस व्यजन हूँ भसत, बादहि मानव देह ।

च-ह

चिबूष अघर नासा नयन, भूबुटि विलास अपाह ।
हु चित केसन भँवर पर, मन नहि पावत राह ।
चलत सलत पिडुरी यकी, सिधित भई सय देह ।
सऊ अजी ना लखि परयो वा प्रियतम की गेह ।

छ-ह

छिद छाती छलनी भई, रह रह निरसत आह ।
कल न परै पल एक हूँ धय धय यह चाह ।
छिद्र पराय सब सखै, निज औगुन न लखाहि ।
ज्या सोचन सबको सखै, निज को देख न पाहि ।

ज-ह

जाके जुता जार है, तासो सबहि डराहि ।
इकसी लपि लगूर ज्यो बानर जुय पराहि ।
जब लौं निज निज धम पै चलन दियो बिसराहि ।
तब सो दुख दारिद्र जग- दिन दिन बढ़ती जाहि ।

झ-ह

झूठ साँच कर जार धन मूरख मनहि सिहाहि ।
नष्ट भये ताके पुन, कर भोज पछताहि ।
झर छोटी मोटी सगै सो, जल सो बुझ जाहि ।
साग जो प्रलयागनी, कौन बुझावै ताहि ।

ट-ह

टूटे हिय पुन जुरत ना, लाख जनाहु सनेह ।
बीतराग है जो कदत, पलट न आवत गेह ।
टुटत तनिव सी ठेस सी, दरपन इक छिन भाहि ।
खात चाट पै चोट पै धिक हिय दरकत नाहि ।

ठ-ह

ठीर कुठोर न देखि हैं जलघर भरसै मेह ।
त्यो सत जन भाव सों, सब पै करत सनेह ।
ठसक-ठसक ह्री म भरत, फसन अभित बनाहि ।
घन कलजुग के सूरमा, नित उठ औपधि खाहि ।

ड-ह

डाट मुनत जाकी बडे, सूरन धीरज जाहि ।
घन तिनकी सतान को, अब श्रगास घुराहि ।
डार नवाहि फल भार सी, सतजन विभव नवाहि ।
खल जन सतत खजूर सम, अधिकाधिक सतराहि ।

ढ-ह

ढके दये हिय भेद कौं अश्रू प्रगट कर देह ।
अस घर के भेदीन को, रखै कौन कहू गेह ।
ढकत न तन ना उदर भर, दर ठोकर खाहि ।
ताप जो अपने बनत, निसदिन आख दिखाहि ।

त-ह

तुला धड़त ऊपर उठत, हलकौ अति गर चाहि ।
पे भारी भरकम सरिस, नवत भूमि सम जाहि ।
तन बल घन बल विभव बल जेते बल जग भाहि ।
तप बल के आगे सबे बल निरबल पर जाहि ।

ध-ह

धर धर कपित सबल लखि निवल निरख घुरीहि ।
 अस अवसर वादीन के जय भ्रमत ही जाहि ।
 धरित रह सब रवि धरिहु रति पतिह सरमाहि ।
 विधि गति इक दिन ताहि सो सधु सो सधु धिनाहि ॥

द-ह

दीनवधु बिन दीन की को करि सकै सहाहि ।
 ज्यो चातक की स्वात धन बिन ना तुपा युसाहि ।
 दावे दसत न काहु विधि जो मुख सो बढ जाहि ।
 ज्यो कस्तूरि सुगन्ध सत यत्न करे न दुराहि ॥

ध-ह

धन धन भारत के सुभट तुम सम जग कहु नाहि ।
 हितु भीषन की बात का अरिह अधिक् सराहि ।
 धम कम जो लो सुदढ तौली भय कछु नाहि ।
 बाही बल सो सुभट रण कासहु सो निर जाहि ॥

न-ह

ना तर एते कटु बनो सो भूक जो खाहि ।
 ना एते महु है रही सब जग दाँत गढाहि ।
 नाम भयो तो का भयो सार तत्व बछु नाहि ।
 ऊँची भल दूकान पै फीकी बस्तु बनाहि ॥

प-ह

पेट चपटन पर मनुज कहा न कम कराहि ।
 एत हूँ पै भली विधि सो कबहूँ न भराहि ।
 पश्चिम बतौ हूँ बड़ै पै पूरव सम नाहि ।
 प्रात होत पूरवहि सौँ गान मान प्रगटाहि ॥

फ—ह

फूट न फैलन दीजिये फँसे कछु न बचाहि ।
जानत जग-याने, दई, सुबरन लक जराहि ॥
फूले फलहि सदैव तरु निज रितु कालहि पाहि ।
प मूरख मानव किती बिन रितु काल उमाहि ॥

ब—ह

बाँबी-सूघी अहि बलै टेढी जगत फिराहि ।
धिक मानव जो मेह निज सूघी नाहि रहाहि ॥
बस-बस-टकराय वन-दावा सगै-जराहि ।
बैरी जब घर, ने बनै पुनि को सकै बचाहि ॥

भ—ह

भाँति भाँति के जगत मे रूप अनूप दिखाहि ।
थिर न रहत पै तडित लो चमक-चमक दुर जाहि ॥
भूल न अरि को छोड़िये छोड़े पुनि पछताहि ।
चोट साय के उरग लौ बदली अवस चुकाहि ॥

भ—ह

भाला फेरे होय का जो भन नाहि फिराहि ।
का कुम्हार कर पात जो निस चाक-झमाहि ॥
भोती किती अमोल है सब जग ताहि सराहि ।
धिक निफस्यो जा सीप सो तावे काम न आहि ॥

य—ह

यासों बढ़ जग दुख नही हिय धन मिल बितगाहि ।
माखन निकरे दूध की का महत्व रह जाहि ॥
यश मिलनो विधि मे लिख्यो जा तलाट मे नाहि ।
ता निरीह को हवन हू भरतहि-हाथ जराहि ॥

र—ह

रहे घम सब रहत अरु गये घम सब जाहि ।
 प्राण बिहूनी देह ज्यो टिकत न तुरत नसाहि ॥
 रूप ज्वाल सो विश्व मे बढ कोऊ ज्वाला नाहि ।
 मान ज्वाल परसे दहै, इहि दरसेहि दहाहि ॥

स—ह

सकुटि टेक मारग चलत ससिहु लेत कराहि ।
 धवन नैन पग थके प न गई चित चाहि ॥
 लोक साज कुल कान नहि पर सनेह ठहराहि ।
 कर कपूर केतिक जवन राखौ तज उडाहि ॥

स—ह

सोस जटा नल बर बडे अग भभूत रमाहि ।
 भार प्रहास्यन के बने बाबा मोज उडाहि ॥
 सांग सेल तरवार कौ जिहँ रच भय नाहि ।
 नन बान की चोट सो ते बिन मोत मराहि ॥

ह—ह

हरि सा हलधर है बडे की नहि जानते याहि ।
 समै परे हलधर हरिहि द है आसि दिखाहि ॥
 हेरत तुमको सब बिधा जान बित दुरजाहि ।
 रवि लखि जलज समान मुख आभासी प्रगटाहि ॥

‘अत्यासारी कल्पद्रुम’ में बरस अत्यासारी प्रतियोगीन तक की बात नाय अपितु साम हरेक दोहा में नीति अरु जीवन के विविध पन्थन में कवि ने विस्तार के संग खोल के घर दीनी है । जैसे मूल रूप से नीति विसयक जीवन का प्रबल अनुभव के निष्पत्ति की बेजोड़ प्रस्तुति या ग्रन्थ में आयी है । छोटे अरु बड़े अर्थों की व्याप्ति की जेई सबन से बड़ी पहचान है के छोटी छन छन में विचार बदले है सारी अपनी टेक में रपागे पाय अनुभव के या सत्य की वाक्य अभिव्यक्ति दसी—

खोटे और खरेन की अहे कसीटी एक ।
खोटी छिन छिन बदलि है खरौ न त्यागे टेक ।

दूसरे के गरीब घोट के अपनो स्वाय सिद्ध करिये बारे ससार के लोगन को कच्ची चिट्ठी खोलते भये कवि बताये हैं जब इनपे मुसीबत आवे है तो इनकू विधि की रेखान को स्मरण होय है—

घोटत गरीब निरीह की लागै नही निमेष ।
जब अपने सिर आय तो सुमरै बिधि की रेख ।

ठसक मे अकडे अहकारी लोग सदसीख मानवे मे अपनी तोहीन माने है । ऐसे हटी लोगन को का गति होय है । तुमई पढ़ ल्यो—

ठसक भरे घूमत सदा, मानै ना सद सीख ।
ऐसे मूढ हटीन की भगि, मिलत न भीख ।

अगर बालक नू बालपने मेई सस्कारी बनायी जाय तो ई नू देस की सही भावी नागरिक बन सके । राष्ट्र समृद्धि के या सत्य नू देखी कवि ने अपने अनुभव के आलोक सों जा तरिया प्रकट करी है—

डार डार सींचत कहा, मलहि काहि न देख ।
जो मूलहि सींच सखि, सै फल फूल बिसेष ।

मूरख की परिभासा के सदभ मे देखी कवि की कथन—

तोता की सिखवी जिती, ते तो ही मुखभाख ।
रयो मूरख गुन सकत ना, भलै पढाओ लाख ।

आजकल भीत से लोग ऐसे होय हैं जो थोरो सों श्रम करके समाज के बीच मे अपनी साख बनाय ले हैं अरु समाज के बिस्वास के आधार पे जाए ये लाख पाप करे फिरक लोगन को ध्यान बाकी बुराईन की तरफ नाय जाय । आधुनिक समाज के या सोच पे देखी कवि की टिप्पणी—

थोरी थम कर आदि मे, जमा लेत निज साख
पुनि कोऊ पूछत नही औगुन करै न साख

गांधी जी की आँधी ते श्वेत शीतान अर्थात् अ ग्रेजन के सुनहरे सुपने कैसे भग भये हैं। कवि की भासा में सुनी—

गांधी की आधी चली भयी देख जग दग,
भये श्वेत शीतान के स्वप्न सुनहरे भग—

हिंदी के प्रति कवि को उत्कृष्ट प्रेम की झाकी देखी—

हिंदू है जाकी नहीं, हिंदी सो अनुराग
ताके सब ही वृथा तेज विभव बल त्याग

‘आधर कल्पद्रुम’ निश्चित ही एसा महान ग्रंथ है जामे आधर प्रतियोगिता में सफलता के सग सग जीवन में प्रगति प्राप्त करिब के सग मानव के करणीय प्रसंगन को मफल धिक्कन कीनी गयो है। एसा दुलभ विसाल ग्रंथ प नंदकुमार जी की उद्भट काव्य प्रतिभा की सटीक प्रमाण है।

तीसरो पण्डित जी का करीब पाच भौ छंदन को विसाल ब्रज काव्य ग्रंथ है भरतपुर की पंचमय प्रामाणिक इतिहास। या काव्य ग्रंथ को कवि ने भरतपुर नरेशन के नाम पे भलग भलग सगन को विभाजन कीनी है। ग्रंथ की प्रारम्भ है छप्पन छंदन में नृपति ब्रजेन्द्र के रूप में श्री कृष्ण की लीलान की आराधना के सग भयो है। अस्तु,

जै जै जै गिरधरसरन सुभ असरन जन के।
जै वंदारक बंद वध्य हिय धन ब्रज जन के।
जै व दावन बंद जयति ब्रज बीधि बिहारन।
जै नटनागर स्याम जनति इच्छा वपु धारन।
जै जमुदा के साडसे तीन लोक तारन, सरन।
जै-जै नपति ब्रजेन्द्र की ज, जन के सकट हरन।

अगरे छप्पय में जे वसुधा आधर जयति ब्रजभूमि, सुपावन जै जाकी सिर मुकुट भरतपुर मुनि मन भावत’ बरु ‘जै वीरन की खान सतन अरि हृदय कपावत’ कहके वीर प्रभुता भरतपुर की धरती के आज की अभिनंदन कीनी है। इस परिचय, महाराजा बदनसिंह, श्री महाराजा सूरजमल श्री महाराजा जवाहर सिंह, महाराजा बैसरी सिंह महाराजा रणजीत सिंह महाराजा रणधीर सिंह, महाराजा बलदेव सिंह महाराजा बलवत सिंह, महाराजा जसवंत सिंह महाराजा रामसिंह, महाराजा कृष्ण सिंह, महाराजा मुनेन्द्र सिंह के रूप में ई काव्य ग्रंथ 12 भागन में विभाजित है। इस परिचय

सूदन के 'सुजान चरित्र' के बस परिचय भाग ते लीनी गयो है। अन्तर इतना है के सूदन ने जो बात बस परिचय में कही है पण्डित जी ने वाय बदनसिंह सीसक में कही है। कवि की भासा में स 1703 में बदनसिंह ने जयपुर नरेश सवाई जयसिंह के सग कुम्हेर के महालात बनवाये¹ अरु स 1807 में डींग के भवन अरु बिले की नीम डारी।² बदन सिंह के छब्बीस पुत्र भये सोस बीस बचे जिनमें सूरजमल सबन में प्रबल प्रतापी है।³ बदन सिंह के समस्त पुत्रन के नाम अरु डींग में बिनके सासन प्रबन्ध आदि को यामे बनन है। या ग्रन्थ की भासा में बदन सिंह ने 37 बरस तानू राज कीर्नी अरु स 1812 में बिनको स्वगदास भयो। श्री महाराजा सूरजमल में सबसी पैले छप्पय छद में श्री कृष्ण की धीरता को उल्लेख करते भये 'जै जै नृपति बजेद्र की जे जन के सकट हरन' पक्ति ते श्री कृष्ण अरु 'नृपति बजेद्र' के रूप में भरतपुर नरेश की प्रसस्ति करी गई है। या ग्रन्थ में कवि ने स 1821 में सूरजमल को सिंहासन आरूढ बताया है। प्रथम मेवात युद्ध, स 1805 के सलावत खान के युद्ध को को प्रसंग आदि के रूप में आठ युद्धन को यामे तिथिवार वर्नन कियो है। पानीपत की तीसरी सड़ाई अरु स 1820 की दिल्ली के रूहेसन के सग सूरजमल के युद्ध को यामे बनन है। पौष कृष्ण तिथि द्वादसी स 1820 में सूरजमल की कवि की भासा में युद्ध के मैदान में या तरिया मृत्यु भई—

श्री ब्रजेस धन कौं चले कर मृगया को ध्यान ।
हीनों ही या खेत में ब्रज रवि की अवसान ।
भागत भागत यवन सैन पहुँची तहें आई ।

1 सवत नभगुण ताल ससि मिल जयसिंह के साथ
बिना महस कुम्हेर में बनवाये ब्रजनाथ
—भरतपुर की इतिहास—पाण्डुलिपि सौं

2 सम्पत ताल अवास वसु चंद चार मन मान
डींग भवन अरु किले की डारी नीव निदान
—भरतपुर की इतिहास—पाण्डुलिपि सौं

3 अल्प आयु में चार सुत भये काल के प्राप्त ।
क्षेप रहे वर बीस जो तिनको यह इतिहास ।
प्रबल प्रतापी सबन में सूरज मल्ल कुमार ।
जग जाहिर जाकी विक्ट अरि मदन तलवार ।
—भरतपुर की इतिहास—पाण्डुलिपि सौं

परै तहा प्रजराज करत भृगया दिखराई ।
 कियो भती मित सवे न ओसर चूको भाई ।
 सदा-मदा की बैर आज मब लहु चुकाई ।

महाराजा जवाहर सिंह की सुरुआत कवि न पूव के भागन की तरिया श्री दृष्ट ए की वास्तवोचित लीला के छप्पय म 'जे नटवर घनस्याम जसामति अजिर बिहारी', 'जे ब्रजजीवन प्राण जयति जय नाय नयैया', ज जे मात्वन चोर प्रभु अमित ललित लीला करन जसी भामा के प्रयोग सो करके अखीर म 'नृपति बजेन्द्र' की 'जम के सकट हरन' के रूप मे उल्लेख कीनी है । जवाहर सिंह ने फारुखनगर म पिता के देहान्त क समाचार सुनतेई 'खाम तरारो' बे 'अज देस पघार' अरु 'विधिवत कर सब काज राज के भार सभारे ।' ॥ 1820 म जवाहर सिंह ने राजगद्दी प्राप्त कीनी ।¹ या पाछे कवि जवाहर सिंह द्वारा पिता के सामे करे गये युद्धन को वनन है । 'घासहरे मे प्रथम जाय निज शोम दिलायो', पुनि दिल्ली रखेत कठिन लाखो खटकायो' निज भुजबल मो' बलूची मार के भगाम दिए अरु जिनको सिंगरो राजपाट छीन लीनी । अज्जर फारुखनगर अरु पटौदी नगर युद्ध म जीते । इन सहरन मे कवि की भासा म आजक या वीर के स्मृति बिहू हैं, जाके प्रति सिंगरो ससार सीस नवावे हैं ।² जवाहर सिंह के फिर के बेरीन त बदलो लैव की प्रतिज्ञा की कवि ने उल्लेख कीनी है ।³ कर यवनन मद चूर बाप की बैर चुकाऊ' अरु 'बिना बिजय दिल्ली किए सीस ताज नहि धारि हो' आदि काव्य वाक्यन सों कवि ने इतिहास प्रमिद्ध जवाहर सिंह के दिल्ली आक्रमण की मन स्थिति क खुलासा कीनी है ।

कवि ने बताया है के जवाहर सिंह क सग या युद्ध म जाट-सिख अरु मराठन सहयोग दीनी हो । नजीबुद्दीन मल्हारराव की मन्व्यस्थता लै जवाहरसिंह की शरण मे जब पहीच गया तो लूट बंद को हुक्म तब दिय बजेस हरमाय' तो या युद्ध की समाप्ती भयी । जवाहर सिंह के दिल्ली के आक्रमण की व्यस्तता त लाभ उठाय के दृष्टाराम अरु

- 1 मन्वत नम भुज सिद्धि ससिलयी राज की भार ।
 बदमो अरि सा जेन की कीनी मत निरधार ।

—भरतपुर की इतिहास—पाण्डुलिपि सो

- 2 बिहू स्मृति भर वीर के, अजो जगत विख्यात है ।
 सति जिनको जग जन सबस, निज निज सीमो उवात है ।

—भरतपुर की इतिहास—पाण्डुलिपि

उदयसिंह ने नाहरसिंह कू अपनी तरफ मिलाय लीनी । पेमसिंह मुल्तान न बीस हजार सना लैके पिचूना लूट लीनी । गूह कलह के समाचार पातेई जवाहर सिंह युद्ध कू तत्पर है गयो । रूपवास के पास मे नाहरसिंह अरू जवाहर सिंह को भयकर युद्ध भयी । कृपाराम ने गुसाइन सो महायता लीनी अरू वितकू जवाहर सिंह ने नागा साधु लटवे कू आमन्त्रित कीने । नागान के घ्यानदाम सेनापती की गुसाइन की सना सो जबदस्त भिडत भई । गुसाइन के मुख्य मुख्य सरदार मारे गये । नाहर सिंह युद्ध के मैदान सो भाग के जयपुर आय गयो । जयपुर म नाहर सिंह की मौत है गई । जवाहर सिंह की अटेर भिण्ड बालाजी, कालपी, महुआ आदि के युद्धन को उल्लेख है । कामा कू लके जयपुर नरेस अरू जवाहर सिंह के मतभेद, पुष्कर स्नान, जयपुर युद्ध आदि को कवि ने उल्लेख कीनी है । स 1825 सावन मास की पूनी के दिना किले के निरीक्षण के समे सन्तु ने जवाहर सिंह कू धोखे ते मार दीनी । जा तरिया स वि 1825 सावन मास की पूनी के दिना किने के निरीक्षण के संगे सन्तु ने जवाहर सिंह कू धोखे ते मार दीनी । जा तरिया स वि 1825 पूनी सावन मास कू ब्रज पुन अनाथ है गयो ।¹

महाराजा रतनसिंह भाग मे प्रारम्भ के वदना के छप्पय मे थीवृष्ण अरू 'जै ज जै वधभान भूप तनया पावनि जे ब्रजेस की आदि सक्ति ब्रजबीध बिहारनि, ज जै राधा नागरी तीन लोक तारन तरनि द्वारा आदि सत्की की आराधना करके छप्पय की अन्तिम लाइन मे भरतपुर नरेसन को उल्लेख कीनी है । 1825 वि मे जवाहर सिंह की मृत्यु पाछे बिनको छोटी भया रतन सिंह गद्दी पे बैठी ।² रतन सिंह ने एक बरस राज कीनी³ कवि ने रतन सिंह कू व दावन के एक गुसाई द्वारा छल कपट करिबे को उल्लेख कीनी है । गुसाई ने रतन सिंह कू मौत के घाट उतार दीनी ।

- 1 साल भूत भुज याम ससि आवन पूनत जान
कर अनाथ धरा को र्यो अथयो ब्रज भान

—भरपुर की इतिहास—पाण्डु

- 2 अठारह सौ पन्चीस म, रतन सिंह महाराज
भ्रात जवाहर निधन सुन, घर्यो भरतपुर तज

—भरतपुर की इतिहास—पाण्डु

- 3 एक बरस सो योग के, पूरण सुव की साज
स्याम्यो मश्वर देह श्री रतन सिंह महाराज

—बूई—बूई

[आखर आखर अनुराग]

रतन सिंह की मृत्यु पाछे स 1826 कू जवाहरसिंह के पुत्र कैसरी सिंह राजा भये ।¹ स 1833 म कैसरी सिंह की चेचक सों मौत है गई है ।² महाराज कैसरी सिंह सोसक म पण्डित जी न भरतपुर राज्य की ऊपल पुषल अरू गद्दी प्राप्त करवे की राजनैतिक चालन को विस्तार ते उल्लेख बीनी है । याई सभे जवाहरसिंह के भैया नवल सिंह अरू बाके सग रणजीत सिंह की युद्ध भयो । नजफखाना को आमरण, समरू की साना के युद्ध के क्रिया कलाप, राज परिवार को आंतरिक बलह आदि के विस्तार ते उल्लेख या स्थान पे कवि ने बीनी है । कैसरीसिंह की मौत पाछे स 1834 मे जवाहर सिंह को सबन ते छोटी भया गद्दी प बैठी । रणजीत सिंह के सरी म दीग मे सनिक उत्पात मैया किसोरी के सग रणजीत सिंह को नजफखाना ते मिलबो ।³ मिरजा गफी कू दिल्ली की बजोर बनायो जाय है । इस्माइल बैंग ने पढयन करके शफी कू मार डारो आगरा त्वालियर को घटना चक भरतपुर बं इन बुमे दिनन म रानी किसोरी की रणजीत सिंह के सग मधुरा म सिधिया सो मिलनो । सवत 1843 को जयपुर को तोंगा युद्ध । रणजीत सिंह अरू साड लक को युद्ध एव अग्रेज अरू भरतपुर नरैस म भई सधी को या प्रथम म विस्तार ते उल्लेख भयो है । अगरेजन ते कवि न तीन जनवरी 1803 के साड लेक के भरतपुर क पैले आक्रमन को या तरिया बनन क्यूँ है—

तीन जनवरी के दिवस लियी भरतपुर बेर ।
रह अवसर की ताक म करी चार दिन देर ।
प्रलयकारी युद्ध सात सो लेक मचायो ।
पै नी के मध्याह्न तलक रघुनाथ न आयो ।

1 सवद ऋतु भुज सिद्ध ससि भये कैसरी भूष
वीर जवाहर सिंह सुत लघु बय परम अनूप

—भरतपुर की इतिहास — पाण्डु

2 है चेचक की रोग ठारह सो तेतीस मे
द परिजन को सोन स्वय सिघार बंसरी

—भरतपुर की इतिहास — पाण्डु

3 मातु किशोरी सग ल जाय नृपति रणजीत
नजफ खान मों भेट निय स्वागत नियो सप्रोत

—बई

चारों तरफ विकराल तोप चलने लगी । विचारे गिरिराज के रक्षा इन तोपन को कहा तानू सामनो कर पाते । नो तारीख की सजा सात बजे परकोटा तोरवे कू मारी सैना भेजी ।¹ भरतपुर धीरन्ने अंग्रेजन कू मार वं भगाय दियो । पाव सौ अंग्रेज या हमले मे मारे गये । दूसरे दिना दूटे किले की मरम्मत करी गई । फिर 16 जनवरी कू साढ़ लेव न दूमरो आक्रमण कीनीं । या आक्रमण म किले को कछू भाग दूट के गिर पडो । 17 कू पुन आक्रमण । किले को दूटो भाग ठीक कियो गयो अठारह तारीख कू आगरे ते स्मिथ सैना सैक अंग्रेजन की सहायताय आय गयो । याके सग तीन सौ गोरेन की पलटन ही ।² इक्कीस तारीख कू नसैनी पै ते किले पै बढते सभे लेफ्टिनेंट मोरिस के राग मे गोली लगी । जाघ मे घाय के कारन जैसेई छू लौटवे लगा तो याकी गदन पै एब गोली और लगी अर मोरिस को प्राणान्त है गयो ।³ अंगरेजन की बुरी हालत देखके कप्तान वेल्स ने सैनिक साजो सामान सैके भरतपुर की तरफ आयवे लगी । औसर देख के अमीर खान न वाय घेर लीनो । जैसे तेईस तारीख कू नू लौटवे लगे । तुरत बनल नोड अंग्रेजन की सहायता कू आगे आयो । या युद्ध म अमीर खान के छे सौ सैनिक मारे गये । एक एक दिना के युद्ध को विस्तार के सग या ग्रंथ मे उल्लख है । स 1826 कू रणजीत सिंह को स्वगवास भयो ।

स 1826 कू पोप कृष्ण तिथि कू रणजीत सिंह के जेठे सुत रणधीर सिंह गद्दी पै बैठे । नये नरेम ने कुसलता से सासन प्रबन्ध सभारो अर जवाहरलाल नामक व्यक्ति कू अपनो दीवान बनायो । इक दसै वेतन बढवे मे देर है गई तो राजा ने तुरत दीवान

- 1 घली तोप विकराल घो गजन तजन कर
जब रक्षक गिरिराज दानु कर सकै कहा पर
नो की सध्या समय सात बजिरे जब आये
परकोटा विध्वंस करन भट लेक पठाये

—भरतपुर की इतिहास

- 2 राग मे पलटन तीन अर सौ गोरे है जवान
मिल्यो लेव सौ आयकें की हो धैय प्रदान

—भरतपुर की इतिहास

- 3 घाय खाय घायल भयो लोटन लग्यो तुरत
गोली ग्रीवा मे लगी भयो तहा ही अत

—भरतपुर की इतिहास

कू निज़ार के स्थिति में सुधार कीनी। स 1836 में मोतीराम नाम के व्यक्ति कू नरेय ने लाठ लक के पास भेज्यो अरु सहर में कोतवाल बनायवे की आग्या प्राप्त कीनी। रणधीर सिंह न गावरधन में अपने पिता की म०य छतरी बनवाई। रणधीर सिंह की मृत्यु पाछे बल्देवसिंह गद्दी प बैठे बल्देवसिंह रणधीरसिंह के छोटे भैया ह। रानी न रणधीरसिंह कू राजा नई मानो अर कोस की चानो सके वदावन चली गई। बल्देवसिंह को जल्दी निघन है गयो। बलवत सिंह बालरू हो। या बारन अनक सेनापती न सासन तत्र अपने हाथ में लनो चाहो। स्वार्थीन की बाल अर बलवत सिंह के हितमीन द्वारा तरकीब ते अग्रोजन की सहायता सो पड्य वन प विजय पाई जाय सरी। स 1835 कू बलवत सिंह कू शासन के अधिकार प्राप्त भये।¹ गंगा मंदिर अर जामा मस्जिद के निर्माण की सुरुआत भयाय अफसरन कू हटानो अपने पिता की गोवरधन में छतरी बनवायवे की बनन है। स 1907 कू बलवत सिंह को अ म अरु स 1909 में बलवत सिंह की मृत्यु की सूचना या पय म। स 1910 को भरतपुर की विपत्ति घाऊ गुलाबसिंह नृप के रक्षक बने।

हैनरि लारेंस को भरतपुर आगनम, डीग-भरतपुर में अदालत की स्थापना रदा-वल की बगावत दबानी। बाबू डाक्टर भोलानाथ को राजा की शिक्षक नियुक्त करनो। भरतपुर की बोबरी अग्रज नयो एजेण्ट बनके आयो। सन् 1865 में भरतपुर में रेल आई। सन् 1871 में बलवत सिंह कू पूण राज्य अधिकार प्राप्त भये। सन् 1886 कू कछु गाम खालसा कीने गये। पथेना वासीन याको घोर विरोध कीनी। पथेना युद्ध की कवि न यहाँ ह छदन में सूचना दीनी है। सन 1893 कू रामसिंह गद्दी प बैठे। 1899 में किसन सिंह की जनम भया। रामसिंह के पागल हूवे पाछे किसन सिंह गद्दी प बैठे। सन 1919 में भरतपुर में उरदू लिपि समाप्त कर नागरी हिंदी कू राजकाज की भासा बनायो गयो। सन 1927 में हिंदी साहित्य सम्मेलन सन 24 की भीषण बाढ, 22^म राज माता को स्वगवास बक की स्थापना प्राथमिक सिच्छा की अनिवार्यता, 1922 कू ब्रजेद्रसिंह की जनम। सन 1929 में वतमान नरेश ब्रजेद्रसिंह गद्दी प बैठे। ब्रजेद्रसिंह की मैसूर में भये व्याह की सूचना के सग पण्डित जी को जि पद्यमय इतिहास समाप्त होय है। जि पूरो ग्रंथ निमग व्रज भासा में लिखो भयो है। ग्रंथ में दोनी गई ऐतिहासिक तिथि अरु सूचनान की परख करबो इतिहास बेतान को काम है।

पद्यमय इतनी विस्तार से ऐतिहासिक दस्तावेज स्यात सूदन के पाछ पण्डित नन्द कुमार जीर्नई लिखो है। एक एक घटना की तिथिवार आदि या ग्रंथ में दीनी गई है।

ठारह सौ पैंतीस सुभग सन् ज्यो ही आयो
पूर्णाधिकार नवति बलवत सिंह न पायो

—भरतपुर की इतिहास पाठ

रणजीत सिंह अरु अग्रजन्त के युद्ध की एक-एक घटना अरु यौद्धिक मोर्चेबाजी की विस्तार से सूचना या ग्रंथ में भई है। इतिहास की दृष्टि से 'भरतपुर की इतिहास' पर्याप्त उपादेय सामग्री प्रदान करे है। अबई जि ग्रंथ पाण्डुलिपि में बन्द है। प्रकाशना पाछे यापै ऐतिहासिक विवेचन होगी। दुर्भाग्यवस प नन्द कुमार शर्मा के या दुलभ ऐतिहासिक पद्यबद्ध ग्रंथ के विसैं म एकऊ पक्ति नाम लिखी गई। हमन पैली दर्फ याय पढ़वे ग्रंथ के कछू निष्कस प्रस्तुत कीनैं हैं।

प नन्दकुमार जी की 'उदव गोपी कुब्जा क्षतक' नाम की बड़ी भावनामयी कृती में प्रेम की यणन कछू परम्परा से हटके एक् नई चालगी अरु नये तेवर के सग कीनी है। गोकुल के प्रेम की बहानी को भक्तिकाल तेई कविनैं अपने अपने भावन के अनुसार धनन कीनी है। रीतिपाल म या प्रसंग कू लने भोतेरे सतकळ लिखे गये हैं। ज्यादातर सतकन के प्रसंगन में कृष्ण अरु ऊधों के सवाद ऊधो को व्रज आगमन, प्रेम भूल के निराकार की अराधना को ऊधो द्वारा गोपीन कू सदेस गोपीन द्वारा ऊधो कू प्रेम की महत्व बताते भये निराकार का उपहास, गोपीन के प्रेम से प्रभावित हैकें उदव द्वारा कृष्ण के सामे गोकुल के प्रेम की प्रससा। ये कछू प्रसंग हैं बाके आस-पास व्रज के या दिव्य प्रेम कू साकार करिखे कू उदव सतक लिखे गये हैं। पर प नन्दकुमार जी को उदव गोपी प्रसंग नई पैली अरु नये विवेचन के आलाक में लिखी गयो है। या रचना के प्रमुख पात्र तीन हैं—पैली गोपी—दूसरे उदव अरु तीसरी कुब्जा। पण्डित जी के सतक में कुब्जा बाका-यदा एक् प्रमुख पात्रा के रूप म गोपीन के प्रेम को उपहास करै है। कवि ने गोपीन के प्रति कुब्जा के उपहासन के विविध प्रसंगन के माध्यम से प्रेम की तीव्रता को एक् नये तेवर के सग या कृती में चित्रन कीनी है। स्यात याई कारन पंडित जीने या कृती को नाम 'उदव गोपी कुब्जा क्षतक' दीनी है। 'उदव गोपी क्षतक' में कुल 95 छंद हैं जाम 86 मनहरण कवित्त अरु 9 सर्वाय हैं। कृती की सुरुआत श्री कृष्ण की वदना के सग भई है। गोपी सीधी बूबरी को उत्तेस करकें कृष्ण कू फटकारते भये अपा नेह कू उजागर करै है। नेह के या तरियाँ के प्रसंग जीवन म बा समे आवैं हैं जब व्यक्ति प्रेम के आनन्द की परानाष्टा पै पहुँच जाय है तो आराध्य या प्रेमी की निदा से बाके मन के अनुराग की पीयूषधारा अनायास मन के बाँधन कू तोड़के एक् सग प्रवाहित है उठे है। देखी उदाहरन—

दूकन पराये एक छैल परे नन्द गाम,

सेवा असवेसी एक कस की बजाई है।

एक चोर चोर दधि गारस पुरायो मदा,

साख पर घाले एक पूरी हरजाई है।

एक तो त्रिभगी लखि कोटिन अनग राज
 दाय कूब एक नौ रती हू सरमाई है ।
 कहीं लौ बडाई करै तेरी बिधि बारम्बार,
 खूब का हू कूबरी की जोड़ी मिलाई है ।

पंडित जी की गोपी स्पष्ट कह हू कि 'कूबरी कसाइन करेजा बाढ सीनी है' भए हमारे प्रिय त 'कह्यो सदा हो बिदव गोपीनाथ राधानाथ, काटि हू उपाय कुञ्जानाथ ना कहावगो', बीके 'तुम तो सखा हा तुम्हें स्याम सोह साबो कहो, कौन गुन कूबरी म काहा लखि पायो है' वू 'राधे का विचार आप रीझ्यो रिझवार स्याम वा कुञ्ज क कूब पै करोह काम बारि है हमारे प्रिय न 'कूबरी मिलारिन को काहा दान दीनी है।' हमारे प्रिय की सो सीसाई जलब है जाकी कोव आघी ताहि त्याग क सिधायो तुत' बिचारी ब्रज यनितान की तो बात ही बहा है ऊधो ।'

या रचना म तर तरै ते ऊधो कू योग क विन फटकारवे के सब सम गोपी कुञ्जा कूबरी कू ऊधो के साथी भोतई भलो सुरी बहे है—कूबरी कसाइन, कुञ्जा ठकुरानी', 'कूबरी सीत', कूबरी ही दासी एक कस बी 'कूबरी की कारी करनीन का कह्यो है', कुञ्जानाथ बनके सनाथ', का हू त्रिभगी है तो कुञ्जा बिकलागना, कुटिला कूबरी के का कारिन लगाई है आदि सम्बाधन सौ गोपी कुञ्जा की उपहास कर है । हमारा निबदन हो के पीछा बी पराकाष्ठा पै बानी त दुस जा सीवता के सग उपकारन के उल्लस क सग प्रकट होम है बाकी एह सफल बानगी दखी पण्डित जी के नीचे लिखे या रचना के एह छंद म—

जाकी बाव जायो ताहि त्याग के सिधायो तुत,
 भूल हू न बीनी मुधि तनिय बिचारी की ।
 सर पय प्यायो बढ आवन लडायो जानें
 एगी नन्दरानी की हू आछी भनुहारी की ।
 ब्रज यनितान की तो बात ही बहा है ऊधो
 दया बा बहिय थयमानु की दुलारी की ।
 बर सै गुमान प्यारी चार दिन मान पाय
 कुञ्जा ठकुरानी तू बहावनें बिहारी की ।

बसि न 'तमपे तिन रज जन पनीना पर बहू, बिदम विभाग की बिधा सों बितसावे है, कूब कूब बाबिस करजवा जरायो है', 'धीनन मुनात सग चाहो की सुरीसो सान', 'न ही है बालिंदो कूल ध हो बसि कुज पुज तिनम बहो की खब असख जगायो',

चेली बनी डोलें सब बालानन्द लाला की', 'कोड़ी के मोल कोऊ ब्रज म अब पूछै नाहि'
जैसे वाक्यन को प्रयोग करके पण्डित जी की वियोग में डूबी गोपिका अपनी हृदय निवार
के या तरिया घर दे है—

प्रेम पाठगाला की यह चेसी नन्द लाला की,
बनी ब्रजवाला है रीत अनरीतिन मे ।
छिन न भूलैं हैं चाहि प्राण हू हवैं हैं भलैं
बोरी बनी डोलैं देखो कैंसी निसीयिन म ।
ऊधो यह सूघी स्याम कैंसी हू बलाच बनै,
आनो ना यहाँ है कोऊ ऐसी कूटनीतिन मे ।
रखी योग पारध सँभार भली भाँति लगै,
विषम वियोग बडवागि ब्रज गोपिन म ।

ब्रज में चतुर्दिक् फैली बिरह की बडवागि कू केवल स्याम घनई बुझाय सकै है ।
स्याम के वियोग में रोमन्ती-बिलसती प्रेम के सागर में डूबी गोपी की दाखन दसा देखो—

वे ही हैं कालिंदी कुल वेही नेलि कुज पुज,
बिना मन मोहन के उड उड खाइनी ।
जोहत सचाह बाट बासर बिसास ऊधो,
तारे गिन फाटें रात रो दुलहाइनी ।
कैंसी बरै कहा जाय कासों कहे कोन सुनै,
काढयो है करेजा क्रूर कूबरी कसाइनी ।

गोपीन के मन की पीढा कू कवि ने एक दूसरे भाव ते या तरिया प्रकट करके
अपनी काव्य प्रतिभा के आकास को स्पस कीनी है—

गोरस माखन आदि खवाय के पुष्टि कियो जिहि की बड धायन ।
मान तज्यो कुल कान तजो न मुरयो मन नैक घनेर चवायन ।
त्याग गयो गू गयो ब्रज को भल भूल गयो इन गोपिन गायन ।
ऊटाव स्याम की सोंह गुम्हें कहु रीसिगी कूबरी के किन भायन ।

पण्डित जी ने अपने उद्धव दासक के अंत में कुब्जा को कथन लिखी है । जैसे आप
कोई कू खरी खोटी सुनावें अरु बू बाय सुनके सामे बारे की बमीन कू बताते भये अपने
व्यवहार अरु मत्त को तात्त्विक समझन करें । बछू या तरियाँ को विवेचन नन्दकुमार

जीने अपने उद्धव मतक म 'कुञ्जा द्वारा उत्तर' मोमक म कीनी है, चाऐ मू कूबरी है, चाऐ काहू सो प्रेम करवे बारी है पर गोपिन की तरिया न भू ब्रज घोपिन म बाहू छबील द्वारा पेरी गई है, न चू काऊ के अधरात को स्पस करिव कू केसि कुञ्जन म मारी मारी फिरती रही है न बानी के जालन सो बाने अपन आराध्य से मिलव कू पुत्र, पति अह सास कू अमित कीनी है, अह न ई तू हाल बहाल भयी समाज न बीच लजाई है, नई बाने पुन की मर्यादा की त्याग कीनी है ।¹ कुञ्जा गोपीन कू गूब डन्के खोटी खरी सुनायवे है के तुमर पहल सो अच्छी भौत श्री वृष्ण कू रखी नाय भव व्यय म झुझरायवे सों का फायदा है । मैं कोई गुर की पुआ ता हतू नाय जाय जब चाहा गरे त निगल जाओ । तुम्हारे नैनन के निबारे ते ह्या कौन डरप है । अर ! बाबरी गोपी अब मिसबाय ते का काम बन सके है । अब तो चिड़िया सेत कू चुग गई । अब पछताये ते का हाम है । सपपुक्त भाव म हमो कवि की वधन दत्ती ।

आछी भौति पहिले अहैर के रडयो ना बाहि
हो नो हो कहा है अब झझर उताये ते ।
गुड की है पुआ को निगल जाओ जाहि श्रट,
डरप हहा है कौन नैनन निकारे ते ।
बाबरी बनी हो खिसियाये त न काम सरै,
अब तो बनेगी बात मन की सँभार ते ।
चुग चुक सेत जब चिड़िया चहू लग मा,
हाथ कहा आव फिर औरमान तारे ते ।

मारीगन परस्पर डाह सो उत्पन्न बाग्विलास की भगिमान कू कवि ने या इति म विभिन्न आयामन ते मजाया सँवारी है वू देखत इ बने है । गोपीन के कुञ्जा के प्रति

- 1 कूबरी हू कूबरी हू चेरी चाहि काहू की ह
पेरी न गई बन बीम बभू खालन सो ।
भाजती फिरा ना अधरात केसि कुञ्जन म,
पूत पति मास भगमाय ना जालन सों ।
प्राप्त होत आदिना कबहु रति चिह्न लिम,
मातह सजाई बभू हास बेहालन सो ।
बहि वा बनी हो बाज गार कुल जान साज,
मूसो सा ब्रज वृज पुज पुजन तमालन सों ।

—उद्धव गोपी कुञ्जा सतव-पाण्डुनिधि सों ।

कथन, 'कहै सध बिन्द गोपीनाथ राधानाथ कि तु दासीनाथ कुञ्जानाथ ऊधो को कहात है' या 'वहैगो सदा ही बिन्द गोपीनाथ राधानाथ कोटि हू उपाय कुञ्जानाथ ना कहावैगो, जैसे गापीन को जवाब कुञ्जा बड़ी कुसलताके सग देती भई फटे है के कोन कह सके है के वृष्ण कू गोपीनाथ या राधानाथ । या रचना म ऐसी लगे है के एक तरफ गोपी अरु व्रजवासी हैं अरु दूसरी तरफ कुञ्जा है । दोनोंन के अपने अपने तक है जाते दोनू स्वय कू सही समझे हैं । उपयुक्त सन्दर्भ म अब आप देखो कुञ्जा की कथन —

कबै गहनाई बजो कहौ तो बरसाने म,
कोन सी तिथी कौं कर लगन घरानी है ।
कोन घूम घाम और घोसन पै चौब परी
कोन सी बरात नग्नगाम सो चढानी है ।
कबै भये नेगाधार भौन वृषभान जू के,
आगें बढ कहौ कबै भई अगवानी है ।
कोन सो हिसाब जासो खाओ पेच ताव एते,
कोन घर घाले ते बनै ना महारानी है ।

गोपी बियोग की व्यथा की गहराई मे डूबके कवि की भासा मे स्याम के सखा ऊधो कू कह है—'तुम तो सखा हो तुम्हें स्याम सोंह साँची कहौ, कोन गुन कूबरी मे बा हा लखि पायी है, 'छाछिया भर छाछ पै रिरयाती रह्यो ऊधो जो, आज बही मथुरा ब'यो महाराज है', 'कूबरी कसाइन करेजा काढ सीनी है' 'कूबरी भिखारिन को काहा दान दीनी है 'कुञ्जा कृष्ण चन्द्र ही को गहन सगाई है', एक बिरह दूबरी दूजें ऊबरी तीजें कूबरी है सौत बस अत आज आओ है' 'ऊधो जाय कहियो बा कुञ्जा के सघाती सो पाती प्रिय पठाई कै करेजा की काती है' जाओ जगदास सुर मुनि गन आस करें, मोई अब बहास बहा दास की दास है । यदि काव्योक्तीन के सग गोपी कुञ्जा कू जन्म के भलो बुरो कह है सो दूसरी तरफ मे श्री कृष्ण कू फटकारे है — 'रमे रगरेसिन मे नागरि नवेलिन मे वरु ब्रज बालन ते रहत उचाट है', 'हाँसी सी कराय प्रेम फासी सी लगाय ऊधो निठुर बनमाली मधुपुर सिंघायो है 'मोहन कहात पर मोह को न 'केकाम' जानेपय प्यायो तिन सुधि विसराई है, मथुरा मे चाहे जन्म गात ना अघात जाको' जैसी काव्य की बानी सो श्री कृष्ण कू डाटे हैं । कुञ्जा गोपीन के एक एक कथन को या कृती मे बढा सोतिया सारगर्भित उत्तर दे है । कवि सोतिया नारी विज्ञान को या स्थल पै बढोई मनोहारी चित्रन सीचो है । गोपीन कू कुञ्जा जवाब दे है—'जसो होय तैसो प्रतिबिम्ब दिदो बारसी मे भोंडो होय भोंडो और वानी होय वानो है', जो कछु बरी सो भरी बाहे कौं परेखो अब, मिल ना बढाइ बढ बातन बघारे ते', 'मदमाती बनमे फिरत

इठला सी रही, करती सदा ही रही निजमनमानी है' 'ओसर चूने पै कहा होत पुनि पछताये होत ही अधीर मूर्छता की सो निसानी है।' 'सेत सग डोली कु ज पुज खौर खारन मे, जमुना कछारन म कहा अहसान है', कस की मरैया मदुरैया जब दाहिनी है, मनन निहार कान पूछरी उलारेंगी, 'गाओ गीत लाख हू अतीत के न लाभ रच', 'ही तो जो तिहारो तो रहतो ना तिहारे सग न-दगाम त्याग काहि मथुरा सिधावतो', साँच बात कही नैक सोह तुम्हे गोधन की कोन सी है तुम मे जो स्वाम सग व्याही है', 'जैसी करी तुम तसी भरो अब होत कहा इतनी इतराये । गोपी अरु कूबरी ने एक द्वै उदाहरन सों अब आपई निस्वै कर लें के प न-दकुमार जी की कवि दृष्टि ने नारी विसयक सौतिया डाह के भाव कू कितेक पैनोपन सों व्यक्त कीनी है-

रूप सरूप की न जाई काहू भूप की है,
जात की न पात की न कुल की न वस की ।
मर भयी मथुरा की कहा कुल दास सबै,
रही सेप कूबरी ही दासी एक कस की ।

समझयो है ब्रज मे गहन लग्यो उघो तामे,
कूबरी भिक्षारिन को काहू दान दीनी है ।

न-द कुमार जी ने उदब सतक मे भीतेरे स्थान ऐसेऊ आये हैं जिनमे प्रेम की पीर काव्यान-द की सरसता सी महकते भये प्रसंग बरबस मन कू आकसित करे हैं-एकई उदाहरन भीत है-

वे ही कालि-दी कुल वे ही केलि कुज पुज,
तिनमे कही की अब असल जगायगो ।
रम्यो रास रस मे बनवारी के सदा ही जो,
मन भतवारी कसे ब्रह्म मे समायगो ।

भाव अनुभूति अरु ब्रज के कन-कन मे रचे पचे प्रेम की सटीक अभिव्यक्ति 'उदब गोपी कुञ्जा सतक की अपनी अनूठी विससता है । ब्रज के प्रेम की ई कहानी आकठ असुआन ते भोगी भई है । कवि ने रोमते बिलखते ब्रजवासीन के असुआन के पावन मोनीन सों 'उदब गोपी कुञ्जा सतक काव्य के भावन की माला पियरोयो है । असुआन के या पावन त्रिपमगा म स्वाभिमान के सूय की ताप नेकऊ तो कम नाँव भयी है किन्तु चाटु आर न-दगाम माहि एक माहि कहिये मे साँची म्हा कोऊ न सकात है कहू के ब्रजवासीन

परम्परित स्वाभिमान को शण्डा कवि ने नैकक कम नाय होन दीनी है । भासा की दृष्टि से या रचना में परम्परित व्रज के अनुराग की रस तो पग पग पर सन्दन में छलवतो चलेई है सगई मुहावरे लोकोत्ती अरु जन समुदाय के औठन पर धिरकवे बारे वचन विलास को कवि द्वारा या कृति में बढोई मनोरम चित्रण भयो है । 'करेजा बाढ लीनी है', 'करोड काम बारि है 'सीखी चास काग की बिहाय गति हस की, ऊधो को न लीनी हमे माधो की न देनी है 'गूठ पर चलावै घोच त्याग दूध दाग है' 'वीये जो धँवर अब कहा होय रोये धोये ।' व्रज की जमीन में ठुरकी अनुराग की रस व्रज के कन कन में व्याप्त सरसता मधुरता की मिसरी की अनुपम छवि व्रज के वाग्विलास सौ सजी नयना-भिराम सौ दय सौ लदी कविता कामिनी की रूप सौष्ठव मन में मधुर मधुर गुदगुदी की गदगई गरज की होले होले चलबे बारी वासन्ती गजना जैसे बहू वाग्वगत वसिष्ठ्य पण्डित जी के 'उद्धव गोपी कुन्जा सत्तक' की अपनी अलग विसेसता है । देखी एक उदाहरन जो कीरीट सवया के साचे में बँसो अनूठी फब रयी हैं या रचना में—

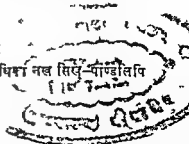
बाहर भीतर कृष्ण अहै नहि नामहि स्थाय सबै जग गावत ।
प्रेम सुमानिक मोल भली छलिया मलिया कछु जान न पावत ।
कूबरि सग करै रस रग हमे अब योग सदेस पठावत ।
उधव जाय कहौ किहि कारन काट करेजवा लोन लगावत ।

पंडित जी ने राधा कृष्ण विसै कू लैके कई व्रज वाक्य ग्रन्थन की रचना करी है । इनमें 'श्री राधिका नख सिल' अरु श्री राधाकृष्ण सवाद' विसेस रूप से उल्लेखनीय रचना है । 'राधिका नख सिल' में पाच मगलाचरण के बोहान सो या काव्य ग्रंथ की मुख-आत होय है । नख सिल में—पद नख, तरुवा, पदागुली, पजा पिंदुरी जघा, लक, उदर नाभि, त्रवली, रोमावली भुजा, ग्रीवा धोन उरोज बिबुक गाढ, कपोल कपोल गाढ, कपोल तिल, आनन, दसन, नासिका, नेत्र भ्रू, सलाट, कच, बेनी के वनन के रूप में राधा के उपयुक्त सारीरिक अवयवन को बढी मनोहारी चित्रन या ग्रंथ में कवि नन्द-कुमार जीर्ण कीनी है । कवि के मगलाचरण में स्पष्ट कर दीनी के कवि राधा कृष्ण के पद कमल कू हृदय में धारण करके नन्दकुमार श्री कृष्ण कू प्रमुदित करिबे कू या ग्रंथ की रचना करी गइ है ।¹ यद्यपि पूव के भीतरे कविर्ण अपनी अपनी मति के अनुरूप व्रजराजी के रूप को बनन कीनी है पर नारी की या आदि सक्ति के रूप लावण्य का

1. श्री राधे पद कमल गुण मन मंदिर में धार

नख सिल छवि बरनन करत प्रमुदित नन्द कुमार

—श्री राधिका नख सिल—पाण्डुलिपि



बनन है नई सक्थी । ² श्री राधा के नख सिख बनन मे रीति कालीन कविन की तरिया सिंगार की सुकुमारता के संग संग सत कविन की भाति भक्ती की पीयूष धाराऊ सगई चलै है। जा कारन या रचना बू पढिये वारे के मन मे भक्ति को ओज पदा होय है न के सिंगार को माह । भुजा बनन को उदाहरन देख ल्यो अरु हमारे मत की प्रमान हाथो हाथ परख ल्यो-

धरो सीस पै जाके कहे दुख ताके सबे मन काम सदा पुज है ।
वरदा भरदा सुख सपत्ति की लखि चम्पत होत भव सम है ।
अति बोलस कल्पलता की छरी सी खरी कस कीरति रुज है ।
छवि पेटिका भेटिका भगल की वृषभानु लली की दुह भुज है ।

उरोजन के बनन मे 'सबै सुख लाइसी मातु के पावन कहै कवि भक्ती भावन की रक्षा करै है ।' ³ कवि ने नख सिख बनन मे 'कलीन खिली वर कल्प लता की' 'रस कपूर सुधा', 'कज करोरि खरी', 'परान छव्यो अलि बढ्यो ललाम है', 'कुद कलीन की कौ अबली', 'मोतिन पाति लसै छवि छाई', 'घन मे बिजुरी प्रगटाई', 'दुति चम्पक की हु विलोकत फीकी', 'खजन कज भृगी मद गजन', 'सार सुधा के सुनाई के भीन' 'प्रतयच्छ मयक कलक है' 'चन्द्र को चीर बनायो बरासन' रस पूरि छता मधु की, आदि के रूप मे विभिन्न उपमान अरु प्रतीकन के बनन सों ब्रज कविता ने माध्यम सों राधिका रूप बनन मे सटीक सुन्दरम कू सायक कीनी है। या रचना के अंत मे कवि ने याको रचना काल स 2008 मधुमास अर्थात फरवरी 1951 बनायो है । ⁴ राधा विसयक दूसरी

1 यदपि विविध पूरव कविन निज निज मति अनुरूप

बहु प्रकार बनन कियो ब्रजरानी को रूप

~श्री राधिका नख सिख पाण्डुलिपि

2 पोषक है मिमरे जग के अरु दीपक तापन दाप नसावन ।

भभू समान सुवत मरे सुर साई सलीन को चित्त पुरावन ।

कु भ मुधा परिवार खरे मुर कदित सो उर आस पुजावन ।

दोष उरोज सदा बमुधा के सब सुख लाइसी मातु के पावन ।

~श्री राधिका नख सिख पाण्डुलिपि

3 सम्बत् सिद्धि नम नयन सित गाल गुभ मधुमास

श्री राधा नख सिख मुभग रथ पच कियो प्रकाम

~श्री राधा नख सिख-पाण्डुलिपि

उल्लेखनीय रचना 'श्री राधाकृष्ण मवाद' में कवि ने श्यामाश्याम के अद्वैत जुगल रूप कू राधा कृष्ण के परस्पर वार्तालाप के माध्यम से साकार कीनी है। 'पयोधर' अरु 'बिजुरी' के उपमान में देखी या अद्वैत भाव की छापी मगई या छंद में पयोधर मन्द में श्लेष की मन मोहक भगमिनी की मधुर ध्वनिऊ है रही है—

होत पयोधर में बिजुरी सिंगरी जग जानन याहि मुरारि ।
पै बिजुरीन में होय पयोधर नैनन आज लौं नाहि निहारी ।
रावरी रूपहि दीठ परै जब भासत बिजु सता अनुहारी ।
सा पर पीन पयोधर की छवि देखत जात न को वसिहारी ।

राधा की पावन भक्ति में समपण की महत्व बताते भये स्वयं कवि न कृष्ण के मुख से या भासा कू कहावो है—

वा विधि रावरी भक्ति करू कहु कीन उपायन साध रिपाऊ ।
साँच कही न दुरास रखी कहु कीन सौ भाव हिये अपनाऊ ।
आत्म समपण सो बढ राधि के कीन सौ पथ कही जु बताऊ ।
जो इहि मारग पै पग देय पली तिहि छोड में जान न पाऊ ।

इन द्वै राधिका विसयक रचनान के अलावा 'श्री राधिका चरण सप्तक', श्री राधिका अष्टक अरु 'श्री राधिका चरण' नाम से छोटी-छोटी रचनाऊ हमकू पण्डित जी के काव्य ग्रंथन में मिली है। 'श्री राधिका चरण सप्तक' में राधा के चरण 'कल मल कदन सदन सुख सम्पत के', 'मंगल के करन अमंगल हरन', राम ब्रज वासिन के सुहाग भू मडल के', सागर सुधा के भूरि भाग बसुधा', के है सूच के अगर दुख दुग्ति विदारि सार 'भव निधि असार के अम्बुज बरन है', 'चार फल दामक सब लायक प्रभा पुंज', दीन के सहायक औ तारन तरन हैं', 'सुख सरसैया जन मन हरसैया अहैं', 'छवि के अगर पूत प्रेम सुधा धार चारू' के रूप में श्री राधा के चरणन की महिमा की कवि ने बरनन किया है तो दूसरी तरफ 'श्री राधिका चरण' नामक अय कृति में राधा के चरणन की बरन कीनी है—सूम की थाली सम समायी जन-जीवन के' देन सुख अगाधा सब साधा वरन पूण, करन भव बाधा चरण राधिका के हैं' आदि के रूप में अय भाव से राधा के चरणन की महिमा गाई गई है। 'श्री राधिका अष्टक' राधा की व दना 'वेदन की सार हरि प्रेम की सुधा धार ब्रज की आधार नमो कीरति कुमारी की भक्तन पन पारिका है—खलन साहारिका मुनि मन हरिका श्री कीरति कुमारी का', सुखमा की सार है अघार

तिहु लोकन की, परम सदार पूत प्रेम की प्रचारिका', 'प्यारी घनश्याम की दुलारी वृष भान की जैसे भावन सो राधा की महिमा को बनन है ।

बैसे पण्डित जीनै कई अष्टकन की रचना करी है । अगर इन छोटे-छोटे ग्रंथन को उल्लेख करें तो इनके रचे भये करीब पचास काव्य ग्रंथ बन जाईंगे । इन अष्टकन में 'श्री गणेशाष्टक', 'दुर्गा अष्टक विट्ठक अष्टक', 'हनुमान अष्टक', 'श्री परमराम अष्टक' आदि कुछ इनके अग्र प्रमुख अष्टक हैं । इन अष्टकन में ओज जैसे कठोर भाव कीऊ सफल अभिव्यक्ति भई है । देखे परमुराम की महिमा को एक कवित उदाहरन—

देत है दुहाई आत ताई भूगुनदन की
धर पद सीस भीख मागत है प्रान की ।
छीन छत्र धारिन सो सत्ता माहि मडल की,
कश्यप ऋषि की भक्ति भाव सो प्रदान की ।

हनुमान के छंदन में कई जग तुलसी की रचना 'हनुमान बाहुक' को प्रभाव दीख है । एक उदाहरन देखो—

गोपद सी सत योजन सि धु उलास गयी छिन सक जरई ।
धीर बघाय सिपा को सब सुधि आय के राम की जानै सुनाई ।
लाय सुपेन सजीवन भूरि सुभूरि प्रभा जन मे प्रगटाई ।
ताकी कहा जमदूत करै अस बायु को पूत है जाकी सहाई ।

'दुर्गा-अष्टक' को एक उदाहरन देखो—

ध्यावत भीत अवशेष हरै जनकी दुरगे न विसम्भ सगाव ।
ओ सुमिर चित लाय सुनुदि निससय ही अति निमल पावै ।
दारिद दुवस हरै पल मे मय हारनि सो सम दीठ न आवै ।
सबु पवारि दपाद्र बना तु ही तो सम मानु दुनी भ सखावै ।

'श्री कृष्ण ज म लीला अरु श्री गोवधन धारण लीला एव 'रम्भायुक्त सवाद' नामक छोटी सी तीन वृत्तीऊ पण्डित जी के अग्र ब्रज काव्यन की तरियाँ भीतई सुन्दर रचना है । आकार की दृष्टि से 20 25 छंदन में सिमटी वृत्तीन में कवि ने कीमल अरु

कठोर एव शांत भावन की प्रसोद माधुर्य गुणयुक्त काव्या नन्दमयी सरस धारा प्रवाहित कीनी है। 'श्री कृष्ण जन्म लीला' में जेल में कृष्ण की जनम बिनकी महिमा, वासुदेव द्वारा गोकुल जानी एव गोकुल में पुत्र जन्म पै बधाई के भाव या कृती में हमकू देखवे कू मिले है। कृष्ण जन्म बधाई पै कवि के भाव परखीं—

धाय चली ब्रज की बनिता अरु गोपन भीर भई नद द्वारे ।
देव सुरागना हू तिनमे मिलि होस हिये की लगी सुवि वारे ।
गोपन के पट खोल दिये नद मोद महामणि मुक्तक वारे ।
मगल गान मयक भुखी कर बाजन लागे बघाये नगारे ।

गोवधन लीला में कृष्ण के कहे प गोवधन पूजा के कारण इन्द्र के गोप सों भयभीत ब्रज वासिन की एक झलक देखी—

अति अनुलाय भय पाय गोपी ग्वाल धाय,
मती सी बनाय नद द्वार जाय घेरी है ।
ननन में नीर लाय पूँछत जसोमति सो,
कित में दुरयो सी लहतो सात तेरो है ।

भयानक भाव की परिनती देखी—

लाय-लाय जोम पीन पसों न उसास लेत,
झझ झहरात नेक लेत ना उसारो है ।
धुरवा घुमड घूम घूम झूम झूम बढै,
दीखत ना मान अममान भयो कारी है ।
गरजै निसान घनघोर सो भरी है दिसा,
निसा भी भई है घोस चलै कहा चारो है ।
पष पच हारो करै मधवा विचारो कहा
छप्पन पहर गिरि छिगुनी पै धारो है ।

दद कुमार जी के विंगभन देवी-देवता ब्रज के तीर्थ ब्रजभासा, ब्रजभूमि महिमा इमामा दयाम युगल रूप श्री राम चरण बदन, गिव की हुलाहल धारण रूप, राधिका चरण महिमा, यमुना महिमा आदि के विसय में ब्रजभासा के परम्परित छन्द में श्रुव लिखी है। अगर इन सिगरी रचनान कू इखटोरी करो जाय तो छन्द की सक्या हमारन

वे ऊपर पहुँच जायगी । कवि ने, 'जब भी उठत तरंग जहाँ ब्रजराज क्षत्रमे महारानी श्री राधिका अष्ट सखिन के झुंड, डगर बहुरत साँवरो जय जय राधाकुंड' कहकर राधा कुंड की महिमा गाई है अर 'दायक है फल चारहु की वर हेमचली ब्रजभूमि सुहावनी कोतुक के द्र यही हरि की अज शमहु के चित चाव धदावती', मोहन की मन मोह लियो अस हेमचली ब्रजभूमि सुहावनी, 'तिहु नाक विशोक करो मन भावन पावन ये ब्रज की रज है।' जैसे भासा वारे छन्दन में ब्रजभूमि की महिमा गाते थये कवि हुया तानू निख दे है ब्रज रज की पावनता की स्मरण करत भये—

छाई जग धूम जस गावैं जग झूम-झूम,
दुरित दुखद रेख भेट भक सुम की ।
पाम पुज नामैं पूव पुनन प्रकासैं भासैं,
भूलहु बिनामैं भव बधन हजूम की ।
कम्पत बनेस करै कम्पत अशेष ताप
जन मन हारी मनौ सपति है मूम की ।
महिमा अकूत जम जाहि सत्य दूर भजैं
सुखा की प्रसूति पूत रज ब्रजभूमि की ।

कवि ने अपने देश के राष्ट्रीय महापुरुषों में एक ब्रजभासा में जन्म के कलम चलाई है । भीष्म शिवाजी, महाराणा प्रताप, महात्मा गाँधी जैसे राष्ट्रीय नेताओं को कवि ने सैकड़ों छंदों में बिन के महान कामों की महिमा की उल्लेख कीनी है । 'चतक के असवार प्रताप सौ, देखी दुना में न दूसरी सूर है, दावा है कि बडवा बि गिव का सुतीय नैन ऊग्यो प्रलै मानु के प्रताप की प्रताप है, जैसी भासा वारे छंदन में कवि ने महाराणा प्रताप की वीरता की वनन कीनी है । याई तरियाँ महाराणा गाँधी के सैकड़ों छंदों में कवि ने 'फूट फर फदिनी लछाड के समूल फेंक', मोहन सम मोहन सुना के स्वदेश राग, सोये हुए भारत को फिर सो जगाव दियो', जैसे भावन सो स्वदेश प्रेम की जन जन के हृदय में अलका जगावे है या तरियाँ—

रिद्धि सिद्धि सम्पति की गरिमा प्रवाहित हो,
नृष्टि जाय जहाँ तहाँ दुख को न लेश हो
सभी बसयोगी सम माता के सदंते लाल
शाय वीर्य तेज रोम रोम में अशेष हो ।

पण्डित जीने विभिन्न रितुन को सबडन कवित्त सवैयान म विस्तार सो मनोहारी चित्रन कीनी है । प्रकृति चित्रन के परम्परागत वनन के अलावा मानवीकरण अरु अल-बार दृष्य मऊ नद मुमार जीन विस्तार सो अपनो चित्रन की माध्यम बनाया है । परम्परागत उद्दीपन अरु आलस्यन रूप में वनन के सग राग बरे गये वननन की आनन्द बाई तरियाँ खिलो-खिलो इनकी कविता में लगे है । जैसे नसगिब सौन्दर्य में डूबो गदराई ग्रामवधू के सरीर पे अलखारन की छवि दुगनी फरे है । नव परनीता की महक, नव योयन की सी चमक, मधुमास की सी लहव के सम ऋतु वननन के कविता कामिनी के मनोहर नाच-प में डूब के आनन्द की यहव सा आवठ डूबी भये हैं इनके ऋतु चित्रन के विभिन्न प्रसंग पढ़े बारे के हृदय में अनूठी मिठास घोर जाय है । 'सुण्ड वितुण्ड उत लहरात इत जलधार अपार सुहावत, हीनन भयी मोतल सब जगती तसकी बहि चलयो रम श्रोत लागत अपाठ है', 'धूम धूम झूम झूम झूम लूम चूम चूम रिमक्तिम घू दैत अकास भूई छू रहे', 'बारि बूंद परे मद झरत सुहात है', 'दीठ परे जिन ही तित में उमगात लख सुख श्रोत प्रगाढ है', 'बन घनश्याम धिरे नभ घनश्याम है', जैसे छन्दन में बरखा की सरसता 'शरद जुहाई है कि छवि गिरि चूर कर कूल पे कलिद जाके विधि बगराई है पावस ध्यावस देन विल्यो शरदागम घूटी समाधि मुनीन की', 'चूरिखें रजत गिरि भूई बगरायी विधि खीर निधि शेष किछी बालुका बनाई है', 'चन्द की ममूलन पियूष नौ झरयो करे' में शरद की रसवतता, राजन की राज महाजन की हिमत सम, जाहि देखे ताहि नित घाँटत रजाई है', 'हल हल हल तन चूलें उन मूल भूलें, भूलें हू न भूलें हा हिमत के हलान की', थर थर कापे हाट होटन विनय करे, हरी ना हिमत रही नाम की रजाई' में हेमन्त की सुन्दरता 'शिशिर सास मानो विश्वबाल अलवेली को प्रेम धर धारन की पाठ सो पढ़ात है', 'सुख सरताज बर बुद्धि की जहाज सो, एक दत धारी ऋतु राज गणराज है', ग्याहन को पहुमी दुल ही दुलहा सो बयो ऋतु नायक आवत', 'बसुधा नवेली अलवेली रसवेली मनो, बालम बसत लै समोद बिहरत है', 'साज के सिंगार बर बसुधा नवेली मनो, बरत बिहार लिये बालम बसत है', कोयल की ठूक सुन ठूक सी करेजे उठै, बालम बिदेस तो बसत बसत अत है', में ऋतुराज की मधुर महक की कवि ने बडो मनोहारी चित्रन अपने छन्दन में कीनी है ।

होरी अरु बसरी के सौन्दर्य कू बी कवि ने अपने सौकडन छन्दन की माला गू थी है । डोलै नव नारि नेह नदी उमगाई है', 'फाग सुभाग मच्यो ब्रज म ब्रज बालन बीच फँसे गिरधारी, ओत प्रोत लाल पे न ललिता बढात है', साला गुलत लै धूम सो मचाई है, 'फाग फौज साज आज करत चढाई है', भारत में फाग भली आग सी लगाई है', 'जिधर देखो ऐसी नवीनता की घोष है', 'आठो ग्राम हियरा म होरी सी दहात है', 'बर दीनी सुद्धि बुद्धि बाणी भावन की इबारत कू खोल के घर दीनी है ।

मे कवि ने फाग के सौन्दर्य को साकार कीनी है। कवि ने बाँसुरिया के छद्म भीतर रोचक अरु महक भरे बन पड़े हैं—यथा—'निघर रत पीवत अघर स्रुघा की है', पर अघर बजावे डर लगत स्रुहायी है 'ऐसे निर मोहो के अघर बास बायी है', भूल सान पान कुल कान की ना मान रच', जैसे छन्दन म बसी वादन के सौन्दर्य के एक एक भाव को बड़ी मनाहारी चित्रित किया गया है।

पण्डित नंद कुमार जीने आपुनिक जीवन की आपाधापी, समाज सेवी पासण्डी नेता बनने को ढाग जैसी बिसयन के सव-भाग परतन भारत की पीडा तक नू बड़ी मजीदगी के साथ अपनी कवितान म उतारी है। स'यास सये पाछेऊ इनकी काव्य रचना प्रक्रिया समाप्त नाय भयो। स'यासी जीवन म इनने पोयूय प्रवाह' सीम के सों पण्डित राज जगन्नाथ की गंगा सहरी की अनुवाद कीनी। वैराग्य सतक' 'परोस अनुभूति' जसे काव्य ग्रंथ पण्डित जीने अपन स'यासी काल मे लिखे।

हजारों पान मे बिल्लरे भये पण्डित नंद कुमार शर्मा के अजकाम्य की अबई सानू मूल्याकन नाय है पायी। अनुपलब्ध हैवे के कारन अज साहित्य की जि अमूल्य निधि अबई घनघोर अघकार मे परी गई है। स्थात हमई पैनी दफे पण्डित जी के साहित्य को मूल्याकन कर रये है। पण्डित जीने डायरी के छोट-छाटे पन्नना म कवित्त सवया अरु छंद लिखे हैं। 'डायरी के ऊपर छंद लिखन की तारीख अर नीचे अपने हुस्तासर करवो नाय भूसे है। इन तिथीन के आधार पे पण्डित जी ने सन 1934 म समय कवि की तरियाँ कविता लिखनी सुरु कर दिनी हों। अर जी कम सन 1961 तक बसतों रहयो जब सानू बिनके तरीर मे सास बाकी रही। पण्डित जी के बिसाल काव्य भंडार मे अज के अलावा हिन्दी अर उर्दू की दोरा डायरीऊ काफी मात्रा मे लिखी है। समाज मे फैली बुराइन पेऊ पण्डित जीन अपनी कविता म बैदाक है के कलम चलवाई है। गद्य के रूप मे हमकू इनकी कोई रचना नाय मिली। पत्नी मैया के देहा त पाछ इनने अपने एक सिस्म कू मकान जायदाद अर दूसरे सिस्म कू अपना सिंगरो साहित्य अदान कर दीनी।

ब्रजभाषा के अमर गायक—कवि नवरत्न

हिंदी की शीरगायाकाल, भक्तिकाल अरु रीतिकाल ब्रजभाषा की काल है। इतने समरिद्धसासी अरु अपार वैभव सम्पन्न ब्रजभाषा ने आधुनिक काल माहि अपनी सब हिंदी खरी बोली कू दान दे दीनी। ब्रजभाषा ने अपने आचर के दूध ते खरीबोली की सालन-भालन कीनी है। बाबू अगरिया पकर के ठाढ़ो करिबो सिखायो है कुलाल भरिबो सिखायो है अरु बाबू अभिव्यक्ती की वैभव दीनी है। खरी बोली कू चलिबो फिरबो अरु उठबो बैठबो सिखायवे म ब्रजभाषा ने खुसी खुसी आनदित है के अपनी तन मन, धन योछावर कीनी है। जा दान मे ब्रजभाषा के कविन की कितेक धरो योगदान रही है जापे अबई चरखा नाय भयो है। ब्रजभाषा की जि ऐतिहासिक दान युग की मांग की परिनाम बनी है।

पंडित गिरधर शर्मा नवरत्नक या युग के ब्रजभाषा के साहित्यकार अरु कलावत है जा युग मे ब्रजभाषा हिंदी खरी बोली कू अपनी स्थान दान कर रही हो। नवरत्नजीने ब्रजभाषा की रचनान के मग अपने काव्य भावन कू सबा तै पैले पछान पै उतारों हो। ब्रज की मिठास अरु साहित्य बिनवे दिस दिमाग पै आखीर सानू छायो रही हो। बिना ऐसी हिंदी कू जनम दीनी जा मे ब्रज भाषा की साहित्य अरु मिठास ज्यो की क्यों बनी रहै।

हम ब्रजभाषा के इतिहास के पछान की अवलोकन करे है तो प्रमानित होय है के अधिकास पुराने साहित्यकार ब्रजभाषा के काव्य ससार ते होमते भये हिंदी छारीबोली मे आय है। ब्रजभाषा के कविने विपरीत परिस्थितीन मे खरी बोली कू सहारी दीनी बाकू उचित स्थान दिबायवे कू सघस कीनी है। पंडित गिरधर शर्मा 'नवरत्न' की सिंगरो ब्रज काव्य जा सघस की खुली भयो दस्तावेज हवे। सिंगरे देस के साहित्यकार जा मघस मे अपनी योगदान दे रये है। जा सघस मे ब्रजभाषा ने अपने आचर तै हिंदी छारी बोली कू चिपकाय के कही—

राजसभा सौं अलग कई सौं बरस बितावत ।
 दीन प्रवीन कुटीन बीच सोभा सरसावत ॥
 बरसावत रस रही ज्ञान हरि भक्ति घरम नित ।

— प्रेमघन

गरी बोली पै आरोप लगाये गये कै बामे कितेक कवि भये है ? बाकी साहित्य कहीं है ? ब्रजभासा के सन् 1855 में जनम लेबे बारे मलयपुर मुंगेर के कवि जगन्नाथ दास चतुर्वेदी ने जाको जवाब दीनी ।

बानी हिन्दी भासन की महारानी ।
 अद सूर तुलसी से यामे कबी भये लासानी ।
 दीन मलीन कहत जो याको है सो अति अज्ञानी ।
 या सम काव्य छंद नहि देख्यो है दुनिया भर छानी ।
 का गिनती उरदू बगला की, भरे अगरेजहु पानी ।
 आजहु याको सब जग बोलत गोरे तुरुब जपानी ।
 है भारत की भाषा निश्चय हिन्दी हिन्दुस्तानी ।
 जगन्नाथ हिन्दी भासा को है सेवक अभिमानी ।

—जगन्नाथ दास चतुर्वेदी

अगरेज ने खरी बोली अरु उठू क बीच ललाई अरु सघस के खीज बोय के अपनी सासन तन कायम करिबे की दुरभिसधी चलाई ही । ब्रजभासा के कवि ने जा समै मे हिन्दी खरी बोली कू सहारी देकै अगरेजन की गुप्त चाल की जवाब दीनी हो । राष्ट्रहित मे ब्रजभासा के साहित्यकारन की खरी बोली की समरिद्धी मे अपनी सबकछ दान द दियो । जाई दान कोई आज जि परिनाम है के खरी बोली अपने पामन पै ठाडी है कै सरपट दोरवै म लगी भई है । अगरेजन की कुचालन के कारन बा समै के भ्रमित भये भारतवासीन कू अपनी भासा की तरफ आकसन अरु प्रेम पैदा कर आये बन्धु को उद्-
 बोधन कीनी हो आजमगढ़ के कवि शिव सम्पति ने जा तरिया-

प्रेम परिवार सो बढावै शिव सम्पति जू,
 सबही मों मोद भरी बोले बेन प्यारी है ।
 भारत निवासी बंधु ताहि क्यों बिमारी हाय,
 एनी गुनबारी भाषा नागरी हमारी है ।

— शिव सम्पति

भरतपुर के कवि सिरी नन्दकुमार शर्मा नैऊ जाई सभ लोगन के मन मे ब्रजभासा के जा दान कू इन सबदन मे अरपित कीनी हो —

सुन्दर सुवण स्वर व्यजन सुहात सब
थोरी हो श्रम सौं मन आस जो पुजात है ।
भात ही रसीली मनमोहनी लचीली प्यारी,
रस अनुरूप होय सुख सरसात है ।
घात न लगावत यामे नेक फर फदन की,
जो कष्ट लिख्यो सो ही सुभाव पढ्यो जात है ।
आत है हिये मे एक बात यही मेरे मित्र,
भाषा देव कानन की हिंदी पारिजात है ।

— नन्दकुमार शर्मा

प गिरधर शर्मा नवरत्न जाई पीढी के कवि हे । बिने ब्रजभासा के मध ते हिंदी खरी बोली कू रास्ट्रभासा के पद पै बैठाये की सघस कीनी हो । जा सघस मे बिनकी ओजस्वी रूप देखते ई बने है—

नवरत्न राजस्थान मध्य हिंद आगे आये,
देख के फिरगी के करेजे लगे घडकन ।
उत्कल बिहार की क्या सारा हिंद एक हुआ,
रास्ट्रभासा हिंदी की धुजा ही देख फरकन ।

बिने रास्ट्रभासा हिंदी के हित माहि अपनी कमी की तरफऊ लोगन की ध्यान आकसित करिबे मेऊ कसर नाथ छाडी । बे ब्रजभासा ते निवासि के हिंदी खरी बोली कू रास्ट्रभासा के रूप म तो स्थापित करनी चाहते है परि जब बाकी स्थिति दूसरी भासान के सग देखते हे या गुलना करते हे तो बे दुखी होमते हे । जा कारन बिने हिन्दी के हिमायती कीरे भावुक लोगन कू आड़े हाथ लेवे फटकारो हो—

अंग्रेजी, जर्मन ग्रीक, फ्रँच लेटिन स्पॅा,
रसियन, जापानी चीनी प्राकृत प्रमानी है ।
तमिल, तैलग, तेलू, द्राविडी, मराठी ब्रह्मी,
उडिया, बंगाली, पाली, गुजराती छानी है ।
जितनी अनाय आय भाषा जग जाहिर है
फारसी अरबी तुर्की सब मन आनी है ।
जनम बूषा है तो भी मेरे जान मानव की
हिंदी मे जम पाके हिंदी जो न जानो है ।

जा तरिया 6 जून, 1881 के झालरापाटन में जनम सबे बारे प गिरिधर दामा नवरत्न के साहित्य में एक पूरे युग की प्रतिष्ठिता सुनाई पर है। वे ब्रजभासा के बा मेमे के कवि है जिन अपनी सबकछु अरपित करक रास्ट्रभासा हिंदी की प्रचार प्रसार करिबे मे अपनी जीवन लगाय दीनी हो। ब्रजभासावू रीतिवास की कामनीन के मोहनी रूप त बिनार के धरती की बबिता बनाय के हिंदी भासा कू समरिद्ध बनायबे में बाऊ तरिया की कसर बाकी नाय छोडी ही बिन।

नवरत्न जी ऐसे सघिकास में भय है जाम पुराचीन साहित्य की बंधवऊ है अर नये युग के प्रभास की लौनी-लौनी बिरनऊ है। बिन पुराने बंधय कू आत्मासात करि के नये युग की मन ते अभिनदन कीनी है। अपने सभे की युवा पीढी की पीठ पपधपाय के बिनकू भरपूर समरथन दीनी है। जाई कारण उभरत बबि बच्चन कू स्याबासी दवे वे झालाबाड त बलिके प्रयाग बिनक घर पहीच है।

राजस्थान ब्रजभासा अकादमी नवरत्न अक प्रकासित कर राजस्थान के जा पुरोधा साहित्यकार के कृतित्व के अजान पच्छ कू उजागर करिबे की प्रयास कर रही है। जैपुर की नवरत्न शताब्दी समारोह समिति ने नवरत्न जी की सताब्दी मनाव की सुवभात करी ही। राजस्थान साहित्य अकादमी ने बिनके व्यक्तित्व अर कृतित्व पै दी सी सतरह पतान की मधुमती की बिसाल अक प्रकासित कर नवरत्न जी के बिस में भूत्यवान सामगरी प्रकास में लायब की स्तुत्य प्रयास कीनी है। राजस्थान सस्कृत अकादमी नऊ स्वर मगला की अक प्रकासित कर बिनके सस्कृत गान कू उजागर करिब की प्रससनीय काम कर दिखायी। झालावर राजकीय महाविद्यालय ने जुलाई में देस के नामी-गिरामी मनीसीन कू इखठीर करिबे 'नवरत्न' जी के साहित्य पै विश्व-विद्यालय अनुदान आयोग की आर्थिक सहायता ते अखिल भारतीय परिचर्चा आयोजित कीनी। इन प्रयासन के होमते भयऊ बिनक ब्रज-काव्य पै चर्चा अरु प्रकासन की अभावई रह्यो। जाई अभाव की पूर्ती करिब कू राजस्थान ब्रजभासा अकादमी ने ॥ नवम्बर, 1986 कू नवरत्न जी के ब्रज काव्य पै परिसवाद की आयोजन एव 'ब्रजशतदल' के अक में बिनके ब्रज काव्य कू समेटवे की प्रयत्न कीनी है।



राष्ट्रीय ब्रज-काव्य प्रणेता पंडित गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'

सन् 1881 में तत्कालीन राजपुताने की एक पुरानी पिछड़ी भयी राज्य पालरा-पाटन हो जायै एव ऐसे बालक ने जनम लीनी जो भविष्य में हिंदी भाषा की ख्याति प्राप्त अरु मन मोहक वक्ता बनी। आजादी की तरपन भरी काव्य भावना को प्रनेता बनी। देश के कोने कोने में जाने अपने मोहक व्यक्तित्व से भोग विलासन में डूबे भये सामान्य एव राजान कू स्वदेश प्रेम को सर्जितन मात्र दीनी। ऐसे जा विद्वान, स्वदेश प्रेमी मनीषी को नाम हो-प गिरिधर शर्मा नवरत्न। गुजराती प्रवासी ब्रज, हिंदी, अंगरेजी, बंगला, फारसी, उर्दू, मराठी आदि भाषाओं में रचना करके वारे नवर न जी न जाने कौन सी माटी से निर्मित है, न जाने कौन से वे जीवट के पुष्कल सुदर्शन भाव है। न जाने कौन सी देश में मर मिटने वाली गुरुन की प्रसादी सिद्धा ही, न जाने कौन सी अमोघ जीवन सकती ही, न जाने कौन सो कू तेजस्वी चमत्कार हो जायै राष्ट्रीयता एव ब्रज प्रेम की ऐसी अमिट सजीवनी काव्यधारा बिनकी कमल से निसरित भयी। अस्सी बरस के लम्बे जीवन में बामन बरस तक वे ईसुर प्रदत्त अपनी आखिर से जा मायावी ससार कू देख सकै। सेस बिनकी जीवन मूरदानी रह्यो। अठ्ठाईस बरस तक नैत्रन की ज्योती के अभाव में बिन अपनी बानी से बोलिकै निरंतर काव्य रचना करके साहित्य की अमूल्य सेवा कीनी। लेखिका ही घरवारी रतन ज्योत्सना जाकू पंडित जी ने व्याह पाछे अच्छर ज्ञान करवायो हो। अठ्ठाईस बरस तानू पति की रात दिना आखि बनके रतन ज्योत्सना ने आजादी के अमर मायक नवरत्न जी के काव्य कू सिपिवद्ध कीनी है। कू साहित्य के सत्व की ऐमी मामिक यसोपाथा है जाकी उदात्त उदाहरन अत्र मिलबो दुलभ है।

॥ गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' ने पैंतीस वर्षीय ब्रजभाषा में स्वदेश प्रेम अरु स्वतंत्रता आन्दोलन विसयक प्रेरनादायी काव्य की सजन कीनी है। बिनकी राष्ट्रीयता के भावन से भरी भयी 'मातृ व दत्ता नाम की ब्रजभाषा की राष्ट्रीयता के भावन से भरी ऐसी लम्बी रचना है, जाने साहित्यकारन कू एक नई प्रेरना दीनी है। सन 1857 के स्वत-

न्रता आदालत की असफलता के कारण हमारे देसवासीन के सग सग साहित्यकारन केऊ मन मर चुके हे । प्रबल सक्तिसाली होमनेऊ योजनाबद्ध लराई के अभाव म विखरी भयी आजादी की जा लराई कू अ भोजन ने बरी क्रूरता के सग दवाय दीनी हो । जा क्रूरता की भारी आ तक लोगन के दिमाग पै छा गयो हो । अत बाऊ साहित्यकार की इतेक हिम्मत नाहि जा कू अपनी रचनान के माध्यम से लोगन के मन मे स्वदेस प्रेम की बात कर सकै । ऐसे समय म 'मातृ वंदना' के नाम से बंगाली साहित्य मे स्वतन्त्रता के सुरन की सुरुआत भई ही । हिंदी भासा बा समे आजादी के विसे साहित्य मच पै पूरी तरिया मौन ही, जाके पत्तर भाव सबन से पैले पूरे उभार अरू प्रेरना के सग हिंदी मे ब्रजकाव्य की जा अनुपम कृति नवरत्न जी की 'मातृ वंदना' नाम से सरस्वती पत्रिका म प्रकासित लम्बी कविता से भई ही । ब्रजभासा म सन् 1887 म 'भारत भजनावली' अरू मन 1901 म गुरुप्रसाद सिंह की 'भारत संगीत' रचना प्रकासित जखर भई ही परि नवरत्न जी की 'मातृ वंदना' रचना मे स्वदेस प्रेम के भाव जितनी प्रखरता के सग ऊभरे है बितेक इनते पैले लिखी भयी जा विसै की इन दो रचनान मे नाय उभरे है ।¹ जा तरिया राजस्थान के छोटे से राज झालरापाटन के तत्कालीन कवि सिरी गिरधर शर्मा 'नवरत्न कू ब्रजकाव्य म पैली बेर स्वदेस प्रेम पै लिखबे बारो आधुनिक भावन क पोमक कवि के सग सग बाकू जा विसैको पैलो हिंदी की कवि मानो जा सकै है ।

'सरस्वती' पत्रिका के मच से अपनी काव्य कला कू सान देवें बारे मैथिलीसरन गुप्त ने निस्वैई नवरत्न जी की 'मातृ वंदना' रचना कू पबिकें सन् 1912 मे प्रकासित भारत भारती लिखबे की प्रेरना लीनी ही । परिस्थिती प्रमानित कर रही है क 'भारत भारती' के प्रेरना के सुर झालरापाटन क एक साधारन परि स्वदेस प्रेम के भावन से तबालब भरी ब्रजकाव्य की रचना 'मातृ वंदना' तेई हत ।

नवरत्न जी न अपने ब्रजकाव्य म देस प्रेम की प्रबल प्रेरनादायी अलख जगायी ही । बिते 'मातृ वंदना' नाम की स्वदेस प्रेम की लम्बी कविता म ईसुर से बरी कातर बानी मे अपनी सब कणू देस प्रेम म लगायबे की कामना करी है । बे ईसुर से प्रायना कर है क बिनकी जीम केवन बाई जगह प खुले जहा पै देस प्रेम की चरचा है रही होय । बिनके कान देस भक्तन के गीत सुनने म लगे रहै । जाके अलावा वे काऊ सरिया के गीत नाय सुननी चाह है । अत म तो वे ह्या तक कह दे है क मरो मन तन अरू घन सबई दस प्रेम म लग जाय । 'मातृ वंदना' के जा एक छोटे से कवित्त म बिते आजादी के भावना की एसी आग बरसाई है बाके विसै म जितेक कछो जाय, बितेक ई घोरो है ।

चर्चा जहा देश की हो मेरी जीभवही खुले
 और नही खले कही खुदा की खुदाई मे ।
 मेरे कान गान सुने साचे देश भक्तन के,
 और गान आवे कभी मेरे ना सुनाई म ।
 मेरे अग रग चढे एक् देश प्रेम की ही
 और रग भग हो वे बूढे जा सराई म ।
 मेरो घन, मेरो तन, मेरो मन जीवन,
 मेरो सब लगे प्रभो । देश की भलाई मे ।

देस प्रेम की महिमामयी भावना नवरत्न जी के व्रज वाग्य ते होमती भई हिंदी साहित्य मे आई है । स्वदेस प्रेम की वा जमाने मे बातक करवै की मतलब ही अगरेजन की कूरता की सिक्कार होबो । जा कारन काव्य मे लिखवै की तो बातई का ग्हारे देस की चर्चा करवो थोऊ नाय चाहतो हो, चोकि अगरेजन को प्रचण्ड आतक छापी हो । ऐसे समै मे नवरत्न जी ने छाती ठोक बै अपनी कवितान ते लोगन कू देस की भलाई मे भारी दुख सहकै जीवन अपित करिवे की प्रेरना दीनी है । बिनकी नीचे लिखो भयो कवित्त आज की परिस्थितोन मेऊ जितैक साबो है, बितेक वा देस काल मेऊ सूरज की सरिया प्रखर साच के प्रकास कू ऊजागर करवै वारी हो । लोगन के मन मे कैसी प्रेरना दीनी है, या छोटे से कवित्त ने—

दुख दे मनायो सुख जान न वह पायो दुख,
 सुख दे उठायो दुख छायो सरसाई मे ।
 सेत रह्यो जीन सी ही खोत रह्यो साची कही
 देत रह्यो सोही पात रह्यो सुघराई मे ।
 जानो ना बिचित्र कछु भानो बात मेरे मित्र
 जग के बिलोकी रग राच निपुनाई म ।
 अपने ही लिये जियो मर गयो मानव वो,
 जी गयो वही जो मर्यो देश की भलाई मे ॥

तत्कालीन परिस्थितोन मे ऐसे विस्फोटक अरु राजद्रोह की खेनी मे आयवे बारी काव्य रचनान कू नई करिवे की मित्र ने अरु रिस्तेदार ने बिनकू भीत सलाह दीनी । तरै तरे ते समझायो । परि देस प्रेम के घघकते भावन वारे जा कवि ने बिनकी एक्ऊ नाय सुनी । थारु ने बिनकू कारे पानी की भय दिखायो, थारु नें धाल बच्चान की बिनके जेल आयवे के पस्चात दुरदसा के दारुन चित्रन करिक बिनकू समझायवे की

प्रयत्न कीनी । जब बात माये पै है कै ऊपर निबरवे सगी ती नवरत्न जी ने उत्तर दीनी
जा भासा मे, जा तरिया—

निमल अपनो मन रसिगें सदा ही हम,
घोर श्याम सुन्दर बौ चित्त म बिठावेगे ।
देख देख बाकी ओर, बहेगे वचन साचे,
कहनी की सी करनी करवे दिखावेगें ।
बोलेंगे न झूठ कभी चाहे प्रान चले जाय,
भूल पड़े परियों की पथ पै सगावमे ।
गहेंगे परोपकार करेगें स्पष्ट हित,
भारत को एक कर भारती बहावेगें ।

बिने देस हित अरु देस प्रेम कू अपनो सब बल्ल बनाय लीनी हो । याद करी बा
समै कू जब देस प्रेम की बात करिबे की मतलब इती अपने परिवार अरु स्वय के प्रानन
कू जातिम म डारिबौ । पर हठीती के जा सिंह नें नाय परदा करी काऊ की । हुकार
भरि कै बिने कायरन कू ललकार के की-ही, अरे चौ मरी हो । चौ डरपाओ हो मोय ?
मैं नाय डरपू —

देश के लिए न कभी करुणों बुराई मे
भीषण भयकर प्रसंग मे ऊ भूल केऊ ।
भूलुगो न देश हित राग की दुहाई मे,
जब ली रहेगी सास, सबस्वऊ लुटा केऊ ।

नवरत्न जी नें भारत के जन मन मे स्वदेस प्रेम की सखनाद फूक कै ह्या क निवा-
सीन के कुम्हार्ये मन माहि अपने देस अपनी भाटी, अपनी सम्पत्ता, अपनी सङ्कति
अपनी परम्परा मे प्रेम करिबे की उदबोधन कीनी है । कहब की आवश्यकता नाय
क नवरत्न जी जा साच कू अच्छी तरिया जानते हे के जब ली यहाँ के सपूतन कू
अपनी मातृभूमि ते सच्ची अनुराग नई होयगी, सच्ची सलक नई होयगी, सच्ची
पुस्कल मोह नई होयगी तब तलक बाकी रच्छा कू हसते-हसते प्रानन की बलिदान
करिबे की पावन साहस पैदा नाय है सके । जाई कारन नवरत्न जी ने अपने काय ते
अपनी भाटी ते पावन अनुराग की सगीत पदा करिबे की महान काम कीनी है । जाई
कारन बिने कही ही—

ज्ञान की मान उग्यो जग महल,
भारत के जन काहे जगो ना ।

काहे विलब करो शुचि काल में,
 काहे अकम ते दूर भगो ना ।
 काहे तजो नहि आलस को पुनि,
 वम के मारग काहे पगो ना ।
 काहे वरो नहि वारज नूतन,
 काहे स्वदेश के नेह लगो ना ।

बिने अपने काव्य में स्वदेश प्रेम के भावन कू साकार करिबे कू देस के कन कन कू महत्व दीनी है । गरीब, सन्नस्त धमभीरू जातिगत खड़ीन में दबे भये, धारमिक अधबिसबासन की अमर बेल से सोसित, जादू टोना के प्रति अगाध बिसबासधारी, विभिन्न कामन से परिवार की पालन पोसन करिबे बारे कोटि कोटि भारतवासीन कू कहाँ के तुम्हारी अन्नदाता भारत है, ह्य की माटी है । जा कारन विदेशीन की चाटु-कारिता छाडि के गुलामी की चादर उतार क फँक देओ । अपने देस की रक्षा करिबोई तुम्हारी रोजी रोटी हूत, तुम्हारो स्वाभिमान हूत । बातेई तुमकू सच्ची जीवन सकती मिलेगी । बा समै राष्ट्रीयता अरू देस प्रेम के जा मम कू समझबे बारी महावीर प्रसाद द्विवेदी युग में एकमात्र कवि हौ राजस्थान की वीर भूमि में जनम लेबे बारी प गिरि-घर शर्मा 'नवरत्न' है जेई भाव नीचे लिखी भयी कविता की मम हूत —

कोई बरष बुनकरे जुलाहे कौ काम कोई,
 वरत सुतारी कोई शिल्प काज सारत है ।
 मोचीपन करे कोई बनावें मिठाई कोई,
 लगो कोई फर्नीचर आसम सवारत है ।
 दीपक बनावे कोई रंग लावे कोई कोई,
 सेवकी में द्रव्य पाय उमर गुजारत है ।
 सब देश चाकर है भारत के बाह बाह
 एक मात्र अन्नदाता सरदार भारत है ।

नवरत्न जी की सम्पूर्ण काव्य स्वदेश प्रेम की दिव्य भावधारा से आप्लावित हूत । मुस्क पत्थर जैसे नीरस अरू दस प्रेम से सूय नौजवानन के मन में स्वदेश प्रेम की रस-धारा पैदा करिबे बारे, बिनके श्रजकाव्य की एक-एक सब्द प्रखर जीवत सक्ती से भरो भयी है । परि अपने देस की दुदसा कू देश के बे मौतइ चितित होमते । सामद अपनी मातृभूमि की दुदसा देख के भारतेन्दु जी के पस्चात यदि काऊ कवि की बानी सायब भई है तो बामे नवरत्न जी की नाम सबन से ऊपर है । नीचे लिखी भयी कविता में जेई भाव पूरी प्रक्षरता के सग देस की आजादी के सुपने माहि डूबे भये कवि के मन से देस की दुदसा के कारन निक्करी भयी व्यथा की महासागर हूत —

छिन भिन राजतन छह सो छियासी राज्य,
 लाग बाग भिन भिन भाषा की उचारत है ।
 सैबद्ध जाति पाति सगठन ठोक नहीं,
 मतिगति सारे जन पारी-न्यारी घरत है ।
 मन अबुसावैं महादेश दगा दम-देग,
 ध्यय वी न पता वही बुद्धि मादय भारत है ।
 मारग लगावे वारी नाम दक्ति दाता बोज,
 नेता है न साचों दासो गिरी जात भारत है ।

नवरत्न जीन अपन ब्रजकाव्य म कम कू महत्व दीनी है । रीतिकालीन मोहनी दुनिया की ब्रजकाव्य धीरे धीरे बुझती जा रहयी है । चौक रीतिकालीन काव्य कम की अपेक्षा साहित्य के साहित्य अरु जीवन की रागमयी बत्ती की काव्य है । राग के उल्लास के चित्रन माहि ब्रज कवीन की पूरी सत्ता लगी भयो हो । जा भारत जीवन के कम क्षेत्र के भाव साकार नाय है पाय रह है । भारते-दु जीऊ रीतिकाल के मनोहर राग की अभिव्यक्ति से पूरी तरिया मुक्त नाय है पाये जद्यपि बिन ब्रजभासा कू स्वदेश प्रेम की बानी पैराय दीनी हो । परि नवरत्न जीन अपने ब्रजकाव्य म स्वदेश महिमा के प्रखर भावन कू स्थान दे कै कम की महत्त दीनी हो । बिन ब्रजकाव्य माहि पली दफ जाती अरु परिवर्तित जीवन कू अपनायो हो । जाई भारत बि ने जाती के भावन की जाहुआन कीनी अरु कम की स देश देके अपने राष्ट्रीय भावन कू साधक कीनी हो । जा कम म नवरत्न जी की एक उदाहरन देबोई प्रमप्ति होवगो—

काहू म चलत बाण काहू के कृपाण चले,
 काहू के सुभाल तेग, बलम बटारी है ।
 काहू के तमचा चले, चलैं ब दूके बाहू की,
 तोपें चलि के बाहू की करें मोलाबारी है ।
 अरुन चलैं, शस्त्र चलैं थाले चले नाना देश,
 भारत है पराधीन बीरता प धारी है ।
 बातन की बातन में दुश्मन उडा देगें
 लम्बी चौड़ी तीखी जीम चलती हमारी है ।

रीति कालीन ब्रजकाव्य की रोमानी दुनिया पे बा सधै नवरत्न जी न जो करारी-करारी चोट बीनी है ऐसी उदाहरन बा सम के सिगरे ब्रजकाव्य माहि बूढ़े से नाय मिले है । रात दिना नारी के मोहनी छन भगुर रूप की तरफ ध्यान देव बारे ब्रजकाव्य से वे भीतई दूखी है । जाके सग सग हमारे समाज मेऊ तो भीतई बुराई घुस गई हो, जो

सत्कीसाली होमते भयेऊ हमकू सत्कीहीन बनाय रहो हो । नवरत्न जीने इन पुरानी परम्परान कू ख़तार फँकवे को आहुवान कीनी हो । आज की परिस्थिती मे दिनको ब्रज काव्य चाये पुरानी लगे है, परि बा समै कू अरू परिस्थितीन कू सुमरन रखनी होयगी जब हमारे देस मे नारी मनोरजन की सोभा मात्र ही अरू बाल ब्याह पावन सस्कार हो । बा समै नवरत्न जीने मामाजिक धुराईन कू जर ते उखाड फँकके रास्ट्र प्रेम की सदेस दीनी हो—

सीरो भीरी पीरी पीरी जोति की सी फीकी नारी,
मानसु कुमारी साहि अगना अनावेगे ।
रहेगें विलास मे रहे ही दिन रात सदा,
बल के विनाग की न बात मन लावेगे ।
अचपल शक्तिहीन उदासीन पराधीन,
अपाहिज मद मूढ मतति बढावेगे ।
कहावेगें घाल पिता पालेगें पुरानी रीति
छोडेगे न बाँकी चाल आन की निभावेगे ।

पुरुषाय की सदेस नीचे लिखे भये दिनके वाक्य ते और का ज्याग होयगी—

उन्नति मे अपना चित दीज ।
दीज सबे कर दूर स्वदोषन
निबलता हि विसजन कीज ।
बीज महापुरघारय रत्न जू,
भारत की न कलवित बीज ।

नवरत्न जी की कवि परम्परान अरू समाज की धुराईन की बितेक विरोधी हो जाई विते । विचारनीय गाँव हूँ के के राजपूताने के परम्परावादी सामत के दरबार के आवित्त बयि है । पूरे ब्रजकाव्य म डूढे से नवरत्न जी जैसी जोबट की कवि नाय मिल है, जाने अपने आग्रयदाता की जमात कू खरी खोटी गुनायवे म बमर छोड़ी होय । जब क बा समै अय रागमागित बयि अपने आग्रयदाता कू गिहायवे म संगे भये है । कवि कम की नैतिकता बिन्ने अपने आग्रयदाता की रूचि के चलन म ममपित नाय कर दीनी हो । नवरत्नजी न ऐसी बरिक् अपने कवि कम के संग पूरो ईमानदारी बरसी है । अपन पुर-खान की वीरता की उत्तम बरिब धारे परिभोग विसाम म डूढे भये इन राजपूतन के बिन्ने बितेक बठोर भाभा म चोट कीनी है । एगो उगाहरन बा ममै ते मरऊ ब्रज बयि मे नाय मिने है—

छिन भिन राजतत्र छह सो छियासी राज्य
 लोग वाग भिन भिन भाषा को उचारत है ।
 संकडन जाति पाति सगठन ठोक नही,
 मतिगति सारे जन यारी-न्यारी धरत है ।
 मन अबुलावें महादेश दशा दख-देख,
 ध्येय को न पता वही बुद्धि मादय भारत है ।
 मारग सगावे बारो ज्ञान शक्ति दाता कोऊ,
 नता है न साधो यासो गिरी जात भारत है ।

नवरत्न जी ने अपने ब्रजकाव्य में कम कू महत्व दीनी है । रीतिकालीन मोहनी दुनिया की ब्रजकाव्य धीरे धीरे बुझती जा रह्यो हो । चौकै रीतिकालीन काव्य कम की अपेक्षा साहित्य के लालित्य और जीवन की रागमयी बत्ती की काव्य ही । राग के उत्सास के चित्रन माहि ब्रज कवीन की पूरी सत्की लगी भयी हो । जा कारन जीवन के कम क्षेत्र के भाव साकार नाय है पाय रहे है । भारते-दु जीऊ रीतिकांस के मनोहर राग की अभिव्यक्ति ते पूरी तरिया मुक्त नाय है पाये जद्यपि बि ने ब्रजभासा कू स्वदेस प्रेम की बानी पैराय दीनी हो । परि नवरत्न जी ने अपने ब्रजकाव्य में स्वदेस महिमा के प्रखर भावन कू स्थान दे कै कम की महत्त दीनी हो । बिन ब्रजकाव्य माहि पैली दफै जाती और परिवर्तित जीवन कू अपनायो हो । जाई कारन बि ने का ती के भावन की आहुआन कीनी और कम की सदेस देके अपने राष्ट्रीय भावन कू साधक कीनी हो । जा क्रम में नवरत्न जी की एक उदाहरन देबौई प्रयान्त होयगो—

काहू में चलत बाण काहू के कृपाण चले,
 काहू के सुभास तग, बल्लम कटारी है ।
 काहू के तमचा चले, चले ब दूके काहू की,
 तोपें चलि के काहू की करें मोलाबारी है ।
 अस्त्र चले, अस्त्र चले चले चले नाना देग,
 भारत है पराधीन वीरता प धारी है ।
 बातन की बातन में दुश्मन उडा देगें
 लम्बी चौड़ी तीखी जीभ चलती हमारी है ।

रीति कालीन ब्रजकाव्य की रोमानी दुनिया पे बा सम नवरत्न जी न जो करारी-करारी चीट कीनी है ऐसी उदाहरन बा सम के सिगरे ब्रजकाव्य माहि दूढ़ ते नाय मिले है । रात दिना नारी के मोहनी छन भगुर रूप की तरफ ध्यान देबे बारे ब्रजकाव्य ते बे भीतई दुखी है । जाके सग सग हमारे समाज मऊ ती भीतई बुराई घुस गई हो जो

सत्तीसाली होमते भयेऊ हमकू सत्तीहीन बनाय रहो हो । नवरत्न जीने इन पुरानो परम्परान कू उखार फँकवे को आहुआन कीनी हो । आज की परिस्थिती मे बिनकी ग्रज काव्य चाये पुरानो लगे है, परि बा सभै नू अरू परिस्थितीन कू सुमरन रखनी होयगो जब हमारे देस मे नारी मनोरजन की सोभा मात्र ही अरू बाल ब्याह पावन सस्कार हो । बा सभै नवरत्न जीने सामाजिक घुराईन कू जर ते उखाड फँकके रास्ट्र प्रेम की सदेस दीनी हो—

सीरी सीरी पीरी पीरी जोति की सी फीकी नारी,
भानसु कुमारी ताहि अगना अनावेगे ।
रहेगें विलास मे रचे ही दिन रात सदा,
बल के बिनाग की न बात मन लावेगे ।
अचपल शक्तिहीन उदासीन पराधीन,
अपाहिज मद झूठ मतति बढ़ावेगे ।
कहावेगें बाल पिता पालेगें पुरानो रीति,
छोडेगे न बाँकी बाल ज्ञान की निभावेगे ।

पुरुसाप की सदेस नीचे लिखे भये बिनके काव्य ते और का ज्यादा होयगो—

उन्नति मे अपनो चित दीज ।
दीजै सबै कर दूर स्वदोषन,
निबलता हि बिसजन कीजै ।
कीजै महापुरुषारथ रत्न धु,
भारत की न बसवित कीजै ।

नवरत्न जी की कवि परम्परान अरू समाज की घुराईन की बितेक विरोधी हो जाय बिते म विपारतीय गाँव हतै के के राजपूताने के परम्परावादी सामत के दरबार के आमित्र बनि है । पूरे अजकाव्य म वृद्धे ते नवरत्न जी जैसी जीवट बाँ बनि नाय भिन है, आन अपने आग्रयदाता की जमात कू शरी खोटी मुनायब म कमर छोडो होय । जब कँ बा सभै अग्य राज्यामित बनि अपने आग्रयदाता कू रितायवे म लगे मये है । बनि कम की नैतिबता बिप्रै अपन आग्रयदाता की रुचि के चरनन म समर्पित नाय कर दीनी हो । नवरत्नजी ने तेनो हरिके अपने बनि कम के श्रुत पूरी ईमानदारी बरती है । अपन पुस्तान की घोरता की उन्नेय करिब भारे परिजोग बिसाम में डूबे भय इन राजपूतान के बिप्रै बितेक बठार नामा म चोट बीनी है । तमो उगाहरन बा सभै के एकर कर बनि मे नाय भिन है—

प्यासी पर प्यासी पी पी खासी करा पीये,
 नशा करो आफू भग चरस आकूती की ।
 घर की बिगारो राखानों घर बारिन सों,
 करो बार वनिता को मान भेज दूती की ।
 सोहा करिबे की ठौर, हो हा करो, सीधों मत
 अस्त्र तस्त्र विद्यारण चातुरी निपूनी की ।
 देन व बपूतो ! राजपूता ! दूब मर जाओ,
 नाम न सजाओ बीर, प्यारी रजपूती की ।

प गिरिधर शर्मा 'नवरत्न स्वदेश के रग माँहि रये भये ऐसे ब्रजकाव्य के प्रणेता है जिने ब्रजी कू रीतिकालीन मोहपास से निकार के धरती की बबिता बनाई है । परम्परान के प्रति बिद्रोह के सुर बिनके ब्रजकाव्य के प्रान रहे हैं । राजास्य मे रहते भयेऊ नवरत्न जीने अपने स्वदेश प्रेम अरु रास्ट्रीयता के भावन कू उजागर करिबे म नेकऊ चिता नाय कीनी । बिने अपने ब्रजकाव्य म आजादी के गीत गाये है अरु प्रेनना के सुरन ॥ सबनते ज्यादा मान सम्मान दीनी है । नवरत्न जी की 'मातृ वन्दना' लम्बी रचना के स्वदेश अरु रास्ट्रीय भावन ने बबिन कू इतेक प्रभावित कीनी के 'भारत-भारती' जैसी रचना बन सकी । भारत भारती' सन् 1912 म प्रकासित भई ही । 'मातृ वन्दना' सरस्वती मे भारत-भारती के दस बरस पैसे छप चुकी ही अत जा सत्य कू मानिये मे कोई सक नाय के 'भारत भारती' के प्रेरना के सुर नवरत्न जी की 'मातृ वन्दना' रचना हुई ।

डा रामानन्द तिवारी का बालकाव्य

डा रामानन्द तिवारी भारतीय-दन का जनम उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध गंगा तीर्थ सोरो मे 3 अगस्त, 1919 कू भयो । 1919 ते 1948 तक डा तिवारी का सभे उत्तर प्रदेश के सोरो, एटा, चन्दौली अरु प्रयाग आदि सहरन मे व्यतीत भयो है । 1948 के पाछे बिनके स्वगवामी हैवे तक डा तिवारी का सिंगरी सभे राजस्थान मेई व्यतीत भयो है । बिनकी बालकाल अरु स्कूल एव महाविद्यालय स्तर का शैक्षिक काय उत्तर प्रदेश मे भयो । सेस तिवारी जी का कृतित्व राजस्थान मे रहते भये भयो है । हिन्दी खड़ी बोली मे तिवारी जी ने पावती' महाकाव्य के अलावा भीतेरे खण्ड काव्यन की रचना कीही जिनमे ते कछु प्रकासित भये है । सेस अप्रकासित है ।

डा 'भारतीनन्दन' का ब्रज काव्य ज्यादातर बिनके बालजीवन का रचनान माहि सिमते भयो है । सोरो मे सन् 1928 ते सन् 1938 तानू दस बरस का तिवारी जी का बाल जीवन का वू काल है जाम बिन ब्रजभाषा मे कविता करी है । इन दिनन मे ब्रजभाषी प्रदेशन मे ब्रजी मे समस्यापूर्ति के काव्य रचनान की परम्परा विपुन मात्रा भ ही । सोरीऊ या दृष्टि सौ ब्रजभाषा भाषी प्रदेश हैवे के कारन समस्यापूर्ति के काव्य गोष्ठी का केन्द्र ही । मेले ठेनेन पै काव्य गोठ अरु कवि सम्मेलन होते रहते है । इनम डा तिवारीऊ किंगोर कवि के रूप मे भाग लेते ह । एक एक समस्या पै सात या दस-दस छन्द लिखके विभिन्न भावन ते समस्या पूर्ति के छन्द लिखे की बिन दिनन मे आम प्रथा ही । समस्यापूर्ति की ये काव्यगोठ ब्रजभाषा काव्य प्रनयन की गुरु परम्परा का देन ही । छन्द अलवार अरु रस का दृष्टि सौ नये होनहार रचनाकारन की रचनान कू तरासी जातो ह । गुरु अरु अग्रज कविगन नवानु रन की रचनान मे सुधार करते है बिनके रस अरु अलकारन के प्रयोग के गुरु सिखायवै बिनके काव्य सस्कारन का प्रक्षालन करते । या तरिया ब्रजभाषा के नये नये कवि पैदा करिबे का अभियान चला राखी ही, काऊ सभे हमारे देस मे डा रामानन्द तिवारी 'भारतीनन्दन' कू कविता लिखे की प्रेरना समस्यापूर्ति की ऐसी गाठन मई मिली । बिनके बाल काव्य के सस्कारन की बालपन मे सोरो मे रहत भये जो परिमाणन अरु परिमीचन भयो २ ॥ ४॥ की परिणाम है के के आगे

चलके 'पावती' जैसे युगा तकारी महाकाव्य की प्रनयन कर सके हे । या दृष्टि से ब्रज बानी की आभार माननी चढ़ये के बाने डा तिवारी के कीमन बात भावन मे काव्य के सम्कार अरु छ द अलकार एव रस की वैभव भरी है ।

डा रामानंद तिवारी के बाल्यावस्थान की ब्रजभाषा समस्यापूर्ति के काव्य पै विचार करे है तो स्पष्टतः प्रमानित होय है, के काव्य सस्कार बिनके हृदय से सहज प्रस्फुटित होमती दीखे है । तिवारी जी ने बारह बरस की आयु मे माच 1931 कूँ एक कवि सम्मेलन मे सोरो मे "नई बात है" समस्या की पूर्ति कवित्त मे करी ही । ब्रज मे स्यातई कोई ऐसी घर होय जामे कृष्ण की अराधना नई करी जाती हाय । सुदामा की प्रसंग अरु कृष्ण भक्ति की महिमा के जि छ द तिवारी जी के बालभाव क सोचकूँ प्रकट करे है—

एक जिन सुदामा विप्र काहा के जीरी गयी ।
पास मे न अन्न वस्त्र मन मे लजात है ॥
प्रेम सी पसारि भुजा भेंट प्रभु सुदामा सी ।
दीन दीनबन्धु मिलन कैसी सुहाव है ॥
सीने के सिंहासन प सादर बिठायो विप्र ।
घोष पद करमो सुदामा सकुचात है ॥
सारी पटरानी आज चौकि के बिलोकि रही ।
ऐसी अति अद्भुत अनोखी नई बात है ॥

जाई तरिया 'जग फूल न समावते' समस्यापूर्ति कवित्त मे डा तिवारी के बालकवि ने अपन समे के देसवास की अनायास प्रयोग कर दीनी है । या समस्या क साथ कवित्त मे डा तिवारी जी ने विभिन्न भावन से, अग फूले न समावते" समस्या की पूर्ति कीनी है । सोरो मे रहते भये म्हा के निवासीन की दिनचर्या कैसी ही, याको आखिन देखो हाल तिवारी जी ने अपन या कवित्त मे दिखायो है । देखो उदाहरन—

गगा क तीर जाय हस होय दस पाय ।
भक्ति और थढ़ा सों सीस निज नवावते ॥
उठ भक्ति क प्रसंग, सीहँ गग की तरंग ।
पानकर भग गाता भग भ लगावते ॥
बरि बरि म्मान रेनु सिव नी निर्मान बरे ।
पुण्य गगाजस आदि प्रेम सों चढावते ॥

गंगा सौं प्रेम सिव शकर सौं भक्ति कर ।
मगन भये विप्र अग फूले ना समावते ।'

याई सभे हमारे देस मे भगत सिंह कूँ फासी भयो । भगतसिंह के साहसिक काय अरु अ ग्रेज सरकार के फायरतापून कम ते भगतसिंह कूँ दई गई फासी ते सिंगरे देस मे आंदोलन सो है गयो हो । ना सभे हमारे देस म काऊ जगै डै मानुख इकठोरे होमतेती बे अ ग्रेज सरकार के भगतसिंह कूँ दिये गये फाँसी के समाचारन की चर्चा जरूर करते । 12-13 बरस के डा रामानंद तिवारी नेऊ अपने स्कूल अरु बड़े लोगन ते जा जघन बाड की चर्चा सुनी । बिनके बालमुलम कीमल काव्य हृदय पै याकी बड़ी भारी असर पड़ी । तिवारी जी के बाल हृदय म कँसी जयस पुष्पल मध रही । वे भगतसिंह जी के फाँसी के कांड अरु अ ग्रेज सरकार के व्यौहार एव आजादी की लड़ाई मे बिनके योगदान ते डा तिवारी की बालकवि का सोच रह्यो हो । याकी सुंदर अभिव्यक्ति डा तिवारी के हाथन ते तेरह बरस की आयु मे 'अग फूले ना समावते' समस्यापूर्ति मे जा तरियाँ हुई है—

जग मे सबत्र यह कहावत प्रसिद्ध भई ।
मृत्यु आये स्यार प्राप्त ओर की परावते ॥
याही कहावत को सिद्ध करिबे को लाड ।
भगतसिंह हुक्म फाँसी की सुनावते ॥
भारत के नाहर है फाँसी से न खामे डर ।
बाल के समक्ष ना पीछे पावन हटावते ।
: फाँसी निर्दोस देकर देश म असाति कीनी ।
भये है प्रसन्न अग फूले नासमावते ॥

पिता की अपार सम्पत्ति पै वैभवसाली जीवन व्यतीत करिबे धारे सोरी बासीन कूँ, "आई है" समस्यापूर्ति कर फटकारते भये डा तिवारी के बालकवि नै जि कवित्त कवि सम्मेलन मे पढी हो—

जुल्फन मे तेल डारि दपन मे देख मुख ।
रोरी की आठ मज्जु मस्तक पे लगाई है ॥
उज्जरे फकाफक बस्त्र घरे सिल्क रेशम के ।
उज्ज्वलता मानी पूनचंद ते सवाई है ॥
सग यारबासन के पान हूँ चबाय लेई ।
मुख की छवि पुष्पहार दूनी बढाई है ॥

शोक और भोजन मे सम्पत्ति समाप्त भई ।
बीती ठाठबाट सब तगी जब आई है ॥

सन् 1931 को समै हमारे देस मे ऐसी ही जब आजादी की भावना सिंगरे देस मे बड़ी तीव्रता से फैल रही ही । हमारे देस मे स्यातई कोई ऐसी जगें होय जहाँ प स्वतन्त्रता की लड़ाई सुरू नई भई होय । “आई है”, समस्यापूर्ति म जेई भाव डा तिवारी जी की कलम से जा तरिया प्रकट भयो है—

अमन सभा सोरो मे कीनी ही कलकटर नै ।
भई जब पिकटिंग गाली चलवाई है ॥
खेत रहे वीर बहु घायल अनक भये ।
कैती मनमानी गिरपसारी करवाई है ॥
सजा की दिषाय भय ठूसे हैं जेलखाने म ।
सोरो बासिन सौ यों माफी भगवाई है ॥
तीन वीर सोरो के गरजे हैं मानिद शेर ।
माफी भगयन कूँ किन्तु साज ह न आई है ॥

आजादी की लड़ाई के ममै कासगज के कछू लाग माफी माग के जेल से छूट आये है । बालक तिवारी जी ने बिनके या कम कूँ धिक्कारी हो अपने नीच लिखे कवित्त मे जा तरिया—

याही कैस माहि गये पकड़े कासगज बारे ।
दौउन मिलाय दयी कैस चलवाई है ॥
कायर कासगज बारे माफी माग आय कई ।
माफी भगवैयन नै नइया डुवाई है ॥
कैसे है सहानुभूति हीन साग सोरी बारे ।
अपन भय्यन विरुद्ध दत्त गवाई है ॥
माफी भगवाई काम दोनो ही निवकमे कीने ।
कोन जानै ई साज आई के न आई है ॥

“सोरो हमारी है”, समस्यापूर्ति मे तिवारी जीन अपनी बालपने की भूमि को नमन करते भये या समै लिखी ही—

आदि सब छेन म गवथेष्ठ तोय सोरो ।
निवजो बिराजे जिन सीमगघारी है ॥

सृष्टि के उधारन की बाराह अवतार मयी ।
 दैत्य मारि कीनी जिन भूमि निस्तारो है ॥
 जानि सर्वोत्तम तीथ त्यागी पचभूत मात ।
 प्रभु ने स्वयं सवश्रेष्ठ याही विचारो है ॥
 ऐसी अति उत्तम अपूर्व मजुपावन तीथ ।
 जन्म स्थान श्रेष्ठ अहो ! सोरो हमारी ॥

सोरो की महिमा क सग सग दिनके समै म या कस्बा की का दुगति है रही
 ही बाकी खुलासा चित्र प्रस्तुत कीनी है नीचे लिखे छन्द मे । सोरों की पावनता कसै
 बिगडती जा रही, पापाचार कैसे बढ़ रहे हे जाकी ज्यों की त्यों चित्रन कीनी है डा
 तिवारी जीन । देखो बाकी झाकी—

महिमा महान हाय ! सीरथ की लुप्त भई ।
 कैली अधिद्या, भयो घोर अधियारी है ॥
 विप्रन की तेज और तीथ की महत्व महा ।
 नास कीनी, चली जब अधिद्या दुवारी है ॥
 त्याग नीद गहरी की सोरों के पडितवर ।
 जाग्रत होय पुन करी विद्या उजारी है ।
 जल्दी ते उबारी याय, जाबै ना रसातल की ।
 मान मर्यादा सहित सोरो हमारी है ॥

सोरो मे सट्टेबाज कैसे पनप रहे हे । याकी सही खाकी बालक रामानन्द के
 कवि ने सही सही उतारो है । या नीचे लिखे भये कवित्त म बालकवि डा तिवारी ने
 सट्टेबाजन की भाषा की ज्यों की त्यों प्रयोग कीनी है । कह्ये की आवश्यकता नाय कै
 सट्टेबाजी बुरी व्यसन मानी जाय है । सट्टेबाजन की घर पकड करिये मे प्रशासन सदैव
 सत्पर रहे हैं । या कारन सट्टे के चतुर चितेरे गोपनीय भाषा की प्रयोग करी करे हे ।
 'सात मु डन' में बालकवि तिवारी ने सट्टेबाजन की गोपनीय भाषा की प्रयोग करी है ।
 यात सिद्ध होय है क तिवारी जी की बालकवि कितेक दुखी है । जरू दिनकी कितेक
 पनी दृष्टि ही । लगे हाथ उदाहरन देखो—

सोरो मे सट्टे की भारी मची है धूम ।
 साधुन नै आप बचन सत्य हो-उचारो है ॥

जानत नाहि योग ध्यान दिव्य दृष्टि उनम नाहि ।
 धन वं ही सोम की बनायो डोंग सारो है ॥
 आज सात मु बन की हस्ता परी शहर माहि ।
 बाहू हथ काहू शोक छायो अपारी है ॥
 हाथ ' शोका महाशोका ' मोक्ष द्वार विद्याकेंद्र ।
 सट्टे की वेद मयी सोरी हमारी है ॥

डा. तिवारी जी ने अपना बालकविता माहि भक्ति भाव के प्रजकाव्य की ओर स्पष्ट कीनी है । इनमें कछु छन्द तो परम्परागत है अरु कछु में सहज भाव से बालक के कोमल सहज भक्ति भावन की अभिव्यक्ति भई है । गणेश उत्सव के औसर पे 15 सितम्बर 1931 को सोरों में आयोज्य कवि सम्मेलन की मुकामातई बिनकी गनेस वदना के सर्वमान से भई ही । या गनेस वदना के द्व सर्वया देखी जाम निमल बाल भाव की सहज अभिव्यक्ति भई है—

बालक में कवि नाहि कछु कविताकर भेदहु जानि न पायो ।
 प्रेम हिये कविता सम है कछु जो कवि मैसन में दिखलायो ॥
 सज्जन बूद क्षमा करियो त्रुटियाँ यह योग मुयोग बनायो ।
 मैं कविताहि करी हिय सौं कछु बाहु न मो कहूँ भाव बतायो ॥
 सिद्धिपती सब बाज सुधारक कीतिमहा जग में यश छायो ।
 गावत वेद पुरान सब गुणमान भदा पुनि पार न पायो ॥
 पूजत गाय सदापहिते तब सिद्धि सुदायक नाम कहायो ।
 जै सुखदायक जै गणनायक पाप निवारक वेद बतायो ॥

सात अगस्त 1932 को जनम आठे के दिन बालक डा. रामानन्द तिवारी ने प्रजराज की महिमा की आराधना में कछु सर्वया लिखे है । इन सर्वप्रधान में बालकवि के स्वामाविक कामल हृदय की अभिव्यक्ति भई है या मजह भाव से बालकवि के हृदय की अनुभूति निमरत भई है । याम 'नद के द्वारे' की महज भाव से समस्यापूति बालकवि डा. तिवारी ने कवि हृदय से भई—

बीत गयी दिन धेनु चरावत माझ भये घर आय पधारे ।
 दमन की अभिसाय बढ़ी हृदयातुर में नारि बिचारे ॥
 मुनक मधुरी मुरली धुनि कू बज के नर नारि काज बिसारे ।
 दरसातुर गोपिन ग्वाहन की बहुधीर गईं जुरि नद के द्वारे ॥

समस्यापूर्ति के डा तिवारी के बालवाक्य मे भाव प्रवणता अरु महज अभिव्यक्ति की उपस्थिति बिनकी काव्य प्रतिभा के चमत्कार कू प्रमानित करिबे कू पर्याप्त है। नेक तो नाय सगै के कविता लिखबे की प्रयास कियो जा रह्यो है। “नद के द्वारे”, समस्यापूर्ति मे सुदामा की घरवारी कैसे सुदामा कू अपने सखा श्री कृष्ण के पास जायबे की सलाह दे रही है।

ब्रजराज सखा तिय नै अबुलाय महादुख सौ यह वैन उचारे ।
इहि भाति व्यतीस भयो बहुकास सहै दुखघोर कठोरहु सारे ॥
बहु देय सहाय कह्यो तुम ही प्रिय, द्वारिकानाथ हैं मित्र हमारे ।
नाथ अनाथन के नित वे, तुम जाहु न क्यों नद नद के द्वारे ॥

घरवारी की बात सुनके बिचारी सुदामा ब्रजराज के घाम माऊं चल दीनी। अगलेई छद मे दूसरे भाव ते ‘नद के द्वारे’ समस्या की पूर्ति दखो—

तिय की सिख सुन्दर द्वारि हिये द्विजराजसु द्वारिका घाम सिधारे ।
तन छीन मलीन दुखी द्विज के मग के दुख घोर कठोर सहारे ॥
द्वारिका जाय के लोगन सौ उन द्वारिकानाथ के घाम पुकारे ।
पूछत पाछन यों सब सौ पहुँचे तब वे नद नद के द्वार ॥

याई तरिया एक छद अरु देखो—

नारद सारद व्यास रटे नित पार न पाय सर्व पविहारे ।
गोपिन के सग रास रच्यो बबहु बनि राम फिर बन भारे ॥
ब्रजराज अलीकिक लौकिक हू समुझे नहि जात प्रपच तिहारे ।
वसुदेव प्रिया गह जम लियो अरु दुदभि बाजत नद के द्वारे ॥

आठमे दर्जा मे पठते भये डा तिवारी ने बालध्वनि पै अपने मन के भावन कू उतारी है। छोटे से शिशु की मुसकान छोटे छोटे दूधियाँ दाँत अरु सोनरी बोली की देखी कैसे सुन्दर चित्र खींची है किमोर कवि डा रामानन्द तिवारी नै—

हे शिशु तब मुसकान, मृदुलता है मन हरनी ।
काया अति ध्वियुक्त मनोहर कचन बरनी ॥
कजकली सम खुलन अधर की सुन्दर मोहत ।
चमकत मोती तुल्य दाँत मन मोहत जोहत ॥

सोहत सुपमा मूर्ति मनाहर तब चन्द्रानन ।
 रत्न जटित धुतिमान विराजत कुण्डल कानन ॥
 माता वं हिय मोह भरत तब तोतरि बोलनि ।
 लाजत मस्त मतग लखै तब डगमग डोलनि ॥

डा तिवारी ने अपन बालपन की प्रजभाषा काव्य रचनान में जग जग प्रकृति विननऊ करी । आठमे दर्जा में आते भय डा तिवारी कूँ काव्य अरु सैली की बलू कलू ज्ञान है गयो हो । जाईकारन जा समै की बलितान में प्रौढता के दरसन होय है । सन् 1934 में दसम दर्जा की परीक्षा के आस पास बिने विभिन्न रिक्तुन के बलू सबैया लिखे है । 'शरद' व आनन्द की एक श्रावी प्रस्तुत है—

मोहत दृश्य सबै मन रजन लजन बोलत है मृदुबानी ।
 बाम सुवीर घरे तन ऊपर शारणि सु दर नारि सयानी ॥
 आनन चन्द्र की चार घटा मन माहत जोहत हो सुखदानो ।
 चार मिगार अमाल लखै रति सुदरता बिन माल बिकानी ॥

किसोर डा तिवारी जीने अपन प्रजकाव्य में ब्रज के कृष्णप्रेम के ऊ एक ते एक सुदर सुरप प्रस्तुत कीनी है । विमोघ की सरसता की सहज प्रवाह दसनीय है—

अलबलनि बेलि बलालनि में करकज सौं बाह दई ममकी ।
 मुमकान मनोहर लाल तिहारी अनी सी अजी सर मे बसकी ॥
 बनकुंजन बेलि मनिदन व बतिषा तब मानी सुधारस की ॥
 मुधि आवत लाल तिहारी अजी घनदयाम घटा लखि पावस की ॥
 बिन उवाल जगाई हिये बल बालि तान सुनाइ सुधारस की ।
 मुनि घोर घटान की मोर मरोज न पानि बिद्या उर की मयरी ॥
 बरियो घन सोचि के चार घनी अब बात न बाक रही बमकी ।
 बदि जहै जु आह विमोघिनि की उठि जहै घटा घन पावसकी ॥

पावस की विद्या बिनक दुखदायी होय है या की मच्छी आभास तो भुगत भोगी जान सके है । डा तिवारी व किसोर बनि हृदह ते सुनी पावस के विमोघ की वेदना—

अब सौं प्रिय प्राणनिषु ज तजो सब भूल गई बतिषा रनकी ।
 भई दाहक सीतल मम समीरह बोस सौं जात धरा धरकी ॥

किन सो कहो कीन सुने सबनो कहु जानहि को मन की कसकी ॥
नहि जाति हि नाहि सु आजु करै नहि काटि विभावरी पावसकी ॥

डा तिवारी ने अपने बालपने में सामाजिक परिवेश की बुराई कौज जग जग पर उल्लेख कीनी है। परतन्त्रता के निदान में विदेशी सरकार की सिच्छा प्रणाली की बुराई को उघारते भये बिन लिखी—

शिक्षा पादचात्य सम्यता-अति धनकारी ।
महाभोग यह लसत पठितन हूँ मे अतिभागी ॥
किंतु वस्तुतः महाप्रष्ट शिक्षा यह आई ।
सेवक वृत्ति प्रसार हेतु जग में चलवाई ॥

डा रामानन्द तिवारी के बालकाव्य माँहि अपने परिवेश के भावन को बानी दई गई है। सैली छंदविधान अरु मापा की दृष्टि से डा तिवारी के व्रजभाषा के बालकाव्य माँहि दोस देखे जा सक हैं। पर भावन की सहज प्रवाह या बालकाव्य की सबसे बड़ी विशेषता है। कालिदास की ऋतु संहार अरु सुमित्रा नदन पत्र की 'वीणा' काव्य-सकलन इन महाकविन की बाल सुलभ कविता है। सैली अरु काव्यगत सौन्दर्य की दृष्टि से इन महाकविन की प्रारम्भ की इन दोनों रचनान माँहि भीतेरे दोस हूँ जाय सक हैं। पर काव्य के समग्र जिज्ञासु भाव प्रवणता के सहज आलोक में इन दोसन को नाय गिनै। याई तरियाँ डा रामानन्द तिवारी के बालकाव्य की समीक्षा करनी चाहिये। तिवारी जी के बालकाव्य में भीतेरी रचना शादी व्याह के मौके पैऊ लिखी आई हैं, बिन अपने मित्र अरु अम्मापकन के व्रजभाषा में भावुकता भरे पत्र लिखे हैं। मित्रन के व्याह के भीतर पै प्रेम भरे भावी जीवन विसमकऊ पत्र इनमें मिल हैं। पर एक बात कहनी चाहै है कि डा तिवारी के अजाने जा व्रजकाव्य ते जि प्रमानित है कि बालक तिवारी में सहज काव्य-संस्कार ईसुर प्रदत्त है जो आगे चलके बिनके 'पावती' जैसे महाकाव्य अरु, अय लण्ड-काव्यन में प्रकट भये हैं तिवारी के बालकवि ने अपने परिवेश की बुराईन को पूरी ईमानदारी के संग काव्य में उतारी है यामे स देह नाय।

डा रामानंद तिवारी जी के जीवन अरु रचना प्रक्रिया के कछू सस्मरन

डा रामानंद तिवारी जी के पास मोय चार बरस रहवे की ओसर प्राप्त भयो है। इनमे ते दो बरस ऐस व्यतीत भये के चौबीस घंटा में छाया की तरिया बिनके पास रहता। बात सन् 1960 की है जब हाई स्कूल की परीक्षा देकें प्री यूनिवर्सिटी में प्रवेश सियो। कालेज में एक दिना खेल मैदान में तिवारी जी ने मोय समझायो कि जीवन साधना ते बने है। मैंने नतमस्तक है कैं बिनकी बात कू स्वीकार कीनी। बे चले गये। इतेक मेई सगी साथी आ गए अरु हम सब मिलके रसिया गायबे लगे। सब रसिया गा रहे, मैं नाच रह्यो। सब जोर जोर ते हल्ता कर रहे। आवाज प्रिंसिपल के कमरा तानू पोच रही। बिन्न चपरासी भेजो। मैं तनमय है क नाच रह्यो। चपरासी कू देखकें सब भाग गये। चपरासी नै माफ़ू पकर लियो। मेरी पेसी भई। पंद्रह मिनट पैल जीवन निर्माण की साधना को पाठ पढ़वे भारी विद्यार्थी एक अपराधी की तरिया ठाडो। बिननै मेरी तरफ देखो अरु मुस्काय। बिनके देखवे अरु मुस्कावे ते ऐसे लगो जैसे हिमालय की पहाड टूट परो, हजारो कारे बिच्छुन नै काट लियो होय। ऐमो लगो मोय समुद्र में फक दियो। काटो तो गून नाय। म्हो सूख गयो, धरती घूमवे लगो आकास हिलवे लगो। सब मुस्करामते भये तिवारी जी ने आदेस दियो के कस सो तुम मेरे पास रहोगे। कवि साधक चितक के जा व्यक्तित्व की ऐसी प्रभाव पडो कि मैं अपने घर बार कू छोडके तिवारी जी के घर रहवे लगो। जीवन की धाराई बदल गई।

तिवारी जी मैं मैंने सब भावन में अरु सब परिस्थिति में लोप हैब की एक प्रखर शक्ति देखी है। मैं समझ ना पा रह्यो कि बिनके या व्यक्तित्व के सत्य कू कैसे उजागर बियो जाय। गर्मी की छुट्टीन की बात है। भरतपुर में इन दिनान में पतंग उडे है। तिवारी जी की इच्छा हुई कि पतंग उडाई जाय। मोय लैने के मथुरा गये। बिनने कही कि मथुरा में डोर पतंग सबमो अच्छी मिले है। चौके में पतंगबाजी में दखलदाजी रखती हो। मथुरा में बिन्ने चार पाँच सौ रूपया की पतंग डोर सरीदी अरु भरतपुर में आये। बिन्ने पतंग उडावो सिहू बियो। कैसे पतंग उडानो चड़े, कसो मजो होनो चड़े, पतंग

की काप कैसी होनी चाहिये । पतंग उड़ाते भये बिघ्न कही पतंग उड़ावो हमारे देश की ऐसी सेल है जामे एक व्यक्ति पतंग उड़ावे । यामे तिवारी जी की दार्शनिक विचार हो पतंग मे हम ऊपर देखे । जाते हमारो अहंकार नष्ट होय है । सिरू मे एक पतंग उड़ायी कि बिनकी 3-4 पतंग एक सग कट गई । बिघ्न कही को मजो बेकार है । फिर तिवारी जी की खोज सिरू भई अच्छो मजो मिलनो चाहिये । बिघ्न मजो बनावे की कही । बिजली के बल्बन कू दिनभर पोसते रहे । तिवारी जी के सग बैठव मांजो की लुगदी बनाई । धोती काछ कै एक तरफ से तिवारी जी एक तरफ से मैं मांजो सूतवे लगे । दो दिना के कठिन परिश्रम सो मांजो तैयार करयो अरू पतंग उड़ाई । पतंगवाजी के बारे मेऊ मैंने तिवारी जी मे एक साहित्यकार के दशन किय । बे उमग के सग बाल भाव सी छोटे छोटे बालकन के सग पतंग उड़ाते । छोरा जब परेसान है जाते तो तिवारी जी मन मे मुस्कराहट अरू नेह याई तरियां प्रकट है जातें जैसे प्रसन्नता के छन मे मन मे उठे है ।

सन् 1962 मे वे भरतपुर महारानी कालेज के प्रिंसिपल बना दिए गए । बिनकी अनिच्छा के बावजूद जबरदस्ती प्रिंसिपल बननो पड़ो । पूव प्रिंसिपल रिटायर है पय । सरकार न कोऊ की था पद पे नियुक्ती नाय कीनो । सिंगरे या काम कू तिवारी जी सी करानो चाहते । याही समे चीन ने भारत पे आक्रमण कर दियो । तिवारी जी भीन दुखो भये । रात भर जागते हिमालय पे है रहे रक्तपात से बिनके मन मे भीत पीडा ही । अपन रचे भये काव्य की जोर से पाठ करते अरू भावाप करते जाते । मैं बिन बातन कू सुनतो पर मैं बिनकी का व्याख्या करतो जाते हमारो सांस्कृतिक गौरव सामे आ सकै है । हमारी सभ्यति मे हिमगिरि की स्थान है । अपने एक-एक छन्द मे व्याख्यान देते । पर मैं का समझतो टी डी सी को छात्र हो । बिनके व्याख्यान कू का समझतो । मैं देखतो के बिनके मुख मडल सी तेज निकरतो । बिनके पास बैठके अरू बिनकी बात करके दिव्य आनंद की अनुभव हो तो । जा तरियां रान के सीन बज जाते ।

एक अध्यापक के रूप मे बिनके सम्मरण कहा तानू सुनाये जाय । तिवारी जी कहते कि अध्यापक की काम पढ़ावो है । बाकी काम योनेदार की नाय है । वे या बात ते दुखी है के उपस्थिति के नाम पे डडा के जोर से विद्यार्थी कू डोर-डवर की तरियां बसा मे बेठा लियो जाय । वे कहो करते जो छात्र मेरी कक्षा मे नई आनी चाहें ना आवें । जा कारन वे हाजरी करते अरू अपना भूो नीची कर लेते । जो छात्र केवच हाजरी कू आते वे चुपचाप निकर जाते । वे चाहते कि मैं ऐसे विद्यार्थी तैयार करू जो हृदय मे वेद अरू हाथ मे परमु घामे । वे परमुराम कू गुरु मानते अरू कार्तिकेय कू आदर्श विद्यार्थी ।

अबई दो बरस पैले की बात है। वे प्रोस्टेट (पीयूषग्रथी) के बढ़ने के कारन दुखी है। जीवन ते तिरास है गये। मैने बिनते जयपुर चलेवे की कीही। जवरदस्ती आपरेसन करावे को हट करके बठ गयी। जब तानू आप जयपुर नई चलोमे, मैं नई जाऊंगी। कुछ दिना पीछे वे जयपुर आये। तीन महीना मेरे सग रहे। बिनकी बाणी बिनके भाव मे कितेक कष्ट हो। बिनन नई कियो जा सके। वे जयपुर ते ठीक हैक गये। वे मानते हे कि बालक कू दक्षपन ॥ अगर स्थावलबी बनायो जाय तो बू शिष्या के जगत मे श्रेष्ठ सौ श्रेष्ठ अङ्ग प्राप्त कर सके। बिना अपनो य प्रयोग अपने बालकन पै करी। तिवारी जी के बालक दसवे दर्जा तक काऊ स्कूल मे नाय पड़े। वे घर पै ई पड़े हे। वे अपनो काम स्वय करते। वे बालक अपनो काम काऊ दूसरे ते करवावे की कोसिस करते तो तिवारी जी फटकारते हे।

मैं तिवारी जी के साहित्य सजन की साच्छी हू। मैंने सुरसुनी के वरद पुत्र डा तिवारी जी के सग बे छन व्यतीत किये है जिनको आनंद बानी ते बवान नाय कियो जा सके। वे अपने हाथ ते भीत कम लिखी करे हे। सब कछु बोलवे लिखायी करते। मैने बिनके कई ग्रंथ लिखे हे। जाके बढ़ने वे विद्यार्थी कू कछु उपहार या आसीरवाद रूप म पत्र-पुष्प दियो करते हे। मोपे बिनकी इत्तेक किरपा अरु नेह हो के बिन्ने मोय घर के सदस्य की तरिया राखी हो। मैई का बिनको तो प्रत्येक छानई घर को सदस्य हो। ब जब कोऊ ग्रंथ लिखते हे तो बिनके मुख मण्डल की अवस्था कछु भिन्न है जाती है। एक दिव्य आनंद को अनुभव हो ता हो। आनंद मे तनमय है के वे बोले जाते अरु मैं दत्तचित्त है के लिखती जाती हो। एसो लगतो हो जैसे समय की चघन टूट गयी है। पतोई नई पढतो हो के तीन चार घण्टा कसे निकस गये। गोपन बिनके लेखन की सक्ति हो। वे अपने ग्रंथ के लेखन के विसै मे बाऊ कू बतायी नाय करते हे। मौसी जी (धम पत्नी डा गकुलला तिवारी) या मोय मालुम रहती। कऊ दफे तो जब वे काव्य रचना करते तो बाकी भनक तो मोकू तक नाय लगती ही। पावती महाकाव्य रचना के विसै म बिन्न एक दफ मोय बडोई चमत्कारिक प्रसंग बतायी हो। ब जयसकर प्रसाद की कामायनी के सौंदर्य विधान पै पी एच डी कर रय है। बोटा म सजा के समी सौंदर्य सास्त्र के कछु ग्रंथन कू पडिबे कू वे मकान की छन पै बैठे हे। शकराचार्य की सौंदर्य लहरी के कछु छंद बिन्न पड़े हे। छंद पढतेई बिन्न सक्ति ते छंद लिखवे की प्रेरना भई। अरु अनायासई बिन्न ई छंद सक्ति की धाराधना मे लिख डारे। बम बाई दिना ते पावती की लेखन सुरू है गयो। जे दोनू छंद 'पावती महाकाव्य के मगनाचरन के गुरू के ई छंद है। ब अक्कर बतायो करे हे के पावती ने मूरज नाय लेखी। ब बाटा म सगरे चार बजे उठते अरु छे बजे तानू रोज नियम ते 'पावती' लिखने। जा तरिया ई बरम तानू 'पावती' लिखी गई। घरती य मोय के एक् माघज के नियमन की मठोरता ते पासन करते भये 'पावती' लिखी गई

हे। मैंने 'पावती' के लिखे भये पन्ना देखे हैं। जने हम घसीट म लिखे हैं घँस पावती लिखी भई हे। छंद यति असकार काऊ चीज को दोस नाय। 'पावती' लिखानो अरु अच्छे बागज प बाको प्रकासन ये निगरे काम स्वयं तिवारी जी ने करें। एक अध्यापक न अपने पइसा ते चार सौ पन्नान की ग्रंथ प्रकासन बू तिवारी जी ने कहा ते पइसा इछाठीरे करे याकी तरफ काऊ ने आज तक ध्यान नाय दोनो। धम पत्नी के आभूसन तक हिन्दी के या यरद पुत्र बू बँचने पड़े ह 'पावती' प्रकासन मे।

शिक्षा के विसँ मे बिनके अपने विचार हे। बिनके हँ पुत्र अरु पुत्री याको ज्वलन्त उदाहरन हे। बिनके बच्चा सीधे बालिज मे भरती भये। इन बच्चान को बाल जीवन अरु बिनकी सिच्छा दीवशा को मैं साक्षी हू। मैं जब प्रथम बप म पढ़तो हो एक भाषा प्रतियोगिता भई हो मेनेक वाम भाषण दीनो हो। अध्यापक तिवारी जी ते कही—'तुमने विष्णु बू अच्छो भाषन लिखो हे। बाने रटक लियो।' घर आय के तिवारी जी ने मेरी पीठ ठोकते भये हरसित है के मोते कही—'आज विष्णु मैं सोने भीतई प्रसन्न हू। तुमने मेरी भाषा कू अपने हृदय मे उतार लियो।' या बात कू उ समै समै पै उद्धृत करो करते। तिवारी जी के ग्रंथन कू लिखाते-लिखाते बिनकी भाषा इतेक हृदय मे पठ गई ही के मन ते बई प्रतीक अरु सन्द योजना निकरते हे तिवारी जी की सक्नते प्रिय अलकार रूपक रयी है। बिन्न अपने गद्य अरु पद्य मे रूपक की जगै-जगै प्रयोग कीनी है। प्रयाग की गंगा सुरसुती, यमुना हिमालय, गगोत्री प्रात कालीन उषा के एक ते एक सुन्दर साग रूपक तिवारी जी के सत्य-शिव सुन्दरम् अरु 'पावती' मे है। सत्य-शिव सुन्दरम् की कविता क्या है। मैं गद्य मे साग रूपक की छटा के का कहने। मोय ई लिखावे मे नेकऊ सकीव नाय के 'सत्य शिव सुन्दरम्' की कविता क्या है अध्याय कू हिंदी की सब श्रेष्ठ गद्य काव्य कह दें तो अतिसयोक्ति नई होयगी। हिमालय अरु गगोत्री कू यामे मानव की काव्यकला के सग जो रूपक के द्वारा कविता की परिभासा दई है बाको मुकाबलो नाय। प्रयाग की रूपक बिनके मानस मे इतेक छायो भयो हो के वे जगै-जगै इलाहवाद के सगम के रूपक को अपने गद्य पद्य मे प्रयोग करत ह। वे या बात कू बेर बेर कहतेऊ के इलाहवाद को प्रभाव बिनके जीवन म इतेक छायो भयो है के वे बातें मुक्त नाय है सके।

स्यात् सन 1961 की गर्मीन की बात हे। तिवारी के घर पे मानो बीमारी की पहाड टूट पडो हो। मोसी जी (घरवारी) अरु प्रमोद कू मोतीबारा बुलार है गयो हो। बिनोद अरु अचना छोटे छोटे हे। बा समै वे आय समाज भरतपुर पर स्थित एक ठेकेदार के मकान की तीसरी मजिल प रह्यो करते है। घर की हाल खराब है गयो। नल म पानी आये नई अरु तीसरी मजिल पे तो सवालई पैदा नाय होय। मे बिन दिनान मे चौरीसो घण्टा तिवारी जी के दिग रहतो। बाजार ते दवा खानो साग-सब्जो

सानो, बाक्टर के पास जानो अरु नीचे की मजिन ते पानी भरवे सानो । घर के सिंगरे पइसा मेर पासई रहते । सबरी व्यवस्था मोई कूँ करनी पड़ती । तिवारी जी तो बीमारी के कारन निढाल स है भये । मोनई दुखी । मोनई व्यथित । प्रमोद एव बिस्तर प दूसरे पै मोमी जी । खोर दिना पीछे सब स्वस्थ हूँ गये अरु फिर पतगवाजी की खेल मुरु भयो । माई समै मेरी बपगाठ आई । तिवारी जी न सोरो ते रतानू मगवाये अरु अपन हाथन ते जनेबी बनाई । हम सबन कूँ बठार के अपन हाथन ते परासगारी करी । बीच बीच ॥ बे जलेबी बनबावे को तरीबा अरु रतानू के साग की बिसेसता बताते जाते । कौंसो आनन्द को दिना हो वृ । आजक 1961 की गर्मीन के या दिनान के छनन कूँ आद करु हूँ तो मन आनन्द हो भर जाये है । तिवारी जी कूँ रतानू की साग सबारी ज्यादा प्रिय हो । बा दिना पैलो दर्फ में जान सकी हो क बिनकू बाई साग अति प्रियक रह्यो है । बिन मो स्नहासीन देतो भय एक छद लिखके 'पार्वती' भेट करी ही । 'पार्वती की जि प्रति आजक मेरे पास सुरच्छित है । जब जा महान साहित्यकार ने अपनी आंखिन रोई बूद नहूँ के झरो दिव्य मोतीन के मग मोय पार्वती दीही ही तो मेरो मन अचानक एकाध है गयो हो । कछ छन तो मोय अपनोई भान नय रह्यो । हि दी के महान साहित्यकार के हृदय म स्थित मानव कल्याण की आनन्दमयी विराट चेतना के मैन दरसन करे हे बा दिना । बिनकी आंखिन में अनुभा अरु देनी-यमान लसाट ते तेज के विराटत्व को मोय एसी भान भयो के मैं तो आनन्द मे वेसुध सी है गयो । लगी हो के कोई अलौकिक शक्ति बिनके भीतर ही जो बिनते साहित्य को सृजन करवाती ही । जाई अलौकिक शक्ति की कछ आभास मोय बा दिना भयो हो ।

सन् 60 या 62 मे बिनकू कालिज की परीक्षान म एडीगनल सुपरिडण्ट बनया गयो । बे तो नेकड नाय चाहते या पद कूँ लनो । पर प्रिंसीपल साति स्वरूप नई माने । बिन दिनान मे परीक्षा सवेरे अरु सजा कूँ हुओ करती ही । छात्रन मे टीपवे अरु परीक्षा मे घमाचौकडी करिबे की बिन दिनान मे रिवाज मुरु नाय भयो हो । परीक्षा दस बजे है जायो करती ही । फिर सजा कूँ तीन बजे मुरु होती ही । पाब पण्डा की घाली समै मिल जातो । मैं आय सम्राज रोड क घर ते बिनको भोजन लेके आतो । बे भोजन करते अरु ग्यारह बजे पेड क नीचे लिखावे लगते । राज एक बिर्त पै एक लख लिख जाती । डेढ महिना तानू परीक्षा चलो । जामे तीस या चालीस विभिन्न बिसयन के पेस मैन लिखे हे । बे बस एक पन्ना म कछ सन्द लिख लत । अरु पारावाहिक रूप से बोखते जाते । मे लिखतो जातो । बिनके बोखे सन्द अरु वाक्यन कूँ लिखते लिखते मोय इतेक शक्ति आय गई ही क मोय परीक्षा म उत्तर लिखवे म नकड जोर नय पड़तो हो । आजक मेर पास तिवारी जी की भापा बिन-मासीरबाद क रूप म सुरक्षित हे । कई दफे लोग मेरी भापा की प्रसंसा करे है । मे जब भाषण दऊ हूँ तो तिवारी जी की भापाई मेरे मोह ते फूटे है । लोग कह है— पाठक जी बडो अच्छा

बोलो हो ।" मैं जानू हूँ या सत्य हूँ । मैं नाय बोलूँ तो तिवारी जी की भाषा बोलेंगे । बिनके सम्पन्न की विराट चेतना बोले है जो बिन मोय दई है । भाषा के रूप में अनमोल धरोहर मेरे पास है जो मोय बिनते मिली है । जब मैं राजस्थान गजभाषा अकादमी की अध्यक्ष बनो तो गज सातदल' के प्रवेशक को देखके बिन मोय लिखा हो— तुम्हारे हाथों से गज अकादमी निरंतर उन्नति करेगी । गजराज सहायक और सरदार है ।" पाँच बरस के अंतराल में बिनकी बानी सफल भई या नहीं भई ई तो मोय पतो नाय । पर इतक मैं जानू हूँ के अकादमी के वायवसाय में वे हमेशा मेरे सग रहे हैं । चाहे सम्पादन की बात होय, चाहे पत्रिका निवारये की बात होय तिवारी जी की भाषा चेतना मेरे हमेशा सग रही है । सजा हूँ सात बजे प्रेस में कहना-वत आवे है के दस पेज की मेटर चढ़ये । बा सग तिवारी जी की दई भई भाषा की धरोहर मेरे काम आवे है । मैं दनादन स्टेनोग्राफर हूँ बोलतो जाऊँ अरु एक् घण्टा में दस पन्ना तैयार । जाई कारन अकादमी की मुख पत्रिका 'गजसातदल' के प्रकाशन में गत पाँच बरस में एकऊँ अरु की चूँ नाय भई । पत्रिका के सम्पादक या सत्य हूँ जाने है कि कई दफे जब मीटर चुक जाए है तो सम्पादक हूँ दूसरे के नाम से लिखतो पड़े है । याको मेऊँ भुक्त भोगी हूँ । पर तिवारी जी की दई भई भाषा अरु चितन सक्ति के कारन मोय तो नेकऊँ जार नाय आयवे ।

तिवारी जी की साहित्य लेखन-रचना प्रक्रिया के बिस धोरो और बतानाऊँ मैं जरूरी समझू हूँ । मैं बिनके पास लिखतो हूँ । कालिज के भीनेरे प्राध्यापक मोते पूछने हे खोद खोद के । बिनहूँ भीतई आस्थाय होतो हो बिनकी लेखन कला के बिस में । मेरो एकई जबब होतो हो के 'वे बोलते जाय अरु मैं लिखतो जाऊँ । कई अध्यापक तो यहा तानू कह दे—'जि होई नाय सके ।' वे बैठे रहते । बिनके सामे एक रजिस्टर रखो रहता हो । बस बापे कल्ल वाक्य अरु एक् सव्द में दूसरो सव्द तानू जोडवे बारी टेडी मेडी रेखा सी खींचते जाते है । जब ग्रथ या लेख लिखवाते है तो वे पन्ना बिनके सामन धरे रहते अरु धारावाहिक रूप में बोलते जाते है । कई दफे बीच बीच में मैं रुकके पूछ लेतो हो के आपन जी ई तथ्य लिखायी है वू स्यात या तरियाऊँ है सके । बिनकी लिखबो अचानक बदल जातो अरु अपन विचार हूँ समझायवे लग जाते । एक् दिना की बात तो मोते कबळ नाय भूलो जाय । वे समात्मभाव के बिस पैं लिखाय रह है । मैने लिखते लिखते बीच में वही—'समात्मभाव बालकन मेई सुद्ध रूप सो पायो जा सके ।' मेरो इतनी कहनो हो के वे लिखायबो करबो सब भूल गये अरु मोय समात्मभाव के बिस में समझायवे लगे । तीन घण्टा निकस गये । पतोई नई चल्थी । बिनके मुख मण्डल पे अजब तरिया की तेज हो बा दिना । स्यात बिनके भीतर की साहित्यकार एक सग सग हो बाहर झाँक रह्यो होय । दिव्य आनंद की अनुभूति भई ही बा दिना मोय । वे छन भूले नाय जाय सके । मेरो नौ रोम रोम रोमांचित है रह्यो हो । चार पाँच बरस

पीछे दिनकू या दिना के आनन्द को स्मरण करायी तो वे एवई वाक्य बोल—'विष्णु तुमने समात्मभाव का समझ लीनी है।' समात्मभाव तिवारी जी के चिंतन मनन, लेखन काव्य आदि सबनको केन्द्र बिन्दु है। समात्मभाव के आधार पर बिने साहित्य कला सभृति की व्याख्या करी हो। वे जीवन के स्वस्थ निर्माण में समात्मभाव का मूल मंत्र मानते हैं। बिने भारतीय सभृति की समात्मभाव के आधार पर विवेचना कीनी है। कविता अर अर्थ कलान की मूल श्रोत समात्मभाव में ढूँढने भये बिने 'सत्य शिव सुन्दरम्' ग्रंथ में भारतीय अर पाश्चात्य मनीसीन के कला के उद्गम अर रचना प्रक्रिया विसयक सिद्धांतन को खण्डन करते भय कला की मूल उत्स समात्मभाव में स्थापित करते भये अपनो एक नयी सिद्धांत प्रतिपादित कीनी है।

तिवारी जिन नई ग्रंथ तो सिर्फ पाँच दिन के अंतराल में लिखे हैं। स्यात सन् 1961 के अक्टूबर की महिना की बात है। राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर ने मीरा पुरस्कार का पुस्तक मांगी थी। बा साल आलोचना की पुस्तक पर अकादमी ने पुरस्कार देव को नित्य कीनी हो। इतक में दसहरा की छुट्टी आई। सोस दिना को सभे हो। वे भारतीय समासत्र पर नई उद्भावना के सग ग्रंथ लिखना चाहते हैं। योजना बनी। हरिश्चंद्र शर्मा पांचाल ने लिखने का काम सभारो, डॉ. टाइपिस्ट तैयार कीन गय। मीरा अर मीसीजी (धमपत्नी) का टाइप की त्रुटि सुधारने का काम दोनी गयो। सवेरे छे बजे सो दस घंटे दुपरी में बारह बजे सीं दो बजे सजा का छे बजे सी, दस बजे तानू तिवारी जीन बोलके पाँच सी पन्ना की अभिनव रस भीमासा' ग्रंथ लिखो। मुद्रस्तर पर टाइप की नाम चलतो। मैं दिनभर बैठके टाइप के कागजन में सुधार करतो। यां तरिया पाँच दिन में 'अभिनव रस भीमासा' ग्रंथ लिखो गयो। निश्चित तारीख त पले मीरा पुरस्कार का उदयपुर यां ग्रंथ की तीन प्रति भेजी गई। फिर बिमका अकादमी ने या ग्रंथ पर दो हजार की मीरा पुरस्कार प्रदान कीनी। याते पले तिवारी जी का 'भारतीय सभृति के प्रतीक' पर दो हजार की मीरा पुरस्कार और मिल चुकी हो। प्रमगवस एक बात मोय और याद आय रही है। भारतीय सभृति के प्रतीक' ग्रंथ की पांडुलिपि तत्कालीन 'धमयुग' के सम्पादन डा. धरवीर भारतीय ने पढ ली थी। वे तिवारी जी के विचारन से इतक प्रभावित भये थे भीतेरे भारतीय सभृति विसयक लेख बिने तिवारी जी सी लिखवाये हैं। वे सब धम युग में प्रकासित भये। इनमें से अधिकांस लेख बिने मोय बोलके लिखाये हैं।

तिवारी जी की साहित्य साधना की कथा बिनेकी ग्रंथो डा. शुक्लता तिवारी के उत्लक्ष के बिना सबधा अधूरी है। नह दुसार अर ममता की साक्षात् प्रतिमा डा. अनुत्ता तिवारी न डा. रामानंद तिवारी की साहित्य साधना सफलता की तरफ बढ़ाये म जो प्रान फू के हैं बाको वनन सभन में नाय है सके। मोय वे छन

आजक फ़िल्म की तरियाँ याद है जब अयाय अरु अत्याचार के कारण तिवारी जी की साहित्यकार पुंवार के ताण्डव करने लगती हो। बासमें नेह की बल्ल्याणी बनके माँसी जी साक्षात् सृजन की 'पावती' बन जाती हो। बच्चा दुबक जाते। मैं बाहर निकल जाती। बासमें तिवारी जी व साहित्यकार के रोद्र के बठोर पापणन ते गंगा बनके माँसी जी प्रगट होमती। या सत्य बू तिवारी जिन अपने एव कयन म गदगद है के स्वीकार कीनी है। तिवारी जी की साहित्य साधना अरु साहित्य लेखन मे बिनकी धमपत्नी डा दाबुत्तना तिवारी ने जो समर्पित योग दीनी है बाबो हिंदी जगत हमेसा बिनकी रिनी रहगो।

मेरे पास तिवारी जी के एव ते एव अछूते सम्पन्न भरे परे हैं। विस्तार की भय है। अखिर मैं अपनी बात स या गेय बू समाप्त करना चाहूँ हूँ। 10-12 90 बू सबेरे दस बजे तिवारी जी के निघन की सूचना भया मोहन लाल मधुकरजी ने फफवती बानी ते फोन पे भरतपुर स दर्ई। मैं तत्काल भरतपुर रवाना है गयो। अचानक श्री गोपाल प्रसाद मुद्गल आय गय। मैंने तो समय रस रखी। पर मुद्गल जी पे नाय रह्यो गयो। वे तो बच्चान की तरिया फफव-फफव के रोय पडे। मैं भीतर खिसक गयो। कोन म जाय के असुआ पोछे। भरतपुर आये। सोची सहर मे लोग भीत दुखी हुगें। चौके तिवारी जी भरतपुर व ई है गय है। या सहर कू बिनै इतेके प्यार कीनी के समय अपने बच्चान के पाम जायवे की जगें के भारी मारीरिक रोग की यत्रणा सहते भयेऊ भरतपुर कू नाय छोड सके। चाहते तो वे अपन कोई से पुत्र के पास ठाठ ते रह सकते है। चौके एक कलेक्टर है अरु डूमरो एस पी। दोनों पुत्रनै कई दफें तिवारी जी ते जिहू करी। एक दफें वे चलेऊ गय। पर मन नई लग्यो। भरतपुर की याद बिनकू बराबर सठाती रही। अरु एक दिना अपनी घरबारी कू लैके आय गये भरतपुर। मैं बिनतें मिली हो आये पाछें। भरतपुर आयके वे इतेक प्रसन्न है के सवदन मे नाय कही जाय सवे। पर निघन पाछें समसान मे जब तिवारी जी की नद्वर तरीर धू धू करके पच भूत कू समर्पित है रह्यो हो तो बासमें भरतपुर के कुल जमा सो आदमी म्हा इलठोरे है। इनमेऊ ज्यादातर वासिज के अध्यापक वग ह। भरतपुर के कन-कन ते प्रेम करिबे बारे साहित्यकार कू भरतपुर वासिने एकदम भुसाय दीनी। मोय अपनी जमीन की सिप्पाचार समझ मे आय गयो बा दिना। हमारी माटी म नेता की पूजा है एम एल ए की पूजा है मंत्री की पूजा हैं पर मानव कल्याण की प्रसव पीडा भोगवे बारे साहित्यकार की पूजा नाय।

ब्रज में रचे बसे कवि श्री जयशंकर चतुर्वेदी

श्री जयशंकर प्रसाद चतुर्वेदी 'जय' राजस्थान के ब्रजभाषा के एक सरस-मधुर और मनोहर कवि हैं, जिन्होंने अपने ब्रज काव्य उपवन में नीति, हास्य, भक्ति प्रत्युत्पन्न एवं अन्य भीतरे नयनाभिराम पुष्पन से सजाया मयारो है। इनने अपने काव्य में परम्परा के सग सग आधुनिक जीवन के भावबोध को स्थान स्थान पर उजागर करके ब्रज-माधुरी में एक ऐसी नवीनता को समाहार कीनी है, जहाँ गोपण की बया की अभिव्यक्ति में ब्रजभाषा के शिल्प की अपनी एक अलग पहचान बन गई है। मीठी मधुरी ब्रजभाषा जब इनके कवि के द्वारा गोपण और अधुना आपाधापी की कुठित एक एक पतन को उधारके की जब सिलसिलो शुरू करे है तो यहाँ तीव्र तेवर और ब्रज की मिठास भाग की तरियाँ घातक बन गयी हैं। मीतल चन्द्र की मनोहर चादनी से भाग की लपट की बरसात की तरियाँ श्री जयशंकर प्रसाद चतुर्वेदी के मापण के खिलाफ लिसी गई काव्य रचनान के सीखे तेवर विसम रूप से उल्लेखनीय हैं। कोटि काटि सोमन के मुख से निसरित ब्रज को भक्ति एवं सिंगार की मनोहर छत्रा से निकार के आम आदमी की कण्ठहार बना-यके में बयावद्ध कवि शिरोमणि श्री जयशंकर प्रसाद चतुर्वेदी 'जय' के काव्य की एक एक सग भोगे भये सत्य की सगीक अभिव्यक्ति की तोरन द्वार बनी है। जन भाषा में सामान्य जन के हृदय के गोपण के रिसते नामूर को बड़ी आसानी से सग उतारी जाय सकें हैं वितेक विदेशी आखिन त सामान्य के दुख को काव्य में उतारनी चाहे अच्छी लग पर कागज के फूल तो कागज कई रहिगें। डाइग रूम सजाय के घर की चारदीवारी की सोभा बढ़ानी और खेत खलिहान धौकनी की तरिया आम उगलती बड़ी बड़ी चिमनीन में जीवन पजारते मजदूर भूखे पेट भयकर गर्मी में पसीना में नहाई भई परपर तोडती असहाय मजदूरनी के भावन को अपनी बानी के सग समाहित कर कविता में उतारनी बात दूसरी है। ब्रज के या अनौखे कवि जयशंकर प्रसाद ने पीठिस की पीडा को अपने मन में उतारो है बाकी वेदना को अपने भावलाक में आत्मसात कीनी है और अपने मनोहर काव्य के गगा-जल में मिलाय के सामान्य की पीडा को जन जन की पीडा बनाय दीनी है अपनी काव्या-जलि के पुष्पन के समपन से। असहाय के निरोह सत्य को अपने काव्य में सच्चे अर्थन में आदरणीय स्थान दकें बाय कोटि कोटि उपेक्षित लोगन की चरन बनाय दीनी है ब्रज के या अनौखे कविवर जयशंकर प्रसाद चतुर्वेदी ने अपने काव्य में।

कवि जयशंकर प्रसाद आज जठहत्तर बरस की लम्बी आयु पूरी कर चुके हैं । चालीस बरस छानू अध्यापन ते जुड़े रहें । सुरू में वकालत करिये की सोची । कचहरी में चोखी बहुसऊ बर सीनी । पर मन में सज्जनता अरु कम में ईमानदारी के सस्कारन के कारन वकालत में मन नहीं रमी । अध्यापक बन गये अरु अध्यापकई ते अत में अवकास लीनी । श्री जयशंकर प्रसाद चतुर्वेदी की जनम 17 मार्च 1911 कू बगाने में श्री भाजराज चतुर्वेदी के घर भयो । ग्याहर बरस की उमर में अपने चाचा सोभराज जी की प्रेरणा ते ब्रजभाषा की कविता लिखबौ सुरू करी । नीतिकार्य अरु हास्य रचनान के सग सग श्री चौबे जीनँ समस्यापूर्तिन के रूप में ऊ अपार ब्रज काव्य की प्रनयन कीनी है । समस्यापूर्तिन के काव्य में परम्परागत ब्रज की भक्ति अरु ऋतुवनन की सदाबहार छवि के सग सग इन अपने परिवेश की समस्यान कू उभारवे में कोई कसर नाय छोड़ी । 'नारद मोह' अरु 'विजया कारिका' सीसक ते चौबे जीनँ खण्ड काव्य ऊ लिखे हैं । जाके सगई 'नीति कुसमावलि' के रूप आधुनिक परिवेश के नीति काव्य की विसाल काव्यऊ इनके कवि हृदय ते प्रस्फुटित भयी है ।

समाज में रिसवत, चोर बजारी के बढते भये सामाजिक रोग ते चौबे जी की कवि चट्टेलित है चठी । जाई सत्य कू बिन अपनी एक साधारन कुडली में हजामत' प्रतीक के द्वारा देखो कितनी मन्चाई के सग सतारी है ।

आजु हजामत की फिकर बिरया करि है सोय ।
रिसवत चोर बजार नै, पून कियो सयाग ।
पून कियो सयोग, खोपड़ी दाडी मूढ ।
मिलत न तऊ सन्तोस मुढावन हारी हूढ ।
कह सकर कविराम रहै न कीऊ सलामत ।
महगाई मुँह जोर बनावन रोज हजामत ॥

श्री जयशंकर प्रसाद चतुर्वेदी जी के कवि ने समाज में जो कल देखो वाको उयो की रयी बनन करिये के सग सग बिनै नई क्रांति की आह्वानऊ करो है । लम्बी गुलामी पश्चात आजादी आई । चौबे जी बा पीढ़ी के साहित्यकार हैं जिनँ आजादी की लड़ाई अपनी आखिन ते देखी ही । दूसरे सन्दन में यो कह सके हैं के चौबे जी बा पीढ़ी के साहित्यकार हैं जिनँ आजादी पाछे एक ऐसे देश की कल्पना करी ही जामे आगे बढ़वे के सबकू समान अधिकार हूँगे । न कोई छोटी होयगी नई कोई बड़ी । योग्यता कू पूरी आदर दियो जायगी । पर आजाद भारत में बिनै देखी के सिफारिसई सबते बड़ी योग्यता हैं तो बिनके कवि के बनाये गय आदस के सुपने की सिंगरो महल खण्ड खण्ड है गयो ।

सत्तर वें दसक म आय के तो सिफारसऊ पोछे रह गयी । बहो कठोर भासा म हमारे देस के या नये सत्य कू उभारते भये बिन 'डडा राखी हाथ' प्रतीक ते नयी कवि को सल फू की है । चापलूसीऊ अब नाय गही—

अर सिफारिस मर गई, अब गु डन की जार
चापलूस तू व्यथ हो यहा मचावत सोर ।
यहाँ मचावत सोर लव गयी समय तिहारो ।
काम करावन हेतु नई सरकीब निहारी ।
कह सकर कविराय, डड पेसो कर मालिस ।
डडा राखी हाथ अरे ! क्यों करो सिफारिस ।

समाज की आपाधायी, याई तानू नाय रुकी । हमारे देस म एक समी ही जब सक्तिमाली कमजोर कू सतायबो सबन ते बडो पाप समयते हे । पर आज तो आके पास सारीरिक पमु बल है कू सबनते ज्यादा मुखी है । सारीरिक पमु बल के सामे तो हमारे देस की पावन प्रजातन्त्र करारह्यबे लग परी है । भले लोगन की विचारन की आज का बिसात है । हमारे समाज के प्रजातन्त्र की जि दुर्भाग्य देखीं कवि जयशकर प्रसाद चतुर्वेगी के कवि हृदय ते कितोक तीखे यथाय म निपट के आयी है—

सूटी निघरक सान सौं यही सयानों काम ।
शादा बन सुख पाइए कर लीजें जग नाम ।
घर लीज जग नाम, भले भोगन दुख दीजें ।
नेता की धरि रूप आपुनी घर भर लीजें ।
बहे सकर कवि पाप घडा फूटें तो फूटे ।
डाल पील सब डील ताब भू छन दे लूटें ।

प्रजातन्त्र की नेता बूई है जो ऊल जलूल आपन पल सके और उमूल की पक्की नई होय । 'दलबदल' जैस प्रजातन्त्र के असाध्य कू रोगऊ बीबे जीने अपा तीखे तेवर के सदन ते नाय बनमी है—

जोर जोर सौं दे सर्व भासन ऊल जलूल ।
नेता पक्की है वही राख नाहि उमूल ।
राख नाहि उमूल घर अपनी मनमानी ।
झटपट दन की बल घर निज स्वारथधानी ।
बह सकर बजि नह करे जो तोर-फोर सौं ।
अफसर पं मद जाइ बील जा जोर जोर मो ।

समाज को एक एक इकाई में पनपती नैतिक पतन की सच्चाई को चौबे जी ने एक-एक करके अपने काव्य में उतारके रख दीनी है। डाक्टर वकील अध्यापक, व्यापारी आदि समाज की ऐसी इकाई है जिनके व्योहार और चरित्र पर हमारे प्रजातन्त्र की सुनहरी भविष्य टिकी भयी है। चौबे जी के कवि ने समाज के या क्षेत्र के लोगन को देखो के बैठे धीरे धीरे अपने धर्म से च्युत है रम्य है। आध्यात्म की रस्ता बनायके बारे साधु आज कैसे अधर्मी है गये है। याकी तीखे तेवर की अभिव्यक्ति देखो कवि जयशंकर जी के या काव्य कथन में—

साधू के सिर जटा हो राखे डाढी मूछ ।
तन भभूत कर चीमटा, हो पड़ित की पूछ ।
हो पड़ित की पूछ बेघडक घडा बतावै ।
पीब गाढी भांग चरस दम खूब लगावै ।
कह सकर कवि माल उठाकै भोजन स्वादू ।
बेसी राखै सग बौहरा हो सोई साधू ।

याई तरियाँ अध्यापक जगऊ अपन सच्चे कम से च्युत है गये हैं। आज के अध्यापक न तो ज्ञानाजन को पढे है और नई पढ़ावे के प्रति बिनके मन में काऊ तारिया की आकसन बचो है। कोऊ सगै में हमारे देस में अध्यापन सबन से ज्यादा पावन कम मानो जातो हो। राष्ट्र के भावी नागरिक की निर्माता भानी जाती हो अध्यापक। पर बूई अध्यापक आज कैसे भटक गयो है। अध्यापनऊ व्यापार बन गयो है। याई सत्य की यथाय झाँकी दीनी है कवि जयशंकर प्रसाद जतुबंदी जी ने अपने ब्रजकाव्य में कई स्थानन पर। बिनमें से एक झाँकी उपयुक्त भाव की प्रमान में प्रस्तुत है—

अध्यापक सोई जतुर माल बजावै जाई ।
बात बिरानी जतन सो जगह जगह दे पोई ।
जगह-जगह दे पोई, पढ़ै न नाहि पढ़ावै ।
अपने गुन प्रगटाय छवि में चढे चढ़ावै ।
कह सकर कविराय करे जो टयूसन व्यापक ।
चटक मटक सौ रहे भ्रमित सोई अध्यापक ।

अध्यापक की तरियाँ सरकारी कार्यालय में काम करिये बारे बाधू तबन के प्रजातन्त्र की मौज मस्ती और अफसरान को अपनी अगुरिया पर नचायके के बिनके दृश्य चौबे जी की पंजी कवि दृष्टि सों नाय बच पाये। सरकारी कार्यालयन में भ्रस्टाचार की

अमरवेन कैसे फूल फल रही है याकी साची साची सपाट बयानी करिबे मेऊ चौबे जी को
कवि पीछे नाय रह्यो है ।

बाबू बढिया है वही बात करे इक्कीस ।
कागज कूँ अंगी करे मिल नही जो फीस ।
मिले नही जो फीस गलत तो नोट लगावे ।
ऊपर भेजी मिसल, घूठ कह जन बहुबाँधे ।
कह सकर कविराय करै अपसर पे कावु ।
उल्टी सूघी करा लेई बढिया सोई बावु ।

रोग निदान अरु चिकित्सा व नाम पे निदान करिबे बारे डाक्टर कैसे दु खी जनता
कू लूट रमे है । हमारो नजरिया इतेव व्यक्तिपरव अरु स्वाय मरौ है गयो के चिकित्सक
जैसे सेवाभावी व्यवसाय तक मे डाक्टर की ज्यादा से ज्यादा जेई इच्छा इरु प्रयत्न होय
है के कसे मरीज की अटी मे ते पइसा निकारो जाय । बस अ दाय से रोग को निदान
कर आजकल के डाक्टर इलाज सुरू कर दे है । महुगी ते महुगी दवा लिखे है, चाए मरीज
की आर्थिक स्थिति कितेकऊ बिसम ची ना होय । बिचारो कजाँ लेके डाक्टर की जेब
भरे हैं । बीमारी कछू तरिया की है अरु दवा दूसरी बीमारी की बई जा रही है । कवि
वर श्री जयशंकर प्रसाद चतुर्वेदी के कविने ऐसे चिकित्सक को यथाथ वमन करते भये
लिखी है—

सकै न नाडी देखि रोग अदाज लगावै ।
इजकसन लिख सकै कीमती दवा भगावै ।
कह सकर कवि स्वेत भकाभ्रक पहिरै झगुला ।
लूट मरीजहि सकै चतुर डाक्टर सौ बगुला ।

ब्रजभाषा सदाते आदस की भाषा रही है । परि श्री जयशंकर प्रसाद चतुर्वेदी
जीने जीवन के घनघोर यथाथ कू या भाषा मे उत्तार ब्रजी के आधुनिक आयामन मे चार
बाँद लगाये हैं । संस्कृत भाषा सो होमती भई ब्रजभाषा मे आयबेवारी नीति विनयक
काव्य धारा कौऊ चौबे जीने ब्रज माधुरी मे पर्याप्त प्रयोग कीनो है । चौबे जी के
अजाने ग्रंथ—'जय कुसमावलि' मे नीति विनयक ई काव्य सुरक्षित है । नीति काव्य
लिखबो तलवार की धार पे चलबे की तरिया है । नेक चूँ और गये रसातल मे ।
जीवन के विभिन्न घात प्रतिघात की बिसाल अनुभव की निचाह नीति का य की आधार
बन है । शृंगार ते लवे सातरस तक की विभिन्न मनोहर बीथीन मे लहरायबे बारी
कविता के सफल ते सफल चितेरे नीति के गम्भीर महासागर के सार्ध मोन है जाये है ।
साँची तो जि है के जान जीवन के विराट महासागर मे जितेव गोता लगाय हुगे, वू बित-

कई नीति की एक ते एक अमूल्य सीपी निवार के लाय सक है । चौबे जी की ब्रजनीति काव्य जाई तरियाँ के अमूल्य मोतीन की सुघर लडौन ते भरो पड़ो है । इनके नीति काव्य के गम्भीर परायन त हम या निस्कस पै और आये है के इन अपने नीति काव्य में सर्वाधिक ध्यान आज के भाव बोध की राखी है । केवल परम्परा की निर्वाह या सस्वृत अपभ्रंश अथवा ब्रज के पुराने कविन के कथन को पिस्टपेयण इनके नीति काव्य में नाय । ब्रजभाषा को नीतिवाक्य ज्यादातर सस्वृत या अपभ्रंश के पुराने विवेचन की पुनरावृत्ति है या पुरानी बात कू घूमाफिरा के कह दीनी गयी है । देखो नव भाव बोध के कुछ नीति विसयक दोहा—

बदा चार दिन रात करि, नित प्रति मंदिर जाहि ।

सो ढोंगी पाखंड रचि, सकल जगत कर काहि ॥

देखत बोलत मैं लगैं, भले भले जो लोग ।

नीच धिनीने करन करि साधत ढोंगी जोग ॥

गाजा सुलफा चरस दम, सुरापान को भोग ।

तिलक भाष कठी गरे, धारत ढोंगी लोग ।

श्री जयशंकर प्रसाद जीने परम्परित समस्या पूर्तिन के विस्तार काव्य की रचना करी है । समस्यापूर्ति के इन छंदन में आधुनिक भाव बोध रितु वनन एक श्री कृष्ण की विभिन्न लीलान की शाकी के एक ते एक सुंदर ब्रज कविता के नमूने हैं । भाषा में चौबे जी ने भरतपुर की बोल चाल की ब्रज कू अपनी आदसे बनायो है । सिफारिस मुवक्किलक, टपूसन, मिसल, उसूल जैसे विदेशी शब्दन को ऐसी ठाठ के संग अपनी कविता में प्रयोग कीनी है कि लगै ही नाय के ये शब्द उधार लिये भये हैं । कई जगें पै तो अंग्रेजी शब्दन को ज्यों की त्यों सटीक प्रयोग भयी है कि लगै ही नाय कि ई शब्द विदेशी भाषा की है ब्रज की नाय—देखो उत्तर—धनि कानै की अवास मुखद हीटर तपाइवै को ? 'ह्या पै हीटर की प्रयोग हमारे ऊपर रहे गये बयान की प्रमाण है ।

मरुभूमि कौ सरस ब्रज कवि ठाकुर नाहर सिंह

हिंदी साहित्य के इतिहास के लिखवैया ज्यादातर उत्तर प्रदेश के रहे हैं। हिंदी साहित्य की भक्तिकाल अरु रीतिकाल ब्रजभाषा की कालई है। उत्तर प्रदेश के हिंदी साहित्य के इतिहासकारों के कारण इन्हीं उत्तर प्रदेश की ब्रजभूमि तानू जा भासा के साहित्य कूँ अपनी चर्चा की विसं बनायी है। मरुभूमि के ब्रज साहित्य की तरफ इन लोगन की ध्यान नाय गयो। डा सत्येन्द्र ने राजस्थान में रहते भय ब्रज साहित्य को इतिहास लिखी है। पर बेऊ मरुभूमि के भीतेरे ब्रज साहित्यकारों कूँ अपन इतिहास में नाम समेट पाये। राजस्थान सदा तेई डिंगल अरु पिंगल साहित्य सरजन की पावन भूमि रही है। यहाँ के साहित्यकारों एक सग डिंगल अरु पिंगल के नाम ते राजस्थानी अरु ब्रजभाषा की रचना करी है। मरुभूमि के साहित्यकारों अपन मन के भक्तिभावन कूँ ब्रज में लिख के गौरव की अनुभव नियो है। जि अविच्छिन्न परम्परा आजऊ राजस्थान माहि अबाधगति ते चल रही है।

प्रस्तुत राजस्थान के अज्ञान ब्रज साहित्यकार प्रकाशन के पहल पुष्प प्रकाशन में हम राजस्थान के ऐसे रचनाकार की ब्रजभाषा की रचनाएँ कूँ प्रकाशित कर रय हैं जिन डिंगल के सग-सग अपन मन के भक्तिभावन कूँ ब्रजभाषा में उतारी है। कृष्ण भक्ति के मन की पीर कूँ इन्हीं ब्रज की माधुरी में उतार के जि सिद्ध कर दीनी है के मरुभूमि में ब्रजभूमि के प्रति नेह अरु दुखार काऊ त कम नाय। जिला जोधपुर के पाली सहर के पाम आठवा ठिकाने के ठाकुर नाहरसिंह अस्सी बरस की अवस्था में ऊँ नित्य ब्रज के छंद रचके अपनी भक्ति भावना की पीयूषधारा बहाय रय हैं। इनकूँ न तो प्रकाशन की चिन्ता है अरु नई इनकूँ यग की मोभ है।

ठाकुर नाहर सिंह की भक्ति भावना में माहून कृष्ण की माहनी मूर्ति के एकते एक सुन्दर सटीक मनोहर चित्र मन कूँ बरबस भक्ति के आन में डुबाय के निहाल कर देय है। कृष्ण सोदय के इनके भक्ति भावन में सरसता अरु प्रेम की पीर की ऐसी रम-

णीक पुस्कल भाव है जाकी सरसता अरु मिठास की महक आद्योपांत रनक झुनक फगनौटी गमक की परिचायक है । कृष्ण के सौ दय अरु दावी रूप माधुरी के आवसन-कुं ठाकुर साहब की लिखी एक चित्र देखी—

लाज लुटैया लाल लावरी लकुट लिये, कुण्डल क'दीरी करा, काजर बढैया है ।
मोर मुकट मूंदरीमाला, मुसकान मृदु, बलैया से ब्रजवाला, बासुरी बजैया है ।
पीताम्बर, पेरनरी, पासल पादुका पाँव चचल चलैया चल चित्त की चुरैया है ।
माहर निहार नाथ नित नवनीत नेही, कामर करैया कारी कैसी री क हैया है ।

ठाकुर साब ने ललित लाल बनवारी श्री कृष्ण की छवि कूँ उतारबे मे काऊ तरियाँ की कसर नाय छोडी । एक ते एक सु दर श्री कृष्ण की रूप माधुरी के चित्र इनके काव्य मे भरे पडे हैं । साहित्यकार अरु आलोचकन की दृष्टि सौ औसल ब्रजभाषा की अनुपम साहित्य नीरस मरुभूमि की जीवन्तता अरु सरसता की परिचायक है ।—जाकी मृदु मुसकान के सामे सिगरी जग फीकी फीकी लगे है—

मोर को मुकट माथे तिलक उद पुण्ड लाने, कुण्डल कजर केस, नैनरस नीकी है ।
मोह माला भुजब'द क'दोरा अ गूठी करा नूपुर मुरली नाय, हरे चित्त ही को है ।
च'दन केसर चच पीताम्बर मीलपट, अतर सु ऊप बस्त्र, गोरीगुलाबी को है ।
सु'दर माहर स्याम मुख मुसकान मृदु, छवयी जाय अग छवि फ'यी जग फीकी है ।

ठाकुर नाहर सिंह की या पोथी मे छपी भई बिनक अजाने ब्रज काव्य ते प्रमानित होयगो क राजस्थान की नीरस मरुभूमि म ब्रजभूमि अरु ब्रजभाषा के प्रति कितेक नेह अरु आदर है । यात जेऊ सिद्ध होयगो क ब्रजभाषा को सुगधमय लालित्य ब्रजभूमि ते चाए धीरे-धीरे झुप्त है रह्यो है पर राजस्थान के मरुभूमि के साहित्यकारन बाय पूरे आदर के सग आजऊँ जीवित बनाय राख्यो है । मरुभूमि म रहते भयऊ ठाकुर नाहर सिंह नै अपनी कविता म ब्रज होरी की सरमता केऊ एक ते एक अनूठे चित्र प्रस्तुत कीने हैं । होरी की मस्ती म छैल छबीले के रंग मे भीजी भई ब्रजगोरीन की दस्तो ठाकुर साहबनै कैसी अनूठो विष खीचो है ।

होरी लखि होरी आई कीरनि किमोरी आई, सखियाँ सजोरी आई 'सोरी आई पेलरी ।
धर रंग घोरी आई, डेर चोवा डोरी आई, ब्रज मे बिखोरी आई पोरी आई पेलरी ।
गुलाल लें गोरी आई ब्रजब'द बोरी आई, काऊ नाहो मेरी आई, खोरी आई सेलरी ।
भोगती भिगोरी आई, अबीर ने ओरी आई, भग मखी भोरी आई, रारी आई रेलरी ।

ब्रज ललनान क पावन रूप की एक छटा और देखो —

धोभा सरसारी है कं घटा छत्रारी है कं प्रीत रग पारी है कं, बेसर की ब्यारी है ।
 यौवन उज्जारी है कं छवि मुधा छारी है कं भव्य बला भारी है कं सुंदरी सवारि है ।

कृष्ण चित्रकारी है कं माया माहनारी है क पराशक्ति प्यारी है कं, दमक दुलारी है ।
 नाहर निहारी है कं, सोहन सितारी है कं बसोकन बारी है कं कीरति कुमारी है ।

ठाकुर साहब न प्रेसरस की रूप माधुरी वनन में तो कमास ई कर दीनी है । रूप माधुरी की छाया कू साकार करवे म ठाकुर नाहर सिंह ने भावन के लालित्य म सधन के सटीक प्रयोग की जा मिठिया बलख जगाई है, बाके रमणीक मनोहर ध्यान को कहा तानू बलान करें । मीठे भावन के संग, मीठी ब्रजभासा ठाकुर साहब ने मीठे हृदय से निबन्ध के मीठे मीठे सधन की रिमझिम फुआरन में कमी मधुर गति से इठलाती-इतराती चितवन मटकाती नह की चकाचौड़ी गुलामी बीजुरी कीधती भई जा रही है याकी एकई उगाहरल भीत है । सजील सुभावन लोचनन म कटाक्षन से कीरति कुमारी कैम मदमाती मस्त मगन है के ललचाय रही है । देखो तो मही याकी करामात ठाकुर नाहर सिंह के छूटे जजरित सरीर म मधुमय ध्वजकत सदा बहार भावना के मकरद मरे दुस्म की एक मानगी —

कीरति कुमारी कृष्णा कीमल कटाक्ष कर
 पलक पवज परखे प्रभा पसरारै है

चुरत जतावै जोम जोवन जगति जात
 माद मदमाती, मिलै माधुरी मुहावे है ।

झूमत मिलन बरै मिश्रक झुनन छावे
 छटत छबीली छटा छनन छवाने है ।

नाहर नुकीन नीक, नवल नसील नही
 सोवन सजोन सया तुमा मस्तचावे है ।

प्रियतमा भर हृदय की जुगल जारी के अनुरागी कवि ठाकुर नाहर सिंह की प्रिय के हृदय भूमि के शिष्य प्रेम से हृदय की गगी सादात्म्य भयो है व प्रेम की पवरगी पुरखिया की मुबोमन गुरभि व विवाय या म कछु नाय । बगमानु दुपारी भर निमोही कहेया वी प्रीति व प्रसर उजई तेज इनकी बकिता में पूरी लमवता के संग बिसारी भयो

है । सन्दन म कहा तानू समेटो जाय गीरस मरुभूमि के ब्रज कवि के हृदय की या सरसता अरु प्रेम की गगोरी कू । ब्रज के छबीले छैला के सग राधेरानी के त मय है कै नृत्य करते ब्रज के रसीले रास की एक उदाहरन भीत है ।

सरस श्री राधेश्याम सजे सरसात सोभा छबीले छटालू छाजत झनक री ।
सोचन लुभात लखी लगन लगात लजी मोहन अमात मद् भूसन मनकरी ।
सखा सखी साथ साज सुराग संगीत सोर झूमत झुकत झीक झालर झनक री ।
नाहर निहार नैन नवल नचत नीके बाबा धई थ ग चाँत, घिरक धनकरी ॥

सलीने श्याम के सजे भये सरूप की झाकी मे देखी तो सही सहज भाव से प्रयुक्त करे गये अनुप्रास की महिमा की घटा टोप घटा, मरुभूमि के भक्त कवि श्री ठाकुर नाहर सिंह के विपुल ब्रजकाव्य के संकलन उदाहरन मे याकी एक बानगी—

सुन्दर सलीने श्याम, सिंगार सरूप साजे, सुगंध सुरग सीस, सुमन सजैया सौ ।
स्वामिनी सहित सदा, सखा सखी सरय सार सेवक सरन सेवा, सुफल सिखैया सौ ।
सहज न झुति श्रेष्ठ, सन्दन सुजस सब स तन साधुन स्नेह सिद्धन समैया सौ ।
सारद सुरन सेस, सुकृत सराहँ सुख सगुन साकार सोभा, सावरे सनैया सौ ॥

ठाकुर नाहर सिंह जीर्ण श्री कृष्ण राधा के प्रेम अरु कृष्ण सीता के भीतरे पद ऊ लिखे हैं । इन पदन मे सूर की सी सरसता अरु नददास जैमी लालित्य अरु मिठास दसनीय है । उपमा उत्प्रेसा की लड़ी पे लड़ी की झड़ी के बरसायवे मे ठाकुर साहब कू कमाल हासिल है । यथा—

पयोनिधि सी उठि तरंग प्रीति की मन मे मोदन मावत है ।
कमल गोर नील सी काया बै सोढस विकसावत से है ।

याई तरियाँ राधा कृष्ण के तमम झाँकी की एक घटा और देखी ।

पहर राधा सग नूपुर पाँयन नटवर नाचैरी ।
सखियन गात मोद मन साजा मितिधुनि माचैरी ॥

याई तरिया होरी के रंग मे श्यामा-श्याम की अनौखी अनुराग म दूखी भई एन छटा और दसो ।

मिलि राधाकृष्ण धूम मचावै ।
आली ब्रज मे होरी आवत खेलत फाग खिलावै ।

[आखिर आखिर अनुराग]

सखा सखिन की टोली सग म गीतन फगवा गावै ।
बहु भातिन ढप बाजत बाजे अवीर गुलाब उडावै ।
पिचकारिन भरि रगन पानी भीजत सबे भिजाव ।

ठाकुर नाहर सिंह न स्याम के बियोग म विलखती गोपी, राधा अरु रोमते
सिसकते ब्रज कोऊ बडोई करना भरो चित्रन बीनी है । दखो बानगी —

अरी । साम भई पर स्याम न आय मन सखिरी मरी मुरझाए ।
गहकाज करत उनके गुनगावत ज्यो त्यो दिन बट जाए ।
अष्ट पहर राधा के उनकी छबी रहत उर धाए ।
बिसरू पल भर नही प्रेमबस पुरुषोत्तम पिय पाके ।

आखिर म हमारो निस्वस है के राजस्थान की मरु भूमि मेऊ ब्रज के श्यामा श्याम
के प्रेम की दिव्य बरखा काऊ तरियाँ कम नाथ भई है । हिन्दी के खोजी इतिहासकारन
राजस्थान के मरुभूमि के ब्रज बाव्य की भारी उपेक्षा करी है । ज्यादातर लोग जि मान
है कौ मरु भूमि म ब्रज की सी सरसता कहाँ धरी है । यहाँ तो ढिगल क बाव्य की धाराई
बहै है ई बात सही नाथ । ढिगल क मरु स्थल के कविन अपने मन की भक्ति कू
पिगल भाषा मेई उतारी है । पिगल के रूप म आजऊ राजस्थान मे ब्रज भाषा कूँ बूई
नेह अरु दुलार मिल्यो भयो है जो काऊ समी सिगरे भारत म मिल्यो भयो हो । जोधपुर
सभाग के वयोवृद्ध ढिगल भाषा के कवि ठाकुर नाहर सिंह की ब्रजबाव्य याकी सबनते
बडो सटीक प्रमाण है । ठाकुर नाहर सिंह जैस भीतेरे ढिगल भाषा म कवि आजऊ
राधाकृष्ण के दिव्य प्रेम कू पिगल भाषा म पूरी तमयता के सग लिख रहे है ।

ये अनुराग के रंग रंगे



1	ब्रजभासा के वैष्णव कवि बागरोदी बलदेव शर्मा 'सत्य'	107
2	वीर रस के ब्रज कवि श्री निवास ब्रह्मचारी 'श्रीपति'	126
3	समस्यापूर्ति के बेजोड़ कवि प्रभुदयाल दयालु	129
4	आधुनिक समस्यान के कवि राधाकृष्ण 'कृष्ण कवि'	135
5	गुरु कमलाकर की ब्रज काव्य यात्रा एवं विवचन	140
6	ब्रज के सलीले कवि गोपाल प्रमाद मुद्गल	148
7	ब्रज के मधुर चित्ते श्री मोहनलाल मधुकर	153
8	ब्रजभाषा गद्य पद्य के-वेङ्काड रचनाकार डा रामकृष्ण शर्मा	160
9	श्री रामशरण पीतलिया के व्यक्तित्व-कृतित्व की रेखाकन	169
10	ब्रजभासा की अम्यात कवयित्री रानी विद्यावती	175
11	वियोग वास्तव्य मे झूठी यशोदा शान्ति साधिका	183
12	प्रसाद भर माधुर्य गुण के अनुपम चित्ते श्री हीरालाल 'सरोज'	191

ब्रजभासा के वैष्णव कवि बागरोदी बलदेव शर्मा 'सत्य'

बागरोदी श्री बलदेव शर्मा 'सत्य' नाथ द्वारा के ऐसे कवि कलावन्त ब्रज साहित्य सेवी है जिन्हें बल्लभ सम्प्रदाय के परम आराध्य श्री नाथ जी के भावलोक में डूब के काव्य रचना करी है। इनकी कविता की एक एक शब्द अष्टछाप के कविन की परम्परा की परिचायक है। अष्टछाप के सप्त कविभिः अपनी सब कछु अर्पित कर बल्लभी वैष्णव साधना में दीप्ता लँके अष्टसखा के पावन भाव ससार प आरुढ़ है के भक्ति नाथ की ओ पीयूष धारा प्रवाहित कीनी है कछु वेसोई बागरोदी श्री बलदेव शर्मा 'सत्य' के भाव लोक की स्मिति है। अष्टछाप के भावलोक अरु बागरोदी जी के भाव ससार अरु आराध्य श्री नाथ जी के प्रति वैष्णवी समर्पित भक्ति में भीत साम्य है। 'करत सहाय रहे सकट परे पे सदा, नाथन के नाथ प्रभु गोवधन हमारे है।' 'प्यारे श्री नाथ तेरी चरण सत्य आयो है', 'सब निधि श्री नाथ की सत्यगुण गायो है', आदि भावन सों अपने सिंगरे ब्रजकाव्य में बागरोदी जीनँ बल्लभ वैष्णव भाव नू भरिसायँ कीनी है।

बागरोदी बलदेव शर्मा 'सत्य' के पूवज तैलगाना प्रदेश के है। वेऊ श्री बल्लभाचार्य जी के पुरखान के सग उत्तर भारत आये है। जि तथ्य श्री हरिहर भट्ट के 'बिष्णु स्वामी चरितामृत' से सिद्ध होय है। उक्त ग्रंथ के गाम जाति खण्ड में बागरोद' गाम की चर्चा आई है। जि गाम तैलगाना प्रदेश में आजऊ विद्यमान है। बल्लभाचार्य के दूसरे कुमार गोस्वामी श्री विठ्ठलेय की पत्नी रुक्मिणी बागरोदीन की सतान ही। तैलगानो छोटिध के सग बागरोदी परिवार अपने इष्टदेव भगवान श्री गिरधारी जी नू बी सग लेतो आयो अरु ब्रज में राधानुष्ट प मन्दिर निर्माण करवाय के म्हा बाकी स्थापना करवाय दीनी। तत्कालीन जयपुर नरेश के आग्रह सों जि सेव्यनिधि जयपुर पधराई गई अरु जेई कारन हो के बागरोदीन के परिवार राजस्थान में कोटा, जयपुर, बीकानेर, अलवर आदि स्थान में आय के बस गये। श्री 'सत्य' जी के पिता श्री मधुसूदन शर्मा जयपुर राज्य के पचेवर गाम निवासी है। वे श्री नाथ जी के परमभक्त है। जब सत्य जी बालकई है तो इनके पिता की देहाव है गयो। अनाथ अरु निराश्रित बालक बलदेव के ऊपर चारो

तरफ मुसीबत के बादर एक सग हूट परे । सायबे-नेलरे अर वितारहित बालकोचित श्रीडान के जीवन मे बलदेव कू पग-पग पे काटेई काटेई आयब लगे । जलपाय अर उपकरण मात्र के सबन सो वे श्री नाथ जी की नगरी नाथद्वारा म करुनामय गोबद्ध न धारण की सवा मै अपनी सबकछू त्याग के आय गये । श्रीनाथ जी के कटनामय आथय म रहक बिनकी विभिन्न लीलान को गायन करते भये इर्भ विद्या अजन कीनी । अष्ट छाप के कवीन के हृदय त निकरे भावन कू ये जब श्रीनाथ जी के सामे नेत्रन ते अ पु-आन की धारा प्रवाहित करते गाय गाय के विभोर है जाते है तो आस पास के वातावरन मे अष्टसखा अपने पदन के माध्यम सो साकार है उठते है । भक्ती की ऐसी पीयूष धारा प्रवाहित है जाती ही के आस पास दरसनार्थी भगत लीगऊ कछू धन कू अपनी तन मन की मुधि भूल जाते है । इनके पिता मधुसूदन शर्मा यद्यपि अकिंचन हैं पर अपने सपोनिष्ठ वैष्णव अन्न अर स्वाभिमान के तेजस्वी रूप के कारन भीतरई लोकप्रिय है । पिता ते विरासत म मिली आत्म सम्मान की ठसक के सामे जाई कारन इर्भ अपने स्वाभिमान कू नीची नाथ होन दीनी ।

एते स्वाभिमानी ब्रजभासा अर श्री नाथ जी के अनय सेवक मागरोदी श्री बलदेव शर्मा 'सत्य' का जनम वि स 1966 अपाङ्ग सुक्ता त्रयोदशी रविवार कू सैपा कमलावती की बीस सो भयो । स 1937 मे मुण्डन अर कछू समय पाछ ननिहाल बीकानेर म इनको उपनयन सस्कार भयो । श्री मद्दू लाल जी के बरनन म बठ के इर्भ विद्या-अभ्यास कीनी अस ध्वाई स 1914 जेठमास म गोकुल निवासी दही द्वारकानाथ लाल जी की सुपुत्री श्री यमुना देवी के सग इनको ब्याह भयो । पुराण वेदा न म शास्त्री की परीक्षा बनारस सो पास करे पाछे इर्भ अपने कूका श्री गोस्वामी द्वारका जी महाराज मों बल्लभ बदात अर पुष्टिभार्गीय प्रेमलक्षणा भक्ति के रहस्यन की ज्ञान प्राप्त कीनी । तिलकायत गोस्वामी गोबद्ध न लाल जी महाराज मों अष्टाक्षर मन्त्र अर ब्रह्मसूत्र की दीक्षा प्राप्त कीनी । पुष्टीभार्गीय कला की ज्ञान गोस्वामी हरिप्रिया बहू जी महाराज कोटा अर विविध शास्त्र एव व्याकरण की अध्ययन श्री शंकर लाल जी नाथद्वारा, लाहली लाल जी बदावन श्री माकण्डेय मिश्र दरभंगा काशीनाथ शान्त्री प गिरधारी लाल जी कोटा एव श्री दामोदर जी रायला जैसे अपन समे के ह्याति प्राप्त विद्वानन सों कियो । समाज सेवा, साहित्यिक गतिविधि एव अय रचनात्मक कार्य प्रमन को स्यात ई कोई प्रसंग होय जामे सत्य जीर्भ भाग नई लीनी होय । इनकी लोक-प्रियता को जेई रहस्य है के आप आबास-वृद्ध साक्षर निरक्षर, नर नारी दलित सम्प्रदाय की समानभाव ते जीवन भर सेवा म रत रहे है । बरसन सों अलिप्त भारतीय पुष्टिभार्गीय वैष्णव परिपद नाम द्वारा छाया के मन्त्रीपन् पे रहत भये नाथद्वारा के वैष्णव सम्प्रदाय के विभिन्न कार्यक्रमन को संचालन करते रहे है । गोस्वामी श्री कृष्णकुमार महाराज

के सग गाम्भी के रूप में रहते भये सत्य जीर्ण लगनऊ, इलाहाबाद, कानपुर आदि प्रदेशन में पुष्टिमार्गीय प्रचार प्रसार के माध्यम से ब्रजभाषा की अभूतपूर्व सेवा करी है ।

सत्यजीर्ण ब्रजभाषा में गद्य पद्य दोनों में समान भाव से साहित्य की सज्जन कीनी है । इनके सिगरे साहित्य की विवेचन करे है तो विदित होय है के इन ब्रजभाषा में तीन तरिया की रचना करी है—(1) भक्ति परक साहित्य (2) श्री नाथ जी उत्सव (3) फुटकर साहित्य । भक्ति परक साहित्य में इन सँकडन श्री नाथ जी की भक्ति में इह के कवित्त-सर्वया अरू पदन की रचना करी है । श्री नाथ जी उत्सव परक साहित्य में श्रीनाथ जी के विभिन्न उत्सव, विनको सिगार अरू अय साधनान को ब्रज काव्य मध से सूक्ष्म विवेचन इन कीनी है । फुटकर साहित्य आधुनिक जन जीवन नायक नायिका भेद जमे परम्परित काव्य मजन इनके साहित्य की प्रमुख विशेषता रही है । याके अलावा 'श्रीनाथ सेवा रसोदधि' सीसक सौ पाँचसी छहतर पन्ना की पुष्टि सम्प्रदाय के आलोक में श्रीनाथ जी की सेवा पूजा पद्धति, उत्सव आदि को ब्रजभाषा गद्य में विस्तार से विवेचन चारो विसाल ग्रंथक इन लिखी है । श्रीनाथ सेवा पद्धति को स्यात यात ज्यादा प्रामा-निक सूक्ष्म विवेचन हमारी निगाह में आज तानू देखवे म नाथ भिखी है । श्रीनाथ जी की सेवा पद्धति के एक-एक परम्परा को या ग्रंथ में विस्तार से चमन कीनी गयो है । याके अलावा ब्रजभाषा के हजारो दोहा अरू कवित्त इनके पोथीन में दबै प्रकाशन के अभाव म बढ पडे भम हैं । सत्य जी हृदय से इतेक उदार है के इन अपने कई सिख्यन कू ग्रंथ लिखवा डारे है । श्री नवनीत गोस्वामी ने लिखी है—'सत्य जीने हजारों कवित्त एव दोहा की रचना की । उनके दो महत्वपूर्ण काव्य श्री चर्चा किये बिना उनके कृतित्व का विवरण अधूरा रह जायेगा । 'नाथद्वारे का सांस्कृतिक इतिहास' उनका महत्वपूर्ण ग्रंथ है जो उन्होंने अपने प्रिय शिष्य कविवर श्री प्रभुदास जी बैरागी ने लिखवा डाला । इसी प्रकार श्रीनाथ सेवा रसोदधि तो उनकी जीवन भर की श्रीनाथ सेवा एव भक्ति का निष्ठा है । यह ग्रंथ उनकी जीवन साधना की चिन्तामणि है । श्रीनाथ-सेवा-रसोदधि ग्रंथ के विस में ब्रजभाषा के प्रकाण्ड पण्डित स्व डा गोबिन्द नाराय शुक्ल ने लिखी है— ब्रज साहित्य, दशन कला धर्म भक्ति सेवा का यह ग्रंथ सम्प्रदाय का एक लघु एनसाइक्लोपीडिया बन गया है, जिससे साम्प्रदायिक वैष्णवों, सेवकों, मुखियाओं का तो लाभ होगा ही—ब्रज साहित्य संस्कृति के अनेक शोधकर्त्ताओं के लिए भी यह उपयोगी सिद्ध होगा । ग्रंथ के अनेक सकेतो से विदित होता है कि तिलकायत परम्परा के अनेक आचार्यों की ब्रजभाषा साहित्य की सेवा पर शोध काय हुआ ही नहीं है ।' हमकू ई लिखवे म नेकऊ मकोच नाथ के चौरासी वैष्णवन की वार्ता के पाछे चार

सो वरस के अंतराल में श्री बलदेव सय जी को वंजाड ग्रंथ 'श्रीनाथ सेवा रसोदधि' पुष्टि सम्प्रदाय के मन्त्र सो ब्रज-साहित्य कला अरु सस्कृति की निमग सुद्ध साहित्यिक ब्रजभासा में लिखी नयी एक भाषा ग्रंथ है ।

श्री बलदेव सत्य के ता राम राम में ब्रजभासा की अनुपम तेज बसी भयो है । राजस्थान में जनम लके अरु श्रीनाथ जी की आराधना में दिन-रात भावन में संवसार सत्य जीर्ण ब्रजभूमि में सैकड़ों मील दूर रह के अपने विस्तार ग्रंथ 'श्रीनाथ सेवा-रसोदधि' में सरस साहित्यिक ब्रजभासा ग्रंथ को पाचसों पन्नान से ऊपर लिखे ग्रंथ में जो प्रयोग कीनी है वाते या पुष्ट प्रामाणित सत्य कू सावजनिक रूप से लिखबै मैं हम महान गौरव की अनुभव करै है के राजस्थान की मरुभूमि ने ब्रजभूमि की जितक महनीय सेवा कीनी है वितक स्थान ब्रजभूमि तऊ नाथ कीनी । ब्रजभासा ग्रंथ के या विस्तार ग्रंथ की मुक्त्यात कवि श्री बलदेव सत्य ने ब्रजभासा के वर्णनी कविन की तरिफें वही पावन विनम्र भावन के मन अपने हृदय के नवनीन कू उडैलते भय इन सम्मन में कीनी है—

श्रीनाथ कू को सेवा रसोदधि बनायो ग्रंथ यह
परिपूरन कियो है गोवधनधारी न ।
वरस लगे सात 'सत्य' ग्रंथित विचार बहु
देखि-देखि सेवा क्रम नाथ नगर वार न ।
गोवद्ध गोवधन धरण के घर की प्रणालिका यह,
जानी न ममश्री मैं तोऊ बुद्धि दरसाय है ।

श्रीनाथ जी के प्रति कवि के हृदय के भाव अनयास अटछाप के दिगदिगत्तर सरस साहित्य की मूस प्रेरना की चेतना के दरमन बराय है । अटछाप के कविन राग द्वैप से ऊपर उठके अपने हृदय के सत सुभाव के मार्मिक तेज कू जन जन के वस्थापाय ब्रजभासा कविता के माध्यम से उडेली है । वारी मूल चेतना अरु सत्य के काम सजन के हृदय की मूल चेतना में भारी साम्य भारी ब्यवहारिक एकाता अरु भारी आत्मिक तेज के दरमन होय है । अरु अनुभूति के स्तर में सबथा नयी साध प्रस्तुत कर है । श्रीनाथ जी के अनुपम निगार ॥—'चतुरानन आनन चार मुग गावैं तऊ पार नाहि पावैं नित्य नूतन शृंगार गों', नूतन शृंगार, भाग राग रम रागीति नित नित नवीन में छटा रस पार सो अरु 'दवन में दव सुम निस्साधन 'सत्य' कवि प्राणनाथ गोवधन गुरु प्रपा मोरें कीजिनी, 'करत सहाय रह सकट परे प सदा नाथन के नाथ प्रभु गोवधन हमारे है,

‘प्यारे श्री नाथ तेरी शरण सत्य आयो है ।’ जैसी भासा म इनको श्रीनाथ प्रेम प्रमानित है ।

‘सत्य’ जी की भक्ति परक साहित्य अधिकांशतः श्रीनाथ जी की सेवा, प्राथना अरु अर्चना में लिखी गयी है। अथ वृष्णव अरु अष्टछाप कविन की तरिया श्री बल्देव ‘सत्य’ की भक्ति की पीपूसधारा विनय तेई सुख होय । सूरदास जैसे अष्टछाप कविन जा तरिया विनय के पदन में स्वय की विनम्रता के सम-सग अपन दुगु नन की उल्लेख करते भयं जस आराध्य सो भवसागर पार करायवे की सकल्प दुहरायो है कछु याई प्रकार की भक्ति को मोहित-सुख सत्य जी के भक्ति हृदय के मन की आतपुकार है । दोन बंधु दीनानाथ प्यारे श्री नाथ जी सो पतित कू उबारवे को कवि के हृदय की आतनाद की देवी एक रूप—

कुटिल नुकमीं कामी बलकी कुमाग गामी,
तिनके बचावन को आगे बढ़ रहे ।
दीनदुखी दुखल की हिय सो लगावत हैं,
सत्य जी गरीबन के हित में चढ़ रह ।
कोऊ नहि जाके आप बनि जात सत्य,
शरणागत बत्सल के पाठ को पढ़ रहें ।
दीनव धु दीनानाथ प्यारे श्री नाथ ऐमे,
पतित उबारिवे की सदा ही खड़े रहे ।

विनय के पदन में स्वय के दुगुण अरु श्रीनाथ जी सो उबारवे के स ग स ग बल्देव सत्य जी भीतेरे छदन में या तरिया की भासा की प्रयोग कर है जैसे वे अपन इष्ट या आराध्य श्रीनाथ जी के सामे ठाढ़े हैके बातचीत कर रये होय । श्रीनाथ जी तिहारे एक बेर के दरसन किये ते जनम जनम के सिगरे बंधन दूर है जाय हैं । भक्तगन या प्रकार भीतेरे उदाहरन देके अपन आराध्य सो उबारवे की प्राथना करे—

एक बार स्मरण किय सारे दुख दूर होत,
जनम के पुराने सब बंधन नुटात हो ।
भारत में भीसम सो आपने कह्यो द्वितीया
विन्तु विपरीत आज काह की सनात हो

श्रीनाथ जी की सबसे बड़ी विशेषता है की एक बेर बिनकी शरण जो आ जाय है बाकी सदा-सदा पू रक्षा की भार श्रीनाथ जी अपने हाथ में ले ले है । पर लम्बी

अवधि बीते पाछेऊ थीनाथ की कवि पृष्ठा नाथ भई । जा कारण कवि की हृदय भीत
दुखी है व्यथित है । देखी उपयुक्त भाव की कविता में परिनती—

जानतो जा पहल ता कारण कबी आतो ना
ध्यान मन लातो आप दीनबधु दानी हो ।
कारण गहे की रक्षा करत सदा ही गुने
यात विश्वास लई सण गहि आनी हा ।
किंतु हाथ यहाँ दीखे बलि के प्रभाव परे
अज हूँ सुनत नाहि ऐसे अभिमानी हो ।
बात नहि झूठी तो शाघ्र ही दश देख
अपनी जन मान मोय अभय हस्त दानी हा ।

कवि ने दीन ओ मलीन हीन सब विधि बनाय हा ताकी नित रक्षा करि अपनी
बनायो है, 'आधा है बहुत अरू जीवन तनक सौ है साये पुनि नह मेह कीनो बहु राखा
है के सग सग श्री नाथ जी के रूप सिंगार को अलौकिक बनन इनके भक्ति काव्य की
महती विवसता रही है । देखी उदाहरन—

सोस पे धरे हैं सुभ पिटारा गुलाबी बर,
चमक वो जु जोड़ बेरा गोकुण सुहावना ।
हीरक के भूषण बनमाला शृंगार भारी,
मन श्याम ठाढे पट सुन्दर सजावनी ।
केशरी धरे है गोल काछनी किनार बारी,
पायल ओ नूपुर की शब्द मन भावनी ।

भक्ति के भावन में डूबके जबके 'सत्य जी की कवि हृदय श्रीवृष्ण के बाल की
बल्लभी आराधना में डूबे है तो वात्सल्य की अनुपम छवि इनकी कविता में ते हीरा की
तरिया स्वत ई जगमगाय उठे है । एक हाथ में माखन लँके खाते चाते मैया कू रिझाव
है । सावन सुदी नौमी कू सात मुरूपन की एक सग आपवे बारी झाँकी में या उपयुक्त
वात्सल्यभाव की प्रसंग कवि के हृदय में या भाँत प्रकट भयी है ।

एक हाथ माखन है एक हाथ मार लियी
मातु दिग आय घाम मोद हि बड़ावे है ।

भीजे रस-मन आप-गावत सु तान लेम
छोट से क देया सत्य नितत-रिझावे है।

हाथी करें गज्जन को कबहु सवार होत,
स्वास बाल सग-लेय ऊधम मचावे है।

एक हस्त भूमि दाबि एक कर माखन ले,
घुटवन चलत 'जब' सत्य देश पावे है।

मातु अँके खेले सदाँ प्यारे श्री मुन्दराम,
सुन्दर श्री हस्त चन नीके ही हिलावे है।
कबहु मातु 'अँचले' उठायके निहारे हैं,
कबहु अलक खँधे मातु हि छिजावे है।

कवि ने बड़े सुन्दर सम्बन्ध में सातों रूपों के मूर्त्त की तरह-तरह के भावन से वास्तव्य भाव के अराधन भजुल भाव धोरा बहोई है। अस्तिस्व भाव के कीर्तन से बानेन भू कवि सत्यजीव अपने ब्रज काव्य में पारिषी के अनुपम रस में हूँ के मिहारे है उठ है 'धूसरित अंग से तो भसम लपेटी मानों, कँहरि के नख मानों' बाधम्बर छुति रही' जैसे सम्बन्ध वाले कवि ने 'आन्तिमाल अलंकार' के 'लौत्तरि के संगमो ग सिक्की के आभास थीकन की बालबोधित जगूरी छेबि भू कवि ने जो घरातल पै काव्य में उतारी है। बात कोमल भावन की स्थापना एक नये सिल्प के संगे भई बाकी जितेक प्रस सा करी जाय बू धोरी है। बल्लभ सम्प्रदाय के सोते पीठभङ्गे प्रति कवि ने स्थान रुपान पे हृदय के भक्ति भाव प्रकट कीने है। ऐसी भग है 'वि' विग्रह के साथे कवि हतेक विभोर है गयी है के वाय अपने सामे लीला के सुन्दर सुन्दर प्रसंग एक संगे सादाते है गये है। 'धवल यशोदा तेरो धीनाय 'सत्य' प्रेम रस बाँरी तामे मेरी मति बनी रहे', 'बर मे लिये है प्यारो नवनीत सँघ, हित सौ दिया है माँसु तामे मेरी मति बनी रहे', 'गोपीगण मुग्ध होय देखत है बाल धवि देह दशा मूलें तब मेरी मति बनी रहे', 'खलन म रसावेन भक्त को देत सत्य, मेरे प्रभु धीनाय गोवत्त नधारी है', 'पत्नी वाले भीतेरे कवित्तन मे श्रीनाथजी की मति आनोक म विनके बाल रूपभाव की एक ते एक सरस झाँकी की सोस्य इनके काव्य में बिखरी गयी है।

कविने धीनाय जी के विभिन्न उज्ज्वल कोऊ, अपने काव्य में विस्तार से बहो मनोहारी चित्र अंकित कीनी है। इनमें धीनाय जी के नित्य भू गार की महिमा के सम्बन्ध पद 'सत्य जीव' लिखे हैं—'सूयन नेसरि ही धरे मोचा दो रग-नग पाव'।

चागहि म लघु पटका शुभ लग, 'लग बहुत ही देखके ई दिन गग गुनाम, बतरा मोती का धर्मो भूषण स्वण समान', 'फूल भरी साटन भरी सामे पवरग पाग मध्य शृ गार के साथ मे भूषण नीलम लाग, 'मोर चद्रिका क्षीप प मोना की गिर पै' 'पाग छोट की शीश पै मोती भूषण अक', 'गुण्डल हीरा नि धरे मोर पग को जोट' जैसे छन्दन में श्रीनाथ जी के नित्य नूतन शृ गार को बढिने आखों देखों चित्रन कीनी है। माघ बत्ती एकम की 'पिछवाई छप रग सी हामिया म मन भास', माघबदी दीज पिछवाई है भरत की हीरा प ना सग माघबदी पांच, पिछवाई अरु र व जु भी स्वत वरुन रग रग', माघ बदी बारस, 'पिछवाई है भरत की ठाढे पट है 'दयाम' के रूप म एन एक दिना की पिछ-बाइन के सग-सग श्रीनाथ जी के सिंगार अरु राजभोग के पकवानन की सत्यजीव विस्तार ते काव्य म उतारो है माघबदी सातों के राजभोग की एक शहीरी दली-

गैहू की अरु चावल हि लीचडि राज सभोग
भीगी ठूमर जो बहे यही लीचडा योग

श्रीनाथ जी की भक्ति म आकृष्ट दूबके सत्य जीने अपने भावन कू ब्रज कविता मे उतारो है, या मत में ई राय नाय है सक। सूरदास, कुम्भनदास आदि अष्टछाप के कविन्ने जाँ सरियाँ श्रीनाथ जी के बिग्रह में साक्षात श्रीकृष्ण के सीला प्रसंगन की आभास पायके, बिनके पदन के सीला गायन कीर्न हैं अरु जे सीला गायनई सो हिन्दी साहित्य की आर्ग बलके विभूति बने है। सत्य जी-नऊ या प्रकार यो श्रीनाथ जी के बिग्रह के सामे भाव सत्तार के रस सागर मे दूबके अपने हृदय के अनुभूति के चदन कू कविता मे बिनरो है। मैया यसोदा की मादी में खेलते बासक श्रीकृष्ण की अनुपम छटा, मैया द्वारा बेर-बेर अपनी पुत्र की छवि के मनगामयी आँखिन सों निहारबी अरु बासक द्वारा बेर-बेर मैया की आँखर लेंचबी अरु मैया द्वारा पुत्रछवि निहारबे कू आँखर हटावें की आँल मिचीनी की दली चित्र—

मातु अ क सेते सदाँ प्यारे श्री मुकुन्दराय ।
मुन्दर श्री हस्त बन कीके ही हिलावे है ।
बबहू मातु अबल उठाय के निहारै है
बबहू असन लेंच मातु हि सिजावे है ।
इह विधि लीला रस दत निज भक्तन के ।

'ग्वास बाल सग लेख उधम मचावे है' 'एक हस्त भूमि दावि एक कर मासन ले'
'मुटवन बसत जवे सत्यदक्ष पाव है, मैं कृष्ण की बालकोचित सीला के एक सों एक

मनोहर भावन कू कविता मे कवि न उतारी है। याई तरियाँ छप्पन भोग के बनेन कविने भाँत-भाँत से करै है। सत्यजीनेँ छप्पन भोग कू कविता मे उतारी है। उदाहरन कू एक कवित्त मे देखी याकी झाँकी—

आज को सिंगार नीकी सबही सरूपन को,
एक सो भयो है सत्य आन द बढावनी।

सीस पे धरे हैं सुभ टिपारा गुलाबी वर,
चमक को जु जोड़ घेरा गोकण सुहावनी।

हीरन के भूषण बनमाला श्रु गार भारी,
मेघ स्याम ठाढ़े पर सुंदर सजावनी।

केशरी धरे हैं गाल काछनी किनार बारी,
पायल और नूपुर को शब्द मनभावनी।

बागरोदी बलदेव सत्यजीनेँ श्रीनाथ जी की भक्ति भावना, उच्छव वनन, विभिन्न सीला प्रसंग, सात स्वरूप की भावना, बल्लभ महिमा श्रीनाथ अरु अय सरूप महिमान के विस्तार से मनोहर वाक्य बनेन के अलावा देसकाल अरु अपने आस-पास के सामाजिक परिवेश के भावन कू कविता के माध्यम से उतारवे मे कसर नाथ छोड़ी है। जाके अलावा जीवन अरु आस पास के विविध प्रसंगक इनकी कविता मे उतरे हैं। भारत माता की मुरूप, ब्रज की बाला, काकरोली की सलना बोकानेर महिमा लखनऊ की नारी राष्ट्रीय वैभव, गांधी महिमा, पन्द्रह अगस्त, 26 जनवरी, जवाहर लाल नेहरू, लालबहादुर शास्त्री, गजानन, गरीब भोगता की वनन, तनखा नई मिलवे पे मजदूर की स्थिति, गणपति की बालबाला, युग की पाषाणि बस्मा लगान लगो, कविता व्यर्थ सच्ची कविता की पहिचान आत्मभस्मना अष्टक, चाप चासीसा जेठे जीवन अरु राष्ट्र एव समाज के विविध विषयन पैठ इन अपनी कलम चलाई है।

इन विविध स्थानन की नारी पे अपन भाव सुमन तरै-तरै के प्रसंगन से उठेल है। 'ब्रज की बाला कू ये सुंदर सरोज सम सरग सरोवर तें, कमल बली सी होय पवि फूनमाला है' कहें हैं तो बाकरोली नगर की बाला कू ये 'बचन सी देहबारी गजगति चालबारी, कटि मृगराज बारी गुणन अमोली की' बहे हैं तो बोकानेर की बाला है, 'रूप की बाल सी सब अग प्यारी पुष्टपूज, महिला अतिरंग सों गरर दरसावे है', बहे हैं तो लखनऊ की नारी है — 'बचन जड़ित साड़ी दामिनी निहारी है, भूषण जड़ित माहि नगीना नगनबारी' कहें हैं हमारे देस के विभिन्न सहरन की नारी जैसी कवि कू

[आँखर आँखर अनुराग
सगो बँसी लिख दीनी है । बरसाने बारी कमनीय नारी की कवि ने हृदय सों निकरी एक
रूप देसी-

बोमल बलमसम भासन सी मुलायम,
मद मुसकान नारी माहत ब्रजभारी है ।
कचन कलेवर तँ काम कमनीय बान्ति
बेशर मुरग सारी रजत बिनारी है ।
गोल मुख मजुस ये बड़े बड़े नैन राजे,
काजर फव्वो जाम मनिग तिहारी है ।
सुंदर सेलोनी सत्य सरस सुहाग भरी,
नदसोस संग सौहे बरसाने बारी है ।

याई तरिया मानवीकरण अमकार के आलीक म नायिका रूप मे सिंगार सों ल
ब्रजभूमि के सौंदर्य की कवि के हृदय से निकरी एक और झाँकी देसी-

रतन खचित गोवधन शीष फूल बिन्दा है
नदगाँव बरसानो कणफूल साजे हैं ।
दादस निबुज कुज हिय द्वार हारावली
ककण बल पचार वट मे विराजे है ।
साम ओत ले या कोटि बाणनी भिनक सोहे
सीला स्थल सारे सप्त सारिका विराजे है ।
भाँव गा सुभाँव मेरे चणन म नूपुर सन्द,
नाईका सरूप ब्रजभूमि सुख साजे है ।

हमारे देश के आधुनिक निर्माता राष्ट्रीय पुस्तक के महनीय इतिवृत्त के विस्त
मेक इन्ने अपनी कविता में विभिन्न भावन से अपनी सोच उतारी है । महात्मा गांधी ने
अपने साहस भर निर्भीकता सों अज्ञेय के पद्यप्रकारी सासन व्यवस्था को देखते
उलाड़ फँको हो याई सत्य नू कवि ने देखो नीचे लिखी ब्रज कविता में उतार के सत्या-
ग्रह की अभिनंदन कीनी गयी है-

सासन इतधता की भारते में विधनता को ।
जनता सौ कूरता की ब्रिटिश पड़यन हा ।

नष्ट नीति करिखेको हिय म जो समरिखे को ।
हिंसा वृत्त खलिवे को सत्याग्रह मन हो ।

याई तरिया 'आज दिन आयो है' के नाथ द्वारा के साहित्य मंडल की पुरानी एक सजकाध्य गोष्ठी में सत्यजीन समस्यापूर्ति के एक प्रसंग में भारत की आजागी में राष्ट्रीय नेतान के योगदान की उत्तरेख या प्रचार करो है—

बमठ दिवानाना तात्या गुरु गोविंदसिंह,
बंदा बहादुर तेज क्षासन जमायो है ।
प्रवल प्रतापीगण शक्ति सिंह दुगदिबी,
सेखर आजाद सन्धी बीर रम छायो है ।

तिसक नोरौजी दादा मानवी सुभाष गांधी
रखेवे अहिंसा वन भारत बचायो है ।
सत्यवृत्त धारिन को प्रवल प्रताप पाय,
भारत स्वतन्त्रता को आज दिन आयो है ।

कवि ने आधुनिक जीवन के परिवेश में दिन रात बढ़ती भयी घुगईन की तरफ अत्यन्त भक्त कविन की तरिया आँख नाय मीची हैं । कुसीनता, उदारता जैसे परम्परित गुणन के स्थान पें बढ़ते भये अष्टाचार झूठ प्रपचन के समाज में अमरबेल के समान बढ़ते पापा धारन कू देखके सत्य जी को कवि चुप नाय रह्यो । जाने इन घुगईन की चार तिरस्कार करते भये लिखो है—

कुसीनता उदारता दयालुनातः शानी चहु
धर-धर अष्टाचार पूरमच हृत है ।

विप्रन म छत्रिन मे वीणव ओ शुद्धन म
मबमे ते घृणा भेद छारन नृत है ।

ऐसो सही देख सत्य की गली कहा
झूठ पर पच चहु दीरन जहत है ।

छल, प्रपच, व्यभिचार के समाज में बढ़ते भये रूप कू देख के बागरोदी बलदेव सत्य को कवि भौतई दु खो है । इनके संग नेतान की सम्प्रति के तादात्म्य कू लेके कवि के यथावसायी सोच की एक आवाजी देखो—

या जग म एते सुग्री गुण्डा वपटी चोर,
 व्यक्तिचारी नहि प्रेमरस नेता रिम्फन खोर ।
 नेता रिम्फतखोर माल जो सवको मारे
 करे मनोरथ पूण आपनी इच्छा धार ।
 धन जन बल सब लेई बनावे सवको अधा
 रात दिवस म करें अनोवे नूनन घघा,
 कहे सत्य बलदेव दम्भ छल इनके मग म,
 दया धरम सब ठाडि सुखी म सारे जग म ।

सत्य जीने निधन की दीनता की पीडा कू हृदय ते भागो है । गरीब, निधन
 अरु असहाय व्यक्ति ते सबई अपनो काम साधनो चाहे पर बिचार बाकू निधनता के पक
 ते निकारवे की कोई कू फुरसत नाय । निबस निधन दुखी की असहाय अवस्था को
 देखी कैसी यथाय अर बेसाग भासा मे कवि ने यथाय रूप प्रस्तुत कीनी है—

दुबन के निबल क दीन दुखी प्राणिन क ।
 कोई नहि साथी होत भाग हीन वारे जे ।
 काल हो अकाल हो सुकाल भीड काल होऊ ।
 मार ही सहत रहे सब विधि हारे जे ।
 इहे करि आगे लोग अपनो व्यापार साधे ।
 नामधन बभव लकर मन धरि जे ।
 काहू कीने सत्य इहे धमकावत है ।
 जनता के दिखान काज नता धम धारे जे ।

मजदूर की पीडा कू हमारे आलोच्य कवि न अपनी कविता म जितनी गहराई ते
 देखी है बितेक स्यात ब्रज कविता म अयन दुलभ सो जान पड़े है । ब्रज क रास रग अर
 भक्ति की पावन धारा के संग सत्य जी के हृदय ते जब यथाय के घरातल सो जन जन
 के हृदय की पीडा पूरे उद्दाम क संग मुखरित होय है ता बिनकी कविता को मुहावरों
 अचानक सच्चाई की कठोर भूमि प ठहर क जीवन की सच्चाई की एक एक पत कू
 सालतो चल है । मजदूर की निधनता की पीडा कू मिले मौनरे छदन म ते एक बानगी
 देस के आपई नियम कर ल्यो के धरती पुन की पीडा के अभिनदन म लिखी या पत्तीन
 ते ज्यादा और बा परा की यथाय है सवे है—

दिन अरु रात की मजूरी बितयो दिन,
सब जन की सेवा को साध तो सदा रह्यो ।
घृणित सौं घणित ओ नीच ते नीच बाम,
कठिन ते कठिन काम करतो सदा रह्यो ।
एक कीन दूजे को दूजे कीन तोजे को,
या विधि की बात छानि राख तो सदा रह्यो ।
डाट फटकार कीन सत्य कहू मार भयो,
एते पर तनखा को तरसतो सदा रह्यो ।

गरीब भिखारी के प्रति कवि के यथाथ सोच की यथाथ भूमि पै यथाथ अभि-
व्यक्ति देखो—

कालो बिकरासो गात फटे धीर धारि,
ठठ मे इठातो ठुठरातो दुख छायो है ।
साठी को सहारा लेय ठाढो होय गिरी जात,
बोले कहू जोर करि शब्दना सुनायो है ।

झूठ प्रपच मे दूजे आज के सोगन के जीवन के यथाथ कू कवि ने या तरिया
बाध्यो है—

कोन दिना, कोन समै कैसे कहि बोलनो है,
सत्य को छिपाय झूठ साँचो दरसानो है ।
कैसे समै भिक्षुक ओ कैसे समै रिस्फत सौं
कैसे समै डाटपाट चुप रहि जानों है ।
एकक सुनाय दोष एक को प्रपची कहि,
करिके खुसामद निज घात ही लगानी है ।
ऐसे गुण होय जामे बो ही जग पूजित है,
व्यथ ही नही तो सत्य जीवन गुमानो है ।

यथाथ घरातल पै लिखी यथाथ मोह बोसते भावना मे लिपटी घरा की भ्रज
कविता के असावा सत्य जीनै अपने अपार भ्रज साहित्य के भीतेरे भावन कू प्रहृतु वनन
अरु नाथद्वारा की सनेहमयी होरी जैसे प्रसन्नन मेळ बाध्यो है । मरद की सफैती कू कवि
ने या तरिया बाध्यो है—

सेत पहार नदी नद सत बनी सगरी महि सत लखायो ।
 फूनी फूली ब्रज बेलि मनोहर कानन मे मृदु सौरभ छायो ।
 देखि जद नभ मडल को विधु नागर नेहरस रास रचायो ।
 तारन के बिच चद्र लखे जिमि गोपिन, म ब्रजचंद सुहायो ।

कवि ने आये रितुराज तुम व्यथ ही सजाके साज मेरे पाम तरौ पिय
 स्वागत को अत है' कहके, बसत को स्वागत कौनी है - चौके नाथद्वारा म
 बारह महीना बसत है । कवि के हृदय म सत्य तो गही है सुन गोवधन नाथ श्रीजी
 मोर'पाँव बारो मेरे हिय मे बसत है' जैसी साँच जब पास है तो बारो तरफ बमनई
 बसत है चौके एहो ऋतुराज सत्य साये क्यों समाज साज सबही समाज-यहाँ कृष्ण
 के बीर है ।'

विभिन्न रूपन म रितुबमन क अलावा चाय वालीया जसी रचनाक कवि ने लिख
 है । ऐसी लगे जैसे हनुमान वालीया की लज प कवि ने, चाय वालीया रचना लिखी है । -
 देखो उदाहरन-

आलस युत तन जानै के मुँमिरी चाय महान ।
 बल बुधि देहु नहि चाय सत्य भगवान ।

जय जय चाय महा सुख सागर, जय सुखदा तिहु लोक उजागर ।
 पीवत म अनुमित बेसर्घामा सवे जन मोहके पूरन काया ।
 देग बिदस म होत थडाई नित पीवत जे भन हर सई ।
 गुन अनेक पाके सब पावै, श्री पी छिन छिन मोद बढ़ावे ।
 होटल म घर म जन बागा, चाय बँटके, पिबत सभागा ।

कविरतन बागरोदी बसदव शर्मा 'सत्य' को ब्रजभासागत का अनुपम ग्रंथ 'श्रीनाथ-
 सेवा रसोदधि' मुद्रा दंत वशन की मूदम श्रीमासा व अलावा, श्रीनाथ जी के मंदिर को
 अंतरंग अरु बहिरंग सेवा पद्धति की आखिरी-देखा चित्रन या ग्रंथ की अपनी अलग
 विषयसत्ता है । श्रीनाथ जी की मूर्च्छ 191, बरस, ब्रज म रह्यो है । श्रीजीने सम्भवत
 1549 से 1726 तानू ब्रज म रहते सेवा स्वीकारी । धामिब उपद्रव, अरु अन्य विषम
 परिस्थितीन क कारण तिनकायत दामोदर जी श्रीनाथ जी, जू, मवाह, की, तरफ, से
 जायदे ब्र मजबूर भय । फाल्गुन कृष्णा सप्तमी विस 1728 सनोचर ब्र, उदयपुर
 नरेश राजगिह जी की धनदाया म श्रीनाथ जी की नाथद्वारा म पाटोत्सव भयो । या

तरियाँ स 1535 सो स 1726 तानू के 191 बरस की पूजा सेवा श्रीनाथ जी की ब्रज म भई अरु सम्बत 1726 सो आज तानू की सेवापूजा के तीन सौ इक्कीस बरस श्रीनाथ जी के राजस्थान के मेवाड़ मे रहके व्यतीत भय है । या तरिया पाच सौ बारह बरस की श्रीनाथ जी की सेवा पूजा की सिंगरो बनन श्री बलदेव जीनै 'श्रीनाथ सेवा रसोदधि ग्रंथ मे सखोप मे कीनी है । या ग्रंथ ते मालुम होयगी के अष्टछाप को दिव्य साहित्य याई सेवा पद्धति को एव अंग रह्यो है । सेवा पद्धति कू वंस्नव भक्ति की सम्प्रदाय विसेश को विवेचन कहके याकू छोड़नी समीचीन नाथ । श्रीनाथ जी के देवालय की सेवा पूजाने ब्रज साहित्य अरु कला कौ जो सम्मान आदर के सग सग बाकी उत्तरोत्तर बढ़ी म जो अपनो अमूल्य अवदान कीनी है बाकी साहित्य के मच ते अभि-नदनीय मूल्यावन होनी भीत जरूरी है । याई कारन 'सेवा रसोदधि' ग्रंथ कू केवल 'सम्प्रदाय विसेश को ग्रंथ कहके छोड़ देनी सही नाथ । जाई कारन ब्रज के प्रसिद्ध विद्वान डा स्व डा गोवद्ध न नाथ शुक्ल ने सही लिखी है — 'पुष्टि मार्गीय सेवा मण्डान गहरी प्रेम संपण भक्ति भावना के साथ दशन साहित्य, कला, चरम सौंदर्य बोध का पचामृत है ।'

सेवा रसोदधि ग्रंथ नाथ द्वारा के देवालय श्रीनाथ जी के तीन सौ पैंसठ दिना के नित्य के उच्छव अरु सेवा पूजा की आखिन देखी जायरी है । श्रीनाथ जी की भीतरी सेवा पद्धति की मुरूप भागवत के दशमस्कंध म प्रतिपाद्य विसयन की तरिया है । सत्य जी नै श्रीनाथ रसोदधि ग्रंथ मे भागवत को जगै जगै प्रमानरूप मे उल्लेख करके ई सिद्ध कर दीनी है कि श्रीनाथ जी की सेवा पूजा के सूत्र मूल रूप सों भागवत सीई ग्रहीत हैं । बागरोदी जीनै गहन अध्ययन अरु नित्य पूजा मे बरसन तानू उपस्थित रहके अष्टछाप कविन के बिन पदन को विस्तार के सम या ग्रंथ मे सरस सरल ब्रजभासा गद्य मे विस्तार के सग उल्लेख कीनी है जो श्रीनाथ जी के विग्रह के सामे भाव विभोर है के गायबे की परम्परा रही है, याते जेऊ अंदाज लग जाये है के अष्टछाप के कविनै अपन पदन को सजन श्रीनाथ के सामे भक्ति रस मे डूबके कीनी है । कौन कौन से कविन के कौन कौन से पद कौन-कौन से ओसर पै नित्य सेवा अरु वर्षोत्सव सेवा म कौन-कौन स रंगसन पै गाये जाभिमे जाको विस्तार ते बनन 'श्रीनाथ सेवा रसोदधि' ग्रंथ की अपनी विससता है । ग्रंथ की साहित्यिक उपादेयता पै प्रकाश डारते भये डा गोवद्ध न नाथ शुक्ल लिखे है— इससे ब्रजभासा काव्य पर नया प्रकाश पड़ेगा और उसके महत्व की एव नयी दिशा का बोध होगा । इस समूचे ब्रजभाषा काव्य को यदि पुष्टिमार्गीय-सेवा शास्त्र कहा जाये तो अत्युक्ति न होगी । ब्रजभाषा के ये सरल सुगम मधुर पद ही वंदेया को रिसाते है ।'

सत्यजीनै ग्रंथ कू प्रदोत्तर संली म लिखी है—यथा

[आखर-आखर अनुराग]

प्रल-महाराज लोग प्रभु सम्मुख आरती करें, तथा मुखिया जी जेमनहस्त काच मंदिर की आड़ी आरती करें एसो क्यों ।

उत्तर-मुखिया जी चन्द्रावली जी की आड़ी सौ आरती करें । वो स्थान जेमन तरफ चन्द्रावली जी का है तासी और महाराज स्वयं चन्द्रावली जी एवं स्वामिनी जी होवे सो सम्मुख दष्टि मिलाय आरती करें । व मातृ भाव में दृढ़ है । मगला आरती उत्तरे बाद मंदिर वस्त्र होय के सम्मुख आव । फूलधरिया माला की पूछे वो सनेत भाषा में कहें ।

‘सवा रसोदधि’ के व्रज गद्य की वल्लु झाकी और देखी-बैसाखबदी पवनी श्रु गार महाप्रभु के उत्सव की ।’ परचारगी । नौवत की बधाई बँटे । वस्त्र रणील । ये श्रु गार होय । ये सब उत्सव चार सूयनायिकान के एक एक श्रु गार एक एक की आड़ी सो होय । परचारगी श्रु गार पहले तथा दूसरे दिन उत्सव के तथा बधाई बँटे तथा और उत्सव के दिना या प्रकार चार श्रु गार होय । सो ये दूसरा श्रु गार है । सो जोड़ काहू ।

पाटोत्सव की परिचया सरिया है, पाट अर्थात् सिंहासन में बिराजमान करने की पाट बँटानो है । या उत्सव कू पाटोत्सव कहें । भगवान श्रीकृष्ण की आसन सिंहासन पाट बँटावे को व्रजन श्री मदभागवत में कई स्थानों में मिल है । कागुन सुक्ला तीज को सिंगार या प्रकार समझाये है बागरोदी जी, ‘ग्वाल पगा किनारी को सफेद चाकदार बागा । श्रु गार मध्य को । कणफूल चार को । मीना के आभरण आज की सवा श्रु गार श्री मधुराजी की आड़ी सो होय है ।’ सक्ती के विसै में सखन की भासा देखी ‘भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा महादान सौक्षी को प्रारम्भ । श्रु गार वस्त्र ऐच्छिक मुकुट काछनी को ही श्रु गार होय । दानन में य दान करहता को माने हैं । वहाँ दान तीनी यासो ये दूसरे दानलीला को श्रु गार । आज पीरे वस्त्र घर । काछनी सूयन पीताम्बर आभरण विरोजा व । वनमाला की श्रु गार । मुकुट जडाऊ पिछवाई चितराम की दान एक ओर सक्ती के भाव की फूल बीन तन की जडाऊ विरोजी को मुकुट ठाढ़े वस्त्र सफद ।

कवि पूगव बागरोदी बलदेव सत्य जीने व्रजभासा को गद्य पद्य दोनों में सफल प्रयोग कीनी है । बागरोदी भी सत्सृष्ट व प्रकाण्ड पण्डित है अरु राजस्थान के मवाह व रहैया है । नाथद्वारा में गुजराती भासा काळ भारी प्रचार है । या कारण बागरोदी जीने सत्सृष्ट राजस्थानी अरु गुजराती के त्रिवेनी के संगम में ढाढ़े होय के व्रजभासा को सफल प्रयोग कीनी है । नाथद्वारा में जन सामाय क बीच आज जो व्रज बोली जाय है वाम नाथद्वारा की स्थानीय राजस्थानी को सम्मिश्रण है । सन्दन के सम्मिश्रण व संग

व्रज की मूल प्रकृति ह्या की बूई है जो तीन सौ बरस पैले व्रजभासा की ही । डा गोवद्ध न नाथ शुक्ला ने बागरोदी जी की भक्त व्रजभासा की नाम मंदिर की भासा दीनी है । मंदिर की भासा आज की व्रज की अपेक्षा तीन सौ बरस पूर्व की अष्टछापी व्रज के सव्दन के सग ज्यादा लिपटी भई है । मंदिर के परिकर आजऊ सेवक, मुखिया भीतरिया, जलधरिया, अधिकारी जी समाधानी जी, पौरिया, छडीदार सोहनीबोर, क्षापेरिया आदि के व्रज प्रवृत्ति के नामन के सग उपस्थित है । परिभामिक सव्दावली के अलावा मंदिर की भासा के सव्द अरु बिनको अथऊ अलग तरिया को है । यथा विग्रह के श्रु गार उतारवे कू कह्यो जाय 'श्रु गार वडे होय' भगवद् विग्रह के सामे पर्दाभोग या स्नानादि के समय आयवे पै वाय 'टेरा आबै' कहे है अन्तिम सिंगार कू छेल्लो श्रु गार' एव नैवेद्य चुकवे पै भोग सरन' कह है । याई तरियाँ बैठावे कू 'पधारना' 'विराजना' तरफ कू आडी इलठौरे हैवेकू 'भेले होना' आदि कह्यो जाय है ।

बागरोदी बलदेव धर्मा सत्य को व्रजभासा की गद्य पद्य को साहित्य परिमाण अरु परिणाम दोनू दृष्टि से राजस्थान की अमूल्य धरोहर है । विपरीत परिस्थिति अरु प्रोत्साहन एव यश से कोसन दूर रहके बागरोदी जी ने व्रजभासा में जो विपुल साहित्य सजन कीनी है बाकी मूल चेतना भक्ति के पावन भावन से अनुप्रेरित रही है । बागरोदी जी ने व्रजभासा कू श्रीनाथ जी की पावन भामा मानके वामे साहित्य रचना करवै की राजस्थानी भासा के बीच में रहते भये अपने साहसिक साहित्यिक सकल्प कू कार्यरूप में परिणित कीनी है । याई कारल कवि ने स्वयं कू श्रीनाथ जी को अकिंचन भगत मानते भये बिनकी भामा में रचना करिबे को अपनी सकल्प दुहरायी है—

नाथ नगर निवासी उपासी श्रीनाथ जू की,
बल्लभ के तनय की सेवक कहाऊ मैं ।

बागरोदी गोकुलस्थ आतरेय गोत्र सुत,
मधुसूदन लाल जी का तनय कहाऊ मैं ।

पुराण ओ वेदान्त की दास्त्री ने पास करि,
भापा मातृ हिंदी व्रज कविता बनाऊ मैं ।

नाम बलदेव कहै सत्य उपनाम राखी
विमान हेतु आज परिचय सुनाऊ मैं ।

व्रजभासा के प्रति कवि बागरोदी जी के हृदय में अटूट आस्था है । बिन अपनी

या आस्था को प्रकट करिबं म सकोचक नेक नय कीनी है ।
सरसता पं रीझ के कवि ने स्वयं लिखी है—

कोमल कमल सी है इख सी रसीली पन
मिसरी ते मीठी मधुभरी खासा है ।
अमृत है सुकृत शुद्ध परिशुद्ध पाव,
ज्ञानिन के काजे यामे सहित भरी भापा है ।
गीरव बडान बारी देवन की वदनीय,
मनुजन की दुवारी दीप्त जल खासा है ।
रस म सरस सत्य साहित्य मरोवर
ब्रज के कहैया छू की मीठी ब्रजभापा है ।

अस्तु बागरोदी बलदेव शर्मा 'सत्य' अष्टछाप के कविन के समान ब्रजभासा की
आ सत परम्परा के रचनाकार है जिन जो कष्ट लिखी है बू भक्ति रस मे दूब के लिखी
है जनता के करनीय मूल्यन को चरिताय करिब को लिखी है, लौकिक जगलन की
आग म शुरसते फोटि कोटि असहाय लोगन को आनन्द ते जीवन यापन करिबे को
लिखी है । सत्य जो को बाध्य सत्य मानवीय चेतना सों अनुप्रेरित है ब्रजभासा के सत
कविन जो कष्ट समाज को दीनी है बू बिनकी अनवरत साधना की परिनाम है । बलदेव
सत्य ने जीवन भर धीनाय जो वे भक्ति रस म दूब व साहित्य रचना कीनी है । प्रकाशन
अव यस की बबक इन्ने कामना नाय करी । एयरकण्डीशन कमरान के बैभव म
दूबवे जन जन के दुख दरदन की व्यथा को साहित्य म उतारवे को दम भरवे बारे
साहित्य सवीन को बागरोदी बलदेव 'सत्य' को साहित्य पढनो चह्यै जाये एक एक सच्चा
भाव ससार मे दूबके लिखी गयी है । आजकल आप अस्सी बरस की अवस्था मे अपने
पुन के सग धीकानेर म रहके नित्य सीताधारी धीनाय जो की मन सो सबा करते भये
आजकल साहित्य रचना म सगे भये है ।

बागरोदी जी के सच—बागरोदी श्री बलदेव शर्मा सत्य अपने भावन को लिखवे
के प्रति जिते सचेत रहे है, विते कई प्रकाशन अव साहित्य को सुरक्षित रखिब व प्रति
उदासीन रहे है । इन्ने जीवन म अपने साहित्य को एक स्थान प सुरक्षित रखिब की
नकल चिता नय कीनी । हमने जब बिनते बेर-बेर सम्पक कीनी तो बिन लिखा—
'मैपा हों बड हों । 80 बरस है जायेगें । हाथ धूजत है । 50—60 बरस ते साहित्य
सबा करि रह्यो ह । जाम बिसेस करि धीनाय जी, गीत्वामी बालन, पुष्टिमार्गीय
सदाई बनाय । समय समय पर अय ह जही-जही गया ताको बरनन कीनी । प्रमू

प्रायना, रोग मुक्ति छन्दन ते भई अरु ब्रज विलास मे ब्रज के अनेक पद धनाये । नायक-नायिका, प्रकृति चित्रन तथा षडश्रुतु वनन नवरस अरु देवतान के छंद है । कई छंद है कई छन्द कापी जयपुर-नाथद्वारा, बीकानेर है । बागरोदी जी के सिंगरे प्रकासित अप्रकासित साहित्य की जितके सूचना हमें मिली है—आको विवरन या तरिया है—

अप्रकासित (पद्य) पनघट सीला, छाक सीला, मानलीला, निकुंज सीला, मधुराष्टक पद्यावली मयुनाष्टक, नायक नायिका भेद गीतोक्त वार्तासंग्रह, श्री गुसाई जी के वचनामृत, बारह महिना के उत्सव भावना गोविंद गुणावली, गणेशाष्टक अम्बाष्टक, लक्ष्मी दरिद्र सहाय श्रीनाथ बल्लभ विद्वत् स्तोत्र, तिलकायत चरितामृत चाय चालीसा ।

अप्रकासित (पद्य) पुष्टि रसाल, श्रीनाथ चिह्न भावना, सात स्वरूप भावना, विद्वत् वचनामृत, श्रीनाथ की बारहमासी, बल्लभ शक्त ।

अप्रकासित (गद्य) श्रीनाथ सेवा रसोदधि



वीररस के ब्रज कवि श्रीनिवास ब्रह्मचारी 'श्रीपति'

डींग के वषावृद्ध ब्रजभासा के सरस मजुल कवि श्री निवास ब्रह्मचारी जी 'श्रीपति' उपनाम त गत पचास बरस ते ब्रज माधुरी की सबा म रत हैं । बहुतर बरस की वृद्धावस्थामक आप नियमित जीवन व्यतीत करते भये ब्रजवानी के कोप कू बड़ाघबे मे समर्पित भाष त लगे भये है । ब्रह्मचारी जी ब्रजभूमि की बा परम्परा के साहित्य सेवी है जब घर घर मे ल्होरे ल्होरे बालकन तू हजारो हजारो कवित सचैया कण्ठस्थ करवाय दिये जाने हे । ब्रजभाषा की पढत परम्परा की पैसी पाठशाला घर मई होमती ही । ब्रह्मचारी जी न अपने जीवन म भीतेरी पढत प्रतियोगिता के दगलन म बुलानी के क्षण्डा गाड है । रात रात भर आँख की बरीनी नैनन की चपलता विभिन्न हाव भाव प पढत म प्रतियोगिता होयी करे ही । पढत प्रतिपागिता की नियम ही के एक छद पड जाय ता बाये दुबारा बोलयो निपेद होय । अगर कोई कवि भूस्तके बोले भये छद तू पुन पड जातो ही तो बाय प्रतियोगिता ते बाहर कर दियो जातो ही । जा कारन पढत प्रतियागी साहित्यसकी तू निर्धारित बिस पै छद बोलव के सग सग जेऊ याद रखनो पडती ही के बीन बीन स छ पड़े जा चुके है । एसी पढत की भीतेरी प्रतियोगितान के श्री निवास ब्रह्मचारी श्रीपति हीरा रह ।

पढत प्रतियोगीन व सग सग श्री निवास ब्रह्मचारी श्रीपति पुरानी पीढी व बचे भये ऐस कवि हैं जिनम हिंदी के भक्तिकाल की सौखी मोठी सुगव प्राप्त होम है । ब्रह्मचारी जी न परम्परित ग्रन्थाव्य की वनस्थली म अपनी प्रतिभा के नयनये फूल खिलये हैं । ब्रह्मचारी जी की गावडन सीला' जसी लघुकृति म थी वृष्ण क गोबडन धारण अरु ब्रजवासिन व गुरुष के चित्रण की लघुकृति म महाकाव्य की सी विराट चेतना की अनप्राप्तई समाहार है गयी है । शात रस के सग सग वीर भयानक रस की उपस्थिति के बीच-बीच म ममतामय करुन रस की भीनी-भीनी फुहारन के कारन जि रति महाकाव्य की सी गरिमा अरु विराट चेतना अपने भाहि समेट भय है । इन्द्र की

पूजा के निसेध अरू गोवद्ध न पूजा के आयोजन के कारन ब्रज पै मूसलाधार बरखा की देखी ब्रह्मचारी जीने कसौ विराट चित्र अकित कीनौ है । सव्ययोजन अरू महीन विराट बिम्बयोजना के प्रयोग ते मूसलाधार बरखा की भयानकता एक सग मानस पटल पै चित्र की तरिया अकित है जाय है उदाहरन प्रस्तुत है—

घाये चहु ओर सौं गरजत घमण्ड भरे । बादर उत्तग बुद वान सरलामेहैं ॥
जाय हैं न नैकुना अघा मे बरसान जल । हैं कारे रग वारे भय भोर दिखाम हैं ॥
श्रीपति चपला की चका चौघ चहु दिसमे । झूम झूम मेघ घूम घूम घिर भाम हैं ॥
पामे अति दुख गोप-गोपी ग्वाल बच्छ गाय । ब्रज मे बरसा के फरसा से ललामे है ॥

ब्रजराज ब्रजवासीन की आत्त पुकार सुनकै जब गिरिराज कू उठाय लेय हैं ती चे ब्रजवासीन कू बाक नीचै शरण लैवे कू पुकारे हैं । बिचारे ब्रजवासी हरप जाये हैं । ब्रजवासीन के भय मे ब्रह्मचारी जी ने देखी कैसे मनोहर हास्य की पुट दीनौ है ।

कांपत है बरेजा अरू भेजा भग्याय रही । मुख है मसीन जान चक्कर म आई है ॥
बरसा की माव इतै, कृष्ण पै पहार उतै । एक ओर बूझा है ती दूजो और छाई है ॥
श्रीपति कहा पते जो पटव दे पवत कीं । की है फिर ऐसी लेय प्रानन बघाई है ॥
ऐसे गोप गुप्प चुप्प आपस म बात कर । सोंचें पछिताय पास वोज नहि जाई है ॥

याई तरिया जब गोप भारी प्रमथ है कै श्रीकृष्ण कू ब्रजवासीन कू बचापवे की श्रेय देय हैं ती एक गोपी हंसके जो बलू कहै है बामे हास्य की सरसता की ऐसी पुट आय गयी है जाकी जितेक प्रससा करी जाये जितेक कम है । देखी उदाहरन—

मोहन नौहर जाते हर जाते ग्वाल बाल । गिर गिर जाती जो ना सैन सौं सम्हारती ॥

हास्य क सग सग वास्तव्य भाव भारी ममता के भावन मे वरुन भाव की या रचना मे ब्रह्मचारी जी ने अनूठी प्रयोग कीनौ है । एक उदाहरन गोवद्ध न सीसा कू महावाक्योचित चेतना के निष्ठ सायबे पू पर्याप्त है । मैया जमोदा बू जब मालुम परै है कँ बाते कोमल दुलारे वेटा क हैया जैसे कोमल बालक ने पवत कू उठाय लियो है ती बाकी हृदय विदारक दमा बू कवि ने एक दोहा मे चित्रन कीनौ है । कोमल कहैया

अरु भयानक पवत एव मूसलाधार वरखा म मैया की रीयवो चीतबो स्वाभाविक है।
ऐसी मैया जसोदा के हृदय की दसा की चित्रण देखी। 'कनुआ-कनुआ' पुनरुक्ति
मे मैया की ममता अरु आसन सकट ते उत्पन्न मैया के करुनामय हृदय की झाँकी मई
काव्य चमत्कार है।

व्याकुल मन असुआ ब्रह्म प्रेम न हृदय समाय।
कनुआ-कनुआ कहत ही, पहुँची जसुदा माय ॥

'गोवद्ध न लीला' जैसे परम्परित विसयन की रचनान के अलावा ब्रह्मचारी जी
ने आधुनिक जन जीवन के भावबोध कूँ हूँ अपनी रचनान मे प्रमुख स्थान दीनी है।
सत्ता की आपाघापी अरु प्रभुता म डूबे राजनेता कूँ फटकारते भये कवि नै लिखी है।
बोट की राजनीति पे याते ज्यादा का व्यंग्य होयगो।

श्रीपति भरोसी कहा ऐसी सरकारन की। बोट पायब कूँ राष्ट्रनीति विसारी है ॥
हारी सब जनता दुखारी महामारी रहे। राज है हजारों पर भापा न हमारी है ॥

हमारे मिठलीन, सलीने, सुठलीने ब्रजमाधुरी के सरस रचनाकार श्री निवास
ब्रह्मचारी 'श्रीपति' सी बरस तानू जीवित रह, बजरान सौं याई प्राथना के सग मँ
अपनी निवेदन समाप्त करूँ हूँ।

समस्यापूर्ति के बेजोड़ कवि प्रभुदयाल 'दयालु'

तिरासी बरस के राजस्थान के ठेठ ब्रज भरतपुर के कवि प्रभुदयाल दयालु, को जनम 16 मार्च 1907 कू याई घरती पै भयो। सन् 1912 मे स्थापित हिंदी मेवी सस्था हिंदी साहित्य समिति ने ब्रजभूमि के या सहर मे भीतेरे कवि पैदा कीन ह अगर फेरिस्त बनाई जाय तो प्रमानित होयगो क जनता द्वारा स्थापित ब्रज की या हिंदी सेवी सस्था ने संकडन सागन कू काव्य रचना के अक्षर ज्ञान से मुरुआत करायक काव्य के समय सृजन की सक्ति प्रदान करी है। दयालु जीऊ ऐसेई कवि है जो सन 1913 मे हिंदी साहित्य समिति मे आयोज्य एक कवि सम्मेलन मे कविन के काव्य पाठ कू सुनकै इतेक बिभोर अरु तमय है गये कैं काव्य के सुसुप्त सस्कार इनके हृदय मे हरे है उठे। इनके हृदय सौं उमडती-धुमडती अरु इरमक्षिम रिमक्षिम बरसती कविता की बरिखा की फुहारन कू नेह की घपकी अरु लालित्य की गमक दोनी गुरू रूप मे कविवर मुरलीधर जमादार नै। सार है के दयालु जी के काव्य सस्कारन कू सान पै चढायौ जजी के एक साधारन चपरासी काव्य सृजन के पंडित भरतपुर के अपने समै के समथ कवि मुरलीधर जमादार जीर्न। दयालु जीर्न पेट पासन कू बस मिडिल तानू सिच्छा ग्रहन करी। 1936 मे हिंदी भाषा की उन्नति की राष्ट्रीय स्पर्धा मे प्रथम स्त्रेती सौं साहित्यरत्न की उपाधि ग्रहन कर लई। किताबी ग्यान की बस इतनोई खजानो है दयालु जी के पास। परि स्वाध्याय, अग्रज कविन की सत्सग, नियमित साहित्य गोष्ठीन की व्यावहारिक ज्ञान की विसाल भंडार दयालु जी की रचनाधर्मिता की सदनते बडो वैभव रह्यो है। काव्य सत्सग मे, भावलोक कू मथके काव्य नवनीत उत्पन्न बरिखे की कैंसी अनुपम अजानी सक्ति है थी दयालु जी याके जीते जायते उदाहरन है। आज जब रचनाधर्मिता अरु काव्य रचना प्रक्रिया की बात करी जाय है तो रस अलवार, गुण, दोष ध्वनि घर छंद विधान दूसरे लोक की काव्य सत्य लगे है। परम्परित काव्य रचना प्रक्रिया कू जड या माथा पच्ची तक बह्ये मे सकोच नाय होय। अग्रज कविन के सत्सग के अभाव मे निश्चिई परम्परित काय शिक्षा दूसरे लोक की बात लगे है। परि दयालु जैसे कविन के काव्य अरु बिनकी रचना प्रक्रिया के प्रचिंसण बात की विवेचन करै तो निश्चिई लगे है कैं ब्रजभाषा ने जो काव्य सत्सग की परम्परा हमारे देस में मुरु

करी ही बाय हमनै बठिन, नीरस बताय के अच्छी नाय बीनो । हमारे दस की काव्य कला की जो परम्परा रही है वू एक या दो दिना के परिसरन की फल ना है । सदीन के काव्य वेधा के अध्ययन अध्यापन, मनन चितन की परिणाम ही प्रजभापा के काव्य की रचना प्रक्रिया रही है । दयालु जी याई परम्परा के बवि हैं । विद्वे प्रजभापा क अलावा हिंदी मऊ काव्य रचना करी है । परि मन रयी है प्रजमई ।

प्रभुदयाल 'दयालु जैम सोम्य, मधुरभाषी, नाप तोल क धीर धीरे बीनवे चार गौर वन के व्यक्तित्व के घनी हैं बसोई बिनकी बविता है । एक एक सव जस बिनके मुख सो मन की भावनाययो तराजू म तुन के आव है बसोई निखालिस बिनकी कविता है । एक एक सव भाव सों एसी अतरंग है के लिपटी भयी है के सरसता की मीठी मीठी इनने काव्य की मिठास की महक बरबस मन कू एक निगूड आनंद म दुवाय के निहाच कर दे है । बनावटीपन या प्रयास के नैकड तो कही दरमन नाप भये इनके काव्य म भौत भाषा पच्ची करे पाछेऊ एसी दयालु के काव्य म दुई सों एक उगाहरन नाय मिल्यो जा तरिया की । मन म जो आयो है या यो कहे मन की तमयता ने जहाँ नकऊ एकाग्रता दीनी है बाय ज्यों की त्यों सहजभाव त अपनी निरासी काव्य संती म प्रकट कर दीनी । भरतपुर के या वयोवद्ध बवि दयालु ने अपने काव्य म । या युग के प्रज के अ प कविन की तरिया दयालुजीनै ऊ ज्यादातर काव्य रचना समस्यापूतिन की काव्य गाठन क रूप म करी है । समस्यापूतिन के प्रयास सों दयालु जी काव्य तमयता नकऊ सों खण्डित नाय भई । इन समस्यापूतिन तवई करी है इनके बवि नै काव्यगत तमयता ग्रहण कर लई है । जेई बारन है के इनकी पूतिन म प्रारभ सों आखिर तानू एक सहज श्रु खला बनी भई है । कही व्यवधान या स्वीड ब्रेकर क दरसन नाय होय । दयालुजी की काव्य परम्परित प्रज भाषा रचना प्रक्रिया क विरोधीन कू खुलौ प्रामाणित उत्तर है के समस्यापूतिन के प्रयास म सहज काव्य सजन प्रक्रिया खंडित नाय होय है । पूर्ती विस की इसारी मात्र है । अभि-यक्ति तो कवि की अपनी है । तमयता की भूमि सों पूरी करी गई समस्यापूर्ती अरु स्वतंत्रता रूप सों लिखी बविता म नरऊ तो अतर नाय । तमयता की ओज मूल बात है । दयालुजी बविता म त मयता की ओज बाधो-पात दशनीय है । अरु दयालु जी सों ऐसे मीठ प्रज के रचनाकार ह जिनको भाव लोक आजऊ वृद्धावस्था मऊ बालक की तरिया सहज सरल बेलाग प्रवाहित हैब की हामी है । सन 1931 म श्री हिंदी साहित्य समिति भरतपुर म आयोज्य एक बवि सम्मेलन म दरबार' म समस्या दयी गई ही दयालुजीनै दरबार समस्या की पूति सहज साग रूपक के माध्यम सों करी है । परोक्ष म मानवीयकरण अलंकार की छत्र ते वपां रितु म गान समा की सटीक रूपक याम प्रकट कियो गयो है । सहज सरल भाव से दरबार की जो पूति करी गई है वाम बवि की काव्य रचना प्रक्रिया की तमयता म नैकड बाधा पदा नाय भई है । रूपक के सग मानवीकरण क प्रयोग सों जो सहज काव्य

चमत्कार यहा पैदा भयो है, वू ई सिद्ध करिबे वू पर्याप्त है कं दयालु जी बालकोचित निश्छल भावाभिव्यक्ति के मधुरे कवि है। मेरी बात पे विमवास नाय तो पढ़ि ल्यो उदाहरन—

घन ते नगारे बाजे नारे नद ताल देत
झीगुर की क्षाप्त बजो सबरे घरवार मे ।
मधुर अलाप बारी कोकिल है गान हारी
नीलकण्ठ नृत्य करी फिरे बछ ? डार मे ।
जुगनू की ज्योत जर चपला प्रकाश करे,
घोमी घोमी रसबूद निशा अघकार मे ।
बन मे मोर सोर करे भूगी भेदि सब्द करे,
गान सभा जुबो मानो पावस दरबार मे ।

दयालु जीनँ परम्परित समस्यापूर्तिन के अलावाक सुतेन बाब्य रचनाऊ भीत करी है। इन्नँ अपनी या तरिया की रचनान मे परम्परित ब्रजभाषा के छान की डगर ते हटकै कछु ऐसे छंदन कोऊ प्रयोग अपने बाब्य मे करी है जो ब्रजभाषा मे ज्यादा लोकप्रिय नाय रहे हैं। याई तरिया को छंद है रोला। रोला कू ब्रजभाषा के काब्य दरबार मे बू आदर ना मिल्यो है जो हिंदी मे मिल्यो है। दयालु जी ने रोला छंद मे अपने ब्रज काब्य कू उतार के सिद्ध कीनी है के या छंद मेऊ ब्रजबानी बाए तरिया इठलाती, गमकती अरु महकती बले है जा तरिया सबैया एव कवित्तन मे चले हैं। इनके कवि की सहज बेलाग सरस अभिव्यक्ति रोलाऊ मेऊ बाई भाँति आई है जैसी अथ स्थानन पे आई है। बरखा की बहार मे मानवीयकरण एव उत्प्रेक्षा की छटा कैसी फव रही है—

फूने सुंदर भ्रमर पत्तीन झुलात
बारि बीच केऊ मनो सुंदरी नैन चलावत
चहक चहक खग बूद, विजन मे चोल मचावत
भनहु सारदी गुनन गाय बहु भाट सुनावत

दयालु जी के बाब्य मे रितु वनन प्रचुर मात्रा मे भये है। यामे ज्यादातर प्रकृति को आलबन अरु उद्दीपन रूप मे ज्यादा बनन भयो है। भीतेरे स्थानन पे तो कवि के अतस ने जो कछु देखो है बाकी सीधो सादो बनन कर दीनी है। ऐसे स्थानन की सब्द अरु प्रतीक योजना की एक के पाछे एक ऐसी बनन-भयो है कं पढ़िबे ते मानस पटल पे अनयास चित्राकन है जाय है। सब्दन के अथ कौ सादात्म्य निगूढ आनन्द में डूबकै

हृदय के केनवास प मनोहर चित्रावन करे हैं । दयालु जी व प्रकृति सौंदर्य के समक्ष ते
भरे भये बिनने काव्य चित्रन म त एक उदाहरन भीत है या प्रम म —

मटक पवग सग चटक चटक कलिका लिल जावत ।
विकसित सुमनावली गघ चहु टिसि बरसावत ।
अपनी वैभव देख, सुमन ललित हारसावत ।
अमर भित्तारी देख, द्रव्य अपनी बरतावत ।

प्रकृति चित्रन म भीतेरे स्थानन पै कवि न जसे एक के पाछे एक उत्प्रेक्षा की
सही पै लही परोय के धर दीनी है । 'बसत' की पूर्ति म लिखे भये पाष छन्दन में
ते हम एक उदाहरन कू प्रस्तुत कर रये है । समस्यापूर्ति मे नैकजु तो काव्यगत प्रयास
नाय दोख याम । सहज काव्यागत तमयता की समाधि ते निक्करी भयी है जि छद—

आयु म तरुणता ज्यों उषा म अरुणता ज्यों
तारावली बीच जैसे चन्द्रा ससत है ।
सर म सरोज जैसे, सुंदर मनोज जैसे
नागन म श्रेष्ठ जैसे भागत अनत है ।
सुरन सुरेस जैसे नरन नरेस तसे,
गुननि म मान पावे त्रिष्ठ गुनवत है ।
तैसेई दयालु धरा भारत बसुधरा पै
रिगुन म राज, रिगु राज मे बसत है ।

दयालु जी ऐसी पीढ़ी के जीवित कवि है जिनकू अपने युग के ते एक एक श्रृंख
प्रजभापा के कविन के सरसग में काव्य पाठ करिखे की जोसर मिल्यो है । इनमे मयुरा
के अपने समै के कवि गिरोमणी नवनीत चतुर्वेदी की नाम उल्लेखनीय है । नवनीत
चतुर्वेदी स्वयं समस्या देते हे । दूर दूर से कविगन इनके सानिध्य म पूति कर प्रससा कू
आतुर रहते हे । एक समै नवनीत जीन समस्या दर्ई 'आधरे न अधरात समै रवि मडल
म रसि मडल देखी ।' दयालु जिन्न निम्नलिखित समस्यापूर्ति करिक नवनीत जी
अरु मयुरा मडल के प्रज कविन सौ भारी प्रससा पाई हो—

तेजभये बसमानुषू राजत, सूर कवि सपनी पखी
गोम म राजत राधिका सुंदरि चन्द्र प्रभा हू ते रूप बिसेखी

या छवि की अवलोक क दयालु जू भाव हिए बिचये लेली
आधरे नै अघरात समै रवि मडल म ससि मडल देखौ ।

24 जनवरी, 1931 कू एक कवि सम्मेलन मे दयालु जीने 'बजरारेरी' पूति मे कल्ल छन्द बनाये हे । नैनन की मार कितनी तीखी अरु असहनीय होत है याको सहज चित्रन पूति के कवित्त म भयो है । प्रयास की नैकक शतक नाय दीसै है या स्थान पै । कवि कोसल की जि चमत्कारई कहनो चईयै क नैन की मार की तीव्रता कू कविने विभिन्न प्रतीकन के माध्यम ते देखौ कितेक सटीक सैली के प्रवाह मे उतारी है—

मुई के चुभाए नर नैव मे उछर जात ।
भाले की धुमन खूब रुधिर प्रचारे री ।
तीर तलवार बीर ऐसी ही उपाधि करें ।
जिनक लगै है दुख पाये तिन भारे री ।
इनके जु पावनि की औपधि उपाय धने ।
मनत दयालु मैने पोषी मे निहारे री ।
कैसे परं कल कोन औपधि भली है तिहैं ।
जिनके हिए मे चुभै नैन बजरारे री ।

आखिर मे निवेदन करनी चाहू हू के समस्यापूर्तिन के कवि अरु कविता आज के माहोल मे कल्ल अटपटी सी लगै है । पर ब्रज भाषा की समस्यापूर्ति के काव्यपाठ काळ समैं हमारे देस मे भीतई लोकप्रिय हो । हजारन की सख्या म जनता रात-रात भर कविन की कलान पै मंत्रमुग्ध है के बाह बाह करती ही । वाग्बैदग्धता अरु दचनबन्धता की लालित्य जनता कू बाधै रहती हो । या दष्टि सौ समस्यापूर्तिन की ब्रज कविता कोरे कागज या फुस्तकन की कविता नई है के जनता की कविता ही । जनता के दुख दद, गुलामी की सत्रासभरी पीडा भक्ति की मिठास आदि जीवन के सत्य जब हजारों व्यक्तिन के मन मे उतरते हे तौ कविता जनता के कठ मे समा जाती हो । दुर्भाग्य को विसै है के हिंदी की ब्रज भाषा की समस्यापूर्तिन के कवि सम्मेलन की जागे आज भीड़ आधार हीन हास्य न स्थान ले लीनो है । ब्रजभाषा के मच ते हिंदी को वैभव बढ़ायवे बारी पूति की कला धीरे-धीरे लुप्त सौ है रह्यो है याते एक दूसरो लाभ घोर हो के परस्पर स्पर्धा अरु अग्रज कविन के सत्संग ते नवाबुर कविन कू अम्पास के आलोक मे अपनी प्रतिभा कू निम्बारवे को जो सहज मच मिलती ही याते नयी नयी प्रतिभा दिसा निर्दम प्राप्त करवै भविष्य के श्रेष्ठ कविन को पात मे स्थान ग्रहण करती

जाती ही। प्रभुन्याय दयालु याई तरिया के कवि है। बिनकी पूति की कविता भरतपुर
 अरु अज अचर की जनना के कठ म बरसन तक घुमडती रही है। पुरानी पीढ़ी के
 लोगन के कठन में आजऊ जि अवसेस विद्यमान है। वद्धावस्था के कारन दयालु जी के
 स्वाफ गौरवण अरु उन्नत ललाट के सग देखके जि स्वात नाय लगे है के ई वू
 व्यक्तित्व है जाने रात रात भर जगके पूति की अपनी कला की सत्व जनता के मनन
 में उठेला है। पुरानी यादन कू जब कुरेदने की प्रयत्न कियो ली लगी के पुरानी पीढ़ी
 दयालु जी की काया से जैसे अचानक सोयो बिनको कवि पूरी उमग के सग तन क
 ठाडो है गयो होय अरु कह रह्यो हमें— 'तुमन पूति की कला कू तहस-नहस करके'
 अच्छी नाय कियो। जनता से तुमने कविता की लालित्य जबरन छिनाय लियो है अरु
 दियो है भीड़ो हास्य जो छन भर कू हसाय तो दे है पर कठ में नाय उतरे।'

काव्य सौरभ

मत्तगयद

माँ उमग ब्रजभावन म नव नैह दयाकर ली बरसै तू।
 माँ ब्रज कला डर म ममता बन नूतन ली सरसै तू।
 माँ ब्रज कूनन म मकरद भरी मधुमास बनी बिसरै तू।
 माँ ब्रज कानन मलि कब तरे मुर माँपुरी ली सरसै तू।

गणेश

मत्तगयद

म त गुन स आर सग पर भूतन प्रतन होतत सारे।
 भाग पुटी दिख बीबत स म ताव गिरें उठ नाचत सारे।
 गाजन ध्यान करे स रत प्रना विपना अब का विधि टारे।
 रोदन रोवत प्रान निय हठ यासक पाहन माँ क ध्यार।

आधुनिक समस्यान के कवि राधाकृष्ण

‘कृष्ण कवि’

धीर अह सिंगार के सरस कवि राधाकृष्ण ठेठ ‘कृष्ण’ ब्रजभूमि डोंग के निवासी है । इहे भरतपुर मे रहके ब्रज के प्रसिद्ध कवि प नंदबुमार जी की प्रेरणा प्रोत्साहन अर बिनके चरनन म बैठके ब्रज काव्य रचना की अभ्यास कीनी है । धीर रस म इनै अपनी कविता म अमृत ध्वनि छद के जीहर दिखाये है । अमृत ध्वनि छद मे कलात्मकता अह अभ्यास की भीत बड़ी योग रहे है । अनुप्रास एक के ऊपर एक आयये से अक्षर अह मन्दन की ध्वनि सुनवया के हृदय मे स्वाभाविक रूप सों ओज की भावना पैदा करै हैं । कृष्ण कवि राधाकृष्ण जी ने या तरिया की भीतरी अमृतध्वनि लिखि है । अमृतध्वनि लिखनी अह साधक भाव से बाकी पारायन भीतई कठिन है । पर कृष्ण कवि के ब्रजकाव्य मे य दोनों सत्वपूरी तत्परता के सग उपस्थित है इनकी ओजमयी वाणी के सग अमृत ध्वनि की झलकार याजना ऐसे सलौने रूप से उभर के आवै है के सुनवया अनायास ई ओज म डूब जाय है । ज्यादातर ब्रजभाषा के कविने अमृत ध्वनि की प्रयोग ओज के छंदन म कीनी है अह राधा कृष्ण कृष्ण कवि ने अपने अमृत ध्वनि म नृत्य की चित्रन ऊ कीनी है । नृत्य की पाप अह आलोडन विलोडन की सगति इनके अमृत ध्वनि मे इतेक सटीक बैठी है के आलन के सामई नृत्य साकार है जाय है । याई तरिया इनै गणेश वदना अह इष्ट वदना म क्रमश अमृत ध्वनि छद की प्रयोग कीनी है । नीचे के उदाहरन से हमारी आत स्पष्ट हाय है—

जय जय जय मंगल करन छज्जज्जत ध्वि छद ।
 सुकवि कृष्ण रज्जत नयन सज्जज्जत सिर चद ॥
 सज्जज्जत सि चददधर वर चददधर सुत ।
 दददधर इन सु ड ककरिवर रिद्ध सिद्धयुत ॥
 गघधधर गर पददधर को मोदक मदमय ।
 वदज्जनन अमद अनदद दायक जय जय ॥

मोर मुकुट कर लकुटघर अघर बेनु गति मद ।
 ठुमक ठुमक कवि कृष्ण त्यों नृत्ततत् नदनद ॥
 नृत्ततत् नदनद चकित्तत्तत् चित्त चित्तत ।
 तत्तत् ताल बजत्तत्तत् गति वाल बवृत्तत ॥
 मत्तत्तत् मन मुरनि धिति छनन छ छूम छद्योर ।
 छित्तत्तत् धुनि धरनि हरि नृत्तत्तत् जिमि मोर ॥

कृष्ण कवि ने राजभाषा को सिंगार अरु राधा कृष्ण को कोमलकांत पदावलि ते
 निकार के आधुनिक जीवन की बठोर भूमि में उतारी है। दूसरे सन्दर्भ में या बात को
 यों कह सक है के जो लोग ये कहें कि राजभाषा में प्रेम सिंगार अरु राधाकृष्ण की विभिन्न
 कविता ते उत्तर देकर बताया है कि आधुनिक जन जीवन की विभिन्न समस्याएं अरु दैनिक
 जीवन के संघर्ष के घात प्रतिघातों को सावक रूप में उतारने में राजभाषा में नैक
 कमी नाय। जैसा कि कारण है कि दहेज प्रथा भ्रष्टाचार जैसे जबलत समस्या बारे विसं
 पैर कृष्ण कवि जी ने अपनी कलम चलाई है। हमारे देश में दहेज प्रथा निश्चित ही भौत
 बुरी बुराई है। दीन हीन व्यक्ति के घर में कया की जनम दहेज के कारण बाकू जीवत
 मृत्यु सी प्रदान कर दे है। दहेज प्रथा वास्तव में धनिक लोगन की बनाई गई ऐसी
 व्यापार वृत्ति है जो जीवित व्यक्ति के खून के सग करे हैं। कृष्ण कविजीने दहेज के
 भीतरे करना भरे छंद लिख है। देखो कुछ उदाहरण—

अतकर दहेज की प्रथा की पूर्णरूप से, सामाजिक क्रांति की लहर लहराये।
 बरके अवाञ्छनीय तत्वन की बहिष्कार, प्रबल प्रपच से समाज की बचाये।
 प्यार की बनायो व्यापार धनिक लोगन ने भ्रष्टाचार अत्याचार की ना पार पात है।
 कत्तो या कुरीन को उन्मूलन समूल करी ना तो बरदान अभिशाप बन्यो जात है।
 आज्ञा की ते पल मानो जातो हो कि हमारे देश की सिंगरी सम्पत्ति को अश्वेज समेट
 के अपने देश को ल जाय है पर आज्ञा की चालीस बरस पाछे हमारे देश की समस्या
 नाय सुरक्षी। अन्न अरु जल की कमी आजकल हमारे देशवासीन की सबसे बड़ी समस्या
 है। आज्ञा की पाछ विकास की बड़ी बड़ी पंचवर्षीय योजना बनी है इन योजनाओं में
 अरबन रूपया व्यय कीयो गयी है पर प्रगति के नाम में जितके लाभ मिलनी चड्य हो वो
 नाय मिली देश की या दुरावस्था को देखके कृष्ण कवि बौद्धिय रोय उठो जाई कारण
 विले अपने मन की पीडा को जा तरिया सत्न में उतारो है—

अन्न जल समस्या हुई ना हल हिंद में हमारी योजना की टिल्लो उठ जायेगी ।
 बिस्वी सम बिलोक रहे देखो विदेसी सन्तु मारेगे झपट्टा झट झिल्ली उठ जायेगी ॥

आतङ्गवाद भाई अतीजावाद अरु नेतान की आपाधापीन के कारण हमारे देश की राष्ट्रीय एकता आज खतरा में पड़ गयी है। एक तरफ पंजाब में कुछ लोग खालिस्तान की नारी देक विदेशी सत्तिन के सहारे पै देश की एकता को तोड़ने की पटयत्र कर रहे हैं तो दूसरी माऊ देश के भीतर लोग अपन व्यक्तिगत स्वाधन की पूर्ति को राष्ट्रीय एकता को खण्डित करव में नैनऊ सकोच नाय कर रहे हैं। आज राष्ट्र के सामने राष्ट्रीय एकता के खातिर प्रेम, अरु एकता की जरूरत है देशवासी अपन स्वाधन को भूल के जब तानू राष्ट्र की प्रगति में नाय लगेंगे, तब तक सच्ची राष्ट्रीयता की बात करनी बेमानी है याई बात को कृष्ण कवि ने सवया छंद के माध्यम से जा तरिया सन्दन में उपयुक्त भाव को पियरी है—

एकता की अनिवायता है छल छिद्रन छुद्रता छाटन सौं ।
 त्यों कवि कृष्ण विवेक विचार से प्यार सुधारस बाटन की ॥
 भेद भुलायके भाव सौं चाव सौं पाप पयोनिधि पाटन की ।
 सेस विसस उपाय यही सब देस बसेसन बाटन की ।

अगर एकता भई तो सिंगरी बिगड़ी बात कवि के सन्दन में बन जायगी अगर देश में एकता नहीं हुई तो आज जो लोग हमारे मित्र हैं वे ऊ सन्नु बन जायेगे। अगर देश एक रहे तो एकता की सक्ति के सामने बड़े-बड़े शत्रु को मित्रता करनी पड़ जायेगी। राष्ट्रीय एकता की सक्ति के या मूल भाव को नीचे लिखे सवया में कवि ने कितने सटीक पर्याय की धरती में उतारी है—

एकता के बिन आपस में अब भारत में तन से तन जायगी ।
 त्यों कवि कृष्ण कुनीत अनीतन से टनते ठनते ठन जायगी ।
 देश की मित्रता शत्रुता में बदली छन ते छन जायगी ।
 केवल एकता के बल पे सिंगरी बिगरी बन से बन जायगी ।

बजट जैसे हमारे देश के हर व्यक्ति से जुड़ी समस्या तक को कृष्ण कवि ने अपनी कविता की आधार बनायी है। राधाकृष्ण जी को कृष्ण कवि हर साल लोकसभा में प्रस्तुत हैवे बारे घाट के बजट से भीतर दुखी है हर साल लोकसभा में घाटे की बजट प्रस्तुत होय है अरु या सभा के सिंगरे सदस्य बड़े हय के सय या बजट को प्रस्तुत करे है। घकाचक जीवनयापन करवे बारे घाटे के बजट के प्रस्तोता नेतागन निघन जनता के दुख दद को का समझेगे। हर साल प्रस्तुत हैवे बारे घाटे के बजट के प्रति कृष्ण कवि की मन पसोज सठे याई भाव को या तरिया कविता में व्यक्त कीनो है—

घाटो ही घाटो बजट होय पेस प्रतिवध ।
 सुकवि कृष्ण स्वीकार से लोक सभा में हय ॥

लोकसभा में हृषीकेश अधीर प्रजाजन ।
जन जनदरसत दुखी अधमर स है निधन ॥
धन धनराज गुराज बाज कसब है कटो ।
चक्र उच्चर से नता जनता की घाटो ॥

नेतान नें तो कवि की भाषा में दस की भुर्ता बना दिया है । प्रजातन्त्र का नाम प
हमारे देश के नेतान नें जो आपाधापी मचायी है बाय स्वातई कोई एसी आदमी होय
जो नई जानतो होय । कामजन प दस की प्रगति के नाम प बड़ी बड़ी योजना बनाई
गई है । वही समाजवाद की नारी देव जनता को भ्रमिन् किया गया है पर जनता के
हुल दद कू सच्चे ढंग से कोऊ नेता न ध्यान दव की जरूरत नाय समझी नेतान की
आपाधापी सौं कवि की हृदय भीत दुखी है । जि दुल स्वयं कवि के सम्बन्ध में जा तरिया
प्रकट भयो है—

सोच सोच हरि सकल नेता निहारे नैन, आजादी कहा महा ऊषम सौ मचायी है ।
कृष्ण कवि आज तक सफल ना भयो कीऊ विफल भई योजना सोज यही पायी है ॥
गायो है समाजवाद बंद अपवाद बोरे भोरे भारतीय को विषय में भ्रमायी है ।
खोटन की ओट खूब नोटन सौं बोटन सौं, चाटन सौं भारत की भुरता बनायी है ॥

‘याय व्यवस्था अष्टाचार, चमचा जसे जनता के दैनिक जीवन से सदक्षित प्रजन
कू कृष्ण कवि न अपनी कविता में पूरी तत्परता के संग उतारी है । अष्टाचार तो हमारे
समाज में ऐसी असाध्य रोग की तरिया फलतो जा रह्यो है जाकी उपचार काऊ के पास
नाय सरकार में उपर से लके नीचे तानू अष्टाचार ने अपनी जड जमाय राखी है । या
असाध्य रोग के सामई जनताक असहाय है कै भूक बनी है । कवि की भासा में सहस्रबाहु
की तरिया अष्टाचार हमारे देश की सिगरी प्रगति कू लीलतो जाय रह्यो है—

अष्टाचार बतात है भारत में सब लोग ।
भूक बने से सह रहे है असाध्य यह रोग ॥
है असाध्य यह रोग छाव सामग्री सारी ।
भरी अष्टता सौं असली में नक्ली डारी ॥
वहै कृष्ण कवि चल रही याही सौ सरकार ।
सहस्रबाहु सम व्याप्त है व्यापक अष्टाचार ॥

इनके अलावा कवि कृष्ण ने आजादी पाछे सडे गये विभिन्न युद्ध पें अपनी बीरता
प्रकट करवे वारे सैनिक नायकन प विचार व्यक्त किय है । इनमें फील्ड मार्शल मानेक

साह मेजर शैतान सिंह हवलदार मेजर धीरू सिध कप्तान रामराघव राना लासनायक करमसिध, नायक यदुनाथ सिध, मेजर सोमनाथ जनरल चौधरी, एयर मासल अजुन सिध, कनल तारापुर, कप्तान कपिल सिध थापा, वनस गुरू बबश सिध, कप्तान चन्द्र-नारायण सिध जैसे भीतेरे सैनिक नायकन के विसै म कवित्त छंद के माध्यम सी बिनकी वीरता को खुलासा कीनी है। सन् 1948 मे कश्मीर की लड़ाई में वीरता दिखायवै वारे चक्र प्राप्त सूबेदार सावल राम की वीरता की अभिनन्दन करते भये कृष्ण कवि न या सरिया अपने भावन कू सब्द दीनै है -

सूबेदार सावन राम वीर चक्रवारे नैं उड़ी क्षेत्र मे कियौ आक्रमण करारौ है ।
कृष्ण कवि मशीनगन गोली और गोला दै, टोली लैं अपनी युद्धभूमि ललकारौ है ।
अटा उर जमाय पाँच घटा लौ लड्यौ वीर, अइयो ओज भारी अरिन भजारौ है ।
सन अढतालीम की काम वीरता की जाकी, अय उपमा की उर आत ना उचारौ है ।

इन सत्य अहिंसा समता जैसे मानव जीवन के कोमल भावना पैऊ अपनी लेखनी चलाई है, जाके अलावा ब्रजभूमि के परंपरित विसयन पैऊ इन अपने हृदय के भक्ति भावन कू काव्य मे उतारौ है । भ्रमरगीत अरु गोपी-उद्धव संवाद कृष्ण कवि की भक्ति काव्य की प्रमुख विसै रहस्य है । सन्बोलुआव जिहै क राधाकृष्ण के ऐसे कवि हैं जिन अपनी ब्रजभाषा की कवितान मे परम्परित भक्ति रस की रचनान के अलावा आधुनिक जनजीवन से संबंधित विसयन कू बी पूरी तत्परता अरु सजगता के संग उतारौ है । अत मे हम ब्रजभासा कू समर्पित कृष्ण कवि के एक छंद से अपनी बात समाप्त करनी चाहै हैं ।

या लाल गुपाल के बोलन की कल कलोलन गान की भाषा ।
कवि कृष्ण कहा कहनौ रस की ब्रज वासिन के प्रिय प्रान की भाषा ।
तुलसी अरु वेशव सूर तथा ब्रज वे कितने कविरान की भाषा ।
उपमान नही तिहु लोकन माहि बनी ब्रज नाथ नचान की भाषा ।

गुरु कमलाकर की ब्रज काव्य यात्रा एक विवेचन

ऐतिहासिक व रससिद्ध कवि पद्माकर के बालक कमलाकर तैलग की जनम माघ शुक्ला वारस सवत 1971 कू भयो। इनकी मिया की नाम बल्लीबाई हो। इनके पिता बलवत्तराय तैलग ब्रजभाषा के अपन जमान व थोष्ठ कविन की खेनी मे गिने जावै हैं। सवत 1935 म एक छोटे स दोहा की रचना के सग कविवर कमला तैलग जीभे अपनी ब्रजभाषा की काव्य प्रनयन की यात्रा सुरू करी है। या दोहा की सभ्य रचना अरु प्रात कालीन सुपमा की सहज चित्रन कवि व सहज रूप म ई प्रमानित कर है के इनके हृदय ते आगे चलके जो माधुय अरु प्रसाद गुण की काव्य निरक्षर फूटयो है। बाकी आधारशिला बाल्यावस्था म ई जम गई हो। जि पली कविता हैं—

सम धमयो उदयो चहत, अरुण अमल आकाश।
प्रात भयो ठठ बैठ सुत करहु कछुक अम्भास।

कवि कमलाकर तैलग कविता म कमल उपनाम ते रचना करै है। सादा जीवन अरु आदशमय व्यवहार इनके एक एक वायप्रणाली म झलक है। बरसन ते गुरुजी ने खाली घोती पहिरवे की नियम स राखी है। आज 76 बरस की उमर मऊ युवकन की नाई ओजस्वी अरु तेजमय यक्तित्व के सग सग प्रबल विनम्र सुझाव के गत साठ बरस ते विद्यार्थीन कू निमुलक हिंदी अरु ब्रजभाषा पढायवे म अपनी जीवन लगाये भये हैं। आज त पंतीस बरस पैल इधर जयपुर म साहित्य सदावत सस्था की स्थापना कीनी हो जामे भीतेरे छात्रन कू इधर हिंदी अरु साहित्य की पाठ पढायो। राजस्थान पत्रिका के संस्थापक कपूर चन्द्र कुलिस तारा प्रकाश जोशी बुद्धि प्रकाश पारीक श्री बाढदार जैसे राजस्थान के कल्ल यशस्वी साहित्य सवीन की उत्ल्लेख करवो पर्याप्त होयगो। जिभे इनके पास रहके साहित्य सदावत के वातावरन म साहित्य की भूस चेतना प्राप्त कीनी है। याई भारत कमलाकर तैलग राजस्थान म गुरुजी के नाम ते जाने जाय हैं। यग

परम्परा अरु गुरुन के पास नियमित अभ्यास से इनकी कविता में धीरे-धीरे निखार आमतो चली गयी । बाल दास्थी, पिता, काका सुधाकरजी, काका गोविंद राम तैलंग वल्लू ऐसे नाम हैं जिनकी प्रेरना अरु प्रोत्साहन से गुरुजी की ब्रजभाषा की कवितान में धीरे धीरे निखार आयी है ।

गुरुजी ने अपने ब्रजकाव्य में परम्परित भक्ति काव्य के सग सग आधुनिक जीवन के भाव बोध को हूँ हूँ स्थान-स्थान पर चित्रित करने की अभिदनीय प्रयास कीनी है । सन् 1937 में इन्हीं भारत के स्वतन्त्रता आंदोलन से प्रभावित है वही सम्बन्धी-सम्बन्धी कविता लिखी ही । कहने की आवश्यकता नहीं है सन् 1937 की सभे हमारे देश में ऐसी सभे ही जब हम पूरी तरिया से विदेशी के शिकजे में बसे भये थे । राम प्रसाद बिस्मिल, अरु भगतसिंह जैसे नौजवान न अपन प्राण अर्पित करके आजादी के भाव लोगन के मन में उतारवे की प्रयास कीनी हो । नवयुग कमलाकर तैलंगजी आजादी के या बलिदान से इतने प्रभावित भये कि इनके काकाजीकी रंग रूप पूरी तरिया आजादी के रंग में रंग गयी । इनने जिसकोच अरु निडर भाव से अंग्रेज को ललकारते भये लिखी ही ।

सुने विदेशी लोग, बात य एक हमारी ।
वापिस घर की करे जायवे की तैयारी ।
हमती इहा सुतन होइके रहिबी चाहत ।
भारत अपनी सही हवा में बहिबी चाहत ।

अंग्रेजन ने भारत में आयके यहा की गरीब जनता व सग जो अनाचार अत्याचार किए बाते युवा कवि कमलाकर के हृदय में भीतई पीडा ही । विदेशी लोग निष्ठुर तो होतेई ए सग ई मिले हमारे देश के रीति रिवाज अरु संस्कृति को बिगाडवे में नेकऊ कसर नाय छोडी । याई सत्य को युवा कवि कमलाकर जीने सन् 1937 में निर्भीक है के या तरिया बही । 1937 में रचित या कविता से जेऊ प्रमानित है के कमलाकर जी के मन में अपन देश की आजादी की ली कितेक प्रखर भाव से जर रही हो । भारतेन्दु बाबू ने ब्रजभाषा काव्य में देश में सबन से पैले जा ली जरई ही बाय परवर्ती साहित्य सेवीर्ष निडर भाव से जरामो है । ई दूसरी बात है के हिन्दी की तथाकथित प्रगतिशीलता की स्पर्धा में ब्रज काव्य के जा रूप में चर्चा नाय भई है । कमलाकर जी की सन 1937 की जि पक्ति जाको सबन से बडो प्रमान है ।

तुमन आकर इहा बडोई जुलम कियो है ।
अरे नित्यी चली हमारी बुरी कियो है ।

भाषा भूषा वेश, विगार हम लोग के ।
तुमने अवसर दिये बुरे दुख के भीमन के ।

विदेशीन के अत्याचारी अरु अनाचारी रूप के मग सग बिजै अपन देशवासीन की कमीन की तरफ अपन काव्य मे ध्यान खचवे की काऊ तरिया की कसरत नाय छोदी । हमारे देसवासिन की परिभ्रम ते भागवे की इच्छा ते बिनकी कवि भीत दुखी है । कमलाकर जी के कवि के अनुमार अगर हमारे देसवासी परिसमी बन जाय तो बिदेशीन के देस ते निकारयो नकऊ कठिन नाय । याई सग बिजै धम की आराधना करने भये या सत्य कू अपनी कविता मे या तरिया उतारो है—

धम के करिब मे बहू होत न जाको येद ।
स्वय बनावत भूमि की, बाके तन को स्वेद ॥
सीध स्वय उत्पन्न के जन जन मे अनुरक्ति ।
धम की दम टूटे नहीं री अमकन की शक्ति ॥

मनुष्य सालख मे कम की धरती कू त्याग के इत उतकू डील है । कम त म्ही छिपाव के ईश्वर की भूतिन की आराधना ते स्वय की प्राप्ती की कल्पना सही अथन मे हमारे देस की प्रगति की सच्ची रास्ता नाय या मम कू युवा कवि कमलाकर जीर्ण आजादी ते भीत पैल स्वीकार कीनी । याई कारण बिजै बेसाग है के बिदाही कवि कबीर की तरिया देसवासिन कू ललकारते भये कहाँ है—

मानव ! नालख मे क्या इधर उधर मत घूम ।
कमठ हाथन मो पकड माँ की आवल चूम ॥
ईश्वर प्रभुतर गाव है स्वय कल्पना मात्र ।
वेधन तुमही हो मनुज अभिन दन के पाव ।

गुरुजी न एने विनय कू अपनी बलिता को आधार बनायो है । जिनकी तरफ लोगन की ध्यान नाय जाय है । धूम्रपान अरु चायपान जसी बढती भई नशाखोरी तब कू मध्ययुगीन सतन की शली मे कमलाकर जीर्ण तुमई दख लेखो नीचे लिखे दोहा मे बितेब सटीक संसो ॥ उतारयो है ।

मन्द मार पत सोल तू सम्य हाटन की हास ।
अर धूम्रपान है दिस दिमाग की बाल ॥

पर मे मचत अपार है हाय हाय वी सोर ।
चाय पिये दिन सोस पै पूरी आवत जोर ॥
चाय पिय ते जिदगी पावत नही विवास ।
आयु घटत अरु बाय वी होवत सत्यानास ॥

आजादी पाछे देस की हालत कू देखके कमलाकरजी की बबि चुप नाय बैठयो बिघ्न देदयो क महात्मा गांधी की प्रेरना ते ऊँच नीच अरु जातिन के ब घन तोड़ के सिंगरी भारत ऐसी एकता की डारी म बध्यो हो के सक्तिसाक्षी विदेसीन कू दुम दबाय के भारत ते पलायन करनी पड़ी । बबि ने देखी के जिन आदसन कू प्राप्त करवे कू आजादी की लड़ाई अरु संकटान लोगन नै अपने प्राण यीछावर किये बाकी सत्य आजादी पाछे जीवित रह्यो जाति पाति की ऊँच नीच की भावनान नै आजादी के बलिदान के आदस कू शकसोर क रस दीनों । खिन्न है के कमलाकर कमल नै एक आत्मवादी बबि के रूप मे हमारे देस क या बड़बस रूप कू या तरिया स्वीकार कीनो—

हिन्दू जैन क्रिश्चियन पारसी मुसलमान ।
घोड़ सिख नागरिक आपस मे भाई है ।
जनमजात मानव की जात नाहि जात पात ।
बमजात ब्राह्मण है बमजात नाई है ।
धम निरपक्षता की पद्धति की मान इहा ।
गौरव गुण बलिया ईश्वर की गाई है ।
एकता की आसन पै बढे भने भारत म ।
भारत निवासिन ने गाढे सुसझाई है ।

स्वाध प्रपच अरु दुखदाई आपाधापी अरु जाकी साठी बाकी भैस की बढती भई प्रवृत्ति ते कवि की मन खीज लठयो है याई कारण विनै कठोर भाषा मे देस के या चुरावस्था की चित्रन देखी कंस कठोर दारुण भरे सज्जन मे कीनो है—

खाय रह्यो खोंपरी विवादन की गीत इहा ।
स्वारथ के पोत पै प्रपच चढयो आवे है ।
रचना बिरच सकुचावै करे घात धनो ।
पूरी उत्तपाल करे प्रानन की खावै है ।

सन्नातुआम है कि गुरुदास तुलसीदास के अनुरूप भावन में सग महुर्दाई जैसे परम्परित आधुनिक विमर्शन कू गुरु कमलावर जी १ अपनी ब्रज कविता में पूरी सत्परता के सग उतारी है। गुरुजी ने उद्धव शतक सीसक से परम्परित गोपी की विशेष दमा की चिन्तन १२० छंदन में कीनी है। गोपी अरु कृष्ण के या प्रेम प्रसंग कू सैव गतक अरु पचवीसी लिपि में की एक सन्धी परम्परा ब्रज भाषा काव्य सत्तार में रही है। गुरुजी ने १२० छंदन में या कथा कू या प्रेम प्रसंग कू अपन मन के अनुमान त भिजोयके काव्य में उतारी है। गुरुजी के उद्धव शतक की एक सन्धी कथा है। या रचना ने कई उतार चढ़ाव देखे हैं। यान कई बर गुरुजी के कठ कू आनंद सों आनंदित कीनी है। उद्धव गतक ४० या ५० बरस पहले लिखी गई रचना है। गत चात्तीस बरस में ई रचना कई दफ मोड़ अरु कई दफ लिखी गई है। कई प्रसंग ऐम आये जब गुरुजी के सिस्स तीस बरस पैसे यामे छाये को सकल्प सव बिनक पास से ले गये। भार भडारी गुरुजी ने अपनी जि प्रेम पोषी सिस्सन कू द दीनी। सिस्सन स चू खो गई। ऐस एक कई कई प्रसंग मये जाम गुरुजी के सिस्स बिनक चरन पकड़ के बैठ जाते अरु उद्धव शतक लिखि के कहते। गुरुजी अपनी स्मृति के आधार पे पुन उद्धव शतक लिखि के बैठ जाते। एक दफ सुनव में भागी क गुरुजी के खैला कू खेल में से चोर उठाव क ल गये अरु जि अमोल सपत्ति उन चोरन के दिग पीचके नष्ट है गयी। दो बरस पहले मैंने गुरुजी के नीत हठ कीनी अरु बिनत प्रतिज्ञा करवाई की वे याद करके एक छद रोज पुन उद्धव शतक लिखि में नियम त एक छद बिनते सैनी अरु जा तरिया एक सी बीस दिना में या उद्धव शतक की रचना भई। मूल रूप से या रचना में २०० छन्द है। पर समय के या उतार चढ़ाव में बड़ी कठिनाई त गुरुजी के कोकिल कठ से बड़ी कठिनाई ते १२० छंद ही निकर पाय।

गुरुजी की उद्धव गतक का परम्परित गोपी उद्धव प्रेम प्रसंग ही नाम। यामे बिना भाव प्रवण प्रेम की अनुभूतिमय अभिव्यक्ति व सग आधुनिक जीवन के भाव ओष कोऊ समुचित स्पष्ट कीनी है। गुरुजी के हृदय से निकरी गोकुल के प्रेम की जि कहानी नह के अनुमान त भरी भई है। प्रेम के अनुमान के उच्छाह की अपार आनंद करना के ओज में दूबाय क अद्वितीय भाव की स्रष्टि करे है। प्रेम की करना के हियालय से बिग-वितत नेह की गया की अभ्य प्रावी प्रस्तुत करके कू एवई छंद भोन है—

माधे बिन मुर के अबाध गतिबाध मुख,
राधे राधे रटना म, ऊँची चढ़ि जात है।
नहै कमलावर उच्छाह की परस पाय,
काह म कराह म करारी बड़ि जात है।
गोकुल के प्रेम की, कहानी कहि आवन ना,

ऊरध उसास हूँ, हिये तें बढि जात है ।
स्याम जू की पानी भरी नैन पतरीन माहि,

ऊढ़व शतक म गोपीन की तरियाँ वृष्ण की आश्विन मऊ अगाध असुवा भरे परे है । एक एक पक्ति म गुरुजी के हृदय ने प्रेम की वेदना खूलती चली जाय है—

एहो स्याम सुंदर तिहारे इन नैनन म
पीर भरयौ नीर की प्रवाह बस्यो आवैं बयो ।

ऊढ़व शतक की गोपी केवल रोवें ई नाय । बिनम कमलाकर जी ने आधुनिक युग की स्पष्ट करते भये स्वाभिमान की विराट चेतना केऊ दसन करायें है । जाई कारण वे दुखी हैं । व्यथित हैं । प्रेम की दीवानो हैं । पर वे अपने स्वाभिमान कू प्रेम के सामई गिरबी रखकें गिडगिडाये नाय अपितु छाती ठोककें कठोर जीवन की अभिनंदन करै है । श्रम की पाते बड़ी स्वागत ओर का है सकें—

भाग्य की भरोसी धारि हिम्मत न दे है तोरि ।
नाहि पिघिये है कहू पेट भरि लैहैं हम ।
छकिकें छटीकें दिन दूध जननी को पियो ।
श्रम तो कठोर ते कठोर करि लैहैं हम ।
जोर कितनोई रहै विघन विरोधन की ।
भार रूप छाती पै पहार धरि लैहैं हम ।
काहू पै न जहे पराधीनता न लहैं हम ।
द्वार खड़ी दीनता भलेई वरि लैहैं हम ।

ऊढ़व शतक की गोपिका जब अपने स्वदेस प्रेम की बात करै हैं तो परम्परागत काव्य की जा रचना मे अनायास ई आधुनिक राजनीति के भावबोध की समावेश है जाय है—

प्राप्तन ते अधिक हमारी हमै देस प्यारी ।
नैबहू तो हमको दुलारी देसद्रोह ना ।

अथवा

देस की प्रतिष्ठा की प्रभाव भरी पानी लिये ।
जनम मनुष्यता निभायवे की ठानी है ।

कवित्त ऐसी लगे है जैसे गोपी नारी अपितु भारत के बीर जन देस के भीतर बह
सीमा पार के सन्तुन बू सलवार रहे है—

बीरता के बम की भरीसी धरिमास्त है
मैरन की बैरन की बाट उठ जायगी ।
जग में हमारी दह धमनिरपेक्षता सों
व्यापक अधमन की ठाठ उठ जायगी ।
धारी नैक धीरज धरा पे सुभ कमन सों
निश्चय कुकमन की हाठ उठ जायगी ।
नैक जनजीवन की, आगुरी लगावतई,
ऊछी । पाव सासन की पाट उठ जायगी ।

गुरुजी अपने जीवन में जा तरिया सरस सरल भावनाएँ ते भरे बाई तरिया जि
रचना सरल बर प्रवल बोधगम्य है । उद्वेग बू कृष्ण द्वारा प्रज गमन के भीतर प दिवो
गयी जि सदैव हमारी उपयुक्त मत की समर्थन करे है—

उछो पग धारत ई पहली तिहारो काम,
नद सों जमुदा सों प्रनाम कह दीजियो ।
बहै कमलाकर कृपाकर हमारी हास,
कीरत विसौरी सों तमाम कह दीजियो ।
अधिक रहेगे ना इहा पे मधुरा के माहि
और कुछ दिन की मुकाम कह दीजियो ।
गोकुल की गैल गुआलन मिले जो कह,
उनसों हमारी राम राम कह दीजियो ।

गुरु कमलाकर जी के अथाह काव्य सागर में अवगाहन करवे ते जो थोड़े से
मोती हमें मिले बाकी बहुत जानगी हमने प्रस्तुत करवे की प्रयास कीनी है भाषा अरु
अभिव्यजना गिल्फ की दृष्टि सों गुरुजी की कविता में भाषुयें अरु प्रसाद को भीठी अरु
मनुल समाहार भयो है । जाने पढ़वे ते मन प्रफुल्ल है जाय है । इनकी भाषा में पद्याकर

की मिठास के सग में बीच बीच में राजस्थानी सवदन की ऐसी सगीक प्रयोग भयी है जाते गुरुजी की भाषा सौंदर्य ओरक द्विगुणित है के सहज नेह की छठा अरु व्रज सस्कृति के ठेठ ठाठ ते अपनी एक अलग पहचान की परिचायक बन गयी है ।

नेह पगे गुरुजी ने अपनी कविता की सम्हार के नाय गली हाथ सौ पेंसिल मिली या पेंन मिली बाते पत्रा पै भाव समझे अरु गुरुजी ने लिख डारै ।

इनकू सजा सवार क सवलित करबो बहुत जरूरी है ।

काव्य सौरभ

किरीट

मोद भरे मुसकात गनेस सु मोदक खावति नाचति नाचति ।
भूतन बालक कातिक छै मुख सग सबै दुःख राचति राचति ।
आवत मात भगै सब बाल गजानन ऊपम भाखति-भाखति ।
रोसभरी लखि मात गनेस सजे लइआ तब भाजति भाजति ।

खेलत खेलत थार चढ्यो लइआन भरो झट आवत प्यारे ।
हाथ सौ सुख सौ छक खावत सूँड उठाय सभा धर भारे ।
भूतन बालक रोर मची लख मात उमा सबरे पुचवारे ।
आय उमा बरज्यो गज आनन मात छुडाय भगे हँस प्यारे ।

धारण ध्याना धरै धर शकर पास गजानन खेलत दोडे ।
बाल विनोद लिये अनजान भुजगन की पुतरी हँस सोडे ।
ओष भरे फुकारत स्थाप दिये झट सूँड उठावत मोडे ।
मात उमा बरज्यो सुत कूँ झट रोवत स्थाप दिये सब छोडे ।

ब्रज के सलौने कवि गोपालप्रसाद मुद्गल

ब्रज की रसमय सस्कृति के देदीप्यमान प्रचारक श्री गोपालप्रसाद मुद्गल ब्रजो के ऐसे वेजोड साहित्यकार हैं, जिनके बहुआयमी व्यक्तित्व में गद्य अरु पद्य विद्या की एक सग सफल साधकता के दरसन होय हैं। इन्हें ब्रज कविता के क्षेत्र में अपन मधुर हृदय से निकर भावन की एक ते एक मनोरम माला गूँथी है। म्हाई गद्य के क्षेत्र में एक ते एक हृदय स्पर्शी रचना प्रस्तुत करिके ब्रजवासी के रीते कोष में अपनी प्रतिभा के कानजयी झंझा गाडे हैं। ब्रजभूमि की सस्कारित परंपरागत मिठास मुद्गल जी की गद्य पद्य की रचनान में समान भाव से मिल है। परिवर्ण की समस्यान को मुद्गल जी की पनी दृष्टि भीतर तक पहुँच के बाके एक-एक पद्यान को खाल के रस दे है। इन्हें ब्रजभासा गद्य में परिवेस की घटनाय वाचन अरु समस्यान को बखूबी ते उभार के मृत प्राय पडे ब्रजभाषा गद्य में नय साँच के नय आयासन को नई गमक के सग नये मुहबरेन की सटीक अभिव्यक्ति प्रदान करी है। मसाल में जड जमाये अतस तक कैली भयी ऐसी समस्यान की तरफ इन्हें अपन ब्रज गद्य में उभारो है जाकी तरफ साधारणतय ध्यान भीत कम जाय है। मानवीय रिस्तेन के हामी श्री मुद्गल जीन कवि के रूप में आई अर्द्ध तानु कोई प्रबन्ध रचना को अपनी प्रतिभा के तरास के साधक नाय कीनी है। कवि के रूप में 'धन्वावली सीता' जैसी परम्परित सन्धी रचनान के अलावा इन्हें जीवन की विभिन्न समस्यान विनयक वाच्य रचनान के अतिरिक्त श्रुतु वचन, कृष्ण राधा अरु ब्रज के विभिन्न पवन से सबधित रचनान को अपनी कविता की ज्यादा साधार बनायी है।

मुद्गल जी के अब तक रचे गय निगरे साहित्य को सामई रतिके विचार करे तो ज्ञात होय है कि इन्हें ब्रज गद्य अरु पद्य में समान भाव से एक मरस रचनान की सृजन कीनी है। सन् 1947 में आजादी की पत्ती फिरन के सग इन्हें तिरगा सडा कविता की रचना के सग अपनी काव्य यात्रा सुद करी है। अब तक रची भयी रचनान में समस्या पूर्तिन की विमान काव्य भण्डार है, सग में परम्परित ब्रज रस अस्त्तावित

काव्य की कमीज़ नायें । इनके सग सग आज के जन जीवन की पीड़ान की व्यथा भरी कथान की पत पर पत भावन की बीघीऊ इनके काव्य में भरी पड़ी हैं । इन कवितान में ढेर मारी कविता ऐसीऊ हैं जिनको पाठ मथुरा दिल्ली अरु जयपुर आवासवानी पे करयो गयो है । समाज में महंगाई की मार ने इनके कवि कू भीतई उठे लित कीनी है । मुरसा के मोह की तरियाँ बढ़नी महंगाई के प्रति मुदगल जी के हृदय की पीड़ा की एक अलक हमारे उपयुक्त सक के समथन कू पर्याप्त है ।

आई है कमर तोर, भारी महंगाई आई पेट भरवे के ताँई रोटी है न दार है ।
हाड मास पेलत हैं, रोज हाय हाय करें हाय पाम फर्कें तौऊ, पावत न पाव है ।
कैसेँ राम दूध दही छोका भाव आसमान, हर एक चीज पे चडाव ना उत्तार है ।
मुरसा की भीति महंगाई मुख फार रही, हम पे न सही जात याकी पनी मार है ।

आज के विज्ञान की भारी प्रगति ने एक एक व्यक्ति कू अनेक नजीक लाय दियो है के परस्पर के औघरे भेद उपभेदन के बादर अनायासई छूट जायी करे हैं पर हमारे देस की रीत रिवाज ठीक याकै विपरीत चल रई हैं । विज्ञान के प्रभाव के कारन जहा पुरान दकियानूसी विचार स्वत ई समाप्त है जान चइये जावे कारन हमारे समाज की प्रगति तिराहित है तो जा रही है । जाई तरियाँ की हमारे समाज में बढ़ती भई दहेज की समस्या है । विज्ञान अरु मानव पान क विकास के कारन व्यक्ति-व्यक्ति में मोल-तोत की दहेज की गंहित व्यवस्था समाप्त है जानी चइये, पर समाप्त हुवे की जर्ग दहेज की प्रवति हमारे समाज में औरऊ प्रगति की तरफ बढ़ रही है समाज की या चुराई की तरफ मुद्गलजीर्ग अपन काव्य हृदय में बड़ी गहराई से प्रतीत कीनी है । देखी याई तरियाँ की एक कवित्त—

घारों ओर तेरी ही, दहेज बः सोर भयो, जित देखी तित भूत तेरी ही सवार है ।
फ्रीज इसकूटर सगाई मोहि मोमत है, बीबी सोंह पैले टी बी, पावे की बुलार है ।
जापे नही खाइवे की ओढिबे बिछायवे कू देवे कू दहेज नाहि, ताकी माटी खार है ।
ओरे ओ दहेज हम, कबली सतानेगो तू हम पे सही ना जाय तेरी पैनी मार है ।

समाज की कुरीतीन कू मिटायव के ताँई जैसी आग कवि के हृदय में है तसी ही राजनीति के पचड़े में अपनी अगा सेकवे वारे राजनीतिज्ञन कू सही राह पे लाइवे के ताँई कवि की मार देखिबे जोग है—

"हमने जिताये फिर गादी पे बिठाय दिए,
सेवा कर जाई गे तो सोस पे चडाइये ।
अपन ही अपने जु, पेटन मल्हाते रहे,

जनता की नजरन, बेगि गिर जाइ मे ।
जोड तोड मई कहु, तमै कू बिताते रहे,
एक दूसरे की टाँग, खीच जो सिहाइ मे ।
फूलदान जे सजाए, कुड्डेदान डारे जाय,
पाँच साल बाद फिर लौटिक् न आइ मे ।”

कवि रूप मे कवित्त सर्वथा जितेक सटीक बन पाए है बिनते ऊ जयादा बिनके
गीत असरदार अरु जानदार हैं—

अब तो सुधि लै लै सावरिया
भोर गई ठरि गई दुपरी, सँझा सग परी भावरिया ।
भोर सुहानी की मत पूछी, कब आई जानै कब भीती ।
भोरेपन के रस की गगरी, पती नही जानै कब रीती ।
दुरव गई छुपचाप सपनसी बातन म अनमोल उमरिया ।

अब तो सुधि लै ल सावरिया ।
भोर गई दुपरिया आई चौक पुरे अरु धुरे नगारे ।
पर पल भर हू ठहर न पाई, मनुहारें करते हम हारे ।
आल लगी तो दुपहरिया नै, लगा सई सट सँझन किबरिया ॥
अब तो सुधि ल लै सावरिया ॥

सझा की अधियारी आई, हम ती रह गए आल पसारे ।
जो ज्यों सास सिमटती आई, लगे दीखवे हमझूँ तारे ।
अब तो साँस पुरानी पर गई, नाहि बजे तेरी बासुरिया ॥
अब तो सुधि लै ल सावरिया ।

निवेद के या गीत म जीवन दसन भरी परी है । हर एक बुढापे म यही कहती
सुनाई पर । जीवन के तीना पन भोर दुपरी अरु सझा के प्रतीकन के माध्यम सौ सटीक
उतारे हैं । प्रतीकन क माध्यम सौ नवगीत की बलू पत्तीन म स्वतन्त्र भारत की चित्र
देसो—

“जब सौ सत रगनि बिरनन सौ बन महकयो
जब सौ इन बाहन जजियारी आयो है ।
तब सौ अपने पाँपन न पैग भरे हैं
हमन घोरे दिन म जीवन पायो है ।

श्री मुद्गल जीने विविध छन्द ये समै-समै पैं अपनी लेखनी सौं मिसरी ते मीठी रसधार बहाय कें सोन के सरस बवि हैवे की उपहार पायो है । इनके गीत लोगन के होठन पैं नाचैं ।

अब श्री मुद्गल जी के गद्य सुजन सौं हूँ परिचित करा देवो उचित समझू । लोग बवि के रूप मेई इनकू जानें पर गद्य के छेत्र म कहानी, एकाकी, रेखाचित्र, रिपोर्टिज सोस्मरण, डायरी, उप-यास, साहित्यिक वार्ता आदि पैं इनको लेखनी नै मुगानुरूप नए बोध कराए हैं । रेडियो रूपकन नैं तो धूम मचा रखी है । 'राम राम सबन कू' में एक व्यंग्य है जो सोल दे दिष्टाचार को । गाँव की चौपार पैं जहाँ चार बँटे होय राम राम एक बू नांय होय राम राम सबन कू होय । 'पूछता मूरख ना कहावै' में अपनी सेखी बखानवे वारे चारों खाने चित्त आवै, 'यात्रू' हँसी-हँसी म समझा दियो है । याही तरियाँ "नियानवें के फेर" में धन सग्रह करवे वारे मानव की कुगत दरसाई है । "कल की कल देखी जायगी" रूपक में सतोपी सदा सुखी बतायों है । 'मैस की खाना' में निरक्षरता की खाली खँची है । "मन चगा तो खटीनी में गगा" में बाहरी आडम्बर पैं चोट करी है । "दजन ऊपर दो" में परिवार कल्याण की बात कही है । "हरया म्होर" मनोविनोद की अच्छी अरु स्वस्थ सरूप प्रस्तुत करे है । "पौमा पच" में आज के पचन कू निस्पक्ष हैवे की कही है । याही तरिया बिनके दरजनन रेडियो रूपक युग के अनुरूप दिसा देवे वारे है ।

श्री मुद्गल जी के रेखा चित्रन में हास्य व्यंग्य प्रधान अरु साहित्यिक चाचा युधिष्ठिर, गिराँज मिथ, कम्बू गुरु अरु भँवर स्वरूप जी भँवर है । "काजरवारी काका" पिसन वारे मु सीजी "किसोरी पक्षित" पन्ना चौकीदार 'मुक-दी' ऐसे रेखाचित्र हैं जो समाज के काई न काई बग को प्रतिनिधित्व करे । गीता 'बस-तो' 'पाट्टवाई' स्त्री पात्रन के भीरु अधिक मजे भये रेखाचित्र है जिनमे समाज में ऊपेक्षित पीड़ित नारी बग की चित्राकन कियी है । 'पिनुआ अरु बम्बल' बाल स्वभाव की उद्घाटन करवे वारे है । 'गिनआ' में सौतेली माँ की दुरव्यवहार उघों की त्यो उतार दियो है ।

हास्य व्यंग्य की वार्तान कू आप सन 1966 सौं ब्रज माधुरी दिल्ली मधुरा अरु जयपुर आकासवाणीन ते प्रसारित करते रहे । 'राम बचावे संगीतज्ञन ते' 'अनचाहे को सग' 'बुरे फँसे फसन के चक्कर म' राम बचावे ऐसी बरात ते' 'सादरी' 'ब्रजभाषा म हास्य की सरूप' तस्करो की भाल' 'वाम सँ चाकी स सँ होस' 'बरसाने की लठामार होरी' आदि आपकी समसामयिक रचना हैं ।

श्री मुद्गल जी की कहानीन में साम्प्रदायिक सौहार्द की पुष्टि करवे वारी कहानी 'टटा टूटो रार मिटी' बहुचर्चित रही है । 'फूटी चूड़ी अमर सुहाग' में बहुविवाह करवे

वारे युवक की धूर दखना करी गई है। 'और रथ लौट गयो' ऐतिहासिक कहानी है। आजकल पाऊँचा गांव के राजा विसन के अयाय अह अत्याचारन कौ भडाफोड करवे वारी कहानी है।

'राम भरोस जो रहै पवत पै हरियाय' रिपोर्ताज म अपनी घरवारी के अह अपन छाटा के माव्यम सौ या बात कूँ स्वाफ कियो है कै जितेव चि ता हम अपने द्यारी छारान की करे बितेकई हम बिजै सक्तिहीन बनावै। 'एक दिन की डायरी' अह 'डायरी के पन्नान म, दैनिक जीवन माहि घटवे बारे सत्य कौ उद्घाटन कियो है। समीक्षा करवे म श्री मुद्गल जी पीछे नाय रहे 'ब्रज बसुधरा कौ काव्य सौष्टव' मध समीक्षा है ई पोषी श्री समन खाल अग्रवाल की लिखी भई काव्य कृति है याकौ नीर क्षीर विवचन कियो गयो है। याही तरिया कवि चम्पालाल मजुल के 'छिन-मे छिन जात' काव्य संग्रह कौ विवचन अवई (सन् 91) कियो है।

राज ब्रजभाषा अकादमी नें मोनोग्राफ निकासवे की जो योजना बताई है याम अब तब जितेव मोनोग्राफ निकसे हैं बिनमे मुद्गलजी कौ बिसेस सहयोग रहयो है।

अखीर म श्री मुद्गल जी क सिंगे साहित्य की आकलन कियो जात तो ई कही जा सकै कै ब्रजभाषा क गद्य साहित्य की अनकन विधान पै कलम चलाय कै नई पीढी कूँ माग प्रसस्त कियो है। आपन गद्य साहित्य म विपुल सजन करके ई सिद्ध कर दियो है कै आजकल ब्रजभाषा जीविन है अह याम बू सामग्य है जो रस की छार बहा सकै नीति की पथ सुझा मने, समाज कूँ एक बना सके अह दस कूँ जोड सके। अत म दो सन्द म मुद्गल जी म अभिव्यजना मिल्प पैऊ कहनी चाहू हू। ईअ अपनी भाषा म ठेठ ब्रज के मुहावरे को प्रयोग कीनी है। भाषा मे सूर की सी रमक, तुलसी की सी गमक, बिहारी की सी चमक अह भरतपुर अवर क प्रसिद्ध कवि सोमनाथ की सी रमक क संग-संग ब्रजवासीन व जीवन की सिगरी ठुमक बिसेस रूप से दसनीम है।

ब्रज के मधुर चितरे श्री मोहनलाल मधुकर

श्री मोहनलाल मधुकर के बहुपामी व्यक्तित्व पर लिखनी भीतई कठिन है। विनम्रता अरु सादगी के बिद्धता के संग देखनी होय तो जाकी मोहनलाल मधुकर के व्यक्तित्व ते उपादा अय कोई दूसरा व्यक्ति नाय है सकै। मोटी खादी की धोती ऐसीई कुरता अरु जाडेन मे एक जवाहर जाकेट या सादगी के रूप के संग हमेसा परदा के पीछे रहके साहित्यकारन के आगे बढायवे के नाम के मोहन मधुकर कह सकै है। भैया मधुकर जो सघस की ऐसी जीती जागती मिसाल है जिन अरु के निमग देहाती गाम म जनम लेके विश्वविद्यालय की नियमित पढाई की ऊंची से ऊंची डिगरी प्राप्त कीनी है। अरु हिंदी साहित्य समिति भरतपुर के मंच ते एक ते एक नई साहित्य प्रतिभा के हीरा की बनी की तरिया घिस घिस के या यो कहै के साहित्यकारन के सोने के अपनी प्रेरना की आव पै तपायके कुंदन बनायो है। साहित्य लेखन मंच पर ते कविता गायकी अरु इकठोरे भीतेरे मनीसीन के बीच अपने व्यक्त बिचारन के साने बाने बुनवे नई सभावना स्थापित करनी कठिन नाय जितेक कठिन नए नए साहित्यकारन की गढ़नी है। भैया मोहन लाल मधुकर ने अपने पचपन बरस के जीवन मे ते लगभग तीस बरस प्रजापति की तरिया साहित्य निर्माण मे गुजारी है। जा तरिया प्रजापति अपने चाव पर साधारन मट्टी के हाथन की कला ते नये नय सुंदर रूपन मे परिवर्तित कर दै है, बाई तरिया मोहन भैया ने अपने साहित्यिक व्यक्तित्व ते एक ते एक छिपी प्रतिभान के उजागर करवे के अपने जीवन म उल्लेखनीय काम कीनी है। इनने नै प्रजापति व्यक्ति ते हटक जब मोहन भैया के साहित्य कीऊ जब बिचार करै है तो स्पष्ट परिलक्षित होय है के इन ऐसी कोई बिस नाय छोडो उपाय अपनी कमल नाय बलाई होय। सम्पादन कला क मोहन लाल जो जितेक बसल बारीगर है, बितेक या कला के प्रतिभा के धनी व्यक्ति दूढ़वी भीतई कठिन है। भरतपुर हिंदी साहित्य समिति के द्वि-चार पाच अवन के रूप मे निकरवे बारी समिति बाणी म इनके सम्पादन कला बीसल की दमन कियो जा सक है। लेखन के काट छाट के कोयला ते हीरा बनायवे की कला के जितेक ये महारथी अरु पारखी है बितेक दूसरी मिलनी असभव नाय तो कठिन जरूर है। ब्रजभाषा के गद्य मे इनकी गति देखवे सायब है। इन ब्रज की गद्यक लिखी है जैसे कविता के सोन के

डोरा म एक कै पीछे एक मुडौल भावन के मोती पीरी दीये हाय । सन्द योजना अरु वाक्यन म ब्रज कला सस्कृति की मधुरता अरु रसिकता ऐसे कोमल रूप ते इनक हृदय ते मुखरित होय है कै जाकि जितक प्रसंगा करी जाय वितेक थोरी है राजस्थान की ब्रज सस्कृति कू ब्रज की भाषा म प्रकट करनो कैसो रोचक होय है याय देखनो है तो मोहन भैया के ब्रज गद्य ते दूसरो स्थान मिलबो कठिन नाय तो दुप्पर अवस्य है ।

तरह अगस्त 1936 कू भरतपुर के पास स्थित छोटे से ग्राम धीरमुई म एक ऐसे बालक न जनम लियौ है जाने विपरीत परिस्थितीन म रहते भय ब्रज साहित्य कला अरु सस्कृति के प्रचार प्रसार मे अपनी कलम कीई सहारी नाय तीनो अपितु अपने विनम्र सुभाव ते भीतरे नवाकुर साहित्यकारन कू आरोपित करके ऐसे फलदार वक्ष के रूप म परणित कीनो है जाकि मधुर साहित्यिक छंया म भीतरे दुखी पीडित लोगन न आश्रय ग्रहण कर अपनी तपन बुझाई है । कलम की ताकत ते साहित्य की रचना म जुटे भय भीतरे साधय सील साहित्यकार मिल जायिप पर ऐसे सागन की कमी हुमेसा रही है जा कलम के छनी के साग साग दूसरे साहित्यकार कू अपनी जग ते हटक स्थान देवे म गौरव की अनुभव करी करे है । भैया मोहन साल मधुरकर की गत चार दसकन की व्यक्तित्व जे प्रमाणित करवे कू पर्याप्त है कै बिना सदैव दूसरे कू आगे बढ़ावे म आनन्द अरु गौरव की अनुभव कीनो है । चाए साहित्य गोष्ठी होय, चाए हिंदी साहित्य समिति की मंच होय, अरु चाए अपने स्कूल की कक्षा या प्रागन मे काऊ सरिया की प्रतियोगिता है रही होय । हमारे मोहन भैया कू नैक मामूम परनी चइये कै अमुक बालक या व्यक्ति म अमुक सरिया की प्रतिभा छिपी पड़ी है, वे बाके पीछे ऐसे पढ़ जाइये जैसे कीई ब्रज को धीरोदात्त रसिक रसिया नई नवेली मुग्धा नायिका की चिरोरी कर रखी होय ।

मैं दूसरे की तो का उदाहरन दऊँ । मैं या सन्दभ म आप बीती सुनायवे की हूँ तो रलूई हूँ । स्मृत 1963-64 की बात है । बिन दिनान म पाक्षिक रूप ते श्री हिंदी साहित्य समिति भरतपुर म साहित्यक गोष्ठी होमनी हो । या गोष्ठी म साहित्यक विस पैले दीनी जातो अरु विद्वान लोग नियत समे पे इकठोरे हैक नियत विस पे अपने विचार प्रकट करी करते । श्री लाला जो एक बौने म बैठक बडे मुदर सञ्चन म मनी चीन के मुस ते निकरे सञ्चन कू लिखत जाते है अरु य सिगरी सामग्री हिंदी साहित्य समिति क प्रमासिक पत्रिका समिति बाणी म प्रकाशित होती ही मैं बिन दिनान मे आ रामानन्द तिवारी जो के पास रहतो हो । मोहन भैया डा तिवारी जो के सिस्य है अरु वे नियमित रूप गों बिनवे पास आयो करत है । एक दिन तिवारी जो ते मोहन भैया की चर्चा है रही । पागई मैं बटो । बिनकी चर्चा त ई मामूम पडो की पत्रह दिन पाछ हिंदी साहित्य समिति म 'भीरा की मति भावना' मौसक प साहित्यिक गोष्ठी है

रही है। मैं बालकचित्त परिहास में मोहन भैया ते ई पूछ लीनी 'का हमऊ बाम बोल सके।' मोहन भैया भोतई प्रसन्न भये अरु विघ्न' कही, जरूर बोला।' बात आई गई है गई। तीन दिना पाछे श्री हिन्दी साहित्य समिति की चपरासी मेरे घर पीछी अरु एक चिट्ठी दे आयी बाम आगामी हिंदी साहित्य समिति की विचार गोष्ठी में भाग लेवे की निवेदन हो अरु नीचे समिति की धाणी के सम्पादक के रूप में मोहन भैया के हस्ताक्षर हैं। मैंने बा चिट्ठी पे काई खास ध्यान नाय दियो। एक दो दिना पाछे मैं साईकिल ते साग सभ्गी लेके जा रह्यो अरु सामई मोहन भैया मिल गये। बिने छूते ई कही 'कअमुक तारीख कू' मीरा की भक्ति भावना पे साहित्यिक गोष्ठी है रही है। बामें 'तुमकू जरूर बोलनी है।' मैं मोहन भैया के सन्दन कू सुनके घबराय गयो मैंने कही—'मोहन भैया—मैं ना जानू मीरा की भक्ति भावना कू' गोष्ठी में बोलवे की मेरी बस की नाय। मैं नई आऊंगी।' मोहन भैया ने मोकू भौत समझायो। दूसरे दिना देखी तो मोहन भैया घर में बैठे हे अरु फिर वई बात के तुम्हें गोष्ठी में भाग लेनी ई है। हा तिवारी जी के घर गयी तो म्हा मोहन भैया बैठे अरु बेर बेर ऐकई बात के तुम्हें गोष्ठी में भाग लेनी है। मेरी तो जान आफन में आ गई। जित जाऊँ तित ई मोहन भैया। बचवे की कोई सहारी माओ। मैं ई बात हा रामानंद तिवारी ते कही के गुरुदेव गोष्ठी में बोलवे की मरी बमकीनाय' हा तिवारी मुस्कराये अरु कही 'जब तू मोहन लाल जी कह रहे हैं तो तुम्हें जरूर भाग लेनी चइये।' हारके कालेज के पुस्तकालय ते मीरा की भक्ति भावना की किताब लायी कई दिना पढी। गोल मोल की बगीची पे सजा कू नित्य गयी अरु एकात में ठाढ़े हे के बोलवे की अभ्यास कीनी। नियत तारीख कू डरपतो डरपती गोष्ठी में बैठे बिद्वान के पीछे जायके चुपचाप बैठ गयी। गोष्ठी के सचालक हे स्वयं मोहन भैया। पेलो नम्बर बोलवे की हा हरदत्त सुधागु की। दूसरे नंबर पे कालेज के प्रोफेसर बनबारीलाल जी बोले। तीसरे नम्बर पे मोहन भैया ने मेरी नाम पुकारी। मोहन भैया के वा दिना के एक-एक सब्द मोय आज तानू याद है। वे बोले—अब आपके सामई मीरा की भक्ति भावना पे विचार प्रकट करवे कू महारानी श्री जया कालेज की एक होतहार छात्र आ रह्यो है। साहित्य के प्रति इनकी अनुराग हा रामानंद तिवारी जी के सिस्यत्व में धीरे-धीरे परलवित है रह्यो है। भविष्य में हमकू इनते भौत आसा है।' मोहन भैया की एक-एक सब्द ऐसी लग रह्यो जैसे मेरे मानम कपाट के एक एक दरवज्जे कू खोल रह्यो होय मैं ठाढ़ा हे के बोलवे लगी। मोय पती नाय चली। दस मिनट तक बोलतो रह्यो ? सब दत्त चित्त है के सुन रहे। आज मैं हिंदी साहित्य समिति की या घटना कू याद करे हू तो मेरे सरीर में बिजुरी सी कौध जाय चौक मोहन भैया ने पती नई सन्दन की वा सगी का ऐसी जादू कर दीनी हो जाते मैं बोलवे लग गयी। मेरे मन की तयाकथित साहित्य अनुरागी रूप मोहन भैया ने अपनी चुम्बकीय शक्ति से एक सग प्रकट कर दीनी फिर आगे गोष्ठी हुई। मैं सिगरी गोष्ठी में बढ चढके भाग लेती रह्यो। साहित्यिक गोष्ठी की सिगरी सामग्री दो चार अक के रूप में निकरवे वाली थी हिंदी साहित्य समिति की मुख

पत्रिका समिति वाणी' में प्रकाशित भयी है।

[आखर आखर अनुराग]

या सत्य कूँ लिखवे में मोय नैक सकोच नाय क मोहन भया एम पारस पत्थर की तरियाँ हे जा हर लोहे कूँ सोनो बनावे में विस्वास कर हँ। मोहन भैया की गुरु भक्ति की का कहनी। अपने गुरु डा रामानन्द तिवारी के प्रति बिनकी अनन्य भक्ति एक ऐसी उदाहरण है जो आज क भीतिवतावादी ससार में अत्यधिक दुर्लभ हैं। डा रामानन्द तिवारी जी के भीतरे सिस्य रहे हैं। पर डा तिवारी जी कूँ माहन भया क प्रति जितेक विस्वास हो बितेक अय सिस्यन के प्रति नाय रह्यो। कई दफँ डा तिवारी जी के भीतरी ए एस अरु आई पी एस के सदस्य में जब बिनकूँ बाहर जाय की आवश्यकता प्रतीत भई तो डा तिवारी जी के संग में भैया मोहन साल मधुखर जी कूँ भजी।

माहन भैया में एक ऐसी सहज सनेह है जाय जुटाव है हृत्तन नाय। बिनकूँ कई दफँ मत भेद ऊ भय पर वि नै अपने विराधीन के प्रति सालीनता नाय छाडी। श्री हिंदी साहित्य समिति के मध्य में बिनके लोगन में मतभेद भय। पर मोय एक ऊ दिना या एकऊ क्षण याद नाय जब बिन मतभेद के कारण रात दिना उठते बठते अपने सगी साथिन की बुराई करी होय। मोहन भैया भरतपुर की ऐसी प्रतिभा हैं जिन गत 30 बरस त या सहर की हर साहित्यिक गति विधीन में प्रत्यक्ष या पराक्ष रूप में निर्विकार भाव में सहयोग दीनी है। गत तीस बरस में भरतपुर की स्थात ई कोई रचनात्मक गति विधी होय जाम मोहन भया की काऊ न काऊ रूप में उपस्थिति नई रही होय।

अपने सो छोटे की सम्मान बाकी कठिनाई कूँ दूर करवी मोहन भैया की होबी रही है। मैं महाकवि सोमनाथ के पी एच डी कर रह्यो हो। सोमनाथ क ग्रन्थन की पाडुलिपि हिंदी साहित्य समिति में ही। बिन दिना हिंदी साहित्य समिति के मोहन भया साहित्यिक मंत्री हैं मरे पास इतक समै ना हो के हिंदी साहित्य समिति में बैठके बिन पाडुलिपिन नें पढ़ सकतो। मैं अपनी व्यथा मोहन भैया त बताई चौक हिंदी साहित्य समिति त दुर्लभ पाडुलिपिन कूँ घर ले जावे की मनाई ही। मोहन भैया ने बाकी सहज इलाज कर दीनी। बिन अपने एक छात्र मोहन मोडे दामन के चार घण्टा रोज कूँ हिंदी साहित्य समिति में बैठार दीनी जाने एक महिना तानूँ नियमित सोमनाथ की पाडुलिपिन की नवल कीनी। एव महिना पाछे फुल स्केप के 1500 पन्ना भैया मधुखर जी जयपुर आयक दँ गये। या सत्य कूँ लिखवे में मोय नैक सकोच नाय क अगर मोहन भैया महाकवि सोमनाथ की पाडुलिपिन ने उतरवाय के नाय भेजते तो स्थात मैं पी एच डी नाय कर पातो। मरी ई का मोहन भैया ने तो हर साहित्यिक अनुष्ठान में आगे आयक

सदैव सहयोग दोनों है। 1970 के आसपास जब नागरी प्रचारिणी सभा सौ सुधाकर पांडे सोमनाथ ग्रन्थावली को प्रकाशन कर रहे था तभी प्रचारणी सभा ने कई कर्मचारीन नें मोहन भैया के प्रयासन ते सोमनाथ की योगिन की नकल करवाई ही। मोय या विमे मे पती नाँय के सुधाकर पांडे ने मोहन भैया के या प्रयास की सामनाथ ग्रन्थावली म स्वीकारोक्ति करी या नाय। ई सत्य है के मोहन भैया आगे बढ़के हिंदी साहित्य समिति में नकल करवायवे की पहल नाई करते तो नागरी प्रचारणी सभा त सोमनाथ ग्रन्थावली प्रकाशित नई होती।

मोहन भैया के विसं मे थी हिंदी साहित्य समिति की पत्रिका समिति बाणी' की उल्लेख बिन्ने बिना बिनके साहित्यिक वृत्तित्व की बात अधूरी रहेगी। 62-63 मे मोहन भैया के प्रयासन ते हिंदी साहित्य समिति ने 'समिति बाणी' नाम ते समिति की श्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका निवासी। स्यात पत्रिका के 4-5 अंक ई निकरे पर ये सिंगर अंक अपन आप मे बेजोड़ है। मोय जि लिखवे मे नकळ सकोच नाय कि या सभै निकरवे वारी श्री हिंदी साहित्य समिति की पत्रिका समिति बाणी अब तानू निकरवे वारी सिंगरे भारत की बहुत पत्रिकान मते एक है जामे प्रूफ की एकळ गलती नाय। मोहन भैया ने घर-घर जायके समिति बाणी के अंकन कूँ सामग्री जुटाई ही। मोहन भैया नें समिति बाणी के सजायवे सँवारवे, एक ते एक सुंदर महत्त्वपूर्ण आलेख जुटायवे म जो समर्पित भाव ते प्रयास कीनी हो बू भरतपुर की साहित्यिक प्रगति की ऐसी मूल्यवान साहित्यिक धरोहर है जो अब तानू मोनमाव ते या सभै व लोगन के कठन मे अव्यक्त भाव ते दबी पड़ी है। डा रामानन्द तिवारी श्री गुरुदत्त सोलंकी के पास वे या पत्रिका के साहित्यिक रूप की घण्टान तानू खर्चा करत है। एक एक लेख की पाण्डुलिपि म चार बार घण्टान तानू विचार विमर्श होमतो। लेख की आत्मा जीवित रखते भये हीरा की तरिया बाकूँ नये नये विचारन की सान पै तरासो जातो। तब जायके महोनाथ के परिस्त्रम के पाछे समिति बाणी क एक अंक की सामग्री तैयार होती। स्यात नगनल प्रेस भरतपुर मे समिति बाणी छपती ही। ट्रेडिल मशीन पै एक सग चार पन्ना छपते। ट्रेडिल मशीन जब छपाई करे है तो एक दो अक्षर टूटवो सामान्य प्रत्रिया होय है। मोहन भैया अरु नगनल प्रेस के प्रब धक हर पचास पन्ना पै मशीन एकबायवे के एक एक अक्षर पढ़ते। अगर नैकळ मात्रा आदि टूटती तो तत्काल बाय बदलो जातो। प्रूफ पढ़वे ते एक मशीन की छपाई देखवे के पाछे मोहन भैया के मन म एकई बात हो की समिति बाणी की सामग्री कूँ जा तपस्या ते सजायो सवारो गयी है बाई साधना ते बाकी छपाई की जानी चइये, जामे एकळ गलती नई होय। साँच तो जि है के मोहन भैया के मन म एकई धुन ही के श्री हिंदी साहित्य समिति की मुख पत्रिका 'समिति बाणी' देस की हिंदी की सवश्रेष्ठ साहित्यिक पत्रिका होय। मोहन भैया की धुन नें सिद्ध कर दीनी के समिति बाणी तीन अंकन के प्रकासन में ई देस की श्रेष्ठ हिंदी की साहित्यिक पत्रिका बन गई।

पर दुर्भाग्यवश कहौ जायगा कि श्री हिन्दी साहित्य समिति के भाग में देश की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका प्रकाशित करने को सत्य भाग में नहीं लिखी हो। श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के तत्कालीन कार्यकारिणी के सदस्य मोहन भैया के धनुषम अनमोल परिश्रम और एक साहित्यिक पत्रिका की मूल्य नहीं समझ पाये। अरु अर्थ के नाम पर पत्रिका के प्रकाशन पर प्रश्न लगाय दिया गया। पत्रिका बंद हो गई। अगर ई पत्रिका बग़ाबर निरन्तर रूठी और समिति कार्यकारिणी के सदस्य अर्थ के भावी भय से या पत्रिका को बंद नहीं करते तो निश्चित ही भरतपुर की धरती को एक नयी महावीर प्रगट द्वितीय प्रदान करने की सौभाग्य मिलती एवं हिन्दी साहित्य के विकास में भरतपुर की नाम सोन के अक्षर में लिखी जाती।

मोहन भैया की एक रूप और रहस्य है पत्रकार के रूप में एक पत्रकार के रूप में मोहन भैया ने जो मानव स्थापित कीने है बाकी प्रसन्न करके बाकि वैभव को घटाने होयगी। बात 1977 की है। मैं जिन दिनों में मास्टर आदित्येन्द्र जी के नगर विधान सभा में चुनाव प्रचार में काम कर रही हूँ। चुनाव के दिना मने अपने कार्यक्षेत्र जित करने का काम में राखी हो जहाँ हर चुनाव में गोली चलती एक सामान्य बात ही। चुनाव चल रही हूँ। बहुत धारी यदा कदा इत बित्त को निरस रहे है। मैं अपने बीस पच्चीस कार्यकर्ता के संग बड़ी तरकीब से काम कर रही हूँ। इतक में देलो कि एक जीप आय क रुकी और बागे मोहन भैया निकले। मैंने मोहन भैया से पूछी 'मोहन भैया आप या इल्लार में चो आय।' हाँ तो जान की खतरा है।' मोहन भैया बोले 'हम यहाँ बारन तो ह्या आये है।' मैं मोहन भैया के पत्रकार रूप की हिम्मत देखक चकित रह गयी। दूसरे दिना मोहन भैया न सही रिपोर्टिंग अखबार में दीनी। मोहन भैया के स्नही जान है कि माटन भैया ने जन कल्याण के समाचार भेजने में जीवन में कितने जोशिम उठाये है। पुलिस की अनमन्यता के कई समाचार जब बिते निर्भीक हैं कि भेजे तो कई पुलिसवालों बिनते खफा है गये। बाकी सामग्यजो मोहन भैया को भुगतनी पर। परा व पुन नहीं। जन मंगल के समाचार देब में मोहन भैया न बाऊ की परवा नाय करी और नहीं जिन पत्रिकान की सहारी लेवे अधिकारीन को दबायक अपनी कबी उत्तु मीघी यीनी।

विनम्रता इन महान्य में द्रव है कि कई दफ इनने सगो साथी साथी धुनते रह जाये हैं। मोम ऐम एक नहीं भीतर ओमर याद है जब इस विनम्रतावस प्रचार प्रसार या सायजनिन प्रमगन को हठ पूरक अपन पाम नहीं आन दिया। कई दफे एगी भयी है जब अपार भीत बाऊ समागह में घटी है और मोहन भैया की नाम बोलने को पुकारो गयो और वे महामय होले से सयोजक से अनुमति विनय कर रख है—'नमि साय मैं या विगय पे का कहूँ'। दार यहाँ सहज सरल व्योहार पर भरतपुर के भूतपूष नरस

ब्रजेन्द्रसिंह इतने रोज़ के सालन तानूँ बिनकी जि नियम रछी के चौबीस घण्टा में एक दर्फ़ वे इनते एक सभे या टेलीफोन पे बात नई कर लेते सब तानूँ चैन नई परती । रात के बारह बजे महाराज कूँ याद आमती के आज मोहन भैया ते बात नाय भई । बस फोन बज उठती अरु महाराज घण्टान तानूँ इनते बात करके बतरस की मुख लेते । अनेक दर्फ़ ये जब नई मिलते तो लम्बे लम्बे फोनोग्राम महाराज के सकारे-स्थाम दुपेरी बाँकिया एक के पाछे एक लैके दौरते आमते इनके घर पे ।

सादा जीवन उच्च बिचार बेहद बिनम्रता, स्वाभिमान की प्रबल आस्था अरु छोटे कूँ आगे बढायके आनन्द की अनुभव करबो कछु ऐसी कौसिय बिसेसता हे जाके सम्मेलन की नाम हे श्री मोहनलाल मधुकर । मोहन भैया की मधुकर नामके समिति बाणी न दीनी है । समिति बाणी के पहले अक में नाम छपी हो मोहन लाल घोरमुई । डा सिवारी ते सुस्ताव दीनी के घोरमुई की जग मधुकर हानो चइये । समिति के दूसरे अक में मोहलाल जी की नाम मधुकर छपी । बाके बाद मोहन जी की नाम ऐसी चमकयी स्थात भरतपुर में कोई ऐसी नाय जो मधुकर जी कूँ नाय जानती होय । साँचई इन गुनन की भारी मकरद इलठौरी करके अपनी मधुकर नाम सापक करो है ।

काव्य सौरभ

श्रीकृष्ण—

प्रजराज ललाम सुधारस की ध्वि ज्यों ममता महकै उजियारी ।
जननी करना रस सी सरस मधुरी सत चदन सी कलिकारी ।
भानु बच्यो ससि सोम मनी सरसाय उठी धरनी जग यारी ।
रतनाकर सौं बरनाकर है धनस्याम मनोहर भगलकारी ।

ब्रजभाषा गद्य पद्य के-बेजोड रचनाकार

डा रामकृष्ण शर्मा

डा रामकृष्ण शर्मा न काव्य अरु गद्य विधा में ब्रजभाषा में विपुल साहित्य सृजन कीनी हैं 25 अक्टूबर 1936 को पिता में प्रसादी साल शर्मा के घर ग्राम सुहारी तहसील बैर जिला भरतपुर में इनको जनम भयो । डा शर्मा ब्रज के ऐसे प्रतिभाशाली साहित्य-कार हैं जिनके कक्षा प्रथम में एम ए तानू की परीक्षा प्रथम स्थानी में पास करी है । बचपन बालपने में ग्राम के बच्चे पक्ष के मकान सलीनी मधुर धुनि करती मयनी, दोहनी गैया उछल कूद करत धेनु-छोना सजा के भूँके में आसमान में उड़ती गोधूँरि, लहलाते बेत त्वनिहान टिमटिमाते सिरसी के तेल के दीये, सुख में सुखी अरु दुःख में मग सग रोमने ब्रज के ग्रामवासीम कू अपनी आगिन से देखो है । बिनके यथाय कू छिव के पीयो है डा शर्मा न अपने बालपने में जाई कारण ब्रज ग्रामीण जीवन की सरलता निदछलता अरु उलास मिठास की सुगन्ध को स्पष्ट डा रामकृष्ण की घमनीन में इतके गहराई से पठो भयो है कि बिनके साहित्य में ब्रज अक्षर की ये निगरी बिभसता अना यासई सहज भाव से बाध गई है । अस्तु रामकृष्ण की साहित्यकार सहज भाषा, में सहज भाव कू सहज शली में प्रकट करे है । कहू तो वनावटीपन की उजाल या प्रयास जय विषयता नाथ दीख बिनके साहित्य सृजन में । या यो कहें डा रामकृष्ण अपने बालपने में जा जीवन कू दसा अरु भोगो है खुई बिनके सृजन की मोरम है । डा शर्मा ने या सत्य कू स्वयं स्वीकार करत भय लिखो है -- 'लोक गीत, नर नारिन के हास परिहास बास गोपालन के मेलकूद में सबई मनुआ में मुलकन, सिहरन अरु तरंग सी सठायो करते ।'

जेई कारण है कि डा शर्मा की विगत ब्रज भाषा सृजन परिमाण अरु परिणाम दानू दष्टि से काज तरिया उन्नोस नाथ है बिनके साहित्यकार की सत्य की परत भीतई पैनी अरु सटीक जाई ते बन परी है कि बिभि भमली भारत के जीवन में रहके निरमान के मुरत की स्पष्ट कीनी है । जो कहना है जो लिखनी है कू सींची सींची भाषा में सचि-

साँचे विचारन के सग बेलाग भाषा म कह देनी है । साहित्य सृजन अरु इनके व्यक्तित्व में कहू तो विरोधाभास नाथ दीखे नाई अभिव्यक्ति अरु अनुभूति के बीच काऊ तरिया के स्पोह ब्रेकर लगे भये हैं । जो देखो है बाकी बेलाग सीधे सब्दन में कहनी डा शर्मा के नैसर्गिक ग्रामीण जीवन के सग पानी में नीन की तरिया घुरे व्यक्तित्व की परिणाम है ।

भारतीय सस्कृति के समर्पित आस्थावान गायक डा शर्मा जीश्र अपने ब्रज काव्य सौरभ में सम्प्रति राष्ट्र के निर्माण अरु प्रगति में बाधक समस्यान की साँची साँची अभिव्यक्ति अरु करनीय समाधान के काव्य के रमणीक मच ते प्रकट करिबे में काऊ तरिया की कोर कसर नाथ छोड़ी है । सदीन की दद भरी गुलामी ते सत्रस्त भारतभूमि की पावनता, मानबोचित सस्कार अरु नेहिल भावन कू आजादी के पश्चात धीरे धीरे जजरित हेते देखके देश की माटी में रची पची एक साहित्यबानी में जो पीडा जनित आक्रोश के दद की महनीय अभिव्यक्ति होनी चइये बू सब कछु भैया डा रामकृष्ण के काव्य सृजन की गौरवशाली अध्याय है । अपनी घरती की साँधी सौधी लावण्यमयी सुगंध अरु अपनी सस्कृति की विराट सात्विक चेतना इनके ब्रज साहित्य की सुरु त मेखण्ड रही हैं । आज की परिस्थितीन में विनाश के तीव्र गति ते बढ़ते प्रखर अनुभव के कारन व्यक्ति के मानस पटल ते दिन प्रतिदिन सिमट के सकुचित होती भयी राष्ट्रीयता में, आपाधापी, व्यक्तिवाद जातिवाद अरु पाश्चात आधुनिकरण ते भ्रमित आज की तथाकथित सम्यता की घनावटी चकाचौंध में, व्यक्ति के मानस ते गिरते भये नतिक स्तर में, अधविश्वास रुढिवादिता की समाज में छापी अमरबेल के पाखण्ड में, सामाजिक कुरीतीन के छत्रम में बढ़ते भय सस्कार हीन जीवन में, परस्पर द्वेष, रिक्वत भ्रष्टाचार के बढ़ते भय गरल में ऊँच नीचकी विपमता की व्यथा में पिसती भयी मानवता के भावन में भारतीय सस्कृति के अमर गायक डा रामकृष्ण शर्मा ने ऐसे पुष्पल ब्रज साहित्य की मृजन कीनी है जो शोपिन की करूनामयी भाषा के तेजस्वी शब्द हैं जो नई पीढ़ी की विराट शक्ति की भावन चेतना हैं जो नारी की बल्याणी सृजन शक्ति की ममतामयी आराधना की हुलारो प्रोत्साहन हैं, जो निष्क्रिय ते निर्भर की ऊर्जा की ऐसी श्रद्धा हैं जाकी बीजारापण भारतीय सस्कृति की भूमि पे भारतीय परिवेग में, भारतीयता के सटीक मंगल के आलोक में कीनी गयो हैं ।

ब्रजधरा की नेह सिंचित तपोभूमि की साधना म नयनाभिराम सप्तरंगी प्रवाण सो अगमगाते यमुना की लहरी पादपसता वय प्रात, ब्रज ग्राम्य जीवन को निरदल मोरोपन, वियोग के आनन्द की बरूना म आकठ डूब ब्रज प्रात की अवध चदनीय वधा, धृत्याचार, अनाचार अरु उत्पीडन म सहज तेजस्वी गिरि गौरव गिरिराज की अटल विस्वास जसे ब्रज के सास्कृतिक चिर परिचित आयाम डा रामकृष्ण शर्मा के ब्रज काव्य

की अटल धाती रही है। भक्ति की सहज सुवास परास रूप से इनके सिंगरे ब्रजकाव्य में भीतर तानू बिखरी भई है। इनकी काव्य सृजन की चेतना को मूल उत्स भक्ति का प्रकाश पुज तेई चेतना की सुगन्ध ग्रहण करे है। ब्रज सङ्कृति भावलाक की सङ्कृति है। भावलाक की या सङ्कृति के सुरजेई इनकी कविता के सप्तरंगी रगन में भक्ति के घबल प्रकाश की एकरमता ग्रहण कीनी है या सत्य कू स्वयं डा रामकृष्ण ने सहज रूप से यो स्वीकारो हैं—'ब्रज को अनुराग ता सदा तई मेरे सिरजन को मूल सुर रही है। 'ब्रज' नाम के उच्चारण सोई मेरे रोम रोम मोहि पुलकन सी है जाये। जान कहा जाइ है या नाम माहि मेने तो सुपने मेळ नाय सोची अह न साधि सकू के ब्रज मण्डल सों झरि कबहु मेरा जनम हाय।' ब्रज सङ्कृति के बिनके कवि को कितक तादात्म्य है या यों कहे कि साहित्य चेतना की आस्था ब्रज के विराट व प्रति कितक मम रस है याय औरऊ खुलासा करे है डा शमा अपन इन सद्बन में बड़ेई आनन्दित है के हों तानू बिनती करू टू क हे विघना। नर, पमु, पछी पेड, पीधा ककर पाथर कट्टई बनइयो पर रवियो ब्रज की रज पई।' अष्टछाप के कविऊ याई तरिया ते रे विघना तोते अचरा पसार मांगू कहके ब्रज ते याई तरिया एकरस है के एकाकार है गये है। गोपा ब्रज कोरो प्रदेस नाय ब्रज एक सङ्कृति है जान भारत की राजनैतिक पराजय कू अनुराग, ममता अह करना की सजनात्मक मानवीय पीयूष सङ्कृति ते बिल बिलती मोहनी विजय म परिवर्तित करके राष्ट्र की अस्मिता की रक्षा कीही है। अष्टछाप के कविन की 'रे विघना' अह डा रामाष्ट्रण की 'जीवन पायो कह म ब्रज की याई जीवत या सङ्कृति की समर्पित सृजनात्मक चेतना है जाने राष्ट्र की घनघोर निराशा कू आशा में अह राजनैतिक पराजय कू सांस्कृतिक विजय म परिवर्तित कीहों है एव शक्ति के दम म घूर विदेशी दुर्दात शक्ति कू 'आवत जात पहेया दूटी बिसर गयो हरि नाम' कह के घूर पूसरित करक बौना बनाय दीनी है। हमारी कहवे की मतलब जि है के- रे विघना, अह ब्रजभूमि पै जीवन पायो कह' एव 'बिसर गयो हरिनाम' में ब्रज की एकई विराट चेतना है एकई भाव है, एकइ सुर है, स्वाभिमान की एकई अलौकिक विराट की तज है। ब्याख्या अह बचन क स्थल की अंतर है सबे है। पर भावन के सजन के स्तर प ताब की ऊर्जा की मूल सात ता ब्रज सङ्कृति के बाइ भास्कर में निहिम है जान मध्य काल म दवालय के बिग्रह के नाम पे असल जगाई ही अह आज डा रामकृष्ण जोर्न अपने सीमित साधन अह बदलते परिवेश में भारत भाषा 'भारत सतसई' के नाम ते याई आत्मो कू जन जन तक पहुँचायवे की गौरवशाली प्रयास कीहों है। ब्रज की अनुराग डा रामकृष्ण के ब्रजकाव्य की चेतना की अनुराग बनेके ब्रजवासी की बनस्पती में एक त एक सुंदर भाव सुमनन की पोषक राखी है। ब्रज की जि अनुराग बिनके हृदय की अनुराग बनेके स्वयं बिनकी भाषा म या तरिया ब्याख्यायित भयो है—'ब्रज ब्रजराज राजेश्वर किसन कहैया अह बिनकी प्राण प्यारी राजराजेश्वरी राधारानी क नामाच्चारन के सग बिनकी प्यारी जमुना सब सोवन सों प्यारी मयूरा नगरी त्रिलोक धन्याम

गोकुल, मनुआ मे आनन्द को इमरत घोरिबे बारी बि दावन नगरी, दाऊ जी ये सबई सावर है के अतर चकछून सों पल छिन नू दूर नाय होय ।'

डा रामकृष्ण शर्मा ऐसे ब्रजकाव्य के मजुल कवि हैं जिध जात पाँत धरम के भेद भाव कू भूल के सदभाव की चेतना की आराधना कीही है, जिन् बलिदान की वेदी पँ अपने प्रानन कू हसते हँसते त्यागव बारे आजादी के दीवानेन के मगल गीत गाये है। डा शर्मा ने 337 छंदन मे 'भारत गाथा' काव्य ग्रंथ की रचना करके ब्रजभाषा कू आधुनिक जन जीवन से जोडबे को स्तुत्य प्रयास कीनी है। 'भारत गाथा' जा पैटन अरु सैली मे लिखी गई है या तरिया की रचना हिंदी ससार मे पाते पूव चार और मिले है। सन् 1897 मे गोपालदास कृत 'भारत भजनावली' सन् 1901 मे गुरू प्रसाद सिंह की 'भारत संगीत' सन 1902 मे प्रकासित गिधिर शर्मा नवरत्न की 'मातृ वदना' अरु सन 1912 मे मैथिली शरण गुप्त की 'भारत भारती'। ब्रजभाषा मे जा तरिया की पैली प्रयास सन् 1902 म क्षालराप डन राजस्थान के कवि नवरत्न जीने कियो है। इन रचनान की महत्व आजादी की लड़ाई मे हो। ये सिंगरी रचना पुराचीन सांस्कृतिक गौरव के निरूप पँ आजादी की प्रेरना देतो ही। पर आजादी पाछे की समस्यान पँ जा तरिया की यथाथ बेलाग भाषा मे समग्र दृष्टि सो लिखी भई रचना हिंदी तक मे माय लिखी गई। आजादी पाछे भारत के अतीत, बतमान अरु भविष्य को क्रमश गौरव, निराशा अरु आशा की त्रिवेनी के संगम पँ आदेश अरु यथाथ के आधार पँ स्थात 'भारत गाथा' मे डा रामकृष्ण शर्मा नेई पैली दफे काव्य जगत मे चितन मनन कर अपने कवि के साँचे निस्कस प्रस्तुत कर दिचार कीनी है। उल्लेखनीय सत्य है के ब्रज के परम्परित छंदन मे कवि ने आधुनिक भारत की उबलन्त समस्यान की जैसा देखो बैसोई यथाथ लेखो जोखो एव समाधान की निचोड प्रस्तुत करिके ब्रजभाषा कू आज के जीवन के सग जोडबे को आदरनीय प्रयास कीनी है। ओठन पँ मधु घोरवे बारी अनुराग के रग म रची पची, बासुरिया की सीठी तान पँ घिर-कवे बारी मिसरी सी मधुरी गोपिन के अधरान की भाषा, आज के साँचे कवि के भोगे भये यथाथ के सग जुरके कितेक पैनी धारदार है गई है याकी डा रामकृष्ण केई सवदन म चानगी देसा —

सवरे जन की कीच उछारत है इक दूजे पँ दाँतन भीच रहे।

आँधी पीसै नुत्ता साथ साँची भई बात आजु बाँधे बाँटे रेबडी सो अपनेन देत है।
सास पीतासाही आपाधापी, जातिवाद बग, जिते देशी विते स्वाथ साधन सो हेत है।

गारी बिन खोलें नाय चलत म सीटी देय छेइत पराई नारि मजनू के रूप है ।
पट्टिमे म गोल मछ बाज करे नाय हाट गयो नुबच के बिना ताज भूप है ।

‘भारत गाथा म दूटतो विपरती भारत की परम्परित पारिवारिक जीवन सती, पाश्चात्य सम्पत्ता क प्रभाव ने हमारे देस की विपरती नैतिक मर्यादा, नोकर-ग्राह अरु राजनीति मे रक्तबीज की तरिया बढ़ते घम्टाचार, मुरमुती के पावन मंदिर स्कूल अरु कालिजन म बढ़तो भद्र गुहागर्दी शिक्षा व गिरत स्तर, पुलिस, बकील, ग्यायप्रणाली आदि मे बढ़ती भई आपाघापी अरु धोनामस्ती की साचों खाका सीधा है । दहेज मौजवानन म बढ़ती नई नमाखोरी, सोन्दर के नाम पे नारी समाज म बढ़ती भई घर की उपेक्षा, जनता कू दोनो हाथन ठ छूटे बारे बिकित्सक, मिलावट आदि जैसे आजादी पाछ हमारे देस की घुराइन कू बचिने सौधी भाषा म भारतगाथा म उतारों है । आजाद भारत की पुलिस की कस्तूतन कू देखो कवि के सन्दन म—

नैक दीठ डारी वा विभाग पे जो रच्छा हन, आरक्षी बहाल बाके कँसे घुरे हान हैं ।
ध्येय निरधार्यो जन जन भयहीन होय, किन्तु कस्तूतन सा दीखें भागो काल हैं ।
चीन की पुकार पहुँचे न बाऊ विधिकान उस्टे फँसि जाय ऐसे फदावारे जात हैं ।
सुखी तो पिघायी करें दोमी मुक्त मस्तकिरें, कोऊ मरें, कोऊ जिये नेक न मलाल हैं ।

कैशन परस्त नारी आज कसे अपने परम्परित भाव भरे प्रमत्ता के स्वाभाविक रूप कू छाडि के विनास क फदे म फणवे ह्रास की तरफ बढ रहा है बाकी खुलासा खाकी ‘भारत गाथा’ की अपनी एक अलग विससता है । आज के विकिरतालय या अस्पताल मानव सेवा की जगै स्वायपरस्ती अरु जनसोलुप स्पर्धा के पर्याप्य बन गये है; आप मिलवे मे कवि ने नेकऊ कोताई नाय करी है ।

आमे जेतो औसधि सो बेब आमें हाट मोहि पट्टी, पब, दवा-दाऊ सब बिक जात है ।
एवसरे की प्लेट अरु सूई रुई बोतल हू न्नेक सों बिबत तऊ कभू न अघात हैं ।
ऐसी-ऐसी बात जिन कहन हू साज आवैं, रोदी दारि, दूध हू के सोदा करे जात हैं ।
इनकू न साज आवैं कसे निगलज्ज भये, हम सा रे भैया सोचि सोचि मरे जात हैं ।

परि कवि देस की या दुदमा कू देख के निरास नाय । भावी भारत के स्वनिम आशा में बाने इन समस्यान की समाधानक ‘भारतगाथा’ क तीसरे चरण ‘विकास’ में विस्तार ते सीनी है । बिदेसी वस्तु के बढ़ते भये आकसन की समाधान स्वयं कवि के सन्दन म या तरिया है—

छाँड़ि ये विदेसी वस्तु, देसी की खरोद करें, याते सुघरेगी ई प्रनाली चालू अर्थ की ।
देस मे बढेगी पैदावार देसी चीजन की, दूर होगी धौंस जो विदेसी सहें ध्यय की ।

कवि नू आसा है के हमारे देस मे एक दिन जरूर ऐसो आयगो जब लोगन के चरित्र मे विकास होयगो । जाई आसा मे कवि बहे है—

होयगो विकास भेरे देस को अनेक गुना जब देसवासी चरित बनाई गें ।

सिगरे देस मे आतकवाद अरु फिरकापरस्ती के नाम पे बढती भई हिंसा के कारन कवि को मन भीतई दुखी है । सब देसवासीन मे एकई रंग की रक्त है एकई तरिया की हठी है एकई तरिया की मोच है । फिर जि सराई काय की है ।

तोड फोड भारकाट लूटपाट आगजनी, वारज ये निन्दनीय कोन करबैया है ?

ऐसे दानवीय कृत्य बरत के राकस हैं देस के विकास की गती कू खकबैया है ।

सबकू सपथ राम-नानक मुहम्मद की, लरी मिटौ मति, सब सगै भँन भँया है ।

अधुना ब्रजभाषा के राष्ट्रीय भावन के सरस चितेरे डा रामकृष्ण शर्मा ने प्रकृति नदी के एव ते एव सुन्दर चित्र प्रस्तुत करिबे मेळ काळ तरिया की कसर नाय छोडी है । सही मायने भ डा शर्मा अपनी घरती के कवि हैं । जेई कारन है के इनके प्रकृति चित्रन म ग्राम्य जीवन की सौधी-सौधी सुपमा, खेत खलिहानन की सावय भरी सौन्दर्य जितेक भावुकता के सग बनी पाय सकी है । बितेक दूसरे वनन नाय पाय सके । साची बात तो जि है के गामन मे बसबे बारे भारत की सौन्दर्य इनके मन मे इतेक गहराई ते पँठो भयो है के बाके सहज सौन्दर्य के सामे इनकू हर चीज फीकी लगे है । सब जाने है के ब्रजभूमि मे सरसो की खेती बहुतायत ते होय है । बसत के महीना मे तो पीरे पीरे खेतन की सुपमा के सामे स्वय कोळ लासिरय अरु वैभव फीकी पड जाय । बसत के ब्रज की या सुन्दरता कू साकार कीनो है डा रामकृष्ण शर्मा ने अपनी इन पत्तीन मे मानवी-करण के सग सज की या छटा कू देखो ।

पीरो सरसों की सारी पैर जाई घरा आज, पीरे परिधान मे सजोएँ नव नागरी ।

गामन के खेतन की या छटा के सौन्दर्य कू और खुलासा करके बतावे हैं —

फूनी सरसा की सारी पंर के सजीए घरा चना की हरित चाली देख सुख पाओ रे ।
गहूँ जो बालि जस कान की तरयोना सा है मटर बरहैर की हुनासा लखि आभो रे ।

डा रामकृष्ण शर्मा ने प्रकृति बनन की सबसे बड़ी विसेशता है के बाम त राष्ट्रीय जागरन अरु सामाजिक बुराइन कू रसागवे को दमदार सन्देशक मिले हैं । ई सदेश न ता प्रतीकन के माध्यम सी व कहवे के हामी है और न ई टेढ़ी मढ़ी वचन वक्तता को आधार लै व महदय के मन म अपनी काव्य प्रतिभा की धौंस जमायके के कहनो चाहै हैं । सीपी सादो ब्रजवासी ने सहो सय की निचोड़ प्रस्तुत करनी डा रामकृष्ण के कवि की अपनी एक बेजोड़ विसेशता है—बाल-व्याह, दहज मृत्युभोज जैसे सामाजिक अपराधन कू प्रकृति के वैभव के बीच तोड़वे को दखो कैसे सदेश दे रयै है डा रामकृष्ण शर्मा ।

फूल फूल बाग बनरा म कम कलीन से हिन्द बासी भयान कू ई सवेसी देनो है ।
बाल व्याह भयो अपराध तो कानून बेरी, मृत्यु भोज, कोऊ अपराध भारो पैनो है ।
पूलि रहे खेत तिन सान सी फल सा है, सायो है बसत, मूल्यवान, गहनो है ।
जवान छारा जवानि बह घर छूब नाज भरयो, कहन बसन्त बहेज नही सेनो है ।

डा शर्मा ने वर्षा शीत आदि रितुन क एक त एक सुन्दरता के विसाल चित्र अपनी कविता मे खीचे हैं । ग्रामीन जीवन की विभिन्न हर जगै पे विसेश ध्यान राखी है । मुद्दे की बात जि है के ग्रामीन जन जीवन अरु ग्राम्य प्रकृति बनन म डा रामकृष्ण कू जितेक कमाल हासिल है, वितेक स्यातई दूसरे कू होय ।

मार म कहनो चाहू हू के डा रामकृष्ण शर्मा ने अपनी ब्रज काव्य रचनांन से ई सिद्ध कर दीनो है के भक्ति गृहार अरु वीर रस की श्रद्धा सौंदर्य एव भोज कू प्रकट करिबे की ब्रज भाषा म जितक शक्ति है वितकई आधुनिक जन जीवन की समस्यांन व यथाय चित्रन अरु बाबे समाधान प्रस्तुत करिबे की भारी ताकत या भासा म मौजूद है । डा शर्मा की काव्य अपनी घरती की काव्य है प्रतीक विधान अपने आज्ञा-बानू म बिम्बरे भये वैभव के हैं । बिना काव्य म ब्रज की परम्परागत माधुर्य आधुनिक जन जीवन क यथाय बाध क सग आन प्राप्त है के निश्चय सरसता के सग ऐसे बेलाग अनूठे रूप म बिनीकी ब्रज की कविता म उतरा है के अपनी सङ्कति की सहज मोरोपन पूरी तरिमा त गायक है गयो हैं । अपनी घरती की प्यार, अपने लोगन के हृदय की शकार अपने आग पास के बातावरण की सुगंध की मनुस भावधारा की रमणीक अभिव्यक्ति के

सगई आजादी के पम्चात नैतिक मूल्यन की गिरावट की समाज में छाई भई अमरवेल के बढ़ते तन्तून को तोड़के नये सिरे से जीवन मूल्यन की व्याख्या को साहित्यिक प्रयासों इनके काव्य में निरंतर मिले हैं।

डा. शर्मा ने—भारत गाथा, भारत मतसई, विकास सतसई, गाम गाथा के नाम से ब्रजभासा के काव्य ग्रंथन की प्रणयन कीनी है। याई के सगई 'अगरो वाहे को, सीमक ते ब्रज भाषा में उप रास की रचना की ही है। 'पाँच बहे सो साच' नाम से ब्रज कहानी संग्रह एवं ब्रज गद्य में लिखे गये सोलह रेखाचित्र इन लिखे हैं। काव्य अरु ब्रज गद्य में समान भाव से नये सोच के सजन करिबे बारे डा. रामकृष्ण शर्मा की इन कृतीन में 'भारत गाथा' प्रकाशित भई है—सेम अरु अबई तानू अप्रकाशित हैं। पद्य की तरियाई डा. शर्मा के ब्रज गद्य में एक स्वाभाविक लय अरु ब्रज भासागत मिठास एवं सांस्कृतिक चेतना के दसन होय है ब्रज भाषा को पद्य मसार तो इतके समरिद्ध अरु भावगत वैभव सम्पन्न है के बाकी बराबरी काऊ भासा से बरी जाय सके है। पर गद्य के छेत्र ब्रज काव्य की माधुर्य अरु सरस बाक्यन के तेवर देखने है तो याके लये डा. रामकृष्ण के गद्य की लाइन एक एवं सब्द गौरव तलब है। इनकी गद्य रचनान के आधार प बडे गौरव के सग या सत्य की स्पम है रह्यो ह के ब्रज कविता की स्थापित विसेसतान को ब्रज गद्य मऊ सहज भाव से उतारी जा सके है। ब्रज गद्य के सहज परम्परित सांस्कृतिक दुसार की छाँकी देखो— बर के बाबा मनोहरदास की जब सुधि आवै तो रोवते ककई नाय। धोरी धोरी नरम नरम अच्चात की सो लट्ठी कहूँ उरझी, कहूँ सुरसी अरु बिनपै धोरी धोरी जुआन के दल बादर मडारामते, तिरामते दीख्यो करते।" (रेखाचित्र बाबा मनाहर रास) "धोरी भक्क पायजामा धोरी भक्क कुर्ता अरु बँसी ई कलीदार टोपी। पतरौ सी किय डींगरी बदन टाँग इतक लम्बी के बेई मे दीलती। धोरी नुकीली डाढी अरु धोरी तुरान गोछ।" (रेखाचित्र लोहागढ की मजनु) "ई भाँस भैयाता ने जान कोन सी माटी सो गढ़्यो ह के जाय देखो बूझ गाय जानै। सबई याके भीरी सबई याके यार। काऊ के घर ई रात को छुकि जाय तो बूझीत भली मानै।" (रेखाचित्र धारन के यार गापाल)। ब्रज गद्य में जब प्रकृति की छटा को बनन करिबे डॉ. शर्मा बैठे हैं तो बरबस ऐसी लगै है के कविता लिख रह्यो होय। गद्य में काव्य की सुलसीनो सौंदर्य ई तो सस्फुट की उक्ति को साधक करे हैं। 'धोरी देर में बदरा फटि परे। ऐसी वेसुमार पानी परयी के चहु ओर डबरा अरु पोखरा उफनिबे लगि गये। बरसात में पौते ऐसी कारी पोरी आधी आई जान आधी सो लोक उडाय दियो।"

डा. राम कृष्ण शर्मा ब्रज भासा के ऐसे प्रतिभासाली साहित्यकार हैं। जिन्हें गद्य अरु पद्य दोनू छत्रन में अपनी कलम के एक-से एक सुन्दर अरु रमणीय जोहर दिखाये हैं। ब्रजभासा की कविता की छेत्र तो निश्चितई इतके सम्पन्न अरु वैभवशाली है के बामे

कछु नयी मोनिब जोहवे की इतेक गुजायम नाय । पर इतेक तो निमबाष बहनी ई
पहेली के ब्रज कविता बू इते आधुनिक सदर्शन के सग जोहवे की उल्लसनीय प्रयास
तो कौनो ही है । डा शर्मा की सयने बड़ी देन सज्जबानी बू गद्य के क्षेत्र में एक सम्पन्न
भाषा के रूप में स्थापित करव की रही है । रेखाचित्र भर उपयाम जैसी विधान के
अपनी कलम चलायवे ब्रजभाषा गद्य बू नई बननी भरु नयी सोच दियो है ।

काव्य सौरभ

ब्रजभूमि

दुमिल

ब्रज की घरनी अनुभागमयी उर स्याम मनोहर तो भरि है ।
पवि है जग प्रीत बिलेरन म नम बधन आय यहा जरि है ।
जल है जमुना अमिया रस तो बलिया रम जाय यहाँ तरि है ।
वपनान लसी छवि नेहमयी गिरिराज लक्ष्मी गुरू तो गिरि है ।

ब्रज-रस

ब्रज रसु महासत चदन है जहाँ पाप घुरे छवि स्याम सुहावे ।
वपनान लनी छवि प्रेममयी ब्रज की रज मे भहक मुसकावे ।
अनिराम महा गिरिराज इहाँ दुख दूर करे मन मे जब छावे ।
पुन्य फलें विछल हमरे जिहि मो ब्रज मे जनमें ब्रज भावे ।

श्री रामशरण पीतलिया के व्यक्तित्व-कृतित्व कौ रेखाकन

श्री रामशरण पीतलिया ब्रजभाषा के ऐसे उत्साही मनीसी साहित्यकार हैं जिन्होंने कविता अरु ब्रज गद्य के क्षेत्र में अपनी लेखनी के एक ते एक सरस चित्र प्रस्तुत करिबे के सग सग नये नये साहित्यकारन कूँ प्रोत्साहन कर बिनकी साहित्यिक विद्या कूँ सजायबे-सझारबे एव निछारबे में अपना सिंगरो जीवन सगाय दियो है। मोन भाष त यश अरु लौकिक चमक दमक ते दूर आदि वृंदावन कामवन की पावन ब्रजभूमि में निवास करते भये ब्रजभारती की जो समय सेवा अपने जीवन में श्री पीतलिया जी कर रये हैं बाकी सानी ब्रजभूमि में हूँ ते मिलबो दुलभ नाय तो कठिन अवस्थ है। व्यवसाय सो छोटी सी दुकान ते अपने परिवार की पालन पोसन करिबे बारे पीतलिया जी को अधिकास समय ब्रज की सेवा में व्यतीत होय है। ग्राहक कूँ बतनन के नमूना दिखाते जाय रहे हैं अरु सग में बँठे नवानुर किसोर कवि की नई लिखी कविता में गण-रम अरु अलंकार की दृष्टि से सुधार करते जाय रहे हैं। ग्राहक एकटक दृष्टि से देखके अचमित हैं। पीतलिया के मोह ते नितरित हैं रह्यो हैं खाला मत्तगमद में सात भगण होने चइये। तुम्हारे सबैया की पंली पक्ति में दोष है।' ग्राहक खिजाय के पूछ रह्यो है 'पीतलिया जी, ई का भगण कम्पनी का है ? ई कोन सी कम्पनी है जाम जि बर्तन बनै है।' ग्राहक कूँ बिचारे कूँ का पतो के पीतलिया जी भगण की बात बाते नाय कर रये। इतेक भई जैपुर ते ब्रजभाषा अकादमी को तार पहीच गयो के 'एकाकी अक सामग्री सम्पादन कूँ सीधे जैपुर आओ पीतलिया जी ने तार पढौ अरु अपने पुत्र ते कही-लाला सूरज अबई सवेरे के गो बजे है - दस की जैपुर की सीधी मोटर मिल जायगी। सजा तानू जपुर पहीच जाऊंगी। दुकान सम्हार लीजी। परसो तानू आ जाऊंगी।' छोरा कछु बहे बाते पले उठन जूता पहर के खाना है गये। दुकान ते चलके सीधे घर पहीचे। घर पहीच तेई अटँची समार सई अरु चल दिये जैपुर। घरवारी ने बेसेई पूछ सई 'कही जायवे को विचार है के।' धीरे ते पीतलिया जी की खवाब हो—'हाँ जैपुर जानो है।' आश्चय में हूँ ते भई घरवारी बोली—'अजी चोँ मजाक करो।' बोने 'नाय मजाक

नाय कर रयी । पाठक जीकी तार आयी है जँपुर ते । पहुँचनी भीत जरूरी है । घरवारी जानें के जिद्द करके गोकुल चन्द्रमा जी ते साक्षात्कार है सरे है पर इन देवता कू रोकनो असभव है । विचारी परास्त है के गिडगिडाय के बोली—‘रोटी तैयार है । खाय जाओ ।’ मुनतेई पीतलिया जी ने वही — ‘कोन का ?’ रोठी ‘बोटी के चकूर में माटर निकस जायगी ।’ घरवारी पीछे पडगई । बाने थोरो साहस कियो । ‘नाय आपकी तबियत ठीक नाय । मैं नई जान दऊँगी’ झट पीतलिया जी न बहानो बनावो — मौकी मिली ह । जँपुर ते दुकान की सामानऊ लानी है ।’ अर पीतलिया जी चल देने मब काम कू छोड़क बजबानी की सेवा कू । एसो घर फूक के बजमारती की सेवा करिबे बागे कोन मिलेगो । नौरस व्यवसाय म रात दिना रहवे बारे व्यक्ति के मनुआ त साहित्य की सरस निरक्षर कैसे प्रवाहित है रह्यी है ई गुत्थी आज तानू नाय सुरक्ष पा रही हमते ।

कामा म कोई साहित्यिक समारोह होय चाए नोटकी की तमासी हाय चाए पंचम पीठ या सप्तमपीठ की ओर सी जाख बनाववे की रम्प होय चाए भाजन धारी की मंत्री होय चाए कामा के साहित्य मस्कृति प कोई बाहर क लेखक कू जानकारी लेनी होय, चाय कोई साहित्यिक पत्रिका रिक्कारनी होय, चाए कवि सम्मेलन आयोजन कू कविन कू आमन्त्रित करनो हाय चाए कोई व्यवसायी नई प्रेस खोल रह्यो होय चाए कामबन के प्राचीन इतिहास के विस म कोई जानकारी लेनी होय, चाय सप्तम या पंचम पीठ में विसेश भोग या दरसन के आयोजन की व्यवस्था करनी होय, श्री रामचरण पीतलिया जी के बिना असभव है । उपयुक्त विस पै चरबा करिबे चार आदमी इसठोर हीमतेई सबन ते पसे एक सूर ते गुहार करी जायगी—‘पीतलिया जी कू बुलाओ । पीतलिया के डिग बुलाओ भेजो ।’ पीतलिया जी दोचालय म बठे है तो मुनतेई उठ जइग रोटी लाय रये होय तो रोटी को तोहो भयो गस्सा म्हाई छोड के अन्न भगवान कू हाथ जोड के उठ जाइये दुकान पे ग्राहकन की भारी भीड कू खोरा के बधान पे बारक व्यवसाय कू रयाग के चल दिम, साहित्यिक समारोह के आयोजन की बैठकन म । इनके मित्र जब एक जग इसठोर होय है तो बम जेई मोचते रह जाय है क कोनसी सति है कान से जीवट के बे सूत्र है कोन सी घडी म ज पैदा भय हूँ जाते साहित्य के प्रति इनक समर्पित भाव की तेज इनके मानस मे जगमगाय रयी है ।

मन जब निरछल भाव त एकाग्र हाय है तो बर बेर एनई क्षणर सुनाई देय है बे-बे कोन सो सत्य है जाने बारन पीतलिया जी अर कामबन एवाकार है गय हैं बे कोन सो अनुभूति है, बे कोन स भाव है, जा रामचरण पीतलिया जी के व्यक्तित्व मे द्विप भय है । नता अभिनता, मित्र-सन्नु, सज्जन-दुजन, कुटिल-नूधे निधन-अमोह, सबई तो पीतलिया जी कू अपना समझे है । एसो कोन सो बदन है इनके भीतर

जाकी सुगंध पक्ष अरु विषम बारे सबन कू मोहिन करे भये है । भोत सोच विचार के पश्चात सूत्र हाथ लगे के बालक को तरिया अबोध निश्छल हृदय पीतलिया जी के पास है अरु ऐसी निश्छल बाल हृदय इनके पास है जो ना ता बूढो होय अरु नई बामे जवानी आवे । छू समरस अरु सदाबहार रहबे बारो है । समारोह भ बोलबे ठाडे करदें तो इतेव भावुक है जाइये के बाणी अवरुद्ध है जायगी अरु आखिन म नेह व असुआ बे रोक टोक बह निकरिगे । कामवन मे राजस्थान साहित्य अकादमी ने उपनिषद समारोह करवायो । समारोह मे समवेत प्रयासन ते पीतलिया जी की साध पूरी भई अरु सब सम्मति ने ब्रजभाषा अकादमी बनायवे को प्रस्ताव पारित भयो । पीतलिया जी की साध पूरी हैतो दोख रही । रोम रोम खिल रयी हो इनको । समारोह समाप्त हैं रह्यो बस आखिर मे पीतलिया जी कू धयबाद देनो हो । धयबाद देबे कू ठाडे भये । एक दो शब्द बोले हुगे । बानी अवरुद्ध है गई । मनुआ प्रेम ते भर गयो । प्रेम ने समय की पारऊ तोर डारी । बस फिर का हो आखिन म ते अबिरिल प्रेम के मोती ढरकबे सगे । हिचकी आय गई । ब्रजभूमि के प्रेम सौ साक्षात्कार हो ई । पीतलिया के निश्छल हृदय ते अबिरल अँसुआन की बहती घाटा ने सूर की बानी सायक कर दर्ई बा 'दिना । सूर की जि पद साकार है गयो हो ब्रजभूमि के सच्चे ब्रजवासी श्री रामशरण पीतलिया जी के दुरके असुआन मे 'बहु दिन काह-बाह करि टेरत असुवन बहुत पनारे/गोपी ग्वाल गाय गो सुत ही सबही दीन दुखारे ।' सूर के 'अँसुवन बहुत पनारे को मम समझाय दीनी हो बा दिना पीतलिया जी के दोनू आखिन ते होड मे ढरकते नेह के मोतिनै । ब्रज के प्रेम वियोग के तेज मे झँकती भई करना की बिराट खेतना बा दिना समझ मे आई ही । 'निस दिन भरसत नैन हमारे पीतलिया जीनै' साकार कर दीने है बा सगी । वियोग म कितेक बही सक्ति है । पीतलिया जी द्वँ दिना के सयोग के पश्चात साहित्यिक भया भेदन के वियोग कू सहन नाय कर पाय रहे । याई करान तो बिनकी बानी अवरुद्ध भई अरु मन के भाव आखिन मे ते टपक रहे है । अब सोचो द्वँ दिना मे पीतलिया जी साहित्यकारन के सग बिनके मन की कितेक तादात्म्य है गयो होयगा । विचारी गोपी, राधा अरु यशोदा ने बारह तैरह बरस बिताये है ब्रजराज के सग । बिनकी का दसा भई होयगी ब्रजराज के वियोग मे/ब्रज के वियोगी की मर्मन्तक पीडा समझाय दीनी, बा दिना पीतलिया जीनै । साँची बाठ जी है के श्री रामशरण पीतलिया जी के व्यक्तित्व मे पावन ब्रज पूरी तरिया सो भुखरित है । मन के भोरे मडारी पीतलिया जी ते कोऊ नेकऊ नाराज है जाये है तो बिन्ने तब तानू चैन नाय पडे जब तानू नाराज व्यक्ति बिनके सामे आय के कह नई दे के बाकी मन स्वाफ है । पिछले दिना कामा के अकादमी की झूलना समारोह है रह्यो । काऊ बात पै बिनके सिस्थ छट्टनर्खा साहित्य ने गलतफहमी मे कह दीनी के 'अब मैं कवि सम्मेलन मे नई आऊंगी ।' बे तो कह के घर जाय वे तान के सी गयी । पर पीतलिया जी की रात खराब है गई । रातभर जागते रहे । बस जेई विचार ! बिनके मन मे हो के का गलती है गई बिनते । सबेरे जब हम जँपुर ते पहीचे तो देखो पीतलिया जी गमगीन से

स्टेज पे बैठे है अरु वर बेर क्षपकी ले रये है । उदघाटन समाराह ममाप्त भयो । मैने अनग ले जायके बिनने पूछी—‘भाई साहब का बात है ।’ ‘नाय कछु बात-नाया’ रात दिना सग रहते-रहते इन महानुभाव को सुभाव इत्तेक सो मै जानई गयो । बाने—‘चलो भोजन तैयार है ।’ मै नऊ बही, ‘भोजन जबई हुगे जब के सत्य पत्ते पड जायगो’ वही कठिनाई ते बात की मालुम पडो । छट्टन ते जब मैने पूछी तो बान कही—‘मैने कछु नाय बही ।’ छट्टन कू यादई साओ के बाने का बही । छट्टन जब अपनी मिगरी बात पीतलिया जी कू बताई तब जायके बिनकी मानसिक स्थिति सुधरो । फिर पीतलिया जी पुन बातक की तरिया बहकबे लग ।

जब पीतलिया जी के साहित्यकार को विवचन करिये बठी हू तो मोय एक सय तर तर के भावज आयेके घेर लीनो है । वही मुस्फिल है रहो है के साहित्यकार क रूप मे बिनके कोन से व्यक्तिय कू सुख्यात म लियो जाय । ‘सालो देखन म गई म भी है गई साल’ जैसी भेरी स्थिति है गई है । पत्रकारिता सो सुरू करे तो मोय अपन कालिज जीवन को सम याद आय रह्यो है । स्यात 1961 या 62 की बात है । बिन दिनत में पीतलिया जी मोहन भया कू मग लके डा रामानंद तिवारी के पास नये अखबार निकारय की याजना पे विचार करिये कू आओ करते है । तीन-तीन घण्टान तानू विचार विमस होता हो । पाच छे नाम सोचे गये । आखिर म ‘चौरासी खम्भा’ नाम स्वीकार भयो । ‘चौरासी खम्भा’ वटे मजघज क साप्ताहिक पत्र क रूप म निकसो । कछु सप्ताह मैई ‘चौरासी खम्भा’ ने नीजवानन क बीच म आकषियता प्राप्त कर लई के कलिज के रीतिरूप म माय पद्धि की छीना झपटी हैब लगो । अज साहित्य सस्कृति के या पाँच छे पीजी साप्ताहिक कू पढके अपनी धरती ते जुडवे की हम नीजवानन कू पैसो अनुभव हो । या यों कह के ‘चौरासी खम्भा’ न हमकू पैसो दर्पे अपनी जमीन अपनी अस्मिता अरु अपने अज ते हमकू जोडो हो । अचानक एक दिना अथ के दानव न नियम लियो ‘चौरासी खम्भा’ कू । अज की जमीन के अखबार कू बक्का की गरिया पारो हो पीतलिया जीन बाकी भीत पीतलिया के हृदय की आज तक टीम के रूप म बनी भई है धुन के धनी पीतलिया जीन हार नई मानी । फिर मही सकल्प निकारो बाकाऊ चूई हथ भयो जो ‘चौरासी खम्भा’ की भयो हो । धुन के धनी न आधिक दानव क सामई हार नई मानी । फुटकर रूप म कामबन अरु अज के सांघुतिक तीयन प लेल तितार पत्रकारिता की अपनी पिपासा कू सात करते रह । सन् 85 म राजस्थान अकादमी की स्थापना भई अरु राजस्थान सरकार ने बिनकू सामा म समा को सदस्य बनायके कोन म पडे भये अजकला अरु मस्कृति क अनोखे चितरे पीतलियाजी की प्रतिभा कू भावजनिक रूप सो प्रदर्शित कियो । पीतलिया जी न अकादमी म आतेई अपनी पत्रकारिता क तेवर दिसानो सुरू कर दिये । अकादमी की मुखपत्रिका ‘अजसतत’ क एष ते एष सत्रघने 17 बिसेखानन मे पीतलिया जी की प्रतिभा अरु भारी सूझ बूझ की

प्रमाण है। इन अंकन में 'लोक सस्कृति' अंक की सर्वाधिक प्रशंसा आई। या अंक में कामा के विद्वानन के दस बारह लेख हैं। 'व्रजशतदल' पत्रिका की लोक सस्कृति अंक सवषा नवीनता लिये भये हैं। पक्ति पक्ति में पीतलिया जी को व्रजभूमि में समर्पित अटूट प्रेम की चल्क मिले हैं या अंक में। गोपाल प्रसाद मुद्गल तो व्रजशतदल के 'लोक सस्कृति' अंक का कामा अंक के नाम में संबोधित करें हैं। व्रज के चौराहेन प छोटी छोटी धार्मिक पुस्तकन की दुकान प घटा तानू किताबन कू देखवे की आदत में पीतलिया जी के मग जायवे वारी परेसान हैं जाय। एक दफ तीन-तीन रुपया के अखवारी कागज प छपी किताब लाये। मेरे सामई रख दीनी अरु कही—पाठक जी व्रज साहित्य की अमूल्य निधि लायी हूँ मैं, मैंने किताब खोल के देखी तो घाय अरु डहुरी की वृषि विसयक व्रज काव्य हो। सग में एक् लेख साइबो नई भूले। वास्तव में व्रजभाषा में वृषि विसयक साहित्य की अबई तानू काऊ कू जानकारो नाय ही। पीतलिया जी हूँडके वृषि विसयक सामग्री लाये। या विसै प व्रजशतदल में लेख प्रकाशित भयी अरु प्रशंसा आई।

व्रज सस्कृति अरु व्रजभाषा की तो पीतलिया जी कू चलनी फिरतो कोप कह दे तो अतिशयोक्ति नई होगी। कई दफ लिखते लिखते कोई सब्द कस्ट दे रह्या होय या व्रजभाषा में काऊ भाव कू प्रकट करवे में शब्द योजना हलकी पड़ रही होयतो हम सबई एक सुरते समाधान की दृष्टि में पीतलिया जी माऊ देखे। पीतलिया जी तत्काल वाछिन मब्द ई बतावे ई नाय, अपितु बाकी प्रयोग बताके समस्या कू तरकाल हल कर द है।

सन् 1990 की होरी के ओसर प पेसी दफ मालुम पड़ी कि पीतलिया जीने वागवेदायता अरु भावना की सीधी सीधी अपनी वचनवज्रता की हुलार भरी मार में व्रजभाषा के बड़े-बड़े कविन कू पीछे छोड़ दिया। पीतलिया जी की 'ससुरार सतक' या की जीती जागती उगाहरन है। 6 माच कू, वे हमारे सग जोधपुर जा रहे। बैठे बैठे बिन दो चार फागुन में ससुरार विसयक कुछ दोहा लिख डारें। इन दोहान कू व्रजभाषा कवि सम्मेलन में सुनायी गयी। इनसी प्रभावित है कि दो दिना में अपनी ससुरार सतक पूरी करयो।

दो बरस पैंले जयपुर में पीतलिया जी की अचानक एक्सीडेंट है गयो। एक दिना तो हालत गभीर है गई। याददास्त खतम है गई। एकई सब्द म्हीते बोली करते 'व्रजशतदल' राज घज के निकरनी चइये। एकई चिन्ता बिन कू पाये जा रही। डा गोतम ने बोन में लेजाके कही—पाठक जी हम कोसिस तो भीत कर रहे हैं हालत ठीक नाय। छ पसली टूट गई है। फेंकड़ा चौक है गयी है। मैंने बड़े सक्ल से डा गोतम से कही—'डा साहब पीतलिया जी कू अबई भीत बरमन तानू व्रजभाषा की सेवा करनी

है ।' पती नई कोनसो विस्वास मेरे मन ते फूट रह्यो । साँची मानीइयो एक महीना पीछे चमत्कार है गयो । पीतलिया जी मौत कू पछार के आ गये ।

रामशरण पीतलिया जी ब्रज मैया के ऐसे साँचे सपूत हैं जिनके राम रोम में ब्रज भाव समाया रह्यो है । 'कदम्ब' सस्था के द्वार से नई नई ब्रज साहित्यिक पाँधन कू विराट वृक्ष बनायवे में आजकल ये रात-दिना एकरस हैं के लगे भय है । इनके प्रयासन तेई कामा में 'कदम्ब' सस्था बनी है । 'कदम्ब' के तत्वावधान में मासिक काव्य-गोठ गत चार बरस ते नियमित हैं रही है । नये नये साहित्य अनुरागी किसोरन कू समस्या दर्ई जाय । गोठन में बिनकू तरासो जाय । रस अलवार छन्द, गुन दोस की दृष्टि पीतलिया के सग कामा के इतर बजुग साहित्यकार किसोर की रचनान में सुधार करें । कविता के नये नये गुर सिखाये जाय । गायन की लय में रियाज होय ।

चार चार पाँच पाँच घण्टान तानू गोठन में [ब्रज रस की बरखा होती रहे है । इन गोठन में ते पैदा भये छट्टनखा साहित्य भूषेन्द्र बिठठुल पारीक कृष्णवीर, सिंगरे राजस्थान में ब्रजवानी के मिठास कू फैलाय रये है ।

आखिर में गोकुल चन्द्रमा जी ते एकई प्रार्थना करू कि ब्रजभाषा साहित्य के या विराट पुष्प कू कम ते कम सौ बरस हमारे बीच बनाय रखे । बाल सुभाव के ऐसे निश्च-छल ब्रजभाषा के साहित्य सेवी जब तानू जिदे है तब तानू ब्रजी की मिठास चारों तरफ फैलतो रहेगी बाकी सुगंध नेकऊ कम नई होयगी ।



ब्रजभासा की अग्यात कवयित्री रानी विद्यावती

रतलाम मध्य प्रदेश के भूतपूर्व नरेश अमरसिंह की धर्म पत्नी गत बालीस । ते एकांत मे ब्रजभाषा काव्य की रचना कर रही हैं । राजा अमरसिंह की सातमी के इनके पूज्य रतलाम के नरेश हे । परि एक पडपत्र के कारन इनके पुरस्कार नूँ रतलाम स्टेट छोडनी परी । इनके दूसरे भैया ने मध्यप्रदेश सीतामऊ के रघुवीर सिंह इनई परि सी मवध राखे हे । परि जै एक जगै ते दूसरी जगै मारे मारे फिरे । जाई पारवा राजा अमरसिंह भये हैं । इन्हें पैंतीस बरस सी राजस्पास पुलिस सेवा में काम कर्यो सन् 1978 मे डी आई जी के पद ते रिटायर भये । इनकी घरमारी रानी विद्या की जनम उत्तर प्रदेश के मु गियार जिला हरदोई मे सन् 1917 कू भयी । विद्या नौ बरस की अवस्था ते कविता लिखवे लग गई ही । काव्य भुजन के विसैं म ई जीवन म बड़ी घमटकारिक घटना भयी है । इनकू अपने जीवन मे स्कूली सिन्धा क नाम मिली । बस घर पे अपने चाचा के सम्पर्क ते इन्हें हिंदी पढ़ियो अरु लिखवो स लियी हा । सहृदय एव अपने पंडित चाचा के आकस्मिक निधन ते विद्यावती के मानस पे गहरी वेदना के बादर मढरायवे लगे । दिन रात चाचा के सुमरन तें बालि कू सुपने मऊ रोमते बिलखते चाचा गैसते । दूसरे दिना अबोध बालिका ने आचा के नाम तें जल बी तरपन करिक बिनके उद्गार अरु शानि कू गीता की पाठ करि दीनी । तीन चार दिन के गीता के पाठ ते जा बालिका नूँ सुपने मे चा ने आसीर्वाद दीनी । अरू दूसरे दिना तेई जि बालिका कविता लिखवे लग गई । दिन बँठिक गीता के एक अध्याय की ब्रजभाषा मे अनुवाद करि डार्यो । कछु दिना पं इनके घर म प्रताप नारायण मिश्र की गीता की अनुवाद इनके पिता सरोद सारे गीता के पीछे बावरी भई जा रही जा बालिका ने जब प्रताप नारायण की गीता अनुव बाच्यो तो जाकू लगो ने बाने तो बुई पुस्तक लिख डारी है । भाव तो एकई हू अग्याततावस गीता की जि अनुवाद विद्यावती ने फार डार्यो ।

परि वृद्धावस्था मे जर्जरित भये सरीर ते काव्य के नाम ते बिनने स्होडे प चा के दरसन होय है । हमारे देस म स्त्री सिन्धा अरु बिनने द्वारा करे गय काम कू आज

प्रतिभा की दृष्टि से अवर्द्ध वू सम्मान अरु आदर नाय प्राप्त भयो है, त्रितक पुष्पन कू भयो है। राजपूत घराने म तो स्त्री सिच्छा की औरऊ ज्यादा हालत खराब है। पाद करो आजादी क पूर्व के भारत की दसा की जब स्त्री सिच्छा के नाम पे हमारी देस कितक पिछरी हो अरु राजपूतन म तो स्त्री की दसा औरऊ खराब हो। छन्द, अलंकार अरु करिना के गुनगोप के विमं म इन्ने न ता कोई के पास बैठिबे सिच्छा ग्रहन करो, न काऊ ग्रथन की छाया म कछु ग्रहन करो। आजऊ बिनबू छन्द अलंकार की कछु ग्यान नाय। बर-वेग जब मिनते पूछी गयीं तो बस एक्ई जवाब हो- 'हम छन्द बन् बछु नाय जाने, नाई हमबू अनकारन की ग्यान है। बस हमारे मन म कछु आन तो लिखब बैठ जाम है। लिखके बड़ी साति मिन है। जि कछु कापी है। भीठ मारी तो नस्ट है गई। हमन कबो सोचीऊ नाय के जि कविता है। ई तो तुम हमारे पीछे परि गए। निहार जा प्रेम के कारन हम अपनी जि कापी तुमकू दिखा रहे हैं।' कितेक सपाठ बयानी है इनके जा बयन म। काव्य की छलछनाती भावनामय महासागर सह-राम रह्यो है विद्यारानी के काव्य म। भाषा अरु अलंकारन के प्रयाग की अनक कमी निकारी जा मर्क है इनके काव्य म। परि काव्य की भावना त सबध मानवे बारे मनी-सीन कू इनकी ब्रजकविता म भावना की उबार उमडती मिलेयो। बनाबटीपन, प्रयास-जय मायापच्ची की सुमरन ती इनकी कविता के डिगऊ नाय आ मकी है।

श्रीमती विद्यारानी की रचना काऊ पत्र पत्रिकान म स्वात प्रकासित होयगी जाके अलावा भरतपुर म हैब बाने सप्तसमापूर्तिन के बवि सम्मेलन मे एक् दा दफे इनकी रचना सुनवे की आँसुर मिल्यो। सम्मेलन मे इनने अपने स्त्री से रचना पढी होय ऐसी नाय काऊ दूसरे ने इनकी रचना की पाठ कीनी है। उद्घोषक न बतायी के जि डी एस पी श्री अमर सिंह जी की धमपनी विद्यारानी की रची भई रचना है। इन्ने हिंदी अरु ब्रज म रचना रगी। कविना मऊ हिंदी अरु ब्रज की प्रयोग है। इनकी कविता म इनको भन ब्रजभाषा म जितक विस्तार क सग रवो है विनेक हिंदी म नाय जमो। इनने सपब करके इनकी अपनी कविता की कथा अरु रचना प्रतिया क विमं म बतावें की वृषा करी है इन्ने कविता रेखी रूपक त्रामा अरु नाटकन की रचना करी है। इनकी ये सिगरी रचना बस्तान म बद परी है। छोटी भाटी मिलायके इनकी रचनान की सख्या 20 है जा जा सरिया है—

- 1 भर प्रभु और कमनीय कुसुम सग्रह—1950। 2 विभिन्न काव्य प्रकासित अप्रकासित 8/54—55। 3 गिन मन्मिन् स्त्रोत 1936 ई। 4 शिव मरन सनक शंकर विनय विभूति 1/9/37 स 30/11/37 कोमार्यावस्था म। 5 यधुरजन 1948। 6 वरुण बहानी अथवा बिसाहो की वसह 1937। 7 जीवन आथ जीव है पानी 1954-8 हजा 27/9/56। 9 अगर मैं आलोचक होना/वत्पना का साकार रूप 15/10/50।

10 भारत-भास नाटक 1938 । 11 भक्त चंद्रहास नाटक 1953 । 12 आनकल-नाटक 1938 । 13 शिवाजी एवावी 1951 (वाल्हामा) । 14 वालभक्त बद्रहाम (रेडियो रूपक) 1950 । 15 हक्तो वा समूह 1956 । 16 बुद्धे वा विवाह (एकाकी) 1959 । 17 शिवाजी नाटक 1956 । 18 भारतभूमि नाटक । 19 भक्त बंधु नाटक 1938 । 20 पुटवर रचनाएं ।

जाके अलावा इनके भीतरे हाथन के निम्ने भये कवितान के पन्ना मिले हैं । इन रचनान में ऊ उपयोगी रचनाऊ हैं । अरु जीवन के विभिन्न पक्षन नै सके लिसे भये भीतरे छंद इनमें मिले हैं । यातचीत ते भासूल परी के विचारानी के पिताजी तम्बाकू भीत खाबे ह । जा कारण बिनको बलदप्रेशर रहती । बड़े बड़े डाक्टर हुकीम सभी साधिन ने इनकू तस्वाकू छोड़वे की कही भीत समझाये पर तम्बाकू बिनके म्हो ते नाय छूटी । अषानक बिनकी बालिका विचारानी के म्हों ते तीन छंद निकर परे । आपकू आस्वय होपगी के इन तीन छंदन ते बिनने तम्बाकू छोड़ दी । हम या घटना की उल्लेख करके ये बतानी चाह रहे है कि कविता केवल हासी नाय कसा है मनोरजन की साधन ई नाय । याकी प्रभाव अच्छूक होय जो असभव कू सभव कर दे । तम्बाकू के विसै म लिखे तीन छंदन मे ते एक छंद कू देखो —

झोंसी बरै हृद जोर हरै अपरा दम माहि दया बिहरै ।
खेद घूणा मन हवै तिन के पुनि सोच तिहे न बनै बिहरै ।
सेवी तमाखू के चाहे कहे नित हुक्का के फुक्का फरे पहरै ।
साज पे वाज परै किन आज समाज की साज बने बहरै ।

सन् 1930 के आस पास हिंदी भाषी प्रदेशन में ब्रजभाषा के समस्यापूर्ति के छंदन की रचना करवे की भारी परंपरा रही है । कविगन समस्यापन पे विविध बिसयन कू लीके कविता पाठ करते हे अरु रसिक जा जापे निहाल हैके कवि की प्रतिभा पे बाहू बाहू कर उठते । या तरिया की भीतरी रचना विचारानी ने अपने बाल्य अरु किसोर अवस्था में कीनी हैं । इनको या तरिया की तो प्रमान नाय मिले क कवि सम्मेलन में बैठके कोऊ रचना की पाठ कर्यो होय । बिनते चर्चा करके ई बात निश्चित भई की बिन दिना हैवे वारे कवि सम्मेलन की समस्यापूर्ति घर पे करती हो । हमकू खोज चीन ते या तरिया के पन्ना मिले है । या तरिया की 'मतवारे' समस्या की पूर्ति करते भये बिनने अपने चारो ओर के समाज की दुदसा की चित्रन करते भये हरि की भक्ति के ध्यानद कू स्वीकार कीनी है । कहवे की आवश्यकता नाय के वू ऐसी समे हो जब हम पराधीन है । भारत के नवयुवक धीरे धीरे पथभ्रष्ट होते जा रहे । विचारानी ने जा राज-

[आत्तर-आत्तर अनुराग]

पूत समाज की समस्यान कू लैक बापै अपनी लेखनी चलाई । राजपूत राजा अश्वमेज
के संग रहकें मदिरा अरू विजया केनसा म मस्त है रहे । भारतीयता के
महत्व कू भूल रहे । मदिरा सौं अपो पुरुषाथ की महत्व समझते । इनई पै व्यग करते
अये ई 'मतवारे है' कि समस्यान कू या तरिया प्रकट करी है-

मन रग भुरग मतग पग ते निहग बोज जन वारे ह ।
कोऊ फैशन फूने किरें कितहू बाउ प्रदन बने सतवारे ह ।
मदिरा रत बोउ स्वभूति भ्रमै, सपते विया जन वारे ह ।
धाय हैं त बनि भृग हरी पद पञ्ज पै मतवारे ह ।

याई तरिया नीकी समस्या कू पूरी करिबे कू जीवन के कछु मूल्यन कू उदघा
टित करते भय बिन लिखी--

स्वभावा रसै समता बिरस दरसै निरूपम दरसावत नीकी ।
जुध ते धुन ते सु ससे गुन ते सरसे सद बुझि सरसावत नीकी ।
झुलसै मन के हुलसे तन के हरसै हर उर हरसावत नीकी ।
तु बसै उर म न नसै फुर म परसै पग तुब परसावत नीकी ।

याई तरिया मतवारे' की बिनै एक अय स्थान पै एक सावजनिक नहिह सज्जन
की परिभाषा देते भये या तरिया लिखी है-

सतन सुखद ते असतन दुखद यशवतन शिरोमणि अनत अत कारे हैं ।
निगुण सगुण गुणघर गुण पार कथि 'विद्या' तन धारक अतन ते उचारे हैं ।
खड-खड सौं अखड ग्रह वरबट लघु व्याप्त थण्ड माहि खड-खड रोम धारे हैं ।
बिभुता विलोकि कवि कोविद चकित कथि हारि उर आनि नेह होत मतवारे हैं ।

सन 1937 म इटावा मे बा समै की देश की नारी की का पुरूप समाज तक के
हृदय पै एकछत्र भाव ते छापी भई भारत कोकिला सरोजनी नायडू की आगमन भयो ।
सरोजनी के आगमन ते किशोरी विद्यारानी कौ मनऊ उद्वेलित है गयो । बा समै कि
किसोरवय की नारी सरोजनी के प्रति का तरिया भाव रखती ही या कवित ते जि सत्य
प्रमानित है-

कज की कमी से भसी सलना सलित आली, शांति शीलबारी है सुबाली मन भोजनी ।
उर तम नाशनी, प्रवाशनी, सुभाषनी है कोबिला कला निधान भव्य भाव खोजनी ।
विख्यात विश्ववधि स्ववालम्बन विचार की प्रचार उपकार सत्य भर काव्य भोजनी ।
परतत्रता मिटारन सम्हारन की सारे बाज आज भूमिताल हित श्रीमती सरोजनी ।

सरोजनी से अग्रोजन का भारत स्वतंत्रता के प्रति बिनके मन की सलक अरु कोटि-कोटि जनन का प्रेरित करके की अनन्य शक्ति से प्रभावित है कि भारत की परतत्रता के कलनामय दृश्य देखो विद्यारानी की कितोर मनुष्य कराह उठी । बिन बड़ी भावुक है कि सग न परतत्र देश की दुदशा की चित्रन करते भये चक्रधारी मतवारे श्रीकृष्ण से प्राधना करी ही कि हे चक्रधारी, अब तो जनम लै लै । विद्यारानी की कसिपय कविता की जि भावना निश्चित ई भविष्य में जाके सिद्ध भई । हम बिनकी 1937 की नीचे लिखी छंद ई देख लकी कि यू याकी सधन से बड़ी प्रमान है—

भारत की परतत्रता की पास दृष्टि जाय करना निधान भगवान ऐसी वर दै ।
पूजनीयाजननी के प्रति प्रीति पारें अरु मन से न टारे भक्तिभाव दूढ़ उर दै ।
भगवान ! भारत के भोरे भूमे सालन में उच्च भावनाहि भूरि भूरि उर भर दै ।
केतो चक्रधारी, चक्रपाणि, चक्रधर मतवारे चाल बाजिन न चकाचौध कर दै ।

विद्यारानी की पुरानी कवितान के पनान का पढ़वे से एक बात अरु सामई आई है कि ये नियमित रूप से या समै निकरवे बारी पत्र पत्रिकान का पढ़ती ही । पत्र पत्रिका के विसै में इन कविता अरु सबया में अलग-अलग पत्रन का लिखें है । ये पत्र निश्चित रूप से प्रकाशित भये होंगे पर भीत कोसिस करके पत्रिका में छपे पत्र की प्रमान इकठोरे नाय कर सके । बिन दिनान में इटावा से 'हितेपी' नाम की पत्र निकरती ही । या पाक्षिक पत्र में नारी के विसै में विसैस सामग्री छपो करती । या दृष्टि से विद्यारानी की कठाहार हुआ करती । दस पंद्रह कविता सबया विद्यारानी ने हितेपी सम्पादक का सन 32 33 के आसपास लिखी है । हितेपी के प्रति एक कितोर कवि की आलेख में विभाजित अरु बाके प्रति का होय ही याकी एक वानगी देखो—

समाचार आरु सलि लेख उच्च भाव भरे भगित सुधारता न जान अवरेखी है ।
'विद्या' कवियों की कहे कविता कला में कैंसी ओज भय भाव छुटि सुखमा विशेषी है ।
विविध प्रकार बहु विभता बखानी कोलो लेखनी नहै न गति कीरति अलेपी है ।
विख्यात ताकी विश्व बीच विपुल प्रमाण हर हाथन में हेरो स्वच्छ सुदर हितेपी है ।

विशोर अवस्था कि इन कवितान म भीतेरी जग अनायास भक्ति अरु सक्ति कसे प्रकट है गई है । ग्यान के महत्व कू प्रतिष्ठित करते भये बिना लिखी है—

कोऊ जाय जगनाथ कोऊ जाय बद्रीनाथ कोऊ वासीराज कोऊ प्रागराज घाए है ।
कोऊ करै जप तप कोऊ कर यग दान कोऊ नासिबै कू पाप गगा ही नहाए है ।
कोऊ माला फेरै फेरि पाठ बहुविधि कर कठिन तपस्या करि दह कू चुलाए है ।
ऐसे ही जजालन म भ्रमत फिरत सब 'विद्या' बहे बिना ज्ञान कोन मुक्ति पाए है ।

एक स्थान पे 'ते समस्या दीनी ही । महाभारत के द्रोपदी प्रसंग कू सक ते' की पूर्ति कवियित्री ने कसे सु दूर ढग सौ करी है —

मुनो करुना निषान मेरी वानधरो वान, द्रोपदी की साज राखी दीन हीन हुई पुकारे ते ।
गहे सु गरीब ते गरीब निज जानि जन, गज गोध गनिकादि प्रेम ते निहारे ते ।
टेरो जाने एक बेर ठाढ़े तुम ताके द्वार अकथ अपार निज जानि जन तारे ते ।
जाय क पुकारी तो अनेक बेर तुम्हें नाथ, 'विद्या' एक बेर कछु काम ना सुधारे ते ।

माई तरिया माल है' की पूर्ति कू बिना राम के अपार वैभव ते सेतु बध रामे-
वर कू बाधवे के प्रसंग कू माल है म पूर्ति करी—

सेतु बाधवे के हेतु सटक सटक कपि कटक के कटक उखार पेठ डाल है ।
पनि पनि पाहन पयोनिध पटक बट पादप पकर पुनि नाचत निहाल है ।
षपरि षपरि विद्या कूदि-कूदि चिक्करहि बाव ही सौ चलत षपलता की चाल है ।
राम के अनुग्रह बनत अध्नु ह अपार दखत न आज कपि करत बमाल है ॥

माई तरिया नद जू के छिया की मनोहर रूप अरु प्रेम सहज नेह भवतन के मन म
स्वाभाविक प्रेम उत्पन्न करने की विराट शक्ति कू माल है के प्रतीकन म कंसी सुद-
रता के सग विरोधी है ।

नद जू के नदन निरखि नर नारी सब झूमि झूमि झुनि झुनि होवत निहाल है ।
मुरमो मनोहर मुकट सिर सोभित सलोनो स्मरमय विद्या बोवत रसाल है ।
श्रीनो श्रीनी झपुली झनक पग झुझुन की झनझोरि देत बनीं घुपरासे बाल है ।
मघनि मघनि घनि देत दत उत वित सोरन लगत गल भक्तन की माल है ।

याई तरिया कवयित्री ने दुर्गेश नदिनी के प्रतिष्ठ अपने भाव सुमरन कू प्रकट कीनी है । उदाहरन कू हम तीन छंदन कू प्रस्तुत कर रहे है-

जजयति जै दुख दरणि देवी ।
 चरण बंदत सुर अनंदत नेह युत सब करत सेवि ।
 सति, एक विभक्त लखियत भक्ति भावति भिन भूर ।
 मुदित मन जनकर तिनकी सकल बाछा पुरत पुर ।
 भायवनी अति भया ननीन विचित्ररूप सम्हारि चेति ।
 जगत बिचरत फिरत उर के हरत तम दुख कम न देति ।
 देवि बनो का मुजस तुव हों बनी कुमसी कुमारि ।
 नमहू बारहि बार, राखहु सरन मे 'विद्या' निहारि ॥



देवी तब मूरति नैनन माहि ।
 बसहि निरतर घाय जासु के को सम तास लखाहि ।
 बसहि निरतर घाय जासु के को सम तास लखाहि ।
 जा सरूप कह देव मुनीस्वर लखिबो बहि ललचाहि ।
 सुखभय सर्वाहि सराहत नीकी ऊपमा कवन लगाहि ।
 सो तुव रूप अछेह छवियुत निरय निरखि हरसाहि ।
 मे कुबुद्धि पापिनी छमिय त्रुटि कहत तुमहि सकुचाहि ।
 एक यह बह चाह बसै उर अतिम विनय मुनाहि ।
 विद्या बसो नह युत मम हिय अय न कछु चहाहि ॥



मात १ मोहि दासी अपनी बनाउ ।
 बरदायिनी दया उर धारे अघन तरनि सो सुभाउ ।
 मैं तो सब विधि हीन दीन हू परी तुम्हारे पाऊ ।
 देखो नैन उधारि दसा मम तपत तपनि मिटाऊ ।
 कीही किरपा सराहू कहा लौ आनन्द उर न समाऊ ।
 अब लग दया विपुल दरसाई सोई नित दरसाउ ।
 वरद हस्त धरि सीस हमारे कबहू नाहि हटाउ ।
 विद्या हिये रहै निसि चासर दैवि तुम्हारो पाऊ ॥

राजस्थान व्रजभाषा अकादमी नै ई या बरस 22 दिसम्बर, 90 कू धीनाथ जी की जगरी नाथद्वारा मे इनकी सावजनिक अभिनदन कीनी है । इनकी कविता मे महादेवी

वर्मा की सी स्वाभाविक सय सूर की सी भक्ति अह तुससी की सी तनमयता है । राज-पूतन के परपरित घरान म अपना सिगरी जीवन व्यतीत करते भये ऊ इन्ने धपन मन के भावन मू कविता म उतारवे मे नैकऊ सकोच नाय कीनी । इन्ने जी अच्छी लगी बाप खुल के लिखी जो बुरी लगी बापे निसकोच भाव ते अपने बागज मे उतारवे म पोछे इनको ब्रजमाया के अलावा भीत सारी साहित्य हिन्दी म रची गयी है । इनका 'अमरसिंह राठीर' नामक नाटक ऐसी है जो आजादी के पैसे लिखी अह सेली गयी । बाकू खेलब के पीछे जनता मू आजादी के महत्व कु बतानो हो । अंग्रेज सरकार ने बा नाटक मू जबरदस्ती रोक लगवाई ।

काव्य सौरभ

ब्रज-रस

बहि है रसधार महा जमक जिहि डूब सबे सुख सो रहि है ।
दुरि है दुख दीरघ जीवन के ब्रज रनु सरीर मती जिहि है ।
तरि हैं भव सागर पार करें उर श्याम मनाहर को गहि है ।
चमि हैं ब्रज कु ज निकु जन मे जिहि वासुरिया मधुरी बजि है ।

यजि है मन प्रीत सुरग जब मधुरे बज बोल हिये सजि है ।
सजि है घनश्याम सुधारम से भद मोह मनोज दुरे तजि है ।
तजि है यमराज सन नम सों अनुराग धुरे ब्रज को भजि है ।
भजि है मन कु ज निकु जन म जिन कु जन मे मधुरी बजि है ।

वियोग वात्सल्य में डूबी यशोदा शान्ति साधिका

जैपुर की पुरानी बस्ती के नाहरगढ़ की सरक पर एक छोटे से मकान माहि श्रीमती शांति साधिका नाम की कवयित्री गत तैंतालीस बरस से काव्य रचना कर ब्रजभासा के कोस की अपूर्व बढि रही है। जा साधिका कू ना तो प्रकासन की चिन्ता है नाहि यस को लोभ है। छोटी छोटी सी कापीन के पन्नान में रात रात जग के इन ब्रजभाषा के हजारों पदन की रचना कर डारी होयगी। ब्रज भासा के अलावा हिन्दी अरु राजस्थानी भासा के पदन की रचनाऊ इनके कवि हृदय से भई है। इनके काव्य में श्रीकृष्ण की आराधना बेटा के रूप में करि गई है। रात के बारह बजे हो, दो बजे हों, जब सबतो ससार अपने पताक बन्द करके मीठी निदिया में सो जाय बा समै शांति साधिका रात रात जग के अपने बेटा श्री कृष्ण की अनुपम बाल छवि की एक मलक भरी झलक देखे कू रोमती रोमती अपने भावन कू टूटे फूटे कापीन के पन्ना में उतारती रहे है। आँखिन में ते वियोग के असुबा मैया शांति साधिका के गालन पै ते दुरकते कापी क पन्नान प परते रहे हैं अरु कविता के सब्द ढरते चले जाय हैं। वियोग के असुआन ते लिपटे भए जे सब्द निस्चैई ब्रजभासा केई नाय अपितु हिन्दी साहित्य के वात्सल्य वियोग के अनुपम रत्न हैं।

आश्चर्य की विसं तो ई है क गत इकतालीस बरस ते शांति साधिका नियमित रूप से काव्य रचना कर रही है। परि हिन्दी साहित्य के काक निठुर समीक्षक को ध्यान जा मैया की तरफ नाय गयो। गत बीस बरस ते तो अपने बाल बचन के बीच में रहते भएऊ मैया साधिका पूरी तरिया सन्ध्यासनी बनी भई है। इनके रहस्य की कमरा अलग है साग सब्जी ते लेंके अय सबतो काम मैया अपने हाथ ते खुन्ई करे हैं। घस कमरा में झालरापाटन के द्वारका नाथ जी के मंदिर की प्रतिमा की फोटो इनको एव मात्र सहारी है। जार्ड की सामे बैठ के हिचकी लेमती भई मैया साधिका अपने मन के भावन कू काव्य में बिखेरे हैं। कमरा माहि द्वारका नाथ की प्रतिमा के चारों तरफ चित्र लगे भए हैं, जामे बाऊ में मैया साधिका ने अपने आराध्य कू भगवता विमोर है के भुजान म भरि रखी है, बाऊ में वू प्रतिमा कू फूलन ते ऐस खिलाय रही हैं, जसे साच्छात अपने बेटा

कू मनाय रही होय, बाऊ म नू विनवे धरनन म बैठे के क्षर पर असुआ बहामतो भई वात्सल्य बियोग माहि आकठ हूयो भयो ह ।

छरहरे वदन की छ फूट ने आस पास लम्बी बरी बरी आसिन अरु तजस्वी लताट बारी सात अरु सौम्य दाति साधिका की पूरो नाम श्रीमती दाति पावे हत । इनकी जनम सवत 1971 के आपाढ़ कृष्ण प्रतिपदा क दिनां झालरापाटन माहि वज हिंदी अरु सहित भासा के प्रमिद्ध कवि निरी निरधर शर्मा नवरत्न के घर भयो ह । मूल लच्छन मे पैदा है वे के वारन इनकी नाम दाति धरी गयो । पिता नवरत्न जी इनकू घर प सटहू के प्यार भरे नाम ठे पुकारो करे हैं । अपन बाबूजी से मिले काव्य सस्कार अरु घर के मनोहर अरु रमनीक वा-मय वातावरन क कारण इनमें बचपन सेई काव्य रचना की रुझान पैदा है गयो । आठ बरस की लहौरी सी अवस्था माहि नवरत्नजी की जा प्यारी मटहू न विनकी दत्ता दत्तो अपनी पहली कविता बनाय डारी, यामे श्री वृत्त कू चार पासीन मे सहानो दियो गयो हो । पिता नवरत्न जी ने जा कविता कू सुनिक अपनी मटहू कू कठ ते लगाय की भौन- गीत आसीबाँद दीनी । सन् 1929 माहि इनकी 15 बरस की उमर मे जैपुर के सिरी राधागोपाल पावे त ब्याह भयो । सन् 1949 त जैके सन् 1971 लो रिशायर है वे ललक श्रीमती साधिका 1 राजस्थान सरकार की छात्रा सिन्ध्या विभाग माहि अध्यापिका रह केऊ सेवा करी हो । इनके पतिऊ राजस्थान सिन्ध्या विभाग मे अध्यापक है । सन 1971 के आस पास इनकी देहात है गयो । इनके अनक पुत्र पुत्री भए पर विनम स एक पुत्र अरु चार पुत्री जीवित हैं ।

झालरापाटन के द्वारिकानाथ जी साधिका जी की बाल्यावस्था त आराध्य रहे हैं । समार के दुख दण्ड अरु पारिवारिक जीवन की ऊहा पोहन के कारण इनकी मन धीरे-धीरे अपन आराध्य मिरी द्वारिकानाथ जी की तरफ निचतीई चरयो गयो । ई कही जाय है कि पीरा अरु बेदना की टोम की धरती पेई तनाभिराम माहक सुमन खिले हैं । ऐसी एक ददनाय धटना नें इनके काव्य मन कू इतैक टीस दीनी हो क इनकी भावुक मन की काव्यमयी पीपल धारा रोजीना एक दा पदम में निर तर भाव ते बाई दिना ते कागज पे उतर रही है । जि धटना सन् 1940 की झालरापाटन की हत । इनकी नो बरस की सक्ति नाम की लल्लू वृत्त वृत्त करती अपनी मैया अरु नवरत्न जी के सामर ईसुर की को प्यारी है गयो । बाई टिना ते इनके मन की वात्सल्य बियाग की ऐसी आनद भरी ऐसी दरद भरी अरु ऐसी कहना ते भरी भयो काव्य फूटो जो आज लो अनवरत गति से बह रही है ।

अपने बेटा की वृत्त वृत्त करती नई जा असामायिक भीत ने कबदिनी मैया गाति साधिका के मन म श्री वृत्त के नटखट बाल स्वरूप की ऐसी सनक अरु आतुरता मन

मे भर दीनी जा की अनुपम छटा इनकी कविता में भरी परी है। मीरा ने अपने काव्य माहि श्री कृष्ण को प्रेमी माना है पर जा साधिका ने सिरि कृष्ण के बाल-भाव को मैया बनि के आराधना करी है। ब्रज माहित्य माहि कवि ने मीरा कृष्ण की अधिकांश प्रेमी अथवा पति मान के उपासना करी है। मूरदास जैसे कछु कवि ने कृष्ण के विभिन्न लीला प्रसंग में कृष्ण के बालभाव को बाल-भाव भरी चित्रण करी है। परि ऐसी कवयित्री अबई ली शांति साधिका के सिवाय दूसरी देखि म नाय आई जानै मैया बनि के अपने काव्य ससार में रोमते बिलखत कृष्ण की आराधना करी होय। मैया की भाव जगत के सम्बन्ध माहि सवन ते पावन भाव है। मैया भारी कंठ उठाय के अपने लाल की पालन पोसन करै है। मैया की आखिन के सामे ते बाकी बेटा एक छन कू ओझल हो जाय है तो बाकी मन कितेक बिहल है जाय है जाके विसे माहि कछु कहवे की जहरत नाय। बेटा की एक छन की छुपाव जब मैया कू इतैक हिलाय के घर दे है तो बा मैया की कल्पना करी जो 33 बरस ते अपने बेटा कृष्ण की आयवे की बाट देख रही है। जा प्रिय बेटा की याद माहि खायबी पीयबी, उठबी बठबी चलबी फिरबी सबई तो जाकी देहाल है गयी होय। अपने छबीले बेटा कृष्ण के दरस परस कू रोमती-रोमती जा मैया के हिरदै की एक भाव हम अपने कथन के समयन कू प्रस्तुत करि रहे है।

काहा रे ! तोहे साधिका मैया बुलाये,
काहा मन भा ना लाडले, लाल रे
तोहि साधिका मैया बुलाये
आ जा मन भावने लाल रे ! गोपाल रे ॥
भूजबंद रे ! गोविंद आनंद कंद रे ॥
तोहे साधिका मैया बुलाये ।
अवीरल तरी रदन लगाये
पल भी ना बिसराय" हो हा
काहा मन मोहना लाडले ! लाल रे ॥
गोपाल रे ! श्याम रे ॥ धनश्याम लीला धाम रे ॥
तोहे साधिका मैया बुलाये
आजा रे ! मेरे कुंवर कहैया
कहि कहि डेर लगाये" हो हो ।

अपने सलीने अरु माखन घोर बेटा कृष्ण के वियोग माहि जा मैया की मन इनके काव्य के एक एक सन्द में बिलख रही है। रात रात, जागते जागते बेटा गोपाल के वियोग माहि रोमते रोमते जा साधिका ने अपन मैया भाव की काव्य में ऐसी निगूढ़

अभिग्यक्ति करी है, जाके मूखे भए भावन कू पढ़िके सहिरदय की मनुआ भावन की करना के धानद म डूब जाये है। मैया साधिका दिन रात अपने बास गोपाल के गुनन कू गा रही है। बाके चरनन की बलि जाती भई वू बरे एकटक भाव ते बा दिना की लसक मे जीवित बँटी है वी बाट देय रही है जा दिना बाबू अपने बेटा के दरसन होइ गे।

तुमरे चरण कमल बलि जाऊँ ।

मेरे बास गोपाल गुसाई, निर्गि दिन तुमरे ही गुण गाऊ ।

तुम बिन पल हू चन न आवैं, नित दरसे को नेम निभाऊँ ।

तुमरे चरण ।

अन्तर लगन सगी इक तुमते, अरस-परस अति आनन्द पाऊँ ।

शांति प्रभु समदर्सी स्वामी, प्रतिदिन तुमरी दहल बजाऊँ ।

तुमरे चरण ।

कृष्ण के बास गोपाल के रूप के दरसन कू माधिका जी के रोम रोम ते भावन की भागीरथी फूट परी ही। जाई भाव की एक मनोहर झाकी या पद भाँहि देखिबे सामक है —

आराधना मैं करूँ तिहारो ।

साँचे हिय सौ करूँ अचना ।

स्वास स्वास ते नाम उचारो ।

औ । मेर आराध्य जनम के ।

ती पर तन मन जीवन बारो ।

आराधन मैं करूँ तिहारो ।

आरि मेरी एक निभाओ ।

धरन मेह की लाज बचाओ ।

शांति दयानिधि अरस परम हो ।

भव सत्ताप मिटाओ आओ ।

आराधन मैं करूँ तिहारो ।

अपने बेटा कृष्ण के वियोग माँहि मैया साधिका की मनुआ इतक लो जाय है इतन डूब जाय है के बाय ई नाय पनी रहे वी खली मनमोहन अहीर

को लाडली बेटा बाके ढिग नाय । वाके भाव ससार के साम तो बाकी प्रात पियारी,
बसी घारी, गोविन्द बिहारो, भाखन चोर बाके ढिगई भीठी मोठी तान भरी निंदिया मे
सो रह्यो है । पो फट गई पछिन को भीठी भीठी कलरव चारो तरफ गूँज रह्यो है ।
पूरव की ओर धीरे धीरे ललाई आयबे लग गई । सूरज की पावन किरनन के परस परतेई
लाडलें छेल छबीले के प्रिय सुमन कमल खिलवे लग गये अरु साधिका देखें हैं कै बाके
नेनन को तारो बेटा द्वारिकानाथ अबई लौं सो रह्यो ह । मैया भीत चाह ह बाये उठाय
कै अपने हिरदै ते लगाय लें । परि बाय कैसें उठावे । वियागिनी मैया रोमती-रोमती
असुवन के वियोगी आनन्द माहि डूबती भई गामती आय रही है-

भोर भयो अब जागो यदुराई ।
जागो रे । यदुराई, द्वारिका नाथ परम सुखदाई, भोर भयो ।
पो फटी पछी बन बोले, पूरव यही छाई अरुणाई ।
लता बेल तरु पल्लव डोले, जड चेतन चेतनता आई ।
जागो रे । भोर भयो अब जागो ।

वियोगिनी मैया के भाव ससार की सलोनी बेटा नन्दनन्दन इतके पैऊ नाम
उठें हैं का, करै विचारो मैया अब वू अपने बेटा कू तरै तर लोभ दे है-

श्याम बाल अगना माहि ठाडे, कटुक धकई भवरा लाई ।
मयना खोलो हरलि विलोकी, तुम कू नई मुरसी भगवाई ।
जागो रे । भोर भयो अब जागो ।

मैया शांति साधिका जैसेई अपने अलौकिक काव्य के भाव ससार से जगत के
भावन म प्रवेस करै है तो बाकी आख फटी की फटी रह जाय, हैं । न तो बाके ढिग
सलोनी बेटा है अरु नई बाकी वू अनुपम छवि हत, जाये वू बिभोर है कै तरै-तरै के लोभ
दैय कै उठाय रही हो । अपने बेटा कृष्ण के वियोग वास्तव्य की वेदना के छन, मैया
साधिका कू असह्य है जाय है अरु वे कविता माहि आ तरियाँ फूट परें हैं-

अब मैं मरूँ कै जीऊँ रे, बह्राई ।
तैंने नेह लगा के बिराई ।
हाय, मरूँ कै जीऊँ रे बह्राई ।
तैंने प्रीत लगा के विसराई ।
पहलैं तो तू आ जातो रे ।
हाय, राम रे । अब वयूँ अकड दिखाई ?

ब्रज साहित्यई का, हमारे भारतीय साहित्य साहि सायदई काई 'तेमी कवयित्री मिलै जानै सिरी वृत्त की मैया बनिव राय राय क बाबे दरसन कूँ' चेना भरे काव्य की रचना करी होय । मीरा की सबती काव्य मधुर भाव के विरह की काव्य हतै । प्रिय के मिलन की काम प्रयत्न वेदना है । परि गाति साधिका के काव्य माहि तो अपने वग वृत्त की एक सलीनी ललक कूँ रोमती धिलपती मैया ती निरमल हिरद है । या दृष्टि ते साधिका जी की काव्य ब्रजभासा के सग मग हमार देख की निश्च ई अमूल्य निधि है । रात-रात जागत जागत अरु रोमते रामत वृत्त के वियोग म साधिका जीने अपन मनुष्य के मैया भाव की वेदना कूँ काव्य माहि करी मोहवता के सग उत्तारी है । विद्याम आत्सल्य की करना की विराट रूप देखनी होय तो गाति साधिका के काव्य ते उत्तम स्थल अरु का है सक । मैया रोमती जा रही है हाथिन म निपटी भई कलम ते सव्य छलकत जा रहूँ हँ अरु आखिन की नीर पद्मान पै टपक रह्यो है । मैया के अनुबन की करना ते लिपटे भये पद्मान म ते एर दलिव जोग है

प्यारे गोपाल लाल

झर झर म झरत नैन ।

सुम बिन न आवत चैन ।

बैरी लगै दिन रन ।

का मी कही हिय बैन ।

कोलो कछु बाला भा ।

तोहे साधिका भया बुलाय ।

ना कुछ लाये ना कुछ पीये ।

प्रति पल गान हो हो ।

काहा, मनमोहन सात रे ।

प्रति पल हृदय विनाल र ॥

तोहे साधिका मैया बुलाये ।

मारी सारी रात पथ निहारे ।

पल क्षपक नहि पाये हो हो ।

काहा मन भावना, सादल लाल रे ।

गोपाल रे । ब्रज चंद रे ॥ गोविंद जानंद कंद रे ॥

तोहे साधिका मैया बुलाये ।

शाति प्रभु नव तो सुधि ले ल ।

प्राण हलक थ लाये हो हो ।

साधिका अनुनय बिनयकरि अपन प्रभु अति दयाल बाल गोपाल नदलाल ते बेर-बेर दरसन दैकें प्रिताय करिये कौ निवेदन करे है । ऐसे अनेक पदन म नू परम्परागत भाव ते आराधना करती सी दीख है । नीचे लिखे भये पद मे जाई तरिया कौ भाव पूरी प्रखरता के सग प्रकट भयो हैं । जा पद कौ 'देवहु दरस भाई' अपने बेटा के दरसन नूँ-बाट देखती देखती थक सी गई बिहाल मैया कौ भाव विशेष रूप ते दरसनीय है

हारिकानाय ! करुणानिधि ॥ देवहु दरस भाई ॥
मेरे प्रभु अति दयाल बाल गोपाल नदलाल ।
भक्त-बच्छल-दीनानाथ सतन सुखदाई ।
अति समय साई आप-वारण दोख सोक धाप ।
जापे आप सदाय भये साहि आंच न आई ।
पाप ताप हरणनाथ मेरी लाज तुम्हारे हाथ ।
धाति अही आस लिये तेरी शरण आई ।
पतित पावन परमानन्द काटो भव जाल फद ।
अरस परस होई नाथ पाटो विपद छाई ।
आहि माम ! आहि माम ॥ दोख मेरे ना ही गुना ।
आन मिलो ससन, अबै छाँड़ि के निदुराई ।
हारिकानाय ! करुनासि-धु ॥ देवहु दरस भाई ॥

सलीने बेटा की याद के बियोग म मैया कौ सरीर दहक दहक रही है । आँखिन ते झर-झर अँसुआ गिर रहे हैं । कठ अबिरुद्ध है गयो है रोमते रोमते । बाय एक छन कौऊ चैन नाथ

दहक दहक दह दहकत काया ।
झर झर झूरत नैन ।
धाति सबद केहि भाति उचारी ।
मुख तें बहत बने न ।
अर ! किमि सहि हो पूरन चैन ।

पीरा के छनन मे छनन मे हरेक कूँ अपनी मैया याद आवे है । दान्ति साधिका की बाल गोपाल के दरसन की पीरा जब भौतई तीव्र है जाये है तो बिनके काव्य माहि-अपनी मैया के सुमरिन के सग जि पीरा एक सग बिनके भाबना म फूट परे है । ऐसे

स्थल पै व गामती गामती अपन बाल गोपाल की बाकी छटा पै मुग्ध होती भई अपन मन कू माति द है-

माई री मेरो मन हर्यो द्वारिकानाथ अनि दयाल बाल-गोपाल नदताल ।
 मोर मुकुट सोछ कान कुण्डन जगमग विसाल ।
 दम दमात चिबुक ब्रज कठुला कठ मुत्ता माल ।
 कमल नयन कजरारे गोरोचन तिलक भास ।
 झुकि झुकि रस मत मुख कमल पै चिबुर भृग-जाल ।

सुनत रहू तुनने बैन, अनहद ध्वनि मधुर ताल ।
 रघी सुरग स्याम रग टूटे भब बध जाल ।

शान्ति साधिका जर बिनकी काव्य अबई लौ समीच्या जगत ते परिच प्राप्त नाय कर पायी है । साधना मय जीवन व्यतीत करती भई शान्ति साधिका आजकल मौन भाव त अपने भेटा कृष्ण की याद माहि अपने मनुष्य के वियोग के भावन कू सम्बन्धन म दारिद लगौ भई है । बिनकी पूरौ जीवन साधना ते ओत-प्रोत है । बिनके भीठे भीठे सम्बन्धन मे भावना कौ सागर हिलोर लैती भयो सहिरदे के मन कू आनन्द में डुबाय दे है । ब्रजभासा के सग सग हिन्दी अर राजस्थानी भासा मेरु इन्ने काव्य रचना करी है । परि, इनकी अधिकास काव्य ब्रजभासा मेई रच्यो गयो है । जाम इन्ने रसिया ऊ सिधे हैं । कविता की सुन्दरता ते प्राप्त यस आदि की शान्ति साधिका कू कतई चिन्ता नाय । साहित्य के ममय्य विद्वानन कू इनके आ वेरनामयो साहित्य की रच्या करनी चाह्ये । छोटी छोटी कापी के पन्नान म लिखे भये हजारो पद एक ते दूसरी जगह बिलरे परी हैं । प्रकासन की चिन्ता ते मुक्त शान्ति साधिका ने आ कारन कापीन के पन्नान कू बिसेस सम्हार के नाय रखी ।



प्रसाद अरु माधुर्यगुण के अनुपम चितरे

श्री हीरालाल 'सरोज'

हीरा लाल जी शर्मा सरोज की जनम गोबड़ न के पास गाम गाठौली म 20 अगस्त, 1929 कू भयो। पिता श्री श्याम लाल जी अरु मैया गोमती देवी सरल सुभाव अरु धार्मिक भावनान सो ओत प्रोत ही। भरतपुर के गाम पीपरा म श्रीमती गुलकन्दी देवी सो इनकी ब्याह भयो। य करीब 30 बरस तानू भरतपुर के श्री सनातन धर्म हायर सैकण्ड्री स्कूल के अध्यापक अरु प्रिंसिपल जैसे पदन म सुसोभित करते भये अबई ६ बरस पैले ई रिटायर भये हैं। आपन आगरा कॉलेज सँ अगरेजी मे एम ए कीनी। अग्रेजी के अध्यापक के रूप म आपकी प्रसस्ति ब्रजमडल म बहु दिस फैली भई है। अनुशासन के प्रति समर्पित श्री हीरा लाल जी न जीवन भर अपने विद्यार्थिन कू अनुशासन को पाठ पढ़ायो हैं। याने अलावा श्री हिंदी साहित्य समिति ते ऊ आप बरसन ते जुड़े भये हैं। हिंदी साहित्य समिति की प्रबन्ध समिति के माननीय सदस्य हैये के कारन अनेक बरसन ते आप या सस्या की रचनात्मक गति विधिन मे अपनी अमूल्य योग दे रहे हैं। विद्यालय की नियमित अध्ययन अध्यापन अरु प्रसासन ते अवकाश ग्रहण करे पायें गत दो बरस ते आपने सिंगरी समै भरतपुर जिले की प्रतिष्ठ आवासीय महिला शिक्षण संस्थान 'आय महिला विद्यापीठ, भुसावर' कू अपित कर राख्यो है।

श्री हीरा लाल सरोज नै गद्य अरु पद्य दोनू छेत्रन में अपनी कलम चलाई है। आप जैसे अपने जीवन म नियमबद्ध रहके काम करके के विस्वासी हैं, वैसेई अनुशासन प्रियता की सटीक आलोचक इनकी रचनान मे बिसरी परो है। ब्रजभाषा के प्रति इनके मन की एकनिष्ठ समर्पित भाव अनायासई मन कू उद्बलित कर देव है। रस की खान ब्रजभासा म एक ते एव सरस कविन नै अपने मन के माधुर्य को गगाजल उहेली है। परिणाम स्वरूप ब्रज भाष्य की महक चारों तरफ ऐसी अद्वितीय अनुभूतिन ते भर गई है जते मन प्रफुल्लित हैवे दिव्य रम मे डूब जाय है। यई भाव कू सँके बिधे ब्रजभाषा महिमा म अपनी कविता की बसम चलाई है। विचार कू गद्य म प्रकट करनी तो भी

आसान है, परि पद्य ॥ विस्तार की सीमा अरु समझायबै के सहजे के अभाव म बढो कठिन है जाय है । और अगर कविता छन्द की सीमान म बधी भई होय तो वाकी कठिनाई भीत बढ जाय है । रससिद्ध कवि के सामई या तरियाकी कठिनाई नाय आवै । या दृष्टि से श्री हीरा लाल सरोज की काव्य विचार अरु भाव के सग दूध अरु पानी की तरिया ऐसी तादात्म करव चलै है वै बाय असग नाय कियो जाय सक । ब्रजभाषा की महिमा के छंद हमारी या बान की सबस बढो प्रमान है । याई सदन म रमछान क 'छछिया भर छाछ' जैस प्रमगन की कैंसो अनूठो प्रयोग विप्र कीनी है । नीचे लिखे या उदाहरन त स्वत स्पष्ट है -

ब्रज भाषा मुकुमारि अनि, है ई रस की खान ।
बहे बटे सुकवीन क, जाभ सने बितान ॥
जामै तन बितान रसील रस अधिकाई ।
सतरंग सौरभ भरयो, न बरनी जाय निवाई ॥
ब्रह्म रह्यो है नाचै एक छछिया की आखा ।
सिब ब्रह्मा छवि छकै घम सोको ब्रजभाषा ॥

याई तरिया हीरा लाल जी ने अपने छोटे छोटे सरस छंदन मे ब्रजभाषा के श्रेष्ठ कविन के काव्य सौंदर्य अरु प्रियकी कविता के बध्य के आलोक कू छाटी छोटी कुण्डलीन म ऐसी कुमलता के सग पिरोयो है के बाये पढ़के सम्बन्धित कविन के काव्य वैशिष्ट की झाकी एव सग मिल जाय है । आज चाहे कविन के काव्य सौंदर्य कू लैवे लिखे गय छंद आदरणीय नई होय पर ध्यान दवे की बात है के जब हमारे देस म गद्य की ऐसी विकास नाय भयो हो तब बाके साव्यम सौ विचार कू गति दई जा सक ई । या ममे ब्रजभाषा क छंदन मेई कविन के काव्य कौशल कू प्रकट करव की परम्परा हो । हिंदी खड़ी बोली के विकास अरु गद्य छन म याक विपुल प्रवस के कारण कविता क मंच सौ कवि कौशल के वैशिष्ट कू प्रकट करव की परम्परा धीरे धीरे लुप्त हो गई । हीरा लाल जी ने अपनी कवितान म निजीव पडी ब्रजभाषा की या कला म नये प्रानन की सचार कीनी है । विप्र सूरदास यतिराम, मृदन लाल कवि जैस भीतर कविन क काव्य कौशल कू कुण्डली छंदन म या तरिया पिरोयो है के एव सग कवि के काव्य गौरव की झाकी मिल जाय है, जो बागर म सागर की उक्ति कू पूरो तरिया चरिताप कर है । मूरन श्री कृष्ण की लीलान म जो वात्सल्य रस की मजुन जमुना प्रवाहित कीनी है बाकी आलोक कौन एतो जिनामु काव्य प्रेमी है, जाके हृदय म यू नई पौषो हाय । मूर के प्रतीक आदि सबन की प्रयोग हीरा लाल जी ने करवै एव कवि के काव्य सौरभ कू एव-एव स्थान प प्रगट करवै की चतुरता दिखाई

है। सूरदास के विसै में बिनै लिखी है। देखो उगाहरन अरु हमारी बात की परख करो—

सूरा तोको घय है, सरजन कियो अपार ।
बाल कृस्त नीलान सौ, भरि डारयो भडार ॥
भरि डारयो भण्डार, कहूँ पै धेनु चराब ।
ब दा मागै मातु कहूँ नवनोत चुराब ॥
ग्वाल कर किलकारि, मोद मन है भरपूरा ।
बात्सल्य बेछोर, घय तोको है सूरा ॥

याई तरिया जब बे सूदन के काव्य व्यक्तित्व कू एक छन्द में बिराबै प्रयास करै हैं, तो बिनकी सैजी, उक्ति बेचित्र की भगिमा दूसरी तरिया की है जाय है। सूदन आज के कवि हैं, इन्हीं युद्धन की आखी देखो चित्रन कविता में कीनी है। सूदन के काव्य की सबसे बड़ी विशेषता है कि बिन्ने अपने छन्द में पात्रन की मनोभावनता अरु बिनके वात्सलाप कू लिखी है। पात्रन के या कथनक की सबसे बड़ी विशेषता है कि बिन्ने पात्र के अनुसार बाकी भासा में अपने कवित्त, सबेया अरु छन्द रचै हैं। सूदन के कविता की ई विशेषता ऐसी अनमोल काव्य सौंदर्य से लिपटी भई है, जो रीतिकाल के दूसरे काऊ कवि में दूढ़ से नाय मिले। प्रमान कू उदाहरन प्रस्तुत है—

सूदन पूसन से उगे, ब्रज मंडल के माहि ।
सिरज्यो सूरज की चरित उपमा दूजी नाहि ॥
उपमा दूजी नाहि, सप्त जुझन में धमकयो ।
भूषण-चन्द समान बीर रस भारी गमकयो ॥
अलकार बहु छन्द कवित्त कानन के भूसन ।
भासा पचाभृती बाह रे । कविवर सूदन ॥

हीरा लाल जी न रितु वरनन केऊ भीतरे छन्द लिखे हैं। ब्रज भूमि पे झूमते भये कारे-कजरारे मेघ कवि के सवदन में ऐसे लग हैं जैसे नील, पीत, स्याम रंग के मेघन में जैसे रंगोली मचा डारि, हैं, अथवा बादर ये वाकास में ज्यों बादर नई है व जे मदमस्त गजराज हैं, जो झूमते भये गरज रहे हैं। पावस के मेघन की उत्प्रेरकता की लड़ी पे लड़ी अरु रूपक की बहार अरु उपमा के भीने भीने सौंदर्य के संग नितैक रमणीय भावन के साथ या नीचे लिखे कवित्त में उतर हैं ये बादर देखो—

क्षुभ-क्षुभ क्षुभ क्षुभ, घिरि जाए बजरारे,
नील पीत स्याम, रंग रंगोत्ती मचाई है ।
पवन के झरोरे पाय, डोलत हिंडोरे से,
मत्त गजराज करें, नभ ज्यों नचाई है ।
रेलन पेसत है, दामिनी सग भेतत है,
खेलत हैं खेल, खूब कर सरजाई है ।
दोरि दोरि परस्पर, वारें हैं पहारै नभ,
मेघमाल आय झरि, भडक मचाई है ।

वसन्त की बहार पानस भी तरिया बज नूमि मे एक मीठी-मीठी गुदगुदाती आनन्द
चरसाय है है । हीरा साज जीर्ण अपने बग त चित्रन म ऐसी संग है क थी महिला
विद्यापीठ भुसावर के आम पास के वसत ई वसन्त के मीदय कू साकार कर दीनी
हाम । महिला विद्यापीठ के दोनू तरफ आमन क बाग है । जाय सबेरे सखा फागुन क
मौमम म अपनी मीठी तान छेडे है । याके संगई दर तानू फल भए पीरे पीरे फूलनते लदे
सरसों के खेत देखतेई मन मे अनूठी रस घोर देय है । भुसावर के वसन्त की या अनुपम
छटा कू आमद के विभार है के नीचे सिले या कवित्त म कवि ने सुमई देल स्या कितनी
सुंदरता के संग साध्यी है—

आयो सहराती इठलाती, शत्रुराज मत्त,
जगल म मगल, सुराज सरसायो है ।
गामत रसासन मे कोकिला, रसीले गान
मलि-दन मन आनंद अपार सहरायो है ।
मन्द बहै मलयन सुमीतल सुगध सनी,
राम-रोम बलिनि, नबेलिनि हरपायो है ।
ऐसी लसै सरसों, चुनिरमा छारि केसरिया
सुबरन के सुराज ज्यों मुहायो भिजरायो है ।

हीरा साज सरोज जीने अपने काव्य म परम्परा के निर्वाह के संग-संग आधुनिक
जन-जीवन कू प्रभावित करवें वारे प्रसंगन कू बी कुण्डली छन्दन मे बड़ी खूबसूरती के
संग उतारी है । राजनीति, येहगाई देम प्रेम जैसे जीवन के विभिन्न प्रसंगन पें इन्हें अपने
काव्य मे खूब कसम खलाई है । ऐसी संगे है कोई बात बिनकू बुरी संगे तो वे
सरसाज कुण्डलि छन्द म अपने मन के भाव कू प्रकट कर देय है । अबई कसु दिना

पैले हीरा लाल जी मेरे सग बैठकँ अखबार पढ़ रहे हूँ, बा दिना समाचार पत्र की प्रमुख खबर ई कँ सक्ति के बल पे ईराक नै छोटे से देस कुबैत पे कब्जो कर सीनी । हीरा लाल जी या बात ते बड़े उद्वेलित हे । तत्काल बिघ्न लठिया जाकँ हाथ हे सब बाई कँ साथ लँके नीचे की छद लिखिबँ अपनी वेदना प्रकट कीनी । या नीचे लिखे छद ते आप स्वय निरनय कर लेओ कँ हमारी कवि हीरालाल राष्ट्रीय समस्यान के प्रतिऊ सजग नाय अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पे प्रभावित करब बारी समस्यान के प्रति ऊ पूरी तरिया जागरूक हे देखो छद-

लठिया जाके हाथ हँ 'याय बाइके साथ ।
उल्टी-सूधी सगमसी, सग जग नाबँ माथ ॥
सब जग नाबँ माथ सघ राष्ट्रन को डरपँ ।
सुरसा मुख कौ फार बिदेसन देसन हरपँ ॥
सकती बारी लँठ और सबई हँ घटिया ।
भैस बाइकी रहे, हाथ जाके होय लठिया ॥

याई तरिया जब इंदिरा गांधी न चिकमगलूर के चुनावन में ठाडी है कँ तत्कालीन भीतेरे पुरुसार्थी राजनेतान कू चुनीसी दीनी ही तो हीरा लाल जी के कवि हृदय ते भीतेरे छद बनायासई निकर परै । बानगी के रूप मे साहस अरु धीरता की साक्षात साक्षात प्रतिमा बनी थीमती इंदिरा गांधी के प्रति बा समै के कवि के सोच की एक बानगी देखौ-

धिरि धिरि चहुदिसि, आ रहे सकट के अम्बार ।
जाय डटी रन छेत्र म, तदपि न मानी हार ।
तदपि न मानी हार नारि किलवार रही है ।
सासी बारी रानी सम, ललकार रही है ।
घोरज साहस सम अटूट, जीत नाचौ फिरि ।
इंदिरा रही ललवार, झूह चक्कर मे धिरि धिरि ॥

हीरा लाल जी नै मँहगाई जैसी दैनिक जीवन कू विषम बनायबे बारी समस्या पैऊ अपनँ भावन कू प्रकट कीनी है । मँहगाई कू लँके बिनँ देस के नेतान कू खूब फटकार्यो है । मँहगाई के कारन रसोई बुझ गई है अरु लोगन के मनन मे अगारे दहक रहे हैं । पर देस के करन धारन कू याकी नेकऊ चिन्ता नाथ । मँहगाई पे लिखी बिनकी भीतेरी कृण्डलीन म ते बानगी मे एक प्रस्तुत है-

बात जनहित की करें, काम बड़े वमेल ।
 कीमन अवासी भई, चीनी कोला तेल ॥
 चीनी कोला तेल, बिलखते बासन सारे ।
 धुसी रसाई भभक उठी दहके अगार ॥
 बच तब भूल सहे, तिहारी कोरी घातें ।
 माल ससम के साथ, चार सग हँसि हँसि बातें ॥

कहलन रस जेमे छोरे अरु उजरे पावन भाव हीरा नाल जी के मनते जा तलिनता के सग प्रकट भए हैं व' मन स्वच्छ अरु निरमल हे क' आनन्द के आकाम कू स्पस करब लग जाय है । बिनै कहलन रस मे ज्यादातर मैया अरु बेटा के प्रसंगन कू लियो है । अपनी बात कू पुष्ट करबे के प्रमान में हम बिनकी एक जमुदा की बिद्या की' एक कवित प्रस्तुत कर रहे है । जामे बेटा ते बिछरो एक रोमती बिलखती मैया के हृदय की करुना कू साकार कियो गयो है—

जमुदा की बिद्या की मिलत न पाह कहुँ
 बज्जुर समान हीयो, कोमल बिन कियो है ।
 अमुअन की घर है, रोके ते रुकत नाहि
 साज बस ढाँक मुख सारी निज लियो है ।
 का ठ काह कहवह, हतबुद्धि भई मैया,
 मानत नाहि का ह नकु. 'ब'द दी दीयो हैं ।
 मखि सो कहत अरी, रुठयो जा कारन भद्र,
 साला ने दूध बिनु चीनी आज पीयो है ।

पद्य की तरिया ब्रज गद्य के छत्र मे ऊ थी हीरा नाल जीने अपनी साहित्यिक कुसलता की यझेई रमणीक परिचै दीनी हैं । इनने ब्रज गद्य मे ब्रज के विभिन्न सांस्कृतिक परिवेश कू संके निबध ता लिखई हैं । परि संग संग कविन की आलोचनात्मक समीक्षा विभिन्न आलेखन मे जमवै कीनी है । इनने ब्रज गद्य मे प्रवाद अरु माधुरी गुण ऐसी लिपट व' बस है क' पढ़वै वारे को हृदय ब्रज रस मे डूवके आठ रस मय है जाय है । अथेड उमर की बनी-ठनी एक राजस्थान की नारी की इनके द्वारा खींचो गयो चित्र देखी । यदि पढ़नेई आपनू हमारी बात की प्रमान मिल जायगी—

‘अधेड़ उमर की कछू पढी लिखी सी सुधर बनी ठनी सी कछू अधेड़े बरन की-
वा भारो भरकम महिला नै पीर रग के चमकनी साटन के बसता की माऊ इसारो करते
भए, घूथरेऊ बिगार क, आखन ने तराफ क और नराय नराय क एकई सास ऐसी
‘भभक क कही जैसे चिमनी म ते घुआ निकसै काए ।’

ग्रज गद्य म जब वे समीक्षा लिखवे बैठें तौ कवि के भावन की एक एक परत कू
‘सभारते चलै जाय है । समीक्षा मे कवि की बानगी तौ हृदय म उतरेई है, सगई ग्रज
गद्य में जो काव्य की रसामय है वू पढ़वे वारे वे मन मे मूलधन के सग आयवे वारे ब्याज
की सी आनन्द मयी अनुभूति देय है । बानगी देखी—

साथी बात तौ जी है कं मूर की उद्देश्य कृष्ण की दैनिक चर्या की बरनन करनी
ही, भागवत की तरिया अलौकिकता अरु आध्यात्मिकता की प्रदसरन नाय है ।
‘बिनकी भक्ति मे तौ सकय भाव अरु वात्सल्य भाव की ई प्रधानता है । गोपाल कृष्ण के
रूप की बरनन अरु बिनके सखान के स्वाभाविक अरु निरमल प्रेम की दरसन मूर की
‘प्रमुख विस’ है । कृष्ण के सीयवे जागवै, लायवै, पीवै, रुठवै अरु गैया चरायवै के अनेक
‘मावात्मक अरु मौलिक चित्तर मूर न खंचे हैं ।

इनकी लिली भई समीक्षात्मक गद्य रचना ‘श्री हरि राम ब्यास, अरु बिनकी
‘रस भक्ति’ ग्रज काव्य मे सम-वयासी दृष्टिकोण माय की, ‘भरतपुर माहि वतमान ब्रज
‘भापा जानिन सजन’, ‘ब्रज की अल्प ज्ञात कवि रतन सूदन कवि, ‘ब्रज के अल्प ज्ञात
‘कविरत्न बलबीर,’ के अलावा ‘नजीर की नजर माहि श्री कृष्ण,’ ‘ब्रज काव्य अरु ब्रज
‘पछी कोदस ‘ब्रज वालीन कवि माहि मति राम,’ ‘ब्रज की गी सचद न परम्परा,’
‘ब्रज काव्य मे बिखरी असल,’ ‘ब्रजभापा मे शृ गार बरनन’ ‘भक्त कवि मति राम की
‘राधा’ ब्रज साहित्य मे होरी जैसे भीठेरे विसंयन पै इन्हीं खूब जमकी ब्रज गद्य मे लिखी
है । इन्हीं ब्रज गद्य मे कई रेखाचित्रक लिखे हैं । ‘प्रो घनेकर’ इनकी क्पाति प्राप्त
रेखाचित्र है ।

हीरालाल सरोज की भापा मुहावरे दार अरु ब्रज के भीरे ब्रजवासी के आचा-
लिकपुट की सोधी सोधी सुगंध लिये भये है । इन्हें अपनी कवितान मे परम्परित बरनन
के अलावा आधुनिक जन जीवन की समस्यान कू पूरी निष्ठा कं सग उतारो है । हीरा-
लाल जी के भाव न काऊ की नकल है और न काहू ते उधार लिये भये है । बिनके
‘मन मे तौ जो उठै है बाये सपाट भापा मे लिखवे के ये हामी रहे हैं ।

काव्य सौरभ

अज-रस

तजि है मन भूरख स्वारस कू गिरिराज तरे ब्रज सो सजि है ।
 सजि है अज भूषण मोहन सों सुभ गीतन प्राण हिय बजि है ।
 बजि है मन प्रीत पुनीत जुरे नद नदन नीति हिये भजि है ।
 भजि है मन कुज निबु जन म जिन कुजन मे बसुरी बजि है ।

नद नदन के उर की रसपूरित नेहमयी ब्रज की धरनी ।
 सुखसारमयी तप प्रीतमयी मधुगीतमयी बरनी करनी ।
 सुभ कजमयी छवि मजुल सी सन बदन केसर की भरनी ।
 रस रगमयी अनुरागमयी भव बचन की जरनी टरनी ।

वर्तमान

नैनन मे भरके असुधा ब्रज की धरनी नित रोवत डालै ।
 जैनन मे सिसके हिचकी भर दाहन भीत अरे मुख बोलै ।
 सैनन म करुना भरके मन भीत भरी कपती हिय छालै ।
 मत देर करै मन मोहन रे तुमरी ब्रज मात दुरी जग डोलै ।

लोचन नीर अरे सिसकें रसखान सन ब्रज व सुर सिंगरे ।
 सूर सने ममता मन के सुर रोष दुरें धिर के जय पजरे ।
 मात पयोधर मों बरसे उर नेह भरे विलखें मय सुपरे ।
 साथ सहाय करा ब्रज भूषण दूट गये तुमरे सुर सबरे ।

विवेचना



1	ब्रजभाषा अरु राजस्थान	199
2	ब्रज की फाग रग	203
3	ब्रजभाषा 'मानव' स्वरूप की समस्या	205
4	ब्रजभाषा की प्रासंगिकता की सवाल	207
5	मिठास की सस्कृति अरु ब्रज	211
6	ब्रज सस्कृति मे रजौ बसौ नाथद्वारा	215
7	ब्रज कला सस्कृति अरु राजस्थान	227
8	ब्रजभाषा की सावदेशिक स्वरूप	231
9	ब्रजभाषा गद्य की विकास	239
10	राजस्थान माहि ब्रज लोक कला अरु सस्कृति	243
11	कवन करत खरो की ओप'यासिक शिल्प	256

ब्रजभाषा अरु राजस्थान

ब्रजभाषा प्रेम अरु करना की भासा हूँ । सौरसेनी अपभ्रंश ते निखरि के मधुर—सलीनी रूप धारन बरिखे धारी ई भासा हमारे देस माहि प्राचीन काल तेई प्रेम, दया अरु करना लुटाय रही है । दक्षिण भारत के आचार्यों अपनी मातृभाषा छाड़ि जाय अपनाय के जामे भगती ते हमारे नित्य के जीवन मे ऐसी मकर-दूधोरि दीनी हो नै जानै सदीन तलव जा देस कू बुरे दिनन मे एबता की प्रेम की डोरी मे बांधि के रखी है । एक पै एक विदेशी आक्रमन के सामई हमारे देस के लोगन की मन टूट चुकयी हो । चारों तरफ आक्रमन अरु असाति के कारन साहित्यकारन तलव ने अपने पापन की मुमरन कर ईसुर की प्रायना तलकई स्वयम् कू सीमित बरि दीनी हो । दक्षिण के इन भगतनों समाज के पुरोधा साहित्यकारन कू सलवार के जा बिपत्ति काल माहि कृष्ण की सीतान के मनोहर चित्रन से ऋन्दन करते भये हमारे देसवासीन कू मन की कदना की रस्ता बसायी । जाई की परिनाम हूँ के सूर नै पिधयाबो छाड़ि के कृष्ण की सीतान की खिरकी ते भारत के जन जन कू कदना की मजुल स्पस प्रदान करी । जा कारन ब्रजभासा नै मानव जीवन के बे प्रसंग अरु भाव सिये हूँ जाते कदना की जि पीयूषधारा घर घर माहि पहुचाई जा सकै । वात्सल्य अरु वियोग के भावन कू जाई कारन ब्रजभासा ने इतने महत्व दीनी है ।

घर के रसमय जीवन की भासा—ब्रजभासा नै हमारे धायन की बिलकारीन कू आदर दीनी है । सिरि कृष्ण कीरे ब्रजभासा के सलीने बच्चा नाथ । आज कौन सो घर हूँ जाम जसोदा नाथ, नन्द नाथ, जामे ल्होरे ल्होरे सलीने कृष्ण नाथ । जा भासा नै बालक कृष्ण के नाम पै हमारे घर के सुतसाते बदन कू आदर देके देस की भावी पीढ़ी कू सुदढ बनायी हूँ । गैया जसोदा अरु गोपाल हमारे घर की पीरी के रसमय चिरत्न सत्य हूँ । जा तरियां ब्रजभासा नै गोकुल के गोपाल कू देसवासीन के घर घर की गोपाल बनाय दीनी है ।

छल-कपट कू खण्ड खण्ड करिखे धारी भासा—ब्रजभासा मन की भासा हूँ । जानै

मन के मालज कू जा देस ते बन-बन माहि पहुँचायो है । मानुस की बुद्धि व बनाय भये पालण्ड के छल वषट सिगरेई जावे सामई सात है गय । जा भामा के पास जा आयो वूई जाको है गयो । इज्जतीम मिया दुनिया के प्रपचन ते झुरसते-झुरसते जा भासा के दिग आये तो ये प्रेम मे बाबरे है गय । जागीरी, राज-पाट सबत्रे छाडि के ब्रज की करील कु जन माहि आय बसे अर इज्जतीम मिया ते रमखान बनि गये । ऐसे सैकरान इज्जतीम मिया हत जि जा भासा के प्रेम नेह अर करना के मासन कू चसि कं निहाल है गये । जानि अर भजहुब व सवाई बचन जावे दिग आयकं दील है गये । गोबद्धन की परिकम्मा के रस्ता जा सच कू पुकारि-पुकारि के कहि रहे है । ह्या पं समई जाति के लोग ऊच मोच के भेद भाव की कारोच त रहित है कं सिरी कृष्ण की लीलान के गीत गामत कथा ते व छा मिलावते भये गिराज जी की परिकम्मा देम है ।

देस कू झलण्ड भाव धारा माहि बांधवे बारी भासा—जाई की परिनाम हता के प्रेमकवना वात्सल्य के कृष्ण न जा देस कू कयाकुमारी ते वसमीर तलक ऐसी अद्भुत मानवता की भावधारा माहि बांध्यो के भासा, रीति रिवाज आदि की बंभिलता टूटि गई । जी कारन हत के आज ली कोई महापुरुष ऐसी भयो होय जाके सग भासा की ऐसी साक्षात्भ्य भयो हाय । ब्रज की मतलब हत कृष्ण अर कृष्ण की मतलब हत ब्रज । केरल के महाराजा राम बर्मा 'स्वाति तिहनाल' नाम ते ब्रज कविता करते हतें । महाराष्ट्र के ज्ञानेश्वर, नामदेव जैसे अनक सनन ने ब्रजभासा मे काव्य रचना करी हतें । सिंधु प्रान्त के श्री लालजी जैसे ब्रज के भीतरे कविने जा भासा ते देस कू अक्षण्डता म बांध्यो हतो । पंजाब के गुरनानक अर बिनके ब्रज के पदन कू कौन हतें जो नाँय जान । रजौत निघ के दग्गार माहि ब्रज कविने की पूरोई जयघट हतो । गुजरात के भासण, नरसी मेहता, दयाराम के सग सग सकरान ब्रज के कविने की रचना आजऊ गुजरात के आबर माहि गूज रही है । बन्द्योवारेन न तो ब्रज पाठनाला ई खोल दीनी हो जाम दूर दूर ते विद्यार्थी ब्रजभासा पढिबे जायो करे हे । बंगाल की घरती न जा भासा कू जो सलौनों रूप दीनी बाकी महिमा सब बिदिन हतें । बंगाल के ब्रज व कवि यशोराजखान ने जाकी नामई ब्रज बुली धरि दीनी हो । मिथिला के विद्यापति, आसाम के सकरदेव, माधवम्ब के ब्रजकाव्य की महिमा ते जि सिगरी प्रान्त आजऊ महक रहा है । राजस्थान की गोरब मीरा के गिरिधर नागर के दिग्ग प्रेम की सुरभि ते दस की कीन सी ऐसी भाग हतें जो सुवासित नाय है रहा । मन की करुना माहि आक ॥ दुबायबे बारी जा भासा की गूज ते जा देम की कीन सा एमो कीनों हत जा आज ली नाय धिरक रह्यो ?

राजस्थान के कीने-कीने माहि जा भासा के सुर—राजस्थान की कीन सी ऐसी जग हतें जाम जा भासा की महिमा के सुर नाय सुनाई देमे । सामान्य जन की तों बातई वा, ह्या के नरेखन तनक न जा भासा माहि रचना करि जावे गोरब कू बढ़ायो हतें ॥

जैपुर के ब्रजनिधि किसानगढ़ के नागरीदास, जोधपुर के जसवन सिंघ झालावाड के सुधाकर अरु भरतपुर के बलदेव सिंघ जैसे बहुत नरेशन की उल्लेख करिबो भौत होयगो ।

फोट विलियम अरु पराधीनता माहि सुराज के घोस की भासा — कलकत्ता के फोट विलियम कालेज की खिरकी ते जब पच्छिम की सिच्छा अरु सम्यता होले-होले जा देम माहि पाम पसारिरे लगी बा समै तस के कोने कोने ते आये सिच्छाधारीन कू ब्रज भ भा पढ़िबो अनिवाय हतो । चाँकि अ गरेज अपने अनुरूप भारतवासीन कू ढारवे के काजे ऐसी भासा चाहते हत जो जा दस के सिंगरे लोगन माहि समयी जामती होय । जा कसौटी पैक बिनकू ब्रज भासाई मिली । बा समै गुजरात भासा भासी सल्लूलाजीन पढायवे कू ब्रजभासा गद्य माहि प्रेम सागर' ग्रन्थ लिखी हो । आजऊ जा ग्र प की हमारे देस मे जितक बिक्री हत, सायद हिंदी के अग्र काऊ ग्रन्थ की होय । अरु जीऊ सचाई हत के 1857 की आजादी की लड़ाई माहि पराजय पीछे भारतेन्दु एव बिनकी मइती के कविन ने जा भासा ते परतग्र देस की दुरदसा की चित्रन करिके देस बासीन के घर-घर मे आजादी की अलख जगायी हती । राजस्थान के गिरिधर शर्मा नवरत्न की 'मातृ-वदना' रचना की आजादी की ललक के उभरते भये सुरन कू कोन भूल सके है ?

राष्ट्र भासा हिंदी अरु ब्रजभासा एव अकादमी—राष्ट्र भाषा हिंदी अरु ब्रजभासा की का कोई दुः है सके ? सही तो जि हत के राजस्थान सरकार ने 'यारी यारी भासान की अकादमी बनाय के राष्ट्र भासा के बिसाल भवन कू मजबूत कोनी है । क्षेत्रीय भासान की उन्नति राष्ट्र भासा की उन्नति कोई परिणाम हत । गत बहुत समै ते राष्ट्र भासा माहि गमक मिठास अरु सलोनेपन के निश्चित अभाव के कारन याके प्रति कहू कहू थोरी ऊरुचि सी दीखे है । बाके पीछे सुधीजन गभीरता ते साचें तो जि धुनि सवन ते जादा सुनाई परे है के राष्ट्र भासा के प्रेमी अरु प्रसन्नकन ने बाकी सीम माहि जडे भए क्षेत्रीय भासा के मजबूत पत्थरन की ओर इतके ध्यान नाय दियो, जितेव की जरूरत हती ।

क्षेत्रीय भासान की प्रगति हिंदी की प्रयाग—हिंदी माहि परम्परा अरु सत्कृति की सुगंध तो क्षेत्रीय भासान के सदीन के साहित्य प्रसूनन तई आवेगी । क्षेत्रीय भासा के मिठास की मधुर जमुना, देदीप्यमान सत्कृति की सुरसति अरु साधना के तेज की गंगा की सगमई राष्ट्रभासा हिंदी की सच्ची प्रगति की तीरथराज प्रयाग बन सकेंगे । क्षेत्रीय भासा के सूर, तुलसी सूयमल मिथन, बाकीदास विद्यापति आदि कू हिंदी ते विकास दिगे तो का वचेगी बाके ढिग ?

आजऊ धूरि भरे जीन सीन पुरान यस्तान माहि क्षेत्रीय भासा के सूर, तुलसी अरु सूयमल मिश्र जैसे संकरान कवि बंद परे हैं । ऐसे ब्रजभासा के हजारन साहित्यकार

साधना के तब तो अनमोल साहित्य कू पैदा करिबे परसोब कू सिधार गये । होले होले बरस पे बरस निकरते घने गये अरु धीरे-धीरे जि अनमोल ग्रंथ नष्ट होते चन जा रहे है । कछुवन के बसजन ने अजाने माहि वा साहित्य-साधना की इलियाज बनाय डारी । थोरे भोत बचे बिनकू दीमक चाट गई अथवा मूसन के दातन व मसाले बनि गये । ऐये हमारे देस के अनमोल साहित्य की रच्छा, नबधन अरु प्रकासन के काज खेत्रीय भासान की अकादमी त ज्यादा उपयुक्त अरु बा है सक ?

खेत्रीय भासान माहि भोक साहित्य की गगाजल—खेत्रीय भासान के पास लोक परम्परा अरु लोक साहित्य की ऐसो पावन गगाजल हत जाम अवगाहन करिबे ते मन की सिगरीऊ करीब पखरि के मन माहि उत्सास की दूधिया चादनी परगट है जाये है । लोक साहित्य की सिरीबूडी की आसप हत राष्ट्रभासा हिन्दी की मभिरडी । जा बिधि सो राष्ट्रभासा की बिडी करिबे कू ब्रजभासा के मच ते ई 'राजस्थान ब्रजभासा अकादमी' पूरी तरिया ते अपित हत ।

ब्रजभासा के साहित्यकारन की आहुवान — राष्ट्रभासा की जा पताका कू पूरे बभब त साहित्य — जगत के आकाश माहि फहराब मे सगी भई जि राजस्थान ब्रजभासा अकादमी देस बिसे के कोने कोने के रहबैया ब्रजभासा व साहित्यकार, विद्वान, प्रेमी अरु बिसेस रूप ते राजस्थान के निवासीन कू अकादमी की बिभिन्न गतिविधीन मे भाग लेबे कू पूरी निष्ठा ते आमन्त्रित करे है । जीवन की जि ब्रजभासा नये युग की नय भावन के स्वर के सग स्वर मिलायने नई नई उद्भावनान अरु प्रतीकन के सग ब्रज के मच ते हिन्दी के सलोने रूप कू सजावे कू देस के कोने कोने माहि ब्रज भासा व साहित्यकारन की आहुवान करे है ।



व्रज की फाग रग

होरी प्रीति की देवी की रमनीक आराधना की त्योहार है। होरी के उच्छ्वस पै प्रीति की देवी की आराधना के माध्यम से जीवन के प्रति भीठी भीठी आशा अरु आस्था की विरोध भाव जगायी है जा व्रजभाषा ने जीवन के हर दुख कू, हँसि हँसि क काटवे की रस्ता दिखायी है जा व्रजभाषा ने निरासा के धुप्प अंधेरे माहि टटोरते टटोरते परि खिलखिलाते गन्तव्य की ओर बढ़िये की सदेशो दीनी है जा व्रजभाषा ने। जाई कारण मानव जीवन के जिन छनन में उल्लास कू छुटाये की, जहा कही मोकी आयी हतै, व्रजभाषा ने बाकी भरपूर उपयोग करी है। होरी के ओसर पै ऐसीई ती सुभावनी माहक बातावरन नियन्ता ने हमार देश की धरती कू दीनी हतै। गुलाबी गुलाबी कल्लू अनूठीई मौसम होय है फागुन की। जा मौसम माहि प्रकृतिः अपने पत्तान के मैले लत्तान कू फेंक दे है अरु नये अवगुण्ठनधारी ल्होरे ल्होरे पतरे पतरे, कल्लू तिरते फिरते से चौकने-चौकने, हल्की हल्की गुलाबियत लई भई कौपसन कू धारन करिय लग जाम हैं जा फाग के भीठे ओसर पै।

सजीछजी अलहड अलबेनी प्रजिति। मदमस्त व्रज की धरती। दूर-दूर तें आयवे धारे नीरस लोग होरी पै ह्या के बातावरन माहि ह्या की धरती की मोहक गमक त रसिक बनिकें नाचवे लगे हैं, धिरकवे लगे हैं। फूलन के पराग की मोहक सुगन्धन में डूबी भई व्रज की गारी, मिसरी से भीठे उलाहने, मन-भावन मनुहार, पीरी पीरी बयार, टोका टाकी के दूरे में सनी छीना झपटी मितवान की अनेक अघन बारी चुलबुलाहट। देवर भाभी के परस्पर नेह माहि आकठ डूबी भई रस क्रीडा, जोजा सरहज की मनोरम खचल किलोल गोप गोपीन के रग विरगे पिचकारीन से, निकरिये बारे प्रेम रस के रग, उडत-घुमहते गुलासन के बादर जे व्रजभूमि के उल्लास के कल्लू नाम हतै।

व्रज की होरी मन के सुवासित भावभीने मकरंद कू चारों तरफ छुटाये की पव है। व्रजभाषा ने जा विशाल भारत कू एक सस्मृति दीनी है, जीवन काटिये की मधुर रस्ता बतायी है। जीवन कू अनुराग से हँसते-हँसते जीवे की सलीका दीनी है। जीवन

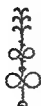
तो बाटनाह है, रोय के बाटी, झोब पे काटी सट-सट के बाटी । ब्रज की धूरि न जा जीवन कू बल बल करते आनन्द ते बाटिब की ससृति दीनी है जा देस कू ।

ब्रज की आंगन आंगन, कन-वन, राग रग उल्लास के रुनक झुनक रस रय माहि डूबिके धिरण उठे है जा अनूठी निगोही होरी पे । गली-गली म छल छबोले छनान की मन मचल उठे है । छैला छलिया बन जाये है होरी की या भीठी भीठी कछु अनोखी अन्हड बयार माहि ।

बसंत पाँखे के आगमन तेई ब्रज की छलिया हीले-हीले रस से भरिबे लगै है । होसास्टक आमत-आमते तो जि रम निगरी सालभर की मर्यादान के बदेजन कू तोरि के सिगरी ब्रज भूमि कू अनूठे भाव माहि डूबो देय है । यौवन की उमग के सिबाय कछु नाय दीले । मुहापौऊ ठुम ठुमाय उठे है या होरी पे ब्रज माहि । रननारे छलिया प नाय रमौ जाये । छलिया ते रसिया घने ब्रज क यौवन की जि अन्हड उल्लास गायन नृत्य आदि मे फूट परै है । झरोखे से टुवर-टुवर मदमाती रसीली धावती सलीक साल भर लौ रहै निगरे अबगुण्डन उतार के, उतर परै है, रस की जा बगिया माहि । मर्यादा रोय शोक के भगि जाये है । मृदग झाझ के बीच बसी की ससौनी भीठी भीठी धुन कछु अनूठी रस धोर देय है, जा प्रीत की दबी की आराधना माहि । हारी एक भाव है । मन के सिगरे मैल कू निवासवे को त्योहार है होरी । आनन्द म प्रीत की दबी की आराधना की बिसेस आवश्यकता हत । तो आओ हम सब मिलके—जा अनुराग के बँसव मे डूब जायें ।

हां-हां हो हो हो हो होरी,
मेमत अति सुख प्रीत प्रगट भई ।

—सूरदास



ब्रजभाषा के मानक स्वरूप की समस्या

ब्रजभाषा की मानक स्वरूप का होय ? काळ जमाने में गद्य की समरिद्धि ब्रजभाषा पर आज जि विचार करिबे की आवश्यकता आ गई है। कौं जाकी मानक स्वरूप का हीनों चइयै ? खरीबोली के प्रचार प्रसार ते पैलें ब्रजभाषा हमारे देस माहि परस्पर विचारन के आदान प्रदान की प्रमुख माध्यम हो। परि ब्रज गद्य की उपेक्षा अरु हमारे (ब्रजवासी) दैनिक जीवन में खरीबोली के प्रवेश के कारन आज ब्रजभाषा के मानक स्वरूप पर विचार अरु चिंतन करिबे की सबसे मुख्य प्रश्न आ गयी है। ब्रज क्षेत्र की मीया-भैन घाय है, जिनमें अपने घर से जा भासा कूँ नई निकरन दीनों। ब्रज के साहित्यकारन कूँ ती जि भासा परायी है गई। परि, इन मीया श्रैनतें जा भासा कूँ आँधर ते चिपकाय राख्यो है। हमारे 'शतदल' की ब्रजभाषा की आदस ब्रज क्षेत्र की जेई आदरनीय मीया-भैनन की भासा रही है। ब्रज ते ऊर्जा लैकें बाते म्हीँ मोरि कें फँसन कूँ ब्रज लिखिबे वारे हिंदी रचनाकारन की ब्रज आदस मानी जाये अथवा मरिबे ते बचाइबे बारी मीया-भैनन की जीवन्त भासा कूँ बनायो जाये। जि विचारनीय प्रश्न है।

हमारे ढिग विभिन्न भागन ते रचना आ रही है। इन रचनान में ब्रजभाषा के अलग अलग रूप प्रतिबिम्बित है रह्य है। उज्जैतर के लेखकन की रचनाऊ आय रई हैं। इन रचनान माहि खरी बोली के सन्दन की प्रयोग है। कई पत्रन में सुभाव है कें तत्सम सन्दन की प्रयोग मान लैनों चइये जे हमारे दैनिक जीवन माहि धुर गये है।

हम पाछें मुरि कें देखें हैं ती ब्रजभाषा गद्य की एक सम्भी परम्परा मिलै है। ब्रजभाषा कूँ सौरसेनी की बेटी मानी जाये है। बारहमी-तेरहमी सताब्दी के 'सदेस रासक' अरु 'प्राकृत पंगलम्' ग्रन्थन में ब्रजभाषा के दरसन हेवे लग गए हे। जा समै के जैन ग्रन्थन में ठाऊ, अइसो, तइसो, बइसो रूप ब्रजभाषा कूँ दरसामे हैं। 'प्राकृत पंगलम्' के अजु, घरु, लेहु, हमारो जैसे मोतेरे शब्द ब्रजभाषा गद्य के संसव कूँ दरसामे हैं। भक्ति-नास माहि ती ब्रजभाषा गद्य अपने पूरें उभार पैं आ गयी हो।

बिठलनाथ जी के अपन सेवकन कूँ सिंग मए पत्रन म व्याह्वहारिक अरु नित्य के दैनिक जीवन के काम म आगवे बारी ब्रजभासा के दरसन होय हैं । उदाहरन-‘अपरेंच मुमारे समाचार पत्र ते पाए । सदा भागवत सरन रति रहियो ।’ गुसाईं बिठलनाथ जी के पुत्र सिरि गोबुलनाथ जी के लिखत ई वार्ता ग्रन्थ ‘बोरासी वैष्णवन की वार्ता’ अरु ‘दो सो वैष्णवन की वार्ता’ ब्रजभासा गद्य न पुस्त प्रमान हैं । रीतिवासीन ग्रन्थ ब्रजभासा गद्य ते अटै परै ह ।

रीतिकाल के पैत चरन माहि ब्रजभासा गद्य की पतन मुरु है गयी हो । फोट बिलियम कानिज के अप्यापन जान मिल नाइस्ट के आदेस पै ब्रजभासी सत्नूलाल जीन् ब्रजभासा कूँ खरी बोली की तरफ मोरिबे की मुरुआत बरी । दूजी ओर ब्रजभासा गद्य मूल रूप माहि धार्मिक छेत्र मई बिचरती रह्यो । आधुनिक युग में साहित्य के नाम प समरिद्ध ब्रजभासा गद्य माहि रचना लिखिबे में बरे बरे साहित्यकार बबराय गए । गिल्ली आकासवानी ते ब्रज भाषुरी’ अरु मयुर आकासवानी केन्द्र की स्थापना ते ब्रज-गद्य की तरफ ब्रज साहित्यकारन म घौरी भीत ललक जगी । रेडियो रूपक, प्रहसन, वार्ता, कहानी आदि के प्रयोग ते मगनामत्र ब्रज-गद्य के सरीर माहि घौरी भीत हलचल पैदा भई । सिरि सरनविहारी गोस्वामी की उपमास ‘पूँछरी की लौठा’ के प्रकासमें ब्रज के साहित्यकारन कूँ ब्रज गद्य लिखिबे कूँ प्रेरित नई कीनी । खरीबोली के जा कोलाहल म ‘पूँछरी की लौठा’ के सुरऊ दबि से गए । ब्रज गद्य कूँ गति दैबे बारी ब्रज साहित्य मण्डल की मुख पत्रिका ब्रज भारती कूँ ब्रज-गद्य की पहल करनी चइई परि म्हाऊ खरीबोली के विकास की याथा क भय ते आधुनिक ब्रज गद्य कूँ बिबसित नई होत कीनी । अब प्रसन्नता की बात है क डा भगवान सहाय पचोरी जी के सहयोग ते ‘ब्रज भारती’ कूँ अगले अक ते अपन घर की सुधि आई है ।

आखिरी म एक बात अरु — जमानो बरी तेजी त बदलि रह्यो है । पैल के जीवन अरु आज जीवन म भारी अंतर आ गयी है । मायमा बदलती जा रही है । सोचिबे की नजरिया बदलि रह्यो है । ऐस जा बदलते भए जमाने म ब्रज साहित्यकारन कूँ ब्रज-भासा की व्याख्या अरु वाकी ढग बदलनी परैगी । छंद-वचन की लेख कूँ टीली ती करनीई परैगी ।



ब्रजभाषा की प्रासंगिकता को सवाल

ब्रजभाषा पाच सौ बरस तानू हमारे देश म पूरब से पच्छिम अरु उत्तर से दक्खिन तक काध्य भासा रही है । दुदिन म ब्रजभासा ने देसवासिन कू प्रेरना के सुर दीने अरु सधस की ऊर्जा दीनी हो । ब्रजभासा ने हमारे घर के चिरकत मनोहर बाल भावन कू आदर दै कें हमारे जीवन की मामिक भावन से साच्छात्कार करायो है । अनुराग, उल्लास प्रेम, वात्सल्य अरु करुना की सत्कृति कू जनम देवे वारी ब्रजभासा ते ऐसी कीन सी चूक है गयी जो धोरी सी अवधि म यू साहित्य जगत से क्षुप्त सी है गयी । हमारे देश की भावात्मक एकता अरु मानवीय भावन के उजागर करिबे म ब्रजभासा की भूमिका पै काऊ ने विचार करिबे की कस्ट कीनी है ? सम्प्रति मे मानवीय सौंदर्य कू प्राप्त करिबे की ललक के धीरे धीरे जजरित हेबे के कारन ब्रजभासा की आकसनऊ कम है तो बली गयी । परि आज हमारे देस की मतमान परिस्थितीन माहि मानवीय सौंदर्य कू हृदयगम करिबे की जितेक आज आवश्यकता है बितेक जाते पड़े बबळ नाम रही ।

ब्रजभासा नै हमारे देस मे अनुराग, उल्लास, प्रेम, वात्सल्य अरु करुना की सत्कृति कू जनम दैके सच्चे मानवतावाद की भावना कू देस के कोटि कोटि लोगन के मनन मे साधक कीनी हो । जाई कारन ब्रजभासा नै अपनी अनुभूति के अतिनिकट सिरी कृष्ण कू अपने बिबेचन की आधार बनायो । ऐतिहासिक दस्टि से राधा-कृष्ण, नन्द यशोदा, गोपी उद्धव आदि की चाहे कोई महत्व नई होय परि सांस्कृतिक दस्टि से इन पात्रनको उल्लेखनीय स्थान रह्यो है अरु रहेगो । ब्रजभासा नै इन पात्रन के सांस्कृतिक सरूप के माध्यम सेई अधिकासत अपन भावन कू साधक कीनी है । जीवन के मामिक प्रसंगन मे ब्रजभासा ने भागवत के इन पात्रन कू अपनी वानी की प्रमुख आधार बनायो । सिरी कृष्ण की लीलान कू सत्कृत के पांडित्य के घेरे ते निकार के बाकू कोटि कोटि निरन्धर लोगन के हृदय तानू पहुचाने की काम सदीन तलक ब्रजभासा नै कीनी है जेई कारन है क ब्रजभासा के कृष्ण के सामे सत्कृत भासा क सिरी कृष्ण पीछे रह गये । दक्खिन भारत के आचार्यनै तो ब्रजभासा म भक्ति की दिव्य मिठास अरु लालित्य घोर दीनी । ब्रजभासा के कारन भक्ति पंडितन के घेरे ते निकर के जन सामान्य तक पहुँच गई ।

दक्षिण भारत के भगत आचार्यजी सिरी कृष्ण की भगवत भक्ति के काव्य में संगीत की मिश्रण करके ब्रजभाषा के माध्यम से भारतीय संगीत को ऐसी उर्जा दीनी के जाके कारण आज लौ भारतीय संगीत की जीवन्त धुजा फहराय रही है। ब्रज भाषा की संगीत के संग ऐसी मजुल सादात्म्य भयी के हमारे देश की संगीत विदेशी सासन काल में ईरानी संगीत के साथ समर्पित है के तिरोहित नहीं हो सकयी। अब्बर जैसी महान सम्राट भारत के संगीत को दक्षिण भारत के आचार्यन केई कारण ईरानी संगीत को विजय नहीं दिया सक्ती। आश्चर्य होय है के राज्याश्रय से कोसन दूर ब्रजभाषा के आचार्यन मंदिरन को आख्य सने जनता के बीच में मानवतावादी कोमल भावनान के आधार पे राज्याश्रय की अपार शक्ति में फलते फूलते ईरानी संगीत को परानितई नहीं कीनी अपितु भारतीय संगीत को इतनेक कछु दीनी के जाके कारण भारतीय संगीत आज लौ अपने पामन पे ठाही है। जेई कारण है के ब्रजभाषा के अभाव में भारतीय संगीत की कल्पनाई नाव करी जा सक्ती है। जब जब क्रूर सासकन ने तलवार के बल पे मंदिरन के संगीत को नष्ट करिबे की अभियान सुरू कीनी, बा साथे सावजनिक मंदिरन को ब्रजभाषा प्रेमीन शक्तिगत संपत्ति के रूप में निजी हवेली बतायके हमारे देश के महान संगीत की रक्षा कीनी। जाई कारण मंदिरन के जा संगीत को हवेली संगीत कहबे की परम्परा सुरू भई।

ब्रजभाषा में बाल जीवन को अपने साहित्य में सर्वाधिक आदर दीनी है। सत्य लौ जे है के ब्रजभाषा ने सिरी कृष्ण के माध्यम से हमारे घर की किलकारी भर हमारे बाल जीवन के तुलनाते बेनना को आदर देके हमारे जीवन में ऐसी मीठी मीठी रस घोरा है जैसी अमन मिलबी दुलभ है।

ब्रजभाषा के प्रेम, वा मत्स्य, कल्याण के भावन ने विदेशी सासन काल में विदेशीन को इतने प्रभावित कीनी के एव साथे ऐसी माहोस बन गयी हो, के कयाकुमारी के बरभोर तलक अम भासा भासी अरु ह्या तक के विदेशी तलक ने ब्रजभाषा के बाल भाव के प्रति अपा मन की आदर प्रकट करिबे में गौरव की अनुभव कीनी। इन आदर प्रकट करिबे यारन में विन्मीन की सख्या अरु बिनके भावना अरे काव्य से प्रभावित है के भारते दु बाबू हरिश्चंद्र जात्रे तो ह्या तब लिख दियो।

अनी गान पठान मुता सह ब्रज रमवारें ।
 सेय लबी, रसपान, मोर, अहमद हरि प्यार ॥
 निमसदास, बबोर ताजगा बगम चारी ।
 तान सेन वृष्ण दास, बीजापुर, नृपति दुमारी ॥

पिरजादी बीबी, रास्ती पदरज, नितसर झारिये ।
इन मुसलमान हरिजनन पै कोटिन हिंदू बारिये ॥

रसखान, रहीम, शेख मुबारकअली खा, नवी, मोर, अहमद, तानसेन, कृष्णदास, ताज जैसे बहुतरे कवि अरु कवियत्रीयै । ब्रजभासा के बाल भाव की सरल, मनोहर सीलान कू अपने काव्य मे अद्भुत स्थान दके हमारे देश मे सदीन तक बीमी एकता अरु सांप्रदायिक सौहाद की अनुपम उदाहरन प्रस्तुत बीनी है । इन मुसलमान कविन के अलावा उद् के अनेक सायरध्वज ब्रजभासा के जा बालभाव के प्रति भौतई आदर प्रकट कीनी है । उद् के इन कविन मे नजीर अबबराबादी कू उद् साहित्य की सूरदास कह दै तो कोई अत्युक्ति नई होयगी । जा सदम मे बिनकी अनेक कवितान मे ते एक लबी कविता के एक छंद कू देनी प्रयाप्त रहेगी —

सब मिलके यारो कृष्ण मुरारी की बोलो जय ।
गोविंद छेल कुज बिहारी की बोलो जय ।
दधि चोर गोपीनाथ बिहारी की बोलो जय ।
सुम भी नजीर कृष्ण मुरारी की बोलो जय ।
ऐसा था बामुरी के बजैया का बालपन ।
क्या क्या कहूँ मैं कृष्ण कहैया का बालपन ।

चार सौ बरस पैले गुजरात के कच्छ मे पैदा हवे वारे सत मौजूदीन तो आजहु अपनी मौन अनुभूतिन के सग मे वृंदावन की कुज गलीन मे दजी के बालभाव के दरस परस कू रोमते, बिलखते डकरामते भारे भारे फिर रहे है इन अनुभूतिन के सग—

फागुन आयो सास डफ धाजै भीर भई अति भारी ।
मोय तो आस तिहारे मिलन की भूल गई सुधि सारी ।
मोय गुलाल साल बिन तीरे भई है रैन अधियारी ।
असुवन की अब रग ब गी है नैन बने पिचकारी ।
वृंदावन की कुज गलीन मे दू डत दू डत हारी ।

अपने समी के उपाति प्राप्त जागीरदार अल्लाहिम मिया तो ब्रजभासा के जा बाल भाव की एक झलक मात्र देखवे कू ऐसे वावरे भये के रसखान बनके हमारे देश मे बिद्वि मिठास की ऐसी उज्ज्वल धारा बहायी जाये अवसाहन करवे ते मन पवित्र हैं के आनंद ते खिल उठै है । अपने एक छंद मे जीवन की आत्मकथा कू उतारते भये लिखी है बिद्वि —

देस बिदेस के देसे नरेसन रीझ कि कोऊ ना वृक्ष करेगी ।
 ताते तिहे तजि जानि गिर्यो गुन गुन औगुन गाठ परंगो ॥
 बासुरी वारो बढो रिझवार है स्याम जु नैक मुढार ढरेगी ।
 लाडलो छैल वही तो अहीर को पीर हमारी हिये कौ हरेगी ॥

या तरियाँ ब्रजभासा ने बरूना वात्सल्य के मिठास में हमारे देस कूँ ब्याकुलारी से कस्मीर तक सदीन तानू ऐसी मानवता की भाव डोरी में बाध्मी जाते भासा, रीति रिवाज अरु ह्या सक क प्रदेसवाद की सिंगरी बिभिन्नता टूट गई । हमारे देस की स्वात ई कोई ऐसी कोनो बची होय जामे ब्रजभामा के प्रेम, बरूना अरु वात्सल्य के मिठास के सुर नई गूजे होय ।

ब्रजभासा के मिठास अरु कलना के जे सुर जा भापा के लुप्त हैवे त धीरे धीरे नष्ट होते गये । सिंगरे दस के लोगन के मनन में करना अरु प्रेम पैदा करब बारी कोई ऐसे सुर नई पैदा है सकै जसी ब्रजभासा रही । परिनाम सरूप मानवतावादी प्रेम भरे साहित्य के अभाव में लोगन के मनन को मतुवन धीरे धीरे बिगडनी गयी । कलना अरु प्रेम की जगै पै निष्ठुरता जसे अवगुन हमारे देसवासिन के मनन में बढ़ते चले गय । बौके मानवतावादी पियूसघारा की जो प्रमुख आधार ब्रजभासा ने ग्रहन कर राखी हो वू बाकै सगई सुसुप्त है तो चली गयी । जेई कारन है के आज एक व्यक्ति कू अनेक अपक्तिन के प्राण लैवे म नेकऊ तो सकोच नाय होय । प्राण लेबैय के जा मन म भाव पैदा करिबे की माहोल उत्पन्न कीनी जाय कँ मरिबे बारे के घर बारे एसे ई छटपटागिगें जैसे कँ बाकँ अभाव म बाकँ घर बारे छटपटा सकै है । राष्ट्रीय स्तर पै ब्रजभासा के मानवतावादी भावन कू पुन उत्पन्न कियी जाय तो हमारे देस में परस्पर बढ़ती भई आर काट कू रोक्की जाय सकै है ।

अत आज के प्रसंग मेंऊ ब्रजभासा अरु बाके साहित्य की महत्व कम नाम नयी अपितु पैसे ती बढ़ीई है ।



मिठास की संस्कृति और ब्रज

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी ने 19 जनवरी 1986 को अपने जनम के संग जि निश्चय कीनी के हमको ब्रजभाषा के मध्य से राष्ट्रभाषा हिंदी को वैभव बढ़ानी है । अकादमी ने छूब मध्यन कीनी, परस्पर विचार विमर्श कीनी तो निष्कर्ष सामे आयी के हिंदी भाषा में मिठास, साहित्य अरु नेह एव भाईचारे के सुरन को औरऊ पुख्ता करिवे को अकादमी की पत्रिका ब्रज मध्य मेंई निकरनी चह्ये । पत्रिका की चारो तरफ से हमे बारी सराहना अरु यावे ग्राहकन की बढ़ती भई सख्या को देख के हमारो औरऊ उछाह बढ़यो है ।

राजस्थान सुरु तई ब्रजभाषा अरु ब्रज संस्कृति की प्रबल आराधक रह्यो है । आज्ञादी ते पैले तरकारीन राजपूताने की रियासत के राजासँ अपने आश्रय माहि ब्रज-काव्य अरु संस्कृति को पर्याप्त प्रोत्साहन दीनी है । जैपुर नगर निर्माता सवाई जयसिंह अरु राम सिंह तो आगरा मथुरा प्रांत के सूबेदार रहे हे । कृष्ण भट्ट कलानिधि राम शिवदास खत्री जैसे सँकरान ब्रजभाषा के कवि इनके दरबारन की सीमा बढ़ामते हे । आमेर नरेश राजा मानसिंह ने वृंदावन मथुरा माहि अनेक मंदिरन की निरमाण करवाय के ब्रज संस्कृति को जीवित रखिवे की अथवा प्रयास कीनी हो । इन राजासँ आमेर के निकट एक रम्य स्थल की नामई कनक वृंदावन धरि दीनी हो । सवाई प्रताप सिंह के दरबार में तो ब्रज कविन की पुरोई जमघट हो । स्वयं प्रताप सिंह जी 'ब्रजनिधि' के उपनाम से कविता करते हे । ब्रजनिधि के दरबार में सरदारन अरु सूरमान की तरिया ब्रज कवीन की बाईसीठ बिनके दरबार में हती । महाकवि पदमाकर गनपति भारती, जगदीश भट्ट भोलानाथ, गिरराम, शिवदास, देव, रामनारायण एव रसराशि बिनम प्रमुख हे । समे समे पे इन सबन की सभा जुहती अरु ब्रजनिधिऊ वामे भाग सते हे । कोई एव बिसय लँके अपनी-अपनी प्रतिभा से बामे ब्रजभाषा में कविता करवे, तर-तरं से व्यंजना की सौन्दर्य बिखेरते । इनके प्रमाण आजऊ जैपुर के पोथी खान में सुरच्छित हैं । जाई तरिया जोधपुर नरेश जसवंत सिंह, अजोत सिंह, अमय सिंह आदि नरेशन

के आश्रय में ब्रजभासा काव्य की खूब रचना होमती ही । इनके अतिरिक्त मारवाड़ क्षेत्र के चारण कवि नरहरिदास बारहठ, करनीदास कविया, भारतमान, दुर्गादत्त बारहठ स्वामी गणेश पुरी जैसे सँकरान चारन कवि भये हैं जिनको नाम अबई इतिहास के पन्ना में नाथ आयी । जोधपुर नरेश विजय सिंह जीर्ण तो जा क्षेत्र कू ब्रजई बनाय दीना हो जाई कारन आजकल जोधपुर में कहाँ जाय है-

जोध बसायी ज धपुर, ब्रज कीनी ब्रजपाल ।

शालावाड़ की पुरानी नामई ब्रज नगर ही । ब्रज के श्रीनाथ जी कू आश्रय राज स्थान के मेवाड़ क्षेत्र में मिल्यो । जहाँ आजकल ब्रज सस्कृति जीवत है । भरतपुर करौली अरु किशनगढ़ तो आजकल ब्रजभासा में रने भय है । किशनगढ़ के नाथरीदास की जा स दम में उल्लेख मान करिबो पर्याप्त होयगो । ब्रजभासा की प्रारम्भिक प्रथ 'विजयपाल रासी' की सरजन करौली में भयो ही । जाके अतिरिक्त वेबीदास, जदुनाथ करौली के ब्रजभाषा के प्रसिद्ध कवि भय है । ह्या के नरेश रतनपाल की ब्रजकाव्य प्रेम कीन कू याद नाथ ? भरतपुर के सूदन सोमनाथ, अलाराम, रसनाथक, घासीराम जैसे ब्रजभासा के महाकविन तँ हिन्दी भासा आजकल जगमगा रही है । बल्लभ सम्प्रदाय के सात पीठन में ते पाच राजस्थान की धरती में हैवे ते प्रमानित होय है के जा प्रान्त की ब्रज सस्कृति अरु भासा तँ अति निकट की सबध रही है ।

साची देखी जाय तो ब्रजभासा ने राजस्थान ई नई अपितु सिंगरे देस कू उल्लास अनुराग अरु मिठास की सस्कृति दीनी हे जासी तँ के जन जीवन में मदा कष्ट कू भूलि के जीवन के स घष में हसते हसते आगे बढ़िबे की चाव रह्यो है । रसिक सिरोमणि श्री कृष्ण या सस्कृति के मूल उत्स रहे है । देस की कौन सी कीनी है ऐसी कौनसी भासा है, ऐसे कौन से लोग है जो या छबीले, मन मोहन श्री कृष्ण के लोक रजक सरूप सँ प्रभावित नाम भये । ह्या तानू के ब्रज सस्कृति के केन्द्र बिंदु श्रीकृष्ण के मुरूप ने काळ सभ में जीवन्त हिंदू भूतलमान के भेद कू भुलाय दीनी ही । अलीखान, रसखान, सेल नबी, मीर, अहमद ताज खानसेन वाली ब्या, अलीबख्त जैसे मुसलमान कविर्न ब्रजभासा में श्री कृष्ण के प्रति अपने मन के भाव प्रकट कीने ह । अलवर के मुसलमान कवि अलीबख्त की एक्ई उदाहरन जा प्रथम में देनी पर्याप्त होयगो ।

धि चोरत पवर्गी गयो दषो मासन चोर ।
अब आयो है दाव प तेरो ठाढ़ गाल मरोर ॥
तेरो ठाढ़ गाल मरोर चोर नित मासन सायो ।

तू रोजीना भग जाय सुसरे आज दाव पै जायो ॥
चल तेरी मैया पास ल चल, मरयो भुखमर्यो जायो ।

ब्रज भासा ने साहित्य के क्षेत्र में जा मिठास अरु ललित्य को प्रकट कीनी है वाते कछु चढ़िके जा प्रदेश के लोगन अपन मन के भावन को गीतन में बिखेरी है । ब्रज भूमि की का वैद्यर का मानुख का बच्चा सबन के रोम रोम में ब्रजभासा के मिठास की उल्लास पूरे उभार के संग आजकल व्याप्त है । ब्रज सस्कृति की केन्द्र बिन्दु गिरिराज गोबरधन रहे हैं । स्यात गिरिराज गोबरधन भारत के ऐसे देवता है, जामे ऊचनीच के भाव नेकऊ तो पास भाय आय पाये हैं । ऊचनीच की भेदभाव भूल के सबई लोग समान भाव से संग संग परिक्रमा गोबरधन में दे हैं । ऐसे गिरिराज गोबरधन के प्रति लोक विसवास के मनोहर भाव जुरे भए है । ब्रज सस्कृति मूलतः कृषि प्रधान सस्कृति रही है । कृषि पै ब्रज की लोक सस्कृति में जितेक साहित्य की रचना करी गई है । जितेक स्यात अ य चाऊ भासा ने कीनी होयगी । आज के वैय्यानिक माहोल में ब्रज के लोग पूरी तरिया जागरूक हैं । अपने अनुभव से कृषि की भविष्यदानी ब्रज के कृषि के लोकगीतन की अपनी विससता रही है । अबई तानू ब्रज लोक सस्कृति की कृषि विसयक अध्याय अग्यातई रह्यो है । हमन लोक जीवन में बिखर भये इन भावन को समेटके की प्रयत्न कीनी है । ब्रज के सामाजिक जीवन की एक एक रीति रिवाज गीत संगीत से भरी परी है । जनम से लके ब्याह सादी अरु जीवन के संस्कारन के अलग अलग गीत ब्रज लोक कला की अपनी विससता रही है । ऐसे सामाजिक रीति रिवाजन के लोकगीतन को एक स्थान पै समेट के समाप्त होते इन गीतन को सायक करिब की प्रयत्न कीनी गयी है । वाग्वेदग्यता ब्रज लोक जीवन की अपनी विससता रही है । बात को कहव की उम ब्रज लोकजीवन के उत्साह अरु मस्ती को सबन से बरी प्रमान है । एक-एक वाक्य में मुहावरे अरु लोकोक्तीन की मीठी मीठी ब्रज सस्कृति की सरसता की पवलात साक्ष है । वाग्वेदग्यता के इन भावन को सटीक प्रमान के संग समेटके की प्रयास कीनी गयी है । ब्रज लोककला में हमारे देस में बालभाव को पमाप्त आदर दीनी है । बच्चान के इन गीतन में बालमुलभ चपलता, सरलता के दरसन तो होय ई है सगई ब्रज सस्कृति के वाग्वेदग्य रूप की मोहकता सेउ जे गीत अछूते नाय । बच्चान के हर खेल के गीत है ब्रज लोक जीवन में । गुरु के दिग जायके पढ़िबे के गीत हैं ब्रज लोकजीवन में । इन सिंगरे गीतन की सरस बाननी हमन स जोई है ।

ब्रज के लोकोत्सवन की उछाह भरी मिठास तो पढ़े अरु अनुभव सेई मालुम पड सके है । ब्रज के ठेठ अक्षर के गीतन को इकठोरे करिके बिनको त्रमबध रूप में प्रस्तुत कीनी गयी है । इन गीतन के पढ़िबे से प्रमानित होयगी के आजकल ब्रज अक्षर के लोग सांस्कृतिक द्रिस्टी से जितेक समरिषद हैं । अध्यात्म की एक ते एक कठिन शक्ति इनके मोह से सुभाबिक लोक सस्कृति के प्रतीकन से प्रकट होय है । जि इनकी सांस्कृतिक सम-

रश्मि को सबन त बरो प्रमान है । ब्रज अक्षर के लोगसँ आज की दैनिक जीवन की समस्यान के कैंसी उल्हासमयी भासा में अनुराग भरे समाधान निवासँ है । याकौ विवेचन कीनी है । ब्रजवासी सुरू तेई सौन्दर्य प्रधान रहै हैं । हर वस्तु अरु भाव माहि सुन्दरता के दरसन करिबो ब्रज सृष्टि की अपनी एक अलग चेतना रही है । सासीवना जा सुन्दरता की आराधक ब्रज सृष्टि की सबन त बरो प्रमान है । मंदिरन ते लके लोक जीवन की गहराई तानू साक्षी के रूप में बिलरै भये ब्रज लोकजीवन के सुन्दरता के इन महनीय भावनान कू इकठौरी कीनी है । सौन्दर्य प्रधानता तँ कई इफ जीवन की समस्यान की उपेक्षा है जायो बरै है । परि ब्रज की लोक कलाकार सौन्दर्य की पुजारी हैबै के स ग स ग देश बाल की समस्यान तँ नाय कटी भयो । रास्ट्रीय आंदोलन माहि ह्या के कला कारनै एक त एक खोलती भयी रचना करिकँ लोगन कू देश की आजादी माहि प्राण विलजित करिबै की प्रेरना दीनी है । स गई आज के भारत की समस्यान पेऊ ब्रज की लोक कलाकार पूरी तरिया जागरूक है ।

आज के सद्भवन मेऊ ब्रज सृष्टि ने हमेसा परस्पर भाईचारे के भाव पैदा कर हमारे देश के लोगन कू जोरबै की प्रयास कीनी है । साम्प्रदायिक सौहाद पैदा करिब मे ब्रज सृष्टि की अपनी अनूठी इतिहास रह्यो है । ब्रज सृष्टि के देश के लोगन कू जोरबै के इन्हीं सुरन की बानी मिली है ।

काव्य सौरभ

ब्रज-रस

पीत परी मुरझी धरनी ब्रज बीत गये कवि के सब रजन ।
सीत भरे सिसके सुर सतन नाम रहे अलिके रस गु जन ।
प्रीत परी भयभीत थकी करनामय है बिलखै ब्रज कु जन ।
सूल गयो ब्रज की सुसमा रसहीन भये प्रिय के सुर रजन ।

गाय फिरँ वन में मटकी सुधियान सनेह गुपाल निहारे ।
गोधन की महती लखि प्रीत न दीखत आज कहा अब धारे ।
भासन दूध दही अब लागत ज्यो नभ फूल खिले सज यारे ।
गोप गरीब भये दु खिया रस मूव गये सब छाँह बिनारे ।

व्रज सस्कृति में रचौ बसौ नाथद्वारा

व्रज सस्कृति मूल रूप से देवालय प्रधान है। राधा अरु कृष्ण के अभाव में व्रज सस्कृति की कल्पना असंभव सी प्रतीत होगी है। मध्यकालीन वैष्णव आंदोलन की केंद्र बिंदु व्रज सस्कृति रही है। याते पहले ऊँ गुप्तकाल में भावगन धर्म व्रज सस्कृति की मूल स्रोत हो। मध्यकाल में वैष्णव भक्ति आंदोलन ज्यादातर राधा अरु कृष्ण के केंद्रित हैवे के कारण व्रज में ऐसी छाया के ना केवल वैष्णव अपितु राधा कृष्ण से सम्बंधित भीतरी सांस्कृतिक परम्परा अरु मायता राधा कृष्ण के रूप में ई स्वीकृत भई। कहवे की आवश्यकता नाय के वैष्णव भक्ति आंदोलन से पहले व्याप्त व्रज कला अरु सस्कृति कोई रूप नाय हो। मध्यकाल में जा वस्नव भक्ति आंदोलन की शुरुआत दक्षिण भारत से भयी। रामानुजनाय, निम्बाकायाय अरु माधवाकाय के माध्यम से राधा अरु कृष्ण की सस्कृति उत्तर भारत में उत्कर्ष की तरफ बढ़ी। 15 वी-16 वी सताब्दी तानू वल्लभ अरु चैतन्य महाप्रभु ने वैष्णव भक्ति के राधा कृष्णमय रूप कू सिंगरे भारत में फलाय दीनो। परिणाम स्वरूप राधा कृष्ण की सीला भूमि व्रज प्रदेश भक्ति आंदोलन की मूल केंद्र बिंदु बन गयी। व्रजभूमि भक्त अरु सत्तन की भूमि बन गयी। या समे देस के कौन कौने से भक्ति के प्रति अपने जीवन कू अर्पित करवे कू राधा अरु कृष्ण के दसनन कू आतुर कोटि कोटि लोग व्रजभूमि की तरफ उमडवे लगे।

व्रज, वस्नवजन अरु वल्लभ सम्प्रदाय —

व्रज की घरती दक्षिण के भक्त अरु सन्तन के आगमन से पावनता के सौंदर्य से महक उठी। परिणाम स्वरूप व्रज घारा तत्कालीन सिंगरे वैष्णव भक्ति सम्प्रदाय की प्रेरना स्रोत बनी। वैष्णव सम्प्रदायन की तीर्थ स्थान हैवे के कारण व्रज सिंगरे देस की मुख्य आकसन की केंद्र बन गयी। या समे भारत में विदेशीन के एक प एक क्रूर आक्रमण हैवे लगे है। अकबर की समे जरूर कष्ट सांतिमय हो। परि भाकी समे में तिप्पुर

विदेशी आत्ममन्त्र देस को हिलाय व रत दीनो । वसा सस्कृति की बात जब हाथ जब प्रानन की रच्छा है जाय । एस सफट बाल म ब्रजभूमि म आय व तपस्वी वैष्णव सतन अपनी साधना व तज ते सिगर भारत को अलावित करके भारतीय जीवनचर्या की आत्मा को नई भरन दीनो । यस्नव पुगवन भारतीय जीवनचर्या व साहित्य को जीवित रखव व स ग स ग हमार देस की कला अरु सस्कृति की महव की रच्छा के स ग स ग बाध चमय को द्विगुनित करिव म नैकऊ कमर नाथ छोड़ी । ब्रज के आग वैष्णव सम्प्रदायन के स ग स ग बल्लभ सम्प्रदायन भारतीय कला अरु मस्कृति को जीवित रखव मे जा योग दियो है बाय वभी भूलो जाय स है ? जाई की परिनाम है कि हमार देस की कला अरु सस्कृति ब्रज भूमि के वैष्णव सतन के उपकार अरु अयदातन त भरी पड़ी है । काव्य, संगीत, बिभ्र मूर्ति अरु स्थापत्य कला के प्रानन की रच्छा के स ग-म ग उत्कृष्ट की माधुय पारव म ब्रजभूमि के वैष्णव सतन की जितेक प्रस सा करी जाय बिनकी जितेक अहसान मानो जाय बितेई छोरो है । इनही तपस्या के आनीक ते सिगरा देस जगमगा छठयो हा । हमार देस की स्थातई कीई एसो सहूर होय जो ब्रज भूमि के वैष्णव सतन की साधना के प्रसाद त बचित रह्यो होय ।

पुष्टि सम्प्रदाय के आचार्य बल्लभ सरु ओनाथ जी की प्राकटय—

पुष्टि सम्प्रदाय के आदि आचार्य बल्लभाचार्य जी बिष्णु सम्प्रदाय की परम्परा म एक स्वतंत्र भक्तिपथ के निर्माता शुद्धाईत दसन सिद्धांत के मानवे बारे अरु अनुपह प्रधान भक्ति सेवा समर्पित पुष्टिमाग को चलायन बार है । कहा जाय है कि बल्लभाचार्य जी के पुरखा आ धर राज्य म गोदावरी नदी के पास कारवाड नाम के स्थान के निवासी है । वे भारद्वाज गौत्रीय तैत्तिरीय ब्राम्हण हैं । बल्लभाचार्य की जनम संवत् 1529 मे मानो जाय है । बहुत विद्वान बिनको जनम 1535 को माने है । बल्लभाचार्य जी की प्रारम्भिक जीवन कालीन म व्यतीत भयो । बिनकी सिच्छा झाई झाई । आपने पढाई पूरी करे पाछे भगवत साहित्य के प्रचार प्रसार को सिगरे देस की यात्रा कीनी । बाता साहित्य के आधार पे बिन प्रमुख रच ते तीन यात्रा कीनी ह्ये । स 1549 की फागुन शुक्ला ग्यारस गुरुवार को बिनके मनमे ब्रज की यात्रा की विचार बनो अरु स 1550 की गर्मान मे वे ब्रज मे आय । गोकुल मे बिन चातुर्मास करते भये भगवत की कथा करी । कहा जाय है कि बल्लभाचार्य जी अपने तीसरी यात्रा के समे स 1556 मे दूसरी दफे ब्रज मे आय है । बाता साहित्य ते ग्यात होय है कि बल्लभाचार्य जी मथुरा ते गोवर्द्धन आये झा बिन सद्द पाछे के चौतरा पे निवास कीनी । आचौर गाम के निवासी अरु खारियान ते बिनको मानूम परी की गिराज पहाड़ी की गुफा म भगवत सम्प की प्राकटय भयो है । माधवद्रुपी ने बिनको नाम गोपाल रखके पूजा की आयोजन कीनी हो । पर विपरीत घम प्रवृत्ति के कारण वे बाकी व्यवस्था नाप कर

सवे । आचार्य जी ने म्हा पीच के उक्त सरूप व दरसन कीने अरु बिनकी नाम गोव-
द्ध न नाथ अथवा श्रीनाथ जी घर दीना । म्हावे आसपास के निवासीन कूँ उत्साहित
करके गोरधननाथ (श्रीनाथ जी) की सेवा पूजा करवे की व्यस्था कीनी । बिनकी प्रेरना
से श्रीनाथ जी के रूप में भगवान श्री वृष्ण की बाल त्रिसोर भावनात्मक सेवा पूजा सुरू
भई । बा समे आचार्य बल्लभ ने गिराज पहाड़ी पे छोटा सा मंदिर बनाय दीनी ।
ब्रजवासी अर्थात् पूवक बिनकी सेवा करवे सगे । बल्लभाचार्य जोश अनक ब्रजवासीन
कूँ अपनी सिरुप अरु सेवक बनाक श्रीनाथ जी की सेवा पूजा कूँ अर्पित कीनी । जामे
कुम्भनदास की प्रमुख नाम हा ।

ब्रज में श्रीनाथ-देवालय निर्माण अरु धस्तछाप—

बल्लभाचार्य जी स 1558 में फेर ब्रज आये अरु बिघ्न हरिभक्त पूरणमल खत्री
के सहयोग से श्रीनाथ जी के मंदिर के निर्माण के काम की सुरूआत करी । वार्ता
साहित्य में लिखी है के स 1556 के बैसाख शुक्ल तीज कूँ श्रीनाथ जी के मन्दिर की
निर्माण प्रारम्भ भयो । मंदिर के निर्माण में अनेक तरिया की बाधा आती रही पर म
1776 में या मंदिर के निर्माण की काम पूरी हो गयी । श्री गोबरधन नाथ जी के
प्राकट्य की दृष्टि से बल्लभाचार्य जी बा समे अहेल से गोबरधन आय अरु स 1776
की बैसाख शुक्ल तीज कूँ बिघ्न बड़ो समारोह करके श्रीनाथ जी को पाटोच्छव कीनी ।
धीरे धीरे श्रीनाथ जी की वैभव दिन दूनो रात चौगुनो बढती गयी । दूध घर की सेवा
कूँ सँकरन गैया ब्रजवासीन भेंट करी । कुम्भनदास मूरदास अरु कुलदास बल्लभाचार्य
जी के सेवक बनके श्रीनाथ जी की सेवा पूजा कूँ अर्पित हो गये । मूरदास जी कूँ
श्रीनाथ जी को प्रमुख कीर्तनकार नियुक्त कियो । कुम्भनदास कूँ बिनकी सहयोगी अरु
वृष्णदास कूँ मंदिर की प्रमुख सहयोगी बनायी गयी । बल्लभाचार्य जोश अपनी यात्रा
में जिन जिन स्थानन पे श्रीमदभागवत की प्रवचन कीनी म्हा बिनकी बैठक बन गयी ।
बल्लभ सम्प्रदाय में इन बैठकन कूँ मंदिर देवालय की तरिया पवित्र दस नीय मानो
जाय है । इनकी सख्या 85 है जामे 24 ब्रजभूमि में है । कहाँ जाय है के बिघ्न 52
बरस की आयु में संवत् 1587 में गंगा में प्रवेश करके जल समाधि ले सई
ही ।

विठ्ठलनाथ जी की तेज अरु बखबर बावशाह—

बल्लभ सम्प्रदाय में विठ्ठलनाथ जी की नाम विशेष रूप से लियो जाय है । ये
बल्लभाचार्य के दूसरे पुत्र है । इनकी जनम 1552 की वृष्ण पोष दोज की शुक्रवार
कूँ कासी के पास चुनार में भयो हो । स 1607 में विठ्ठलनाथ जी ने बिधि पूवक
बल्लभाचार्य की आचार्यत्व ग्रहण कीनी । वार्ता साहित्य में लिखो है के श्रीनाथ जी
स 1623 कूँ मथुरा पधारे अरु ह्या पे सतधरा में दो महीना 22 दिन रहे । बा पाछे

वे पुन गिराज के मन्दिर में आये गये । स 1620 में अकबर मयुरा आये । वू बिठल-सनाथ जी के आकर्षक व्यक्तित्व पादित्य अरु भक्ति सतमय धार्मिक जीवन से भीत प्रभावित भयो । परिणाम मरुप अकबर ने बिठलनाथ जी से प्रभावित है के जा सम्प्रदाय कूँ भोतेरी सहस्रियत प्रदान कीनी । बिठलनाथ जी ने अपनो निवास दाा लियो । स 1628 में गोकुल में भीतरे मन्दिर (नवनीत प्रिया आदि ते मन्दिर) बन गये । अकबर ने बिठलनाथ जी कूँ भीतेरो सुविधा प्रदान कीनी । पटटे परमान आदि जारी कीने । जि अकबर के मूल फरमान आजकल धीनाथद्वारा के गुमाई गोविंदलाल जी के पास सुरक्षित है । इन परमानन में बिठलनाथ जी कूँ निमय है के गोकुल में निवास करवे की सुविधा प्रदान कीनी । बिठल जी की गैयान कूँ चरवे की सुविधा प्रदान कीनी । गुसाई जी की गैया चरवे की भूमि कूँ वर ते मुक्त कर दीनी । गुसाई बिठल सनाथ जी अर दिनके बसजन कूँ जतीपुरा अर गोकुल गाम माफी में दे दीन ।

राग भोग अरु सगीत की सगम पुष्टि भाग अरु अष्टछाप—

बिठलनाथ जीने पुष्टिभाग सेवा के विस्तार में कातिकारी परिवर्तन कीने । बिन ठाकुरजी की अनकूटोच्छ्रव अरु पाटोच्छ्रव कूँ भव्य अरु बलात्मक रूप से प्रचलित कीनी । बिनके बनाय भये नियम आज तानू पुष्टिभाग के मन्दिरन में मिले हैं । बिर्ता राग भोग अरु सगीत का आधार पे भक्ति भाव की स्थापना कीनी । बिठलनाथ जीने धीनाथ जी के आठ झाकी अरु रिशु कूँ ध्यान रखते भये कीतन करवे की शुरुआत कीनी । बिन चार सिस्य अपने, चार अपा पिता के लैके श्रीनाथ जी के मन्दिर में कीतन की व्यवस्था कीनी । ये आठो अपने समे के थैठ सगीतकार है । बल्लभाचार्य के कुम्भनदास, मूरदास परमानन्ददास, कृष्णदास अरु अपने सिस्य गोविंद स्वामी, छीत स्वामी चनुभुज दास नन्ददास इन आठन ते मिलके अष्टछाप की स्थापना कीनी । पुष्टि सम्प्रदाय में इनकूँ अठसत्ता के नाम में सम्पादित किया जाय है । आज हमारे देश में भारतीय सगीत का जो रूप मिले है, भक्ति अरु वाक्य कला की जो पावन प्रकाश दृष्टिगात्र होय है वामे अष्टछाप के इन कविन की योगदान के सेऊ नाय भूसायी जा सके । इन कविर्षी अपनी व्रजभाषा की सगीत की महरोन ते सिंगरे दस कूँ डुवाय दीना । हमारे देश के थैठ काय की जब चर्चा होय तो बल्लभ सम्प्रदाय के इन अष्टछापन की योगदान सबन ते पैल स्मरण किया जाय है । इन कविन में सबन ते पैलो नाम अध कवि मूरदास की आवैं है । अष्टछाप के आठो कवि अलग अलग स्थान पे निवास करते है । वे रोजीना धीनाथजी की झाकीन में अपने नियम समे पे कीतन करते है । इन आठ कीतनकारन के सहकारी है । इन कूँ भीका मिलते हो व इनके पदन कूँ लिख लेते है । ये सिंगरे कवि आमु भवि है अरु अपन समे के महान सगीतकार ह । 1639 में ये आठ कवि विद्यमान ह । कृष्णदास, मूरदास, परमानन्ददास की स्वपवास बिठलनाथ जी के

स्वगवास ते पले ही है गयी हो । गोविंद स्वामी छीत स्वामी कू जैसे बिठलनाथ के स्वगवास की समाचार मिलो बिना ऊ अपने प्राण त्याग दिये । सूरदाम को निवास परा-सोली चन्द्र सरोवर, कुम्भनदास जी की निवास चन्द्र सरोवर के पास जमुनाभतो, वृन्दादास को जतीपुरा के पास परमानन्ददास ऊ जतीपुरा के निकट सुरभी, गोविंद स्वामी जतीपुरा के पास ई, छीत स्वामी मथुरा में अरु कुम्भनदास के पुत्र चतुर्भुजदास की निवास अपने पिता के पास हा । नन्ददास गावरधन मन्दिर के नीचे ही रहते ह ।

श्रीनाथ जी की सज ते पलायन

श्री गोवरधनाथ जी के प्राकट्य की वार्ता की दृष्टि से श्रीनाथ जीन स 1726 की आस्थीन पूर्ण शुक्रवार कू गोरधन छोड़ो । गोवरधन ते चलके श्रीनाथ जी रातो रात आगरा पोचे । आगरा में ई श्रीनाथ जी की अन्नकूटोच्छ्रव भयो । वातिक के महिना में ये आगरा ते चलके ग्वालियर कोटा पुंकर हते भये किशनगढ़ ते चलके जोधपुर चीपा-सनी पोचे जहा 4-5 महिना बिराजते रहे । म्हाई बिनको अन्नकूट उच्छ्रव मनायी गयी । मेवाड़ के राणा राजसिंह के सहयोग अरु बिनके छत्रधाम में स 1728 में वातिक माह में श्रीनाथ जी सिंहाड नाम के स्थान पे पोचे । म्हा मन्दिर बन जायवे प फागुन में वृन्दा सप्तमी कू पाटोच्छ्रव मनायी गयी । जा सरिया गिराज गोरधन के मन्दिर ते वतमान नाथद्वारा तक की घनघोर विकट यात्रा में दो बरस चार महिना अरु चार दिना लगे । अदाज लगायी जा सके कि श्रीनाथ जी के गुसाईं अरु बिनके सेवकन ब्रजवासीन कू इन दो बरसन में कितेक कष्ट उठाने पड़े हुये ।

गोवरधन ते मेवाड़ पहुँचवे की कष्टमयी यात्रा में श्री जी कू जा रथ में यात्रा करवाई गई ही कू आजऊ नाथद्वारे के रथस्थाने में बिराजो भयो है । यात्रा के माग में श्रीजी की अष्टधाम सेवा में कोई अंतर नाथ आयो । श्री ठाकुर जी की साथ दायन होयवे पे रथ जोरि के यात्रा शुरू करते । प्रात काल मगला के समे यापै पड़ाव डार दियो जातो । दिन भर सेवा होती रहती । एव रथ में श्रीजी बिराजते एक में दोऊ गुसाईं बालक बिराजते एव के माहि अजब बाई । सग में गाडे लदे भये हे जिनमें जलघड़ा की गाड़ा काँची पाकी सामग्रीन के गाड़ा, दूधघर, फूल पानघर सिंगार घर आदि हे । श्रीजी की गैया सग चलती । गूजर जाट बामन नाई नाथे राजपूत जातन के सेवक अपने घर डार सबन कू त्याग के श्रीजी के सग अपन अवोध वच्चा अरु मैया भैन भोटियात कू लवे यात्रा में दिन रात गर्मी वरसात अरु सर्दी में चलते रहते ।

पुष्टि सम्प्रदाय सात घर में ते पाँच राजस्थान माँहि

नवनीतप्रिया जी श्रीनाथ जी के सग नाथद्वारा माहि बिराजे । श्रीनाथ जी ते पले श्री द्वारकानाथ जी के सरूप गुजरात के राजनगर अरु फेर मेवाड़ के आसाराम

नाम के स्थान पँ गये । म्हाते फिर काकरोली में आये जहाँ आजऊँ विराजमान है । दूसरे घर के तिलकायत श्री हरोराय जीर्ण अपने सेव्य मुरूप श्री बिठठलनाथ जी कू सके श्रीनाथ जी के सगई ब्रज छाडी हो । विघ्न मेवाड के खिमनोर नाम के स्थान पँ आश्रय लीयो । जा तरिया पुष्टि सम्प्रदाय के सवा सरूप श्रीनाथ जी श्री नवनीत प्रिया जी, दूसरे अरु तीसरे घर के उपास्य सरूप श्री बिठठलनाथ जी अरु श्री द्वारिकानाथ जी मेवाड की धरती पँ विराजे । अपने राज्य में अ स्रय देके तत्कालीन मेवाड नरेश राजसिंह ने बडी ई हिम्मत अरु साहस की परिचै दानी हो । पहिल घर के उपास्य मधुरेग जी कोना माहि विराजे । कछु समै पहले वे जतीपुग पौच गये हे । पर अब पुन कोटा ई आय गये हैं । एचम अरु सप्तम घर नमश गोकुल चन्द्रमा जी अरु मदनमोहन जी कामा राजस्थान में ई विराजे भये हैं । जे अस्थाई रूप ते कछु दिना कू हटाय गये हैं । चतुष घर के गोकुलनाथ जी ऊ कछु समै जयपुर रहे । परि वे पुन ब्रज के गोकुल में चले गये । तृतीय ग्रह कू तत्कालीन गुसाई प्रजराज जी सकटकाल में ब्रज ते हटाय के सूरत ले गये । वे म्हाई विराजमान हैं । जा तरिया पुष्टि सम्प्रदाय के मात पीठन में ते पाव राजस्थान की धरती पँ विराजे भये हैं । चौथो अरु तीसरो घर गोकुलनाथ जी अरु ठाकुर श्रीबालकृष्ण स्वरूप सूरत माहि विराजे भये हैं ।

श्रीनाथ जी के सग ब्रज सत्कृति की मेवाड माहि आगमन

कह्ये की आवश्यकता नाथ की तीन सताब्दी पैले मेवाड की धरती पँ ब्रज चद्र श्रीनाथ जी की पदापण भयो । श्रीनाथ जी के सग ब्रज ते ब्रजभाषा के सग सग ब्रज की कला अरु सत्कृतिऊँ ह्य आई । श्रीनाथ जी के कारन जिनकी रोजी रोटी जुडी भई ही ऐसे कवि अरु कलावतऊँ दो बरस की कठिन यात्रा करके एव जगत के नाना तरिया के विषट कस्टन कू क्षेतते भये वे नाथद्वारा माहि आश्रय ले बस गये । संगीत, कला काव्य कला, पाव कला, फूल कला, साक्षी कला चित्रकला आदि कलान के सरूप श्रीनाथ जी के सगई नाथद्वारा माहि आये । गुसाई बिठठलनाथ जीने विभिन्न कलान कू दृष्ट कू समर्पित करके वामे राग अरु भोग के सग अध्यात्म की अनूठो साम्य कीतो हो । जाई कारन बिघ्न "पुढाईत देवालयन में नित्य उत्सवन की प्रावधान कीनी ।

पुष्टि सम्प्रदाय के देवालय घर परम्परा

निवेदन करो गयो के श्रीनाथ जी के सग अपनो जीवन यापन करवे बारे कवि कलावत अरु साहित्यकारऊँ दो बरस की कठिन यात्रा करके मेवाड पोचे हे । जा सभे की ब्रज सत्कृति अरु आज की नाथद्वारा की ब्रजकला सत्कृति को जब मिलान करे हे तो आश्चर्य होय है के मसुरा गोवट्टन अरु बंदावन में जहाँ परम्परित ब्रज कला अरु सत्कृति में आधुनिकता के आवन के कारन ओतेरे देवालयन की परम्परा मिटती जा रही

है या परिवर्तित है रही है, म्हाई नाथद्वारे मे आजऊ हमकू देवालय म बा कला अरु सस्कृति के दसन होय है जा तीन सताब्दी पैले गोरधन ते चलते सभे ही । पुष्टिमार्गी सम्प्रदाय के रुढ सधन की प्रयोग आजऊ नाथद्वारे मे पूरी तरिया ते मिले है । आस्चय होय है के मेवाडी भाषा के चारो तरफ फिरे हेवे के पस्चातक परम्परागत रीति रिवाज अरु सन्दावली आजऊ नाथद्वारे मे ब्रज कला ते लिपिटी भई है । उदाहरन कू हम कुछ रुढ सधन की ह्या उल्लेख कर रहें हैं जिनकी नाथद्वारा म आजऊ प्रयोग बाई अथ मे होय है — अधिकारी (ठाकुरजी के मन्दिर की प्रमुख व्यवस्थापक) अनसखड़ी — (जाम पक्वो भोजन ऊ कहू है) अनौसर — (ठाकुर सेवामे मध्य विस्राम) अपरस (ठाकुर सेवा मे अरु भजन पूजन म सुद्धि) अनुग्रह — (कृपा अम्यग—आवला चदन आदि सौ ठाकुर स्नान) अष्टग्रामी — (आठ पहर की) अलकावलि — (ठाकुरजी के सग की एक आभूषण) आपथी (आचायन के लिये आठरणीय सम्बोधन) उपरना — (दुपट्टा) कतरा — (ठाकुरजी के माथे पे मोरपख की साज) कुसह (ठाकुरजी के माथे प पगड़ी जसी साज) खण्डपाट — (ठाकुरजी के आगे भोग रखे की एक लकड़िया की मेग जसी वस्तु) चरणामृत — (चरण की धावन) जाड़ — (ठाकुरजी के माथे पे मोरपखी साज) जलघडिया — (पानी भरवे चारो सेवक) टेरा — (पर्दा) डबरा — (ठाकुर सेवा की एक बरतन) डोल — (एक ल्योहार बढी करनी — (जब ठाकुर जी को कोई साज अरु वस्त्र उतारी जाय है तो बाय 'बढी करनी' कह्यो जाय है) बटा (ठाकुर सेवा की एक डिब्बा जामे मिलि भोग जैसो पदाय रखो जाय है ।) बाबा — (गोस्वामी आचायन के लरिका) बेटीजी — (गोस्वामी आचायन की बालिका जिनकू आजीवन बेटीजी कह्यो जाय है) बैठक — (आचायन के स्मारक) मल्लकाछ — (ठाकुरजी की एक अघोवस्त्र) भीतरिया — (जो ठाकुर सेवा म भीतर काय करे है अरु जो खाद्य सामग्री तयार करे है) मुखिया — (ठाकुर जी की प्रमुख सेवा सिंगार करवे वाली) भगवदीय — (वैष्णव भगत) निजमदिर (ठाकुरजी की मुख्य स्थान जा जगे देव विग्रह प्रतिष्ठित हो) लिखिया — (बहीखाता लिखवे वाली) स्वरूप — (देवविग्रह) थ्रीजी — (ठाकुर जी) सखड़ी — (दाल चामर सहित खाद्य जाय कच्ची भोजन कहे है सधानो—अचार, मुरब्बा) सैया मन्दिर — (जहा ठाकुरजी के आचयन की व्यवस्था होय) सीधौ — (भोजन की कच्ची सामान) ।

देवालय के उच्छव धरु सांझी कला

गोस्वामी बिठुलनाथजी ने पुष्टिसम्प्रदाय के दो तरिया के उच्छव निश्चित कीने 1 नित्य प्रति 2 वारसिक । बरस मे हेवे बारे इन उच्छवन की लम्बी सूची है । जनम आठे, रामनवमी अन्नकुट आदि के सग साझी कौ आयोजन हू श्रीनाथ के मन्दिर मे होय है । ब्रज मे जहा मूल कलान कौ ह्रास है रह्यो है । साची पूछी जाय तो नाथद्वारा मे आजऊ बाई रूप मे ब्रज की मूल कला प्रतिष्ठित है जैसी तीन सौ बरस पैले ही । श्रीनाथ जी के मन्दिर मे धाढ के सुरु के 15 दिना तानू साझी निर्माण की

सिगरी वाम कदली वृक्ष के पत्तान ते पूण होय है आकृति बनायवे मे मूसल कलाकारन द्वारा कागज की कटिंग बनायके बाते अनेक तरिया की आकृति तैयार करी जाय है । इन आकृतिन कू साचो कहे है । इन साचेन मे नाथद्वारा छेत्र अरु ब्रज प्रदेस के मानवकार छटायुक्त पशुपक्षी आदि की आकृति उनाई जाय है । सुम्ह के 15 दिना तानू कदली वृक्ष के पत्तान ते कटिंग काटके नरै तरै की आकृति बनाई जाय है । दमन के पाछे जब हाथी पाल को दरयज्जो बन्द है जाय तो इन आकृति को प्रदसन कियो जाय । विभिन्न बाग-बगीचा ते जिनम साल बाग बूदावन बाग बछवाई रातडिया, आडन बाग, बडा बाग आदि प्रमुख है । इन बागन म तो कदली वृक्ष के पूरे पत्तान कू फूलघर म लायो जाय है । फूलघर के प्रमुख फलघरिया जी अरु बिनके नीचे बाम करव वारे सेवक अरु भगत लाग डठवन कू अलग करे है । इन पत्तान ते बागज के साचेन ता छोटी कंबी ते तरै-तरै की आकृति उनाई जाय है । इन आकृति कू बनायवे मे फूलघरिया जी बिनके नीचे काम करवे वारे सेवक बडे चतुर होय है । ये सिगरी आकृति नाथद्वारा ब्रज छेत्र ते सम्बधित होय है । नाथद्वारे ते सम्बधित आकृतिन म फूलघर, पानघर भजार तिबारी कमल चौक रतन चौक आदि होय है । घर प्रसाद हाथी घोडा बाग बगीचा क्षेत्र चीता हरिण खरगोश, बोल भोर तोता बुड सरोवर नदी झरना गिरी जंगल, नदी को किनारी, घाट पशु पक्षी गणगौर की सवारो की आकृति कदली वृक्ष के पत्तान ते बनाई जाय है । ब्रज प्रदेश ते सम्बधित कई जगै पशु-पक्षी की आकृतिन इन पत्तान म बनाई जाय है । बिशाम घाट गिरिराज गान्धन, श्रीडा रत गोधन, गारधनधारी श्री कृष्ण, सुरभिक्षु क, दान घाटी मासन चारन श्री कृष्ण, श्री कृष्ण अरु ग्वाल बाल, गोप-गोपी, मधुनाजी कुमुम सरोवर फूल फूलवारी लाल मीह क बन्दर, तोता मार, मानसी गंगा आदि प्रमुख है । जाके अलावा नाथद्वार म आठ पञ्च के औसर पे कुवारी ब्या गोबर ते सौंवी बनामे है । बाये फुन पत्ती लगाके आकृति की वस्त्र अरु अय प्रकार ते सज्जा करी जाय । भिंडी के बीजन को उपयाग आल बनायवे मे करो जाय है । आठिरी दिना कोट बनायो जाय है । या दिना कदली पत्तान को काम ई होय । बाये पशु पक्षी, सूरज चाइ चित्तारे, मीराबाई दापडिया चोर, राजा रानी आदि बनाये जाय है । पन्द्रह दिना तानू ह्या साक्षी घरन की दीवारन प बनायी जाय है ।

नाथद्वारा मन्दिर की सज पाक कला

महिमामयी वैभववाली श्रीनाथ जी कू अर्पित कर जायवे वारे प्रसाद भक्षण म भीतरई लोकद्रिय है । जा प्रसाद के निर्मान की विधि मंदिर के मुखिया अरु बालभोगिया के अलावा बाऊ कू पतो नाय । कौनमे पदाथ का मात्रा म मिलायो जायगो जि बात गोपनीय राखी जाय है । श्रीनाथ जी के प्रसाद पे 30 ते 40 लाख रुपये वापिक व्यय होय है । हर महीना पाच सो पीपा पी, एक सो पञ्चमीय बोरी गवकर, दादाम, पिस्ता दास आदि प्रत्येक 50 किला के आसपास खर्च होय है । प्रत्येक बरस 10 किला केसर,

ढाई सौ ग्राम कस्तूरी अरु 10 हजार रुपैया की अम्बर काम मे लयी जाय है । श्रीनाथ जी के प्रसाद म सबन मे प्रसिद्ध है ठौर जो 12 घटा तानू धी मे तैयार होय है । श्रीनाथजी कू भोग लगबे के पश्चात्त मे प्रसाद प्रसादी भण्डार अरु रसोई घर मे पीच जाय है । म्हाते जि परसाद मन्दिर के सेवकन म बट जाय है । प्रत्येक दिना बनवे बारो परसाद दो तरिया की होय है सकडी अरु अनसकडी । सबेरे राजभोग अरु सेन के पश्चात्त सकडी परसाद निबरे है जामे चामर, रोटी, बाटी, जौरा, पूरी, खरखरी, भुजैना, सूरन (जाडे मे थपडी खीर, सकरपारे, नू जे कचोरी, श्री खड, दही अमरस बासुदी, छछ, पणा, सीरा, चूरमा, सेवविलसारु, रायता, अचार, मुरब्बा, पापड कडी होय है । जाई तरिया अनसकडी परसाद है—दूध भाजन मिथी मैदा, बादाम की हलुवा, बरफी, दूध घर की गोल पूरी, बरफी, घू दी मनोहर मत्तू, चूरमा के लड्डू, पजीरी, मेवाभात तिल के लड्डू, ठौर, मठरी साजा, पूरी, चन्द्रबट्टा, वेधर, जलेबी मोहनथाल, मेसू मेवे, मावे की नू जे, बादाम पाक, मेवा बाटी खोआ, खीर रवडी मलाई पेठा पाक आदि है ।

इन प्रसाद म जाडे के दिनान मे श्रीनाथ जी कू सौभाग्य सोठ की भोग लगायी जाय है । जि एक तरिया की बरफी है । जाकी बजन किलो सवा किलो होय है । जाके चनामे म केसर, कस्तूरी, इलामची बादाम पिस्ता आदि बहुमूल्य प्रदाय काम मे ले है । याकी कीमत 1000/ रु तक होय है । जाके अलावा बरत मे दो दफे कुनवारो होय है जामे सीरा, हलुवा अरु खीर बने है । पानघर मे कई सेवक पान की सामग्री तयार करै है ।

पुष्पकला की सौदग

ब्रज निकटन भगवान श्रीनाथजी के विग्रह कू अनेक प्रकार के वस्त्र अरु आभूषणन ते सजायो जाय है म्हाई फूलन ते सजायबे को विसेश प्रावधान है । श्रीनाथ जी के मन्दिर मे एक अलग सौ विभाग है जाय फूलघर कहे है । फूलघर के प्रसासनिक अधिकारी कू फूलघरिया कहे है । फूलघरिया की सेवा कू पाच व्यक्ति नियुक्त है । फूलघर मे रोजीना सिगार के समै एक माला राजभोग के समै दो माला सेन के समै हार सिद्ध तैयार कर्यी जाय है । हार की निर्मान अलग अलग मोसमी फूलन त करी जाय है । 12 महिना मे अलग-अलग तरिया के फूल प्रयोग मे लये जाय है । गरमी मे मोहरा मोरली, चमेली, जूही, रायबेल, पीत निबारा जाडेन मे कु द की कत्ती चमेली, लाल गुनाच, दसत चम्पा, गुलाबास आदि ।

ब्रज सस्कृति के मूल सुरु गयान की पूजा —

ब्रज सस्कृति देवालय की सस्कृति है । देवालय की जा सस्कृति मे गैया की महत्व सबन ते ज्यादा होय है । श्री कृष्ण की सरूप तबई सायक मानो जाय है जब ये गैया की

सेवा कर ले है। नाथद्वारे में ब्रज की धेनु प्रधान सस्कृति के साक्षात् दसन होय है। अनकूट उच्छ्रव मूल रूप मी ग्वाल बाल के अभिनन्दन अरु गैयान की पूजा की दिना है। मन्दिर की गोसाला में अगहन पूनी ते गो घन सजावे की काम सुरु है जाय है। बिनके सींगन कू रगा जाय है तरै तरै के उपादान बनाये जाय है। ग्वाल बालक आभूषण पहरे के मजे है। ये उच्छ्रव घनतेरम ते सुरु हैं जाय है। दीवारी के दिना श्रीनाथ जी के नाथबास स्थान की गोसाला ते सजे ग्वाल बाल गोघन कू सजाप के नाथद्वारा में आये है। सजा कू चार वजे के आसपास श्रीनाथ जी की प्रमुख गैया कू आग रत्न के वे गैयान ते क्रीडा करते मन्दिर की तरफ जाय है। पूज्यपाद गान्धाम्भी महाराज प्रमुख गैया की पूजा करै हैं। अरु बाके कानन में अन्नकूट ममाराह में सिगर गोघन सहित सामिल हवे की नौतो दे हैं। जाय काह जगाई कह्यो जाय है। ग्वाल बाल अपनी गैयान के सग नाना प्रकार की क्रीडा करते भये चौपाटी की तरफ ते मन्दिर में पौचे है। गैयान के मन्दिर में पौचवे ये पूज्यपाद गुसाई जी चौक में वन भये विसाल गोरघन की पूजन करै है। परकम्पा करे पाछे प्रधान गैया ते गोरघन कू गूदवायो जाय है। फेर गैयान कू बिदा करयो जाय है। ग्वालबाल बाई रस्ता ते गोसाला में चले जाय है। जा रस्ता ते आमे है। हजारो लोगन की जि इच्छा रहे है नाथद्वार के जा दस्य कू देखे के वे सरस अनुभूति के कल्पनालोक में डूब जाय। गैयान के सग उछरते कूदते भये ग्वाल बालन कू देखे के दसन बा कल्पना लाक में खी जाय है जब श्री कृष्ण अपने मखान के सग में गैयान कू हाकते जाई तरिया आमते हुगे।

चामर की लूट की अद्भुत दस्य अरु अन्नकूट की सामग्री

दीवारी के दिना 9 वजे ते लाल दरवज्जे की तरफ भीड़ हवे सग जाम है। भीसन की घरवारी बड़े-बड़े टोकरा लके तैयार रहे है। दसन खुसब के कछु सभै पाछ लूट सुरु करिखे कू सूरजपोल को दरवज्जा खोल दियो जाय। हजारन की सख्या में भील नगर खाने के चौक त भाजने अरु किसकारी करते सूरजपोल में प्रवेस करे है अरु रतन चौक सौ डील तिवारी में चामरन के गरम गरम डेर पै चढ जाय है। इनके सरीर में लगोटी के अलावा अय बाऊ तरिया की वस्त्र नाय होय। बम चामर भरिखे कू गरे में एक थैला सटकी रहे है। व अपन थैला में ज्वादा सौ ज्वादा चामर भरिखे घरवारी के पास पीचा दे है। सकहन की तादाद में भील या लूट में सम्मिलित होय है। हजारन व्यक्ति गोरघन चौक में ठाढे है के नाथद्वारा के जा अनुपम दस्य कू देखे है। ब्रजभूमि की तरिया नाथद्वारा मऊ श्रीनाथ जी के अन्नकूटाच्छ्रव में भीतर तरिया की सामग्री बनाई जाय है। धूली सब भात की अनेकन बड़ी बड़ी नाद भर के भोग लगायो जाय है। इन नादन में सामग्री के सग मनन घी हाय है। जात अलावा दही भात, राईभात बड़ी भात पेवर खुरमा, खाजा मगद, मूजा, मठडी बून्दी रबड़ी दही पन्धन के पना, मोठे पुआ, मेसू अनेक तरिया के रायत बड़े पापड़, तरी भई अरवी रतालू आदि बनाये जाय।

नाथद्वारा की चित्रकला

श्रीनाथ जी के सग भीतर चित्रकारक व्रज से मवाड में पधारे हैं। इन चित्रकारक की वतमान में काठ तरिया की इतिहास उपलब्ध नाथ हाथ है। जयपुर अरु मेवाड के चित्रकारक के नाथद्वारा आगमन को जकर इतिहास मिल है। श्रीनाथ जी के मंदिर के आगमन अरु देहरी पर प्रत्येक उच्छ्रव पर माहन माडे जाय है। श्रीनाथ जी को सरप स्वयं म चित्रकला के सिंगर विधान कू समटेवे वारी अर कलाकार कू दिव्य प्रेरणा दव वारी है। पुष्टिमाग म हाथ की कलम से वन चित्रन की सेवा पूजा जरूरी मानी गई है। सग में सेवा अरु सिंगरे सम्बन्ध नियमित वने रहे या दृष्टि सौ तिलकायत जी अरु गुसाई बालकन द्वारा चित्राथ चित्र की पूजा की नियम बनायी गयी। जेई कारन है के चित्र-कला अरु चित्रकर्मी पुष्टिमाग के सरच्छन में उन्नति करते रहे हैं। नाथद्वारा की चित्र-कला में श्री कृष्ण की सिंगरी लीलान के अ वन के अलावा श्रीनाथ जी के सग पुष्टिमाग सेव्य सरूप अरु भक्ति रूप श्री यमुना जी की चित्रन सबन से ज्यादा मिले हैं। भावना की दृष्टि सौ सबई कू एक सग दर्शाव कू यमुना जी, बल्लभाचार्य सत्यरूप अरु नवनीत प्रिया जी की एकई चित्र में चित्राकन करवे की क्रम ह्या बहुतायत म मिले हैं। नाथ द्वारे में धार्मिक ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनैतिक अरु अनक धर्माचार्यन के व्यक्तिगत चित्रक भारी सख्या में वने हैं। ह्या के चित्रकारन बड़ी खूबी के सग 'जय श्री कृष्ण' अरु 'कृष्ण शरण मम' जैसे आदस वाक्यन कू मोटे अक्षरन में भागवत के दशम स्कन्ध में वनित सिंगरी लीलान के सग अकित कीन है। कागज के अतिरिक्त कपडा तैयार किये जायव वारे छोटे अरु बड़े आकार के चित्र कू फड या पिछवाई के नाम से पुकारो जाय है। पिछवाई बनायवे की कलाक ह्या भीत प्रचलित है। दान अनकूट महारास गोपाष्टमी, महादान, पनपट, शरदवम्पारण्य अरु व्रज चौरासी कोस की यात्रा आदि की पिछवाई प्रमुख उच्छ्रवन पर देवालय म टांगी जाय है। ठकुरानी तीज पर श्रीनाथ जी के मंदिर में स्व घासीराम शर्मा की पिछवायी लगाई जाय है। जामे सामन की घटान अरु बीजरी की चकाचौंध सौ वमक के भगवान श्रीनाथ जी नहाचर में दुबकती भई राधा की चित्रन है। रेशमी डोरान से श्री कृष्ण लीला स्थल जैसे नदगाम बरसाना जमुना पुलिन गोरधन, नद असोदा, व्रज के पशु पच्छी इत्यादि के चित्रन की पिछवाई लगाई जाय है। पिछवाई के अतिरिक्त भित्ति चित्र बनायवे की विराट परम्परा नाथद्वारा माही है। जि चित्राकन व्रजकला के सुरते प्रमुख उपकरण रह्यो है। वतमान मंदिर की निर्माण श्रीनाथ जी के मेवाड आगमन के पाछ भयो। वार्ड समे से श्रीनाथ जी के देवालय में सूखे रगत से विविध तरिया के भित्ति चित्र बनायवे की परम्परा सुरु भई। श्रीनाथ जी के मंदिर में हर बरस दसहरा अरु दिवारी के दिना भित्ति चित्रन को नवीनीकरण कियो जाय है। जनम आठे के औसर पर इयाम पण्ठभूमि में छोरे पीरे रगत सौ श्रीकृष्ण लीला युक्त छड़ी मान्चे की प्रचलन भीत लोकप्रिय है। व्रजभूमि की तरिया है याऊ लोक भावना सौ प्रेरित लोक चित्राकन विधि से दरबज्जे पर श्रवण कुमार अरु कावड में अथे

मैया बाप की अ कन कियो जाय है । भागलिक ओसर पै चित्रकार गृहस्थन के घरत की दीवार पै बेल पूतरी अरु हाथी घोडा बनाये है । घर के कोठ मे रिद्धि सिद्ध देव गणेश जी की अ कन भूसे सहित करी जाय है । व्याह के ओसर पै ह्याऊ ब्रजभूमि की तरियाँ समधी-समधन की व्यगभरी अरु धोतुहल पूण आकृति बनाई जाय हैं ।

राजस्थान के मेवाड के लघु ब्रज नाथद्वारा मे आजऊ बाई ब्रज कला अरु सस्कृति के साक्षात् दरसन होय है जो तीन सौ बरस पले गोरधन ते चलते सँ ही । सन् 1971 की जनगणना के आकडेन की माया म 157 प्रतिशत ऐसे लोग नाथद्वारे माहि बताये गये हैं जो बोलचाल म केवल ब्रजभाषा का प्रयोग कर हैं । नगर म ब्रजबासीन ते इतर मेवाडी भाषा भाषीऊ भारी सभ्या म निवास करे है । नाथद्वारा के मेवाडीऊ स्वय कू ब्रजबासी माने है । प्रवासी ब्रजबासी अरु मेवाडीन मे अपनी परम्परान ते वेहद लगाव है । वे देवालय की प्राचीन मूल परम्परान कू जीवित राखवे मे गौरव की अनुभव करे हैं । मंदिर म कीर्तन या हबेसी सर्गात के रूप माहि गाये जायवे बारे अस्तछाप क पद बाई सँली राग अरु हाव-भावन मे गाय जाय हैं जाय के अस्तसत्तान के सँ गाये जाते ह । होरी वसंत व डोल पै चंग की धमक व सग धमार रसिया अरु अबीर गुलाल के डेर बरयस ब्रज की होरी की याद दिवाम है । नाथ द्वारा म ब्रज सस्कृति का प्रभाव का सीमा तब है जाकी आभास ह्या के नाम मोहन्सान के नामन सँ होय हैं । नगर की सबसे बड़ी मोहम्मद की नाम ब्रजपुरा है । अन्य माहस्तान क नाम है—डारकाधीन की सिडक, मोदिन की सिडक बड़ी घालर, नोमबारी आदि ।

जा तरिया मध्यकालीन वैसनव सतर्न दक्षिण भारत की कठोर याया पूरी करवे ब्रज म आयक राग अरु भाग के सग कलान की अध्यात्म ते अद्भुत साम्य करके सामा्य जनन कू ईश्वर प्राप्ति की भीतई सुखम रस्ता बताया । तीन सौ बरस पुरानी राग अरु भोग की जा सस्कृति क बाई रूप म दरसन करन है तो नाथद्वारे से उपयुक्त स्थान अय नाय है सने । हमारे देस के प्राचीन सास्कृतिक धरोहर की रक्षा मे नाथद्वारे के गारवादी मालक प्रवासी ब्रज बासीन का योगऊ सदा याद कियो जायगो ।



ब्रज कला सस्कृति अरु राजस्थान

आज हमारे देस मे ऐसे साहित्य की प्रबल आवश्यकता है सो देसवासिन के मनन म प्रेम करुणा अरु वात्सल्य जैसे मानवीय भावन नू उजागर कर सके हैं । ब्रजभाषा ने जि काम सदीन तलब हमारे देस मे कीनी है । हिंदी भाषा धीरे-धीरे अपन सौन्दर्य के मूल स्रोत छेत्रीय भाषान ते कटती चली जा रही है । पाठ्य पुस्तकन मे त धीरे धीर छेत्रीय भाषान की कविता कू कम कर्यो जा रह्यो है । जाई कारन हिंदी भाषा लय अरु मानवीय भावन की पावन सवेदनान कू प्रकट करवे म बितेक सफल नाय है पा रही है, जितेब की आज आवश्यकता है । जा कारन आज जरूरत जा तथ्य की है के पाठ्य पुस्तकन मे ब्रजभाषा जैसी छेत्रीय भाषान कू पुन स्थान दियो जाय । जाके सुखद परिनाम सामई आमिगे ।

ब्रजभाषा हमारे देस की हृदयस्थल प्रदेश की भाषा रही है । जैसे आज हिंदी भाषा अंग्रेजी भाषा ते टक्कर ले रही है वैसे ई काळ जमाने मे ब्रजभाषा ने अरबी, फारसी ते टक्कर लीनी ही । बा जमाने म आज की तरिया राजनीति के दुराब छुपाव के माध्यम ते भाषा की युद्ध नाय लड़ी जातो हो । ब्रजभाषा के साहित्यकारन ने अपने बूते पे भाषा को युद्ध लडो हो अरु विजय प्राप्त कीनी ही । जाई की परिनाम हो के तलवार के बल पे चलाई गई बादशाही की भाषा के पाम भारतवर्ष मे जम नाय पाये । ह्या तानू के अरबी फारसी के निगज साहित्यकार सो ब्रजभाषा के भक्ति के मिठास मे डूबके हमेसा के या भाषा के गौरव है गये । जाई कारन भारते दु बाधू हरिश्चंद्र ने कहा, 'इन मुसलमान हरिजनन पे कोटिन हिंदुन बारिये ।'

राजस्थान की ब्रजकला अरु सस्कृति ते भीतई पुरानो सम्बन्ध है । भारत मे कृष्ण अरु बलराम की पूजा की परम्परा भीतई पुरानो है । जाकी पुष्टि विदेसी यात्रिन के विवरण अरु इत वित बिखरे साहित्य के अथ भीतरे ग्रन्थन ते होय है । आश्चर्य है क कृष्ण लीला ते सम्बन्धित पुरानो ते पुरानो कलाकृति मयुरा छेत्र ते प्राप्त नई है के राजस्थान की मरु भूमि तें प्राप्त भई है । गगानगर जिले के घग्घर के तट प अवस्थित रंग महल घेढो सी मिली भई अरु बीकानेर के राजकीय सभाहलय मे प्रदर्शित ई विसाल

मट्टी की मूर्ति याकी मबन ते बडो उदाहरण है—याम गौबर्धन धारन धर दान सीला की मुन्दर चित्रन कियो है । एक फुट ते कबी जि मूर्ति उत्तर रुपान अथवा गुप्तकाल की मुद्रात की रचना ह । घग्घा के दानू तरफ मीलन तान फेल भये थेडीन ते मिली जाई आकार की थी कृष्ण विमयक मट्टी की मूर्ति अजऊ राजस्थान के बीकानेर संग्राहलय म देखी जाय सके है । राजस्थान के बीकानेर क अलावा जोधपुर के मडार मऊ थी कृष्ण की प्राचीन मूर्ति मिल है । मथुरा विसाम घाट ते छठी सातमी सदी के गोरधन का मूर्तिन की राजस्थान की मूर्तिन ते मिलान करे हैं तो प्रमानित होय है के इनके अवन म धज की विवरन उत्पन्न किनी गयो है । मथुरा मूर्ति म ग्वाल वाल अवित है । जबके मडोर के कलाकारन ग्वाल वाल के अतिरिक्त पहाड पे हिंसक पशु अरु पक्ष तक दिखाय डारे है । या मूर्ति म ह द्र के कोप ते डरप ग्वाल वाल गोप गोपी इकठोरे है मय है । सब भगवान न मारधन कू अपनी उमरी अगरिया पे उठाके बाप अपनी भुजा पे धारण करके ब्रज की रच्छा कीनी । जा पाछ जयपुर के इतिहास अरु ह्य के पुरान प्रधान कू दखव तेऊ प्रमानित होय है के या प्रदेश के गुप्तकाल क पाछेऊ आज तानू ब्रज भूमि त मोघो सम्बन्ध गहो है । राजस्थान की राजधानी जयपुर क भूतपूर्व नरेशन के पुरसा मानसिंह अरु बाके पने के बिनके पुरसा श्री कृष्ण नक्ति अरु बिनकी सीला भूमि ब्रज की तरफ आकसित रहे । सबई तो मानसिंह के मन्त्री राय भुरारीदास न अपने ग्रन्थ 'मान प्रकाश' म कटवाह वक्त कू 'राधा ध्यरा छपूत पाणि' कह्यो है । अक्बर कू शासन अधिकार मिल पाछ बिनके दरबार के प्रतिष्ठित राजा मानसिंह ने व दावन म दखपूज्य गावि द देव की विसाल मन्दिर बनवायवे की सकल्प सीनो हो । जा तन्म्य की उत्पन्न मानसिंह के स्थान कोटि म श्री भुरारी दास खत्री की सहृदय रचना 'मान प्रकाश' ते होय है । 'मान प्रकाश' म लिखो है के राजा मानसिंह ने 1590 ई म तरह लाख रुपया की लागत ते बुन्दावन म श्री गोविन्द मन्दिर बनवायो । अब तो जाकी मौतसी भाग आहत अरु भन है गयो । जा मन्दिर की स्थापय कला सम्बन्धित विवरण एम ब्राउस ने अपन मथुरा ग्रन्थ म सन 1882 म कीनी है । कह्यो जाय है के जा मन्दिर के निर्माण म छे वरस लगे है । मानसिंह के पीछ पाजमी पीढी मे विष्णु सिंह भय । के आगरा अरु मथुरा के प्रशासनिक अधिकारी है । बिछै व दावन क पासई विसनपुरा गाम बसायो अरु बुन्दावन मे कुज बनवाये ।

विष्णुसिंह के पाछ मवाई जयसिंह ती परम विख्यात भये । बेऊ आगरा, मथुरा क प्रशासनिक (मन्तर) रह । बिनऊ ब्रज भूमि म अनक भवन अरु बगीचा बनवाये । विसाति घाट प बिन 988 मीटर की बडो भूखड खरीदो । जाई तरिया मथुरा के बनक माहन्ता म बिद्य जायगद उनाई । बुन्दावन मे बिछै बनक भुटी अरु दीवान शानी बनवायो जो सबई जयसिंह मेरे व नाम गौ प्रसिद्ध है । जयपुर के सबई जयसिंह की प्रेरणा तो राजस्थान के राजाधन ब्रज भूमि मे अनेक भवन बनवाय यथा गोपालसिंह

करोली बारे की कुज, बदन सिंह की कुज, भीमा राठोड की बगला राणावत जी की कुज आदि । जाई तरिया सलेमाबाद बारेन की घाट नागरीदास की कुज, राजा बदन सिंह न रूप नगर बसायी । सवाई माधोसिंह द्वितीय नेऊ भारी घनराशि व्यय करके बृन्दावन अरु बरसाने में राधा मापाल जी के मंदिर बनवाये जो आजऊ जयपुर बारे मन्दिरन के नाम से प्रसिद्ध है । भरतपुर के राजा सूरजमल अरु जवाहर सिंह द्वारा बनवाये गये अनेक मंदिर आजऊ गावरघन की सोभा बढ़ा रहे हैं । सूरजमल ने गोवरघन में कुसुम सरोवर पे बिसाल भवन बनवाया । जवाहर सिंह ने बाम विस्तार कीना अरु सूरजमल की छत्री की निर्माण करवाये जामे आबसन स्थापत्य अरु भिद्धि चित्र भीतई मलूक लये है । सूरजमल के प्रसिद्ध सेनापति रूपराम कटारा नेऊ गोरघन में भीतरे भवनन की निर्माण करयो ।

जयपुर नरेश रामसिंह के पश्चात नवाई जयसिंह के मन में तो अपनी राजधानी को बृन्दावन ई बनाय देवे की विचार आयी । जा कारण बिना बृन्दावन के प्रमुख देव विग्रहन को अपने नव नगर में प्रतिष्ठित कीनी । श्री गोविन्द देवजी तो पैत ई ह्या आ गय है । बिना बिनकी प्रतिष्ठा राजधानी के दक्षिण अरु नव नगर राजधानी के उत्तर में बने भये कनक बृन्दावन में कीनी । भीत समे तक आगरा मथुरा क्षेत्र के प्रसासक रहवे के कारण सवाई जयसिंह ने ब्रज में लम्बे समे तानू निवास कियी हो । जा कारण ब्रज संस्कृति अरु कृष्ण भक्ति में पूरी तरिया रच बस गये है । अत बिना अपनी राजधानी अरु राज्य में ब्रज के बृन्दावन की सी वातावरन उत्पन्न कर दीनी । सवाई जयसिंह के दरबारी चित्रकारन के हाथ के ई चित्र आजऊ जयपुर के पोथीखाने में सुरक्षित है । दोनू चित्र हमारे देश की पुरानी चित्रकला की अमूल्यनिधि हैं । एक चित्र में ग्वाल बालन के राधा अरु बिनकी सलीन के संग होरी खेलवे की चित्रन है तो दूसरे में महाराज की भीतई बारीक चित्राकन कीनी गयो है । जि दोनू चित्र राजस्थान की राजधानी जयपुर में बा समे के बने भये है जब ब्रज संस्कृति पूरे उठान पे हो । राज्य के भीतरे गाम अरु बस्वा में गोविन्द मंदिर के निर्माण भय । जयपुर के राजा सुरू तेई ब्रज के गौडीय बस्नव सम्प्रदाय के भगत रहे । परिनाम स्वरूप सवेरे सजा गोविन्द देवजी, गोपीनाथ जी अरु राधा दामोदर जी के देवालयन में जानी जयपुर के ग्रहस्थन को नियम बन गयी । महाराज ने जयपुर में बाद के दरबज्जे से राज परिसर में बने उद्यान में कनक बृन्दावन की रचना कीनी । जाको बनन सवाई जयसिंह के ब्रज के दरबारी कवि आत्माराम ने अपनी सवाई जयसिंह धरित रचना में कीनी है । आत्मारामऊ ब्रजमण्डल नेई रहवैया है । जाते जेऊ ग्यात होय है के सवाई जयसिंह ने अपने ह्या ब्रज वातावरन बनायवे में ब्रज की प्रतिभान को आमन्त्रित करने अपनी राज बसायी हो ।

जा तरिया श्री गोविन्द देव को बृन्दावन सहित सवाई जयसिंह जयपुर ले आये अरु अपनी राजधानी के वातावरन को बृन्दावनमय बनाय दीयी । सवाई जयसिंह की

सरिया राजस्थान के अय राजानैऊ अपने अपने राज मे व्रज के ठाकुर के मूल विग्रह या बिनके प्रतिरूपन कू प्रसिद्धित करवे वृत्त भगति के संग व्रज सङ्गति कू अपनायो अरु पनपायो । मदनमाह्नजीर्ण करौनी कौ मान बढ़ायो । धू दी की नाम सुरू म चूदावन धरयो गयो । औरगजेव दुराँनो, अम्दासी आदि आङ्गभनकारी के देवालय विरोधी स्वरूप के पारन जि रच्छा कू राजस्थान के राजान की छत्र छाया म आयव स्वय कू सुरच्छित प्रतीन करिबे लये । जाई समै बल्लभ सम्प्रदाय के द्वारिकाधीन जी काकरोली पधारे । बोटो म मयुरेश जी आये अरु सिहाड मवाह म श्रीनाथ जी बिराजे जो आगे चलक नाथद्वारा नामते प्रसिद्ध भयो । बल्लू दिना पचम पीठऊ बामा ते बीबानर गये हे परि ये पुन बामा पहुँच गये । राजस्थान के कामा मेई पुष्टि सम्प्रदाय की सप्तम पीठ अवस्थित है । पुष्टि सम्प्रदाय के प्रमुख पीठ के संग संग व्रज के अय चार सम्प्रदाय मे ते निम्बाक सम्प्रदाय केऊ प्रमुख पीठ राजस्थान की धरती सत्तेमावाद भाहि रियत हैं । जा सरिया व्रज के प्रमुख सम्प्रदाय निम्बाक गोडीय, बल्लभ, सबी अरु राधा बल्लभ सम्प्रदाय मे ते निम्बाक अरु बल्लभ के प्रमुख पीठ राजस्थान की धरती पे अवस्थित हैं ।

काव्य सौरभ

सुंदरी

मेह जो करे तो नद मदन के चरनन त
 मोह जो करे तो मन मोहन मुरारी ते ।
 सर म बनावे तो बसाव बामुदेव प्रिय,
 रमन करे तो मित रसिक विहारी ते ।
 गावे गुनगाथा तां सदव गाकुनेस जी कौ,
 याचना करे तो यदुवीर अमुरारी ते ।
 बल्लभ कर तो बर चूदावन चंद ही सो,
 ध्यान जो लगावे तो लगाय मिरछारी ते ।

ब्रजभाषा कौ सार्वदेशिक स्वरूप

वीरन की तरवारन की छत्रछाया म परवे बारी ढिंगल अरु गारीन मे रस घोरवे बारी एव स्यामा स्यामा के गुप्तातिगुप्त रहस्यन कू भूतल पै प्रकट करिबे बारी पिंगल भापा ने हमारे देस मे वीर अरु सिंगार के सरस गीत गाये हैं । हमारे देश के साहित्य की इतिहास या सत्य की सांगी है कौ जन भापा के रूप मे ढिंगल अरु पिंगल के नाम से बहे जायवे बारी राजस्थानी अरु ब्रजभाषा ने हमारे देश के कोटि कोटि उपेक्षित लोगन मे ज्ञान अरु सपथ की चेतना भरी हैं । एक नै जग की खनखनाती तलवारन के माध्यम ते राष्ट्रीयता के भाव बुलद कीनै हैं तो दूसरी ने प्रेम करूना अरु वारसस्य के मानवीय भावन की मजुल भक्ति की भाव धारा हमारे देसवासीन के मनन मे उतारी है ।

देवालय सत्कृति की भाषा ब्रज की रक्षक राजस्थान—

देवालय सत्कृति की छत्रछाया मे फसवे फूलवे बारी पिंगल भापा की सेवा अरु रक्षा बड़ी भैन ढिंगल मे बडे नेह अरु दुसार के सग कीनी है । ब्रजभूमि पै जब जब मुसीबत आई है वा समै राजस्थान क जुझारू वीरर्षी अपने अदम्य साहस अरु दिलेर वीरता से ब्रजकला अरु सत्कृति की रक्षा कीही है । विपत्ति बाल मे ब्रजभूमि के सिंगरे देवालय राजस्थान की घरती पैई आसय पाय सके हैं । पुष्टि सप्रदाय को प्रधान पीठ अरु सूरदास कुम्भनदास छीतस्वामी आदि ब्रज काव्य के अष्टछाप कविन के परम आराध्य गोवद्ध न धरण श्रीनाथ जीर्ण आज ते ठीक तीन सौ बीस बरस पैले सन् 1669 की आश्विन मास पूनो शुक्रवार कू दो सो ब्रजवासीन के सग गोवद्ध न छोडो हो । दो बरस चार महीना चार दिना तानू श्रीनाथ जी के सग दो सो ब्रजवासी अपने भूले प्यासे अबोध स्त्री वरूचान के सग भयकर जगलन मे हिसक पगुन के बीच प्रचण्ड भीषण गर्मी ठिठुरती कपकपा देवे बारे शीत अरु मूसलाधार बरसा म आसय कू देस के एक भाग ते दूसरे भाग तक मारे-मारे फिरे हे । देस के काऊ साहसी युद्धवीर ने इन ॥ स्त्री पीडित असहाय ब्रज वासीन कू अपने यहा आसय नाय दीनी । ऐसे सक्ककाल मे राजस्थान के वीरर्षी भूखे प्यासे दर-दर, मारे-मारे फिरते रोमते बिलखते ब्रजवासीन कू अपने ह्यां सिहाड नाम के गाम मे आसय दीनी हो । जि सिहाडई आज नाथद्वारा के नाम ते

जानी जाये है । गायद्वारा आयव से पल्ले श्रीनाथ जी चार महीना जोधपुर के चौपामनी मेऊ रहे हैं । चौपामनी अरु सिहाड में राजस्थान वामीर्न अपने पलक पावडे विद्याय क श्रीनाथ जी अरु ब्रजवासीन की एसी असूनपूर्व सुवागत कीनी हो जैनी आज नक या घरती पै काऊ की जाय भयो । बल्लभ सप्रदाय व प्रमुख सात पीठन में ते पाच राजस्थान की घरती पैई विराजे भय ह । श्री कृष्ण की चौथी पीढ़ी में जनम लेव वारे वज्रनाभ न कृष्ण की भौतेरी प्रतिमान की निर्मार्न करवाय के ब्रज में एक सुन्दर देवालय स्थापित की ह है । आष चन के चौड, जैन धर्म के प्रभाव अरु आतताईन के कारण जब ब्रज में मूर्ति भजन अरु मंदिरन कू नष्ट करिखे की सिलसिली शुरूमयी तो ब्रज वामीर्न वज्रनाभ द्वारा निर्मित श्री कृष्ण के विग्रहन कू घरती के गम में छिपाय गीनी हो । कालांतर में जब चतुर्थ महाप्रभु ब्रज आय तो बिर्न अपन क्षिप्यन कू इन प्रतिमान की घरती से निकार के उद्धार करिखे की निश्चय कीनी । चैत य प्रभु के सात क्षिप्यन इन प्रतिमान कू टूटके ब्रज में सात देवालय स्थापित कीने । इन मातन में ते पाच देवालयन के मूल विग्रह राजस्थान की घरती कू आजऊ पवित्र करे भये हैं । इनमें से एक श्री गोविंद देवजी के नाम से तो जयपुर रियासत की सिंगरी सासन प्रबंध चस्यो है । निम्बाक सम्प्रदाय की प्रधानपीठक राजस्थान की घरती पैई अजमेर अरु किशनगढ़ के पास सलेमाबाद नामक स्थान पे प्रतिष्ठित है । राजस्थान के ब्रजवक्ता अरु संहति के संग कर गय उपचारन की क्या की कहा तानू विवेचन कीनी जाय । ब्रजवासीन के पास तो जा कुछ वैभव है लालित्य है पू सब कछू राजस्थान कोई दियो भयो है । राजस्थान के ब्रजभापा के संग कर गय उपचारन अरु अवदानन में पाते बडो खौर का उदाहरण है सके है के जब ब्रजवासीन अपनी मिया ब्रजभापा कू घर से निकार दीनी हो, बिचारी भूखी प्यासी दर दर मारी मारी फिर रही हो, वा समी राजस्थान सरका न ब्रजभापा अकादमी बनाय व जा भापा के प्रानन की रक्षा कीनी है । उत्तर प्रदेश ब्रजभापा की गढ़ कही जाय पर झूठक ब्रजभापा अकादमी नाय । उत्तर प्रदेश का राजस्थान सिंगर भारत में इकली प्रात है जान कयाकुयारी से कमनी तलक एक खूब रहस्य बारी काव्य भापा ब्रज की अकादमी बनाई है । राजस्थान ने ब्रजवासीन के संग जो उपचार कीनी है वा रिण कू कैसे चुना सकिगे ब्रजवासी । ब्रजवासीन के पास ता राजस्थान के या रिण कू चुकाये कू धन नाय, सम्पत्ति नाय वभव नाय । हम ब्रजवासीन के डिग तो राजस्थान के या अविस्मरणीय गुरु कू चुकायव कू श्याम सुन्दर के वियोग के अजलिमर असुआन के सिवाय कछू नाय । श्याम सुन्दर के वियोग की कल्या के दारुण दुख में दूरे भय ब्रजवासी की हृदय विदारक दसा कू सन्दन में उतारयो है एक स्थान पे महा-कवि सुरदास ने—

ब्रज न बिरही लाग विचार ।

बिन यापान ठगे स ठाढे अति दुखल तन कारे ।

नद जसोदा मारण जोवति निसदिन साझ सकारे ।
चहु दिस काह काह कहि टेरेत असुअन बहत पनारे ।
गोपी ग्वाल गाय गी सुत भव अति ही दीन दुखारे ।
सूरदास प्रभु बिन यो देखियत चंद बिना ज्यो तारे ।

ब्रजभाषा की सावभौमिक साहित्य—

ब्रजभाषा न जसोदा कू लोरी गायबो सिखाया है ब्रजभाषा ने ग्वाल बालन कू ठिठागबा सिखायो है, ब्रजभाषा ने राधा कू भान मनुहार करिबो सिखायो है, ब्रजभाषा ने बासुरी कू भीठो रस घोरबो सिखायो है, ब्रजभाषा ने हमारे देस के साहित्य कला सस्टुति मे प्रेम कटना वास्तव्य की भक्ति के साहित्य की वैभव घोरबो सिखायो है । कहातानू कही जाय ब्रजभाषा को हमारे देश कू करे गय अवदानन की कथा कू— ब्रजभाषा ने तो बानी के विधाता तब कू बोलबो सिखायो है । जाई कारन ब्रजभाषा के अनन्य सेवक गोपाल प्रसाद व्यास न कह्यो है—

जमुदा क लोरी गाय पालनो सिखायो तैन
गोपी ग्वाल बाल कू ठिठोलबो सिखायो है ।
राधा कू भान मनुहार अभिसार अरू,
बासुरी कू भीठोरस घोरबो सिखायो है ।
साहित्य कू रस रीति शब्द अथ अलंकार,
ललित कलान द्वार खोलबो सिखायो है ।
धन्य ब्रजबानी तेरी अकथ कहानी तैन
बानी क विधाता कू बोलबो सिखायो है ।

अनुराग क रग म रगी भयी, सूर की गोपी ग्वाल बालन के अधरान प बिराजबे बारी भीठी भीठी सहज सरल ब्रजभाषा देव बिहारी सोमनाथ सूदन केशव, पद्माकर जैसे सैकड़न कविन के गरे की मोतिन की सर सौ ब्रजभाषा गान भक्ति अरू प्रेम कू निचो-रती भयी गोविंद के गुनन कू गुनगुनायबे बारी ब्रजभाषा, भावना अरू अनुभूतिन के समझते धुमडत आवास मे धनआनंद है क वरसबे बारी ब्रजभाषा जीवन की कडवाहट अरू जदत करती पीडा कू अपनी उमगती रसीली गारीन के फूलन की फुलबारी बनायबे बारी ब्रजभाषा ने कयाकुमारी ते कस्मीर तलब हमारे देस कू अपने नेह के मकरद मे डूबायक निहाल कीनी है । जाई कारन श्री गोपाल प्रसाद जी ने कह्यो है—

ये अनुराग के रग रगी रसखान खरी रसखान की भाषा ।
यामे पुरी मिसरी मधुरी यह गोपिन के अधरान की भाषा ।

का सरि याको करे कवि ध्यास यह भाव भरे अमरान की भाषा ।
बोरत भक्ति निचोरत ग्यान म गोविन्द के गुनगान की भाषा ।

ग्यान प भक्ति की विषय ब्रजभाषा —

ब्रजभाषा अरु ब्रजभूमि हमारे देश की हृदय स्थली अरु प्राण स्थली रही है । यहा से हमारी भावना अरु सीला जीवन रम स के सिंगरे देश कू जिजीविसा भावन से आप्लावित करती रही है । ब्रजभाषा न भक्ति अरु ग्यान कू मये भीठे आयाम दीने हैं अरु पग पग पै ससार की भौतिकता अरु मायावाद से उत्पन्न ग्यान के अहंकार कू मोठे उपहास से दूर हटाय दीने है । ग्यान के अहंकार म डूब भय ऊघो जैस पड़ितऊ ब्रज के वियोग के सामे भूल गये अपनी पड़िताऊ कू । ब्रजवासीन के श्याम सुंदर के वियोग के आतप के कारन ग्यान के अहंकार की हिमखंड जब ऊघो के मानस से विगलित भयो तो अनुभूतीन की सरमता के आनंद के कारन बू बाबरी है गयो । जेई सत्य कवि श्री गिरास चतुर्वेणी के कवि मानस त क्षादन म साकार भयो है जा तरियाँ—

बाबरी सी भयो ऊघो सखा तव नेह के नीर बहायो भयो,
सिसकातो भयो बछू वापनी सी सुधि भूल गयो गज आयी भयो ।
ग्यान रह्यो न गात हू की मन काप गयो चबरायो भयो,
बठ गयो निजमाण पै हाथ दे राधिका के गुन गातो भयो ।

श्री कृष्ण के बिना ब्रजभाषा मे बछू नाथ—

ब्रजभाषा अरु ब्रज संस्कृति कू जाननी है तो श्री कृष्ण कू ता जाननोई परयो । ब्रज भूमि के लोकनायक कृषि के उन्नायक अरु उद्धारक, दो वश के पालक सलिल सीलाधर, आतताईन के महारक साथ के सहायक अरु असत्य के घनघोर विरोधी उपेक्षित अरु ग्राहित समाज के उद्धारक, समरिद्ध दारायती के सत्पापक, केंद्र म धमराज की शासन कारखे बारी शक्ति भीह के अधिकार मे डूबे अजुन जैमे व्यक्ति म ग्यान की दीप प्रज्ज्वलित कर अज्ञस्वी बनायवे वारे महापुरुष परम आसक्ति अरु परम निरासक्ति कू धारन करवे वारे परम भोगी अरु परमयोगी, सांभ्राज्यवाद के विरुद्ध लोकतंत्र अरु समाजवाद कू प्रतिष्ठित करवे वारे महापुरुष कछु रूप म माने । ब्रज साहित्य की आत्मा कू जाननी है तो श्री कृष्ण कू तो जाननोई परयो । श्री कृष्ण की शरण मे जाये बिना ब्रज साहित्य की आत्मा कू जानव की दूसरी रस्ताई नाथ । चाहे जाये नदजु के घैया के रूप म जानी, चाहे मैया जसादा के कहैया के रूप म जानी, चाहे बलदाउजी के मैया के रूप म जानी चाहे राधा अरु गोपीन की मन अरु ब्रजवासीन की हृदय प्राण एव गोकुलवासीन के मायन के चुरया के रूप मे जानी चाहे द्रष्ट की मानभजन

अरु ब्रजवासीन की रक्षा करिबे बारे गोवद्धन के उठेया के रूप में जानो, चाहे कस जैसे भीतेरे घमडी आतताईन के गिरैया के रूप में जानो, श्री कृष्ण को जाने बिना ब्रज-भाषा को समझनो अरु जानवे की कोई रस्ता नाय ।

ब्रजभाषा ने सस्कृति की युद्ध लड़ी है—

ब्रजभाषा ने राजशास्त्र पापकैंठ राजघम अरु राजमस्कृति के सामे स्वयं को नीलाम नाय कीनी । आज जम हि दी भाषाअधेजी भाषा ते जूझ रही है बैसेई काऊसमै ब्रजभाषा ने अरबी फारसी ते टक्कर लीनी ही । ब्रजभाषा ने साहित्य बला सस्कृति के स्तर पे अपने बूते पे भाषा को युद्ध लड़ी हो अरु विजय प्राप्त कीही ही । हम यहाँ बड़े गव के सग चलेख करनी चाहें के संसार के इतिहास में स्पातई दूसरी उदाहरन होय जब गुलाम पराजित बीम ने साहित्यकला मस्कृति के स्तर पे शक्तिसाली बादशाही को पराजित कर दीनी होय जैसे ब्रजभाषा ने कीनी है । राग रागनीन में निबद्ध श्री कृष्ण की सलित लीलान ते सराबोर पद रस सक्ति छद अरु भाषा की कुशल कारीगरी ते सजे मबेरे सबैया अरु टकसाली कवित्त हमारे देस में ऐसी समा बाधो के तलवार के जोर पे चलाई गई बादशाही की जुबान अरु तहजीब के पास हमारे देस में टिक नई पाये । श्री कृष्ण की सलित लीलान के सामे ब्रजभाषा के भक्त सत कवित्त अकबर जैसे सक्तिसाली सम्राट को सतन को कहा सीकरो सों काम आवत जात पड़ेया हुटी बिसर गयी हरिनाम कह के निरो बोना बनाय के हमारे देस की सस्कृति के गौरव के मस्तक को धुल दीन पे चढाय दीनी । अस्टछाप के कवित्त ईरानी संगीत को धूर घटाय के भारतीय संगीत की पताका दिग दिगत फैसाय दीनी । ब्रजभाषा ने हमारे देस की साहित्य कला सस्कृति में प्रेम करना अरु वात्सल्य की पावन अनुभूतीन की ऐसी पुस्कल मोठी रस घोरी के अरबी फारसी के दिग्गज साहित्यकार राजसत्त के सुख अरु वैभव-साली जीवन को त्याग के श्री कृष्ण की सलित लीलान के उल्लासा में डूब के निहाल हो गये । जाई कारन परम वैष्णव अरु कट्टर राष्ट्रवादी कवि भारतेन्दुबाबू हरिश्चंद ने बड़ेई पावन सम्मन में इन मुसलमान कविन की स्मरण करते भये लिखी है—

अलीखान पठान सुता सह ब्रज रखवारे ।
 सेखनबी रसखान मीर अहमद हरि प्यारे ।
 निरमलदास कबीर ताजखा वेमबारी ।
 तानसेन कृष्णदास विजापुर नृपति दुलारी ।
 पिरजाबी बीबी रास्ती पदजर नितसर पारिये ।
 इन मुसलमान हरिजनन पे कोटिन हिंदुन थारिये ।

व्रज की विचित्र हिताव- प्रज की विचित्र हिताव-

व्रजभाषा अरु व्रजभूमि की बड़ीई विचित्र हिताव है। यहा की रेत रस की सरिता है अरु सीतल चयार विरह के उद्वेग त सीतली भयी सहर है। यहाँ गिरिराज के रूप म पूजित पत्थर कू छप्पा भोग तम हैं अरु धरती क नील मुनहल प्रनाग की किरनन म कदम्ब की नीचे योवन की अभिनन्दन होय है। यहाँ श्री कृष्ण के बाल भाव के उपद्रवन ते प्रेम है जाम है अरु जे प्रमई जीवन की सवन त बड़ी उपद्रव धन जाम हैं। कवि कलावत अरु साहित्यकार सदीन त व्रज के जा बालभाव के उपद्रवन ते परेसान है कैं एक सुर म कवि रसखान की भाषा म कह रयें हैं।

बाहू की मारन चाल गयो अरु बाहू की दूध दही डग्यायी।
बाहू क चीर ल रस चढयो अरु काहू के गज घरा छहरायी।
मानें महा सरज रसखान मुजानीई राज इहें घर आयी।
आउरी ब्रज जसामति सौं यह छौदरा जामो के भव उपजायी।

जि व्रजभूमि की ऐसा उपद्रव है जो न ली मही जाय हैं अरु नई जाके बिना रही जाय है कवि वसुदेव, साहित्यकार सदीन ते व्रजभूमि के बालभाव के उपद्रवन की एक सरस शाकी देखवे कू सदीन ते वियोग के मिठास म डूबे भये एक सुर मे कह रहे हैं-

चीर की चटक ओ लटक नव कुडल की
मौह की मटक नेह आखिन दिखाऊ रे।
माहन मुजान गुन रूप के निघान फेरि,
वासुरी बजाम तन तपन सिराऊ रे।
ऐनो बनवारी बलहारी जाऊँ आजतेरी,
मेरी कुज आय नह भीटी तान माऊ रे।
न द के किसार चितचोर मार पाख बारै,
बसीबारे सावरे पियारे इत आऊ रे।

सिगरे भारत मे व्रजभाषा-

जाई की परिलाम हो कैं ऐसे व्रजकाव्य ने हमारे देस कू ऐसी अदृष्ट भाव डोरी मे बाध्यो कैं भाषा रीति रिवाज सबकी चिमिलता टूट गई। हमारे देस मे जहा जहा श्री कृष्ण भक्ति की पीयूषधारा पहींची म्हा म्हा व्रजभाषा के मिठास के सुर गूज उठे केरल के महाराजा राम वर्मा 'स्वात तिरुनाल' नाम ते व्रजभाषा मे कविता करते हे।

महाराष्ट्र के ग्यानस्वर अह नामधेय जैसे भीतेरे सतर्ध ब्रजभाषा में कविता की ही है। गुरु नानक अरु गुरु गोविन्दसिंह के ब्रजभाषा के वाक्य कू बीन है जो नाय जान। पंजाब के गुरु गोविन्दसिंह व दरबार में तो ब्रजभाषा के कविन की जमघटई लग्यो रहती हो। हिमाचल प्रदेश के रिपमदेव डोगरा अरुणसिंह बेदी जैसे संकटन कवि गुरुमुखी लिपि के बरान आजकल पाठलिपिन में बद पड़े भये हैं। गुजरात के भागण नरीसी महता दयाराम गिल्लाभाई जैसे संकटन कविन के पदन कू आजकल गुजरातवासी सबरे उठतेई सबन से नैने गायी है। चन्द्रयारेन ने तो ब्रज पाठसालाई खोल दीनी ही। जाम दूर-दूर से ब्रजभाषा के विद्यार्थी ब्रजभाषा पढ़ये आयी करते हे। बंगाल के यशोजराजखान न याको नामई ब्रजबुली धर दीनो हो। मिथिला के विद्यापति आसाम के सकरदेव माधव देव के ब्रजकाव्य सई प्रदेश आजकल महक रही है। राजस्थान की गौरव मीरा के ब्रजकाव्य की दिव्य सुरभि से हमारे देश की जानसी भाग है जो सुरभित नाय भयो। राजस्थान में बीनसी ऐसी जग है जहा ब्रजभाषा के सुर नाय गूजे। सामान्य जनन की तो बातई काए ह्या के तो राजान तलक न ब्रजभाषा में कविता करक जाये गौरव कू बढ़ामो है। जैपुर के ब्रजनिधि बिशनगढ़ के नागरीदास अरु जोधपुर के जसबन्तसिंह, मानसिंह अरु राजेन्द्र सिंह सुधावर भरतपुर के बन्देव सिंह करौली के भया रतनपाल जसे कल्ल नरेसन की ह्या उल्लेख करिबो पर्यन्त है। राजस्थान में तो एक सभै ऐमोऊ आयी हो जब ह्या के राजान अरु जनता में अपन नगर कू ब्रज बनायव की होड सों लग गई हो। जाई सभै जैपुर नगर निर्माता सवाई जयसिंह ने अपने ह्या कनक व दावन की स्थापना की ही अरु जोधपुर में मानसिंह के काल में जिडक्ति साकार भई जोध बसायो जोधपुर ब्रज कीनो ब्रजपाल।'

ब्रज ब्रजभाषा की आवश्यकता—

ऐसी संस्कृत पाछे सिंगरे देश की बदनीय ब्रजभाषा धीरे धीरे भाषा त एक छेत्र की बोली मात्रा बन कै रह गई। नवीनता के नाम पे ब्रजभाषा पे मनगढ़त आरोप लगाये गये। वै दीनी फतवा कै ब्रजभाषा में गरी सही उपमा उत्प्रेक्षा अरु सिंगार के मासल चित्रन के अलावा कुछ नाय। ब्रजभाषा कू मान हुस्न भक्ति की भाषा अरु नवीनता विरोधी कहके बाकी उपहास करी गयी। काठने ब्रजभाषा की सांस्कृतिक विरासत की तरफ ध्यान देव की प्रयास नाय कीनी। सिंगरे देश कू अपने नेह के सोरम से सुरभित करिवे बारी भाषा क से प्रगति विरोधी बन गई? अनता के दुख दद के लग रच पक्ष के चलवे बारी ब्रजभाषा कैस एकदम सामती है गई? ब्रजभाषा ने एक से एक काव्य मनीषा के सहयोग से सरस भाव व्यजना मोहक वचनवक्रता अरु मधुर वाग्बेदगद्यता त लिपटी जो काव्यकला निकसित की ही बाय अपमानित अरु तिरस्कृत करके हमने अच्छी नाय कीनी। हिंदी कू सहज संघर्ष करके स्थापित करिवे बारी ब्रजभाषा कू हिंदी के साहित्यकार तिरस्कृत करते सभै भूल गये क वे अपनी रचना धमिता की स्वय आलो-

चना कर रये हैं। हिन्दी तो ब्रजभाषा को निहार दिगे तो का बचेगी हिन्दी के दिन ? पत के बाध्य सबलन पल्लव की भूमिका ब्रजभाषा को हिन्दी के एक समय साहित्यकार द्वारा मनगढ़त बेबुनियाद ब्रजभाषा की ददमरी आरोपन की कहानी है। मानवीय भावों को जन जन तक पोंचापवे बारी भाषा के अभाव में हमारे देश में मारकाट अफ़ निष्ठुरता की बढ़ती भई प्रवृत्ति के कारण आज ऐसी भाषा की जरूरत है जो हमारे देशवासियों के मन में प्रेम करना वास्तव्य जैसे मानवीय भाव पैदा कर सकें। ब्रजभाषा ने अपने वैभवशाली सांस्कृतिक परिवेग अरु भाईचारे के भाषा से सदैव समुचित दायरे की विरोध की ही है। अगर ब्रजभाषा को साहित्यकारों को राष्ट्रीय स्तर पर प्रोत्साहित किया जाये तो वे पुन हमारे देश के साहित्य कला संहति में प्रेम करना अरु वास्तव्य की सगम साधार कर सकें हैं।

काव्य सौरभ

सुंदरी

वाम जो परिकम्पा करे तो पय सोखन की
मेवा जो करे तो कर कलिमल हारी की।
बान जो सुन तो सुभ कीर्ति श्याम सुंदर की।
गुन जो गुनावलि तो गिरवर धारी की।
रसना रटे तो रटे रसिक बिहारी सदाँ,
चाह जो करे तो चोर चोर बनवारी की।
मन में बसाव तो बसाव मन मोहन को
रोम रोम रमे मूर्ति राधिका बिहारी की।

ब्रजभाषा गद्य का विकास

हमारे देश में प्राचीन काल से ही ब्रजभाषा में पद्य की तरियाँ गद्य की ओर पर्याप्त प्रयोग भयी हैं। चौके मध्यकाल में ब्रजभाषा राष्ट्रभाषा थी। का दक्षिण का पूरव अरु का पच्छिम सिंगरे देश में ई साहित्य भाषा के रूप में गहीत ही। ई कहबी नितात भ्रामक अरु श्रुतिपूत है के ब्रजभाषा मात्र दृष्णोपासना तानूँ सीमित रही है। ब्रजभाषा माहि विविध रूपन में विशाल साहित्य की निर्माण भयी है। ब्रजभाषा के मनीसी ने कठोर परिश्रम से हिंदी संसार के समी प्रमानित कर दियो है के ब्रजभाषा गद्य की प्राचीनकाल से ही प्रचुर भंडार प्राप्त होय है। साहित्य के विविध रूपन में ब्रजभाषा गद्य की चलन नाओ अपितु राजकाज, बादसाह नबावन के फरमान अरु दैनिक सरकारी काम काज में ब्रजभाषा गद्य की भारी मात्रा में प्रयोग भयी है अब्बर के काल के अधिकांश फरमान अरु राजाशा ब्रजभाषा में निकरी है। राजान की सधि अरु पत्र व्यवहारक ब्रजभाषा गद्य में भयी है। हिंदी साहित्य के इतिहासकार व्यादातर ब्रजेतर प्रदेश के भय हैं। जा कारण ये ब्रजभूमि से सम्बन्धित प्रात की प्रचुर साहित्यिक अरु ऐतिहासिक दस्तावेज विसयक सामग्री की ओर ध्यान नाय दे सके। परिणामस्वरूप आपुनिक हिंदी गद्य के निर्माण में बिनकूँ अरेजी अरु बगला साहित्य की प्रभाव दष्टि-गोचर भयी है।

अस्तु गद्य साहित्य के क्षेत्र में ब्रजभाषा की प्रयोग अति प्राचीन है पर याकी पुष्ट अरु प्राचीन रचना बाद में उपलब्ध होय है। कहवे की आवश्यकता नई के गद्य के साहित्यिक रूप में स्थान प्राप्त करिबे बारी भाषा व भीतइ पैले परस्पर साहित्यिक कर्म में बाकी प्रयोग सुरू है जाये है। जेऊ स्पष्ट है क रख रखाब अरु रखा के अभाव में भीतरी ब्रज गद्य की प्राचीन रचना नष्ट है गई। प्राचीनकाल में जब अपभ्रंश भाषा घीरे घीरे साहित्य जगत से विना न रही तो बाकी स्थान भरिबे कूँ घीरे घीरे ब्रजी को पदापन सुरू है गयो हो। ब्रजभाषा गद्य के पदापन के दरसन ग्यारहमी अरु बारहमी सती के 'सदेसरसक', 'प्राकृत पैगलम' आदि रचनान में हैबे लगे हैं। ऐतिहासिक दष्टि

सौ राजस्थान में ई ब्रजभाषा गद्य की प्राचीन प्रयास दृष्टिगोचर होय है ।¹ ब्रजभाषा गद्य के सन्तान में गोरखपथी गद्य की सदन तै पैल उल्लेख कियो है । वे याय 14 मी विक्रम में रचित ब्रजभाषा गद्य की प्रारम्भिक रूप स्वीकार करे हैं । साहित्यिक दृष्टि सौ 'पृथ्वीराज रासो' ब्रज काव्य की पैली कृति हैव में सग मग ब्रज गद्य कीऊ ऐसी पैली रचना है जाम सदन ते पैले ब्रज गद्य के प्रयोग के दरसन होय है । रासो म ब्रज गद्य की प्रयोग के दरसन होय है । रासो में ब्रज गद्य की प्रयोग 'वारता' सीपक में भयो है । 'वारता' ते तत्पय 'प्रसग वारता' ते हैं । छ द रचान ते पैल विसय निर्देस कू ब्रज गद्य मिले हैं—जैसे—'वार्ता—हिव चांद बरदायी बहै । वार्ता तब चांद बोल्यऊ । वार्ता हिव राजा प्रथीराज चांद सू कहतु हई ।' आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने गद्य साहित्य की अध्ययन करते भये प्रारम्भिक ब्रजभाषा गद्य की उदाहरन देते भये गोरखपथी गद्य की कल्ल पत्तीन की उल्लेख कीनी है । शुक्ल जी जाकू 1400 वि के आस पास स्वीकारे हैं । डा पीताम्बर दत्त बटधवाल न गोरख की ग्यारह रचनान की उल्लेख कीनी है । इनम कल्ल पुस्तकन म ब्रजभाषा गद्य की प्रयाग भयो है ।

प्रारम्भिक ब्रजभाषा गद्य की उदगम, राजस्थान—

खोज अरु अ वेधण ते प्रमाणित होय है के ब्रजभाषा गद्य की प्रारम्भिक रचना अजेतर प्रदेश म भई है । इनकी उदगम स्थल विसस रूप ते राजस्थान रह्यो है । इनकी अधिकांश हस्तलिखित पोथी राजस्थान के विभिन्न स्थानन म मिले हैं । राजस्थान के इन प्रारम्भिक ब्रजभाषा के ग्रंथन की भाषा थोड़ी ब्रजभूमि की भाषा ते भिन्न है । यामे राजस्थानी गुजराती अरवी फ रसी की सव्दावली कीऊ प्रयोग मिले है । विदेशी आक्रमण अरु नवीन शोध के अभाव म राजस्थान म प्रणीत ब्रजभाषा गद्य की रचना अबई तानू इतेक प्रकाश म नाम जाई है जितक आनी चइये । प्रभुदयाल भीतल ने ठीक लिख्यो है—'जब राजस्थान स लकर पूव तक के निवासियो में ब्रजभाषा गद्य लिखने की पद्धति प्रचलित थी, तब निश्चय पूर्वक उस समय ब्रजभाषा गद्य का प्रचार हुआ ।' सेद है कि विधर्मी आक्रमणकारियों की ध्वंसकारिणी वस्तुतो से उस समय के अधिकांश 'ग्रंथ नष्ट हो गये हैं । अतः उस काल का अधिक गद्य साहित्य उपलब्ध नहीं होता ।'

'पृथ्वीराज रासो' म जहा एव तरफ उत्पष्ट काय की सजन भयो है म्हांई या रचना कू ब्रजभाषा गद्य की प्रारम्भिक रचना हैवे की थ्येऊ दियो जानो पूरी तरियो तक संगत है । याकी गद्य पद्यमयी जाली बहुत कल्ल अशन म यजुर्वेद जैतो है । जा तरियो यजुर्वेद म मिलवे वारो गद्य काव्य संस्कृत भाषा के प्राचीनतम लिखित गद्य के उदाहरन है बाई तरिया पृथ्वीराज राज रासो के जि गद्यांश

ब्रजभाषा गद्य साहित्य के प्राचीनतम रूप है। यद्यपि रासो वं भगवद्गीता के रचना-काल में ही ब्रजभाषा के बहू न कछु गद्यांश उपलब्ध होय है तथापि कालक्रम और भाषा की वृद्धि से लघुतम म स्वरण के गद्यांश प्राचीनतम प्रतीत होय है। श्री भगवद्गीता के तीन लघु सस्वरण श्लोक हैं जिनमें सम्भवतः 1667 की लिखित प्रति सबसे प्राचीन है अरु जाँचे मिलवे वारे गद्य के दूसरे सस्वरण की अपेक्षा ज्यादा है। याम गद्य 'वारता' सीपक मोहि लिखो भयो है। उदाहरण के 'वारता' का एक अंश उल्लेखनीय है— 'वार्ता-हि च द बरदायी रहै। वार्ता-तब चौद बोल्यउ। वार्ता-हि राजा प्रियो-राज चौद सूँ कहनु हई। जा तरिया एक वाक्य भाहि प्रसंग निर्देश करे पाछे च द रूप में महाकाव्य के कथानक के आगे बढ़ाये गये है। जा तरिया विसय बोध की दृष्टि से इन गद्य वाक्यों की महत्व साचई है। जा तरिया पृथ्वीराज रासो की सिगरी प्रतीति में मिलवे वारे गद्य रूप के पारायण ते जि प्रमाणित हाय है के चौदहमी सदी के आस पास ब्रजभाषा गद्य साहित्य के रूप में स्वतंत्र प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है।

राजस्थानी गद्य अथ ब्रजभाषा गद्य -

राजस्थानी गद्य साहित्य की परम्परा प्राचीनकाल से आज तक मिले है। राजस्थानी गद्य की सम्यक् विकास भयो है। राजस्थानी गद्य विविध रूप में बात' या वचनिका रूप में पाये जाय है। संस्कृत साहित्य अथ अपभ्रंश साहित्य से जो चरित्रात्मक कथान की प्रथा राजस्थानी साहित्य में बात' अथ कथा' रूप में प्राप्त आई है, ब्रजभाषा की वार्ताओं की परम्परा से विकसित आई है। 'बातन' में धर्म, नीति, वीरता, प्रेम, हास्य, बहूना राजा-प्रजा, देव-देवी, भूत-प्रेत, ठग-चोर, डाकू, आदश, मयाध आदि विसयन की स्पष्ट होय है। चारण भाटन के हृदय से निकरी आई कथा मौखिक साहित्य की परम्परा से निकसके लिखित साहित्य में आई है। जाई तरिया ब्रज में धार्मिक अथ भक्तन के जीवन वार्ता साहित्य की निर्माण भयो। बल्लभाचार्य की परम्परा में निर्मित वार्ताओं मौखिक साहित्य की परम्परा में लिखित में आई। जा समै राजस्थानी में गद्य की निर्माण हो रही हो आई समै ब्रजभाषा में विमुख साहित्य की निर्माण भयो। ब्रज भाषा गद्य से ही अपनी मूल प्रेरणा से भिन्न है। जा तरिया सोलहवीं शती तक राजस्थानी गद्य की निर्माण में जन धर्म की विशेष योग रह्यो है, जाई तरिया अठराहवीं शती तक ब्रज भाषा साहित्य में कृष्ण भक्त वैष्णव की महत्वपूर्ण योग रह्यो है। मूल प्रेरणा के अलग हेतु के कारण ब्रज भाषा की गद्य रूप के राजस्थानी के गद्य रूप से विकसित होते भयेक अपनो अलग मौखिक अस्तित्व राखे है। उन्नीसवीं शती में आय समाज ने खड़ी बोली की प्रचार कीनी। अथ राजनैतिक कारण से राजभाषा की भाषाता मिलवे के कारण राजस्थानी अथ ब्रज भाषा के साहित्यकारों ने खड़ी बोली के अपनायो। या समै की खड़ी बोली राजस्थानी अथ ब्रज भाषा से प्रभावित भयो है।

आधुनिक ब्रज भाषा गद्य आधुनिक युग में सही बोली के प्रचार-प्रसार के कारण ब्रज भाषा गद्य को विवाह भीतई धीमी गति से भयो है। मथुरा में आज्ञादी से पहले ब्रज साहित्य मण्डल की स्थापना करी गई। ब्रज भाषा के मनीषी ने ब्रज साहित्य मण्डल से ब्रज भारती नाम की ब्रज भाषा की साहित्य पत्रिका प्रकाशित कीनी। या पत्रिका की भाषा खड़ी बोली रखी गई। यत्र तत्र काळ अक्षु में छोटी-मोटी कहानी या रेखाचित्र के रूप में ब्रज भाषा की रचना 'ब्रज भारती' के अक्षु में दोल जाती। सन 1962 पाछ मथुरा आकासवाणी केन्द्र की स्थापना गई। मथुरा आकासवाणी केन्द्र के कारण अवलुद्ध ब्रजभाषा गद्य की परम्परा पुन चलू गई। अरु बासी आधुनिक युग में प्रवेम भयो। जाई तरिया डा शरण बिहारी गोस्वामी द्वारा पूछरी की लोठा अरु श्याम सुंदर श्याम द्वारा मनसुखी नाम से हू लघु उपन्यास प्रकाशित भय है।

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी के मंच से ब्रजभाषा गद्य—

जनवरी 1986 कू राजस्थान सरकार ने प्रदेश में ब्रज भाषा के सवदन अरु प्रोत्साहन कू राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी की स्थापना करी। राजस्थान ब्रज भाषा अकादमी ने अपनी स्थापना तेई ब्रजभाषा गद्य कू आधुनिक गद्य की स्पर्धा में ठाडी करवे की दिनभ्र प्रयास कीनी। अकादमी ने अपनी त्रैमासिक 'ब्रज चलदल' पत्रिका के मंच से अब तानू प्रकाशित 16 अक्ष के द्वारा गद्य की विविध विधान पैं विसतारक प्रकाशित करके आधुनिक ब्रजभाषा गद्य कू नवीन गति देवे की प्रयत्न कीनी। अकादमी ने आलोचना के क्षेत्र में ब्रजभाषा गद्य कू पैली दर्क अपनायी है। 'राजस्थान में ब्रजकला संस्कृति' सीसक से प्रकाशित चार से पत्रान के प्रथ से मिद्ध करिबे की प्रपत्न कीनी है के ब्रजभाषा गद्य में साहित्य अरु आलोचना की अभिव्यक्ति करिबे की पर्याप्त समता के अलावा कामे जीवन के सांस्कृतिक पच्छ कू भाषा के मंच से प्रकट करिबे की पूरी सक्ति अरु सामथ है। आधुनिक ब्रजभाषा गद्य सीसक से प्रकाशित या प्रथ में एकाकी, कहानी अरु रेखाचित्र विधान की त्रिवेणी की सगम प्रस्तुत कीनी गयो है। एकाकी, कहानी अरु रेखाचित्र की ये सगम आधुनिक जीवन की विभिन्न समस्यान कू उजागर करवे की अकादमी की या प्रथ में दिनभ्र प्रयास है। आधुनिक जीवन की विषमता सघष अरु पग पग पैं आयवे बारी कठिनाई की सूक्ष्म विसलपण अरु बाकी समाधान आधुनिक ब्रजभाषा गद्य के मंच से विविध विधान में हू आपनू देववे कू मिलेगी।



‘राजस्थान माहि ब्रज लोक कला अरु सस्कृति’

राजस्थान की प्रजकला अरु सस्कृति से भीतई पुरानो सम्बध है। भारत म कृष्ण अरु बलराम की पूजा की परम्परा भीतई पुरानी है। जाकी पुस्टि विदेसी यात्रिन के विवरण अरु हत बित बिखरे साहित्य के अर्थ भीतरे प्रथन से होय है। आसन्न्य है के कृष्ण लीला से सम्बधित पुरानी से पुरानी कलाकृति मयुरा छेत्र से प्राप्त भई है के राजस्थान की मरुभूमि से प्राप्त भई है। गगानगर जिले के घग्घर के तट पे अवस्थित रंग महल घेड़ी सी मिली भई अरु बीकानेर के राजकीय संग्राहलय म प्रदर्शित हई विसाल मट्टी की मूर्ति याकी सभन से बड़ी उदाहरण है। यामे गोबरधन धारन अरु दान लीला को सुन्दर चित्रन कियो गयो है। एक फुट से ऊँची जि मूर्ति उत्तर कुपाण अपवा गुप्तकाल की सुरुआत की रचना है। घग्घर के दोनू तरफ भीलन फैले भये घेडीन से मिली जाई आकार की श्री कृष्ण विसयक मट्टी की मूर्ति आजऊ राजस्थान के बीकानेर संग्राहलय म देखी जाय सके है। राजस्थान के बीकानेर के अलावा जोधपुर के मंडोर मेऊ श्री कृष्ण की प्राचीन मूर्ति मिले है। मयुरा विश्वाम घाट से मिली छड़ी सातमी सदी के गोरधन की मूर्तिन की राजस्थान की मूर्तिन से मिलान कर है तो प्रमानित होय है कों इनके अकन म ब्रज की विवरण उत्पन्न कियो गयो है। मयुरा मूर्ति म ग्वाल बाल अंकित है। जबवे मंडोर के बलाकारधर्म ग्वाल बाल के अतिरिक्त पहलव पे हिसक पशु अरु यक्ष तक दिखाय गारे हैं। या मूर्ति म इन्द्र के कोप से डरपे ग्वाल बाल, गोप गोपी इन्डोर है गये हैं। तब भगवान ने गोरधन कू अपनी अगरिया पे उठावे बाय अपनी भुजा पे धारण करके ब्रज की रच्छा कीनी। जा पाछे जयपुर के इतिहास अरु ह्या के पुराने प्रथन से देखवे तऊ प्रमानित होय है कों या प्रदेश के गुप्तकाल के पाछेऊ आज तानू प्रजभूमि से सीधो सम्बध रह्यो है। राजस्थान की राजधानी जयपुर के भूतपूर्व नर-सन के पुरखा मानसिंह अरु बावे पैले के बिनके पुरखा श्री कृष्ण भक्ति अरु दिनकी लीला भूमि ब्रज की तरफ आकसित रहे। तबई तो मानसिंह के मन्त्री राय मुरारी दास ने अपने प्रथम मान प्रकास मे बछवाह यक्ष से ‘राधा ध्वरा घपूत पाणि’ कह्यो है। अक-

वर कू शासन अधिकार मिले पाछ तिनो दरबार के प्रतिष्ठित राजा मानसिंह १ बनावन म देखूज गोविंद देव की विमान मन्दिर बनवाये की मकल सीनो हो । जा तप्य की उत्लेय मानसिंह के स्याल बाटि म श्री मुरारी दास गत्री की सट्टर रचना 'मान प्रवाग' ले होय है । मान प्रवाग म विना है के राजा मानसिंह ने 1590 ई म तरह लाग रही म मागत ले बूदावन म श्री गोविन्द मन्दिर बनवायो । अब तो जारी भीनगी भाग आहत अरु भगत है गयी । जा मन्दिर की स्थापत्य कला सम्प्रति विवरण एम प्राक्त न अपने मपुरा प्रथ म मन 1882 म कीनी है । बायो जाय है के जा मन्दिर व निमाण म छे बरस लग ह । मानसिंह क पीछे पाचमी पीढी म विष्णु सिंह भये । व आगरा अरु मपुरा के प्रशासनिक अधिकारी है । विभिन्न बूदावन व पासई विसनपुरा गाम बसायी अरु व दावन म कुज बनवाये ।

सवाई जयसिंह की राजकला सत्कृति सौ प्रेम—

विष्णु सिंह व पाछे सवाई जयसिंह तो परम विख्यात भये । वेऊ आगरा, मपुरा के प्रशासनिक (गवर्नर) रहे । विस्तृत राज भूमि म अनक भवन अरु बगीचा बनवाये । विस्तारित घाट पे बिन्न 988 मीटर की बड़ी भूलक सरीसो । जाई तरिया मपुरा के जनक मोहल्ल म बिन्न जायदाद बनाई । बूदावन म बिन्न जनक कुटी अरु दीवान खानी बनवायो जो सवाई जयसिंह घेरे क नाम सौ प्रसिद्ध है । जयपुर के मवाई जयसिंह की प्रेरना सौ राजस्थान के राजासँ राज भूमि मे अनक भवन बनवाये मया गोपालसिंह शरीली घारे कुज बदनसिंह की कुज, भीमा राठाड की बगला, राणाधत जो की कुज आदि । जाई तरिया सलेभावाद बारेन की घाट, नागरी दास की कुज, राजा बदन सिंह ने रूप नगर बसायी सवाई मायासिंह द्वितीय नेऊ भारी धनराशि व्यय करके व दावन अरु बरसाने म राधा गोपाल जी के मन्दिर बनवाये जो आजऊ जयपुर बारे मन्दिरन के नाम सौ प्रसिद्ध है । भरतपुर के राजा सूरजमल अरु जवाहर सिंह द्वारा बनवाये गये अनेक मन्दिर आजऊ गोबरधन की साभा बढा रहे हैं । सूरजमल ने गोबरधन म कुनुम सरोवर पे विसाल भवन बनवायो । जवाहर सिंह ने वामे विस्तार कीनी अरु सूरजमल की छत्री की निमाण करवायो जाये आननक स्थापत्य अरु भित्ति चित्र भोतई मलूक लगे है । सूरजमल के प्रसिद्ध सनापति रूपराम कटारा नेऊ गारधन म भोतरे भवनन की निर्माण कर्यो ।

जयपुर उरम रामसिंह के पश्चात सवाई जयसिंह के मन म तो अपनी राजधानी कू बूदावन ई बनाय देवे की विचार आयो । जा कारन विभिन्न बूदावन के प्रमुख देव विग्रहन कू अपने नव नगर म प्रतिष्ठित कीनी । गोविंद देवजी तो पले ई ह्या आ गये है । बिन्न बिनकी प्रविष्टा, राजधानी के दक्षिण अरु नव नगर राजधानी के उत्तर में

वने भये कनक वृंदावन में कीनी । भौत समै तक आगरा मथुरा छत्र के प्रसासक रहवे के कारन सवाई जयसिंह ने व्रज में लम्बे समै तानूँ निवास कियो हो । जा कारन व्रज संस्कृति अरु व्रज भक्ति में पूरी तरिया रच बस गय है । अत बिना अपनी राजधानी अरु राज्य में व्रज के वृंदावन की सौ बातावरन उत्पन्न कर दीनी । सवाई जयसिंह के दरबारी चित्रकारन के हाथ के द्वै चित्र आजऊ जयपुर के पोथीखाने में सुरक्षित है । दोनू चित्र हमारे देस की पुरानी चित्रकला की अमूल्यनिधि है । एक चित्र में ग्वात घालन के राधा अरु बिनकी सखीन के संग होरी खेनवे की चित्रन है तो दूसरे में महाराज की भौतइ बारीक चित्राकल कीनी गयो है । जि दोनू चित्र राजस्थान की राजधानी जयपुर में बा समै के बने भये है जब व्रज संस्कृति पूरे उठान पै ही । राज्य के भीतरे गाम अरु बस्वान में गोविंद मन्दिर के निर्माण भय । जयपुर के राजा गुरु तेई व्रज के गोडीय वस्नव सम्प्रदाय के भगत रहे । परिनाम स्वरूप सेवर मजा गोविंद देवजी, गोपीनाथ जी अरु राधा दामोदर जी के देवालयन में जानो जयपुर के ग्रहस्थन की नियम बन गयो । महाराज ने जयपुर में बाद के दरबज्जे ते राज परिसर में बन उद्यान के कनक वृंदावन की रचना कीनी । जाको बनन सवाई जयसिंह के व्रज के दरबारी कवि आत्माराम न अपनी सवाई जयसिंह चरित' रचना में कीनी है । आत्मारामऊ अजमडस केई रहवैया है । जात जेऊ ग्यात होय है के सवाई जयसिंह ने अपने ह्या व्रज यातावरन बनाववे में व्रज की प्रतिमान कू आर्मात्रत करके अपनी राज बसायो हो ।

जा तरिया श्री गोविंद देव कू वृंदावन सहित सवाई जयसिंह जयपुर स आये अरु अपनी राजधानी के यातावरन कू वृंदावनमय बनाय दीयो । सवाई जयसिंह की तरिया राजस्थान के अ य राजाप्रऊ अपने अपने राज में व्रज के ठाकुर के मूल विग्रह या बिनके प्रतिरूपन कू प्रतिष्ठित करके व्रज भक्ति के संग संग व्रज संस्कृति कू अपनायो अरु पनपायो । मदनमोहन जीने करौली को नाम बदायो । बू दी की नाम गुरु में वृंदावन धर्यो गयो । औरंगजेब, दुर्रानी, अब्दाली आदि आक्रमनकारीन के देवालय विरोधी स्वरूप के कारन जि रक्षा कू राजस्थान के राजान की छत्र छाया में आये के स्वय कू सुरच्छिन प्रतीत करिये लगे । जाई समै बल्लभ सम्प्रदाय के द्वारिकाघोष जी काकरोली पधारे । बीटा में मधुरेश जी आये अरु मिहाड मवाड में श्रीनाथ जी बिराजे जो आगे चलके नाथद्वारा नामते प्रसिद्ध भयो । कछु दिना पंचम पीठऊ कामा ते बीकानेर गये है, परि वे पुन कामा पहुँच गये । राजस्थान के कामा मेई पुष्टि सम्प्रदाय को सत्यम पीठ अवस्थित है । पुष्टि सम्प्रदाय के प्रमुख पीठ के संग संग व्रज के अय चार सम्प्रदाय में ते निम्बाक सम्प्रदाय केऊ प्रमुख पीठ राजस्थान की धरती सलमाबाद माहि स्थित हैं जा तरिया व्रज के पांच प्रमुख सम्प्रदाय निम्बाक, गोडीय, बल्लभ, सती अरु राधा बल्लभ सम्प्रदाय में ते निम्बाक अरु बल्लभ के प्रमुख पीठ राजस्थान की धरती पै अवस्थित हैं ।

देवालय अरु यज्ञ सस्कृति —

व्रज की सस्कृति कूँ मंदिर या देवासयन की अथवा सतन की सस्कृति कह दे तो उपयुक्त होगी। व्रज में जगह-जगह देवालय अरु मंदिर अनेक सतन की तपस्या के प्रमाण हैं। इन देवालयन में भीतरे सतन ने बठोर साधना अरु तपस्या करके समाज कूँ प्रेम अरु भक्ति की ऐसी दिव्य सदेस दीनी, जानै सिंगरे भारत कूँ बुरे समै में आनंद ते अपनी सस्कृति की रच्छा करत भये जीवन कूँ जीवै की सहारी दीनी है। मंदिर सही मायने में जा तरिया के पावन स्थल है, जहाँ पै जायके हर ससारी कूँ मन में साति अरु अनुराग की भाव स्वत ई पैदा है जाय है। व्रज के वैष्णव देवासयन की सस्कृति कूँ इस्ट के काज राग अरु भोग कूँ समर्पित करके कलान कूँ परमात्मा की तरफ मोड़के नामै निस्वाध भाव की ऐसी साधना जोड़ दीनी, जानै हमारे देस की कलान कूँ समी जीवन अरु अनुपम प्रोत्साहन दीनी है। प्रभु के दशन के सग सग म्हा की बला-कारोगरी, साज सिंगार, अ यमार्गी, अष्टयामी, अपरस, सकडी अनसकडी, कुतवाडी, झोपी, तबकडी, दूधघर पडौ अरु माला फेरते कमर झुकाये, परकम्पा देते बूढ़े बडियाण कूँ देखके मन सहसई प्रमुदित है उठे है। व्रज के मंदिर कोरे साधना अरु तपस्या या भक्ति का स्थान ई नई है के सँकडन परिवारन के लालन पालन के केन्द्र हूँ के सग-सग म्हाके उद्योगक है। हमारे देस की परम्परित कला अरु सस्कृति व्रज के इन मन्दिरन की कृपा से आज तानू टिकी भई है। व्रज के वैष्णव मंदिर सुरु ते परम्परा के हमी रहे हैं। उदाहरन कूँ बल्लभ सम्प्रदाय के मंदिरन में सरूपकी पूजा, निष्ठा की आज तानू ब्रेई परम्परा चली जा रही है, जो बल्लभाचार्य अरु बिनके बिद्वान पुत्र बिठल-नाथ जी ने निर्धारित कीनी ही। इन देवासयन के पूजा अर्चा में प्रयुक्त हूँ के बारे नाम भोग सामग्री, संगीत चित्रकला पुष्पकला आदि आजकल जा तरिया है जा तरिया गुसाई बिठलनाथ जी के समै में ही। आजकल मंदिर के सेवकन कूँ मुखिया भीतरिया रसा ईया, जल घडिया, फूल घडिया लिखिया झापटिया, रोकडिया (लेखाकार), परेडिया, माकी तगारची, क्षाम, मृदग सारंगी पखावज आदि बजायके बारे रासलीला करके बारे, कीतनीया, चित्रकार, शिल्पी, कथावाचक आदि परम्परागत रूप में बिना काऊ तरिया के प्रभाव अरु परिवर्तन के आजकल चल रहे हैं।

हजारन परिवारन के पालक भीनाथ जी—

राजस्थान के नाथद्वारा के देवालय के कारण भेवाड की तीस चालीस हजार की जनसख्या की नाथद्वारा सहर पूरी तरिया मन्दिर के आधार परई अपने परिवार की पालन पोसन कर रही है। जा मंदिर के दरसन कूँ हर सप्ताह तीस से चालीस हजार यात्री नियम ते आते हैं अरु उच्छवन पै ता इनकी सख्या लाखन पै पौंच जाय है। भीनाथजी के देवालय में हजारन की सख्या में कायरत कमचारिन के परिवार की रोजी रोटी की

एक मात्र आधार देवालय ई हैत । नाथद्वारा के श्रीनाथ जी के कमचारी गो तरिया के है पैसे राज्य सरकार के या टेम्पल बोर्ड के कमचारी कहै जाय है । दूसरे मंदिर म सेवा पूजा करवे बारे हजारन की सख्या मे कमचारी है । पैसे तरिया के कमचारिन कू राज्य सरकार ते बेतन मिलै है परि दूसरे देवालय की नित्य सेवा म लगे भये कमचारीन कू बेतन के रूप मे केवल परसाद मिलै हैं । वे या परसाद कू भगत लोगन मे देव के अपन परिवार को पालन पोसन करै है । श्रीनाथ जी के भोग म लगवे वारी विराट सामग्री मूल्यवान हैवे के स ग स ग सुद्धता की दष्टि ते आज के युग म निश्चितई आस्थय की विस है । ब्रज देवालयन हमारे देस की चित्रकला स गीतकला स्यापत्य-कला आदि कलान म अपनो महतो योग दीनो है । नाथद्वारा के भित्ति चित्र, पिछवाई चित्रकला अरु श्री कृष्ण लीलान के विभिन्न चित्र आजक ब्रज स सृष्टि के गौरवशाली वैभव कू चारों तरफ फैलाय रहे ह । राजस्थान की श्रीनाथ जी की नगरी नाथद्वारा के प्रसिद्ध चित्रकार घासीराम अरु बिनके स गी ख्याति प्राप्त चित्रकार श्री हीरालाल जी की देखरेख म मयुरा के द्वारिकाधीश की मंदिर नदगाव के मंदिर अरु कुसुम सरोवर पै धनी छत्रीन के चित्रन की नवीनीकरण भयी है ।

गोरधन गो सधधन धर सेती बाडी—

ब्रजभूमि, ब्रजकला अरु ब्रज स सृष्टि की कैद बिन्दु गिरिराज गोबरधन हत । गोरधन के रूप मे ब्रज म सृष्टि ने एक ऐसो देवता हमारे देसवासीन कू प्रधान लीनी है ऊँच नीच के मानुख निमित भेद-भाव नाय रहे । जान पात के मिंगरे बधन गोरधन की ब्रजरज मे आयवे तिरोहित है जाय हैं । स गई बन बन के लोग एक सुर मिलाय के गोरधन की जय बोलते भये परिकम्मा दे हैं । जि जावो सबन ते बडो प्रमान है । गिराँज गोरधन की आराधक ब्रज स सृष्टि की मूल आधार गौस वधन अरु वृषि प्रधान स्वरूप की सच्ची सेवा माहि निहित है । इन्द्र की पूजा की निसेधकर गोरधन की पूजा की सुरुआत श्री कृष्ण ने कर्शई ही । जाकेँ उपलब्ध मे सिंगरी ब्रजभूमि अरु राजस्थान के मेवाड के लघुब्रज नाथद्वारा म दिवारी के दूसरेदिना कार्तिक सुनला प्रतिपदा कू अन्नकूटोच्छव मनायो जाय है । नाथद्वारा मे जाकी तैयारी दसहरा ते दिवारी तानू चलती रहे हैं । इन सामग्रीन कू तैयार करिवे मे मंदिर के नियमित सेवकन के अलावा ब्रह्म सम्बन्ध अरु पुष्टिमार्गीय परम्परान मे दीच्छिन भीतेरे श्रद्धालु दत्त चित्त है के सामग्री निर्मान म लग जाय है । नाथद्वारे के देवालय की गौसाला की गैयान की पूजा अरु बिनको सिंगार एय ग्वाल बालन की सम्मानऊ याई दिना होय है । मंदिर की गोशाला मे अगहन पुनी सौ गोधन सिंगार की नाम सुरू है जाय है । बिनके सींग रगे जाय हैं । अरु मोर पाखन के तरे-तरे के उगादान बनाय के बिनकू सजायो जाय है । गोशाला के ग्वाल बालऊ अपने पहिरवे के कपरा अरु आभूषण कू सजामे है । सजा

पू. चार घंटे के आगमन श्रीनाथ जी की प्रमुख गंगा पू. आगमन के पवन चान श्रीनाथ वरत भय श्रीनाथ जी का मंदिर माहि जाय है। यहां गुमई जी गोरधन चौक में प्रमुख गंगा की पूजा कर है। प्रधान गंगा त. गोरधन पू. गुदाया जाय है। ता. पादे गंगान पू. विदा करयी जाय है। वज्र संहृति की गो मन्वधरा के अभाव में ता. बल्लनार्द नाथ वगे जाय राय।

तापद्वारा त. बाग भर दूरी के तापुबान माहि श्रीनाथ जी की गोमाता स्थित है। मंदिर के दूधघर में मा. गोमाता त. थाली पहर दूध आमती रह है। वज्रयागी द्विधिया अगरीली पहर भय अथवा मगाय दूध के बलमान पू. वधा के धरिक् गोमाता त. निरतर सामत रहे है। परनी तानू लटा दवाके घना में त. तोर सदै दूध बाड़ी जाय है। वज्र संहृति की मूल आधार गो. मवधन के साध्यात दरसन करने है तो तापद्वारा की गोमाता त. उपयुक्त स्थान अथ. बा. है सा. है। गंगा की सेवा अरु सेत बघार में जाय दिनभर परिग्रह करना वज्र के लोगन की मरती की प्राप्ति है। जाई वारन वज्र लोक जीवन में वृष्टि विगयक प्रचुर साहित्य मिल है। वज्र लोक भाषा में वृषभर्त अथ. जीवन के लम्बे अनुभवन पू. लोकगीतन में वल्लुबी से उतारयो है। वज्र के वृषभन की जि. निषीध वग्यानिव वगीटी के तो उतारयो नाथ गयी पर पीढी दर पीढी अनुभव की तराजू में जाय जरूर तीनों गयी है। अब तो विग्यान के कारण सेती बाही के नित नये नये उप. करत आ. रये है जात मानव परिग्रह जा. सदभ. में वम. है तो चल्तो जा. रह्यो है। आधुनिक विग्यान के सेती बाही पू. प्रदत्त उपकरण के प्रतिष्ठ राजस्थान की वज्रभूमि की लोकमानस पूरी तरिया जागृत है। वज्र लोक जीवन में सेती बाही की पुरानी चर्चान के सग. सग. आधुनिक उपकरण के प्रतिष्ठा के कलाकारन के जोकित कठ. आबड पूरी तरिया ते जाग. रत है व. लोक कला के वभव पू. बढ़ाय रहे है।

वज्र लोक कला में संस्कार अरु नागविराट

वज्र में काळ गाय बीसर प. बाई के अनुकूल लोकगीत गायके की परंपरा हैं। संस्कार, वरत उच्छ्रव आदि के अलग अलग विराट लोकगीतन की परंपरा वज्र लोक जीवन में मिले है। वज्र में तो गीतन के अभाव में तो वज्र संस्कार पूरोई नाथ मायी जाय है। बच्चा के जनम त. लके दवाके सघार त. सिघारवे के पाछ तानू वज्र में लोक गीतन की परंपरा चले हैं। गाय की वज्र बडो बूडो मर जाय है तो दूसरे गाय बरे समधी समधन रोब आये ह. रोये में मरवे वार के गुनन पू. अपनी बनाई भई कविता अरु लय में बोल बोल के रोमते भये गये है। जनम के वधाये जच्चा छटी पूजवो, कृष्ण पूजवो, सातिण, तामधराई मूडनी, वनछेदा, जनेऊ के लोकगीतन की विशाल भंडार आजकल वज्र लोक कला के आधार बने भये है। जाई तरिया वज्र में व्याह के लोकगीतन की एक एव विराट परंपरा मिले हैं। व्याह के गीतन में लगन, सगाई पीरी

घिट्टी, देहरी पूजन, चौक पुगई, लगुन भात नीतिबो हरद रतजगे तेस, बज्रा बत्री
 पूरी पूजन, बूझी बाझू पूजन, माढयी गाढिबो, मगोरी तोरिबो, मात पहिराबे, चाक
 बालस पूजिव घुडचढो खोरिया, बायीठी, भामर, पसबाचार, कु वर कलेऊ, दूधाभाती
 चढ़ार, गारी चदनवार, म्हो मडई, बिदा, दई, देवता पूजन जाई तरिया बत, पव अरु
 स्थोहारन केऊ 'यारे-न्यारे गीत गाय जाय है यथा-नीरता, गनगौर रामनौमी आखातीज
 रथजात्रा, गगोज देव मोमती ग्यारस, मुडियापूनी, कूआ बार की जात, तीज-सलूने,
 नागपौचे, जनमभांठे ह बाचोय बल्देव छठ दसैरा सरद पूनी, करवा चौथ अहोई आठे
 घनतरस ओर दीवारी गाधनपूजा, मैयादोज, अल्लनौमी, देवठान सकटचौथ, सकरात,
 सिव चौदस दसत फगुआ, होरी, सेठपूजन आदि सबन के लोकगीत बहोतई सरस
 होय है ।

ब्रजवासीन की बात बात में काव्य सौंदर्य की छान छलकें हैं । बिनकी बात बह्व
 भई अनूठीपन आ जाय है । मुहावर अरु लाकोक्तीन के प्रयोग त ब्रजवासी की बातन में
 बाग्यदग्धता की अनूठीपन बिनकी भाषा की मधुरता में लाघवता एव पौनपन की समावेश
 कर दे है । ब्रजवासीन की लोकोक्तीन में परम्परागत बिसबास की झलक होय है तो
 कहू सामाजिक आस्थान के दरसन होय है । सगुन असगुन बिचारबे मेऊ लोकाक्ति पर-
 म्परा ते ब्रजवासीन की सदीन ते सग दे रयी है । ब्रज के लाग स्वास्थ कू भीतई महत्व
 दे है । कमजोर सरिर पै कौऊ तरिया को तो काम नाय सद सके है । गाम के लोगन
 अपन अनुभव ते स्वस्थ रहबे के सूत्र लोकोक्तिन में हूड़ के जनमानस कू रोगन पै विजय
 प्राप्त करबे की सूधी सच्चे रस्ता बताय दीनो है । सास बहू के नाँक शोक पऊ ब्रज
 लोकाचार में अनेक तरिया की लोकोक्ती जनमानस की मानसिक स्थिति कू खोल के रथ
 दे है । लोकाक्तिन के अतिरिक्त ब्रज संस्कृति ने अपने भावन में बाल भाव कू जितेक
 आदर अरु लाड प्यार दीनो है । स्यात बितेक काऊ अय भाषा अरु संस्कृति न नई दीनो
 होयगी ।

ब्रज लोक संस्कृति में बालभाव की महिमा

ब्रजभूमि के बालभाव ने तो हमारे देस कू कल्याणकारी ते कसमीर तलक ऐसी
 भावकारी में बांध्यो है के भाषा रीति रिवाज आदि की सिगरी वभिन्नता टूट गई । परि-
 नाम स्वरूप ब्रज की बालभाव देसवासीन के घर घर को बालभाव बन गयो । मजहब के
 सबई बधन गाबुल के बालभाव के सामे गर गये । ल्होरे ल्होरे बच्चान के अनोखे आनंद
 भरे नटखटपने कू आदर अरु वैभव के संग अपनी भासा अरु संस्कृति में उदत करिव
 में ब्रज भूमि ने सबन ते ज्यादा महत्व दीनो है । श्री कृष्ण की ब्रज की बालभावई तो जा
 भाषा के लालित्य की सबन ते बडो आदर रह्यो है । बल्लभ सम्प्रदाय तो पूरी तरिया

ब्रज के श्रम के मानभाव बूझ सीने पत्थरी है । तर-तर के गीतन त रिता य गिहाय के
 गह के तोरम मोहि भिगोय भिगाये के गहका तरिया के बान गीतन त बच्चन कू
 रियायय की परम्परा ब्रज सोह सूर्यति म मुरु त रही है । दूध बीसो बच्चा धार धीरे
 चडे हैतेई बिनरी पट्टी पुने है । दर्जा एक न न इन घाल छात्रन की एक स्त्रीहार आव
 है भागे मुवन पच्छ की चौप कू जब सिगर बच्चा अपन स्त्रीर स्त्रीर हाथन म ग
 बिरग डडा बजामत भय घर घर जाय न गीत गाम है । गवरे जमई बच्चा घाना
 पहीचे है तो पडित जी बडे गेह त यानवन अरु बिनवे अभिभावकन त मजन के उच्चा
 रण के मग गोग जो अरु बच्चाग द्वारा लाये मग डडान की पुत्रन कराम है । गुन्ना
 मवन के माये प रोगी की गिलक कर अरु दाय हाय म बलागी बाधे है । बच्चा बडे
 श्रद्धाभाव से बुद्धिदाता मनन अरु अपन पुत्रजी के रूप म पडित जी कू मान्दाग प्रनाम
 करे है ता पाछे सीधे न घर कू भेंट कर है । प्रसाद मान्द पडित जी न ह्या मट्टा के
 स्त्रीरे भीलुभा न बालवन कू दही, दूध अरु धी लांछमिलो भयो पचासृज निजो जाय है ।
 बालक छात्र गृही से नाचने बन्ते अपन डडान कू दोर्गो हाथन म लके जोर जोर से बजाते
 भये बागित लीठे है । बस जाई से बच्चा की ब्रज मे कई दिना लानू चमिमे भारी 'डडा
 चौप' की उच्छव मुख है जाय है । ब्रजभूमि के बालवन कू दो तीन गिना कू पदम त
 मुक्ति मिल जाय है । बिनवे या उच्छव न दिनान न बायत्रम रहे है के ब अपन पडितजी
 के मग बालवन के परिवारजन न घर जाय जाय न डडा बजावे भये गीत गामे है ।
 हर परिवारजन इन स्त्रीरे स्त्रीरे बच्चन कू मिठाई पस, गुडधानी द है । अरु पडितजी
 कू नवद दक्षिणा दई जाय है । 'बच्चा की बच्चा', डरपोक लोग की बच्चा, 'कूहड बयर
 की बचन' आदि गीत छोटे छोटे बच्चन के मौह से हास्य अरु व्यय के ब्रज के लोकगीत
 भीतई फवे है अरु मोहक लगे है । जिन घर प बच्चा इन गीतन कू गावे है बिनवे
 स्वाभाविक अरु तुल्लाते धनन से गीतन कू सुनने ब्रजभूमि के 'लोग हसते हसत साटपौट
 है जाय है अरु बालभाव के आनन्द मे तिहराहित है वे निहास है उठे है । बालभाव के
 जि लोकगीत निश्चिई ब्रजभूमि की ऐसी अनुपम धरोहर है जो स्यात अयन नाय मिल
 है । सरकारी स्कूल खुल जायये प डडाचौप के बाल भाव के जा उच्छव की प्रया धीरे धीरे
 नमाप्ता सी हैती चल जा रही है । पुराने सभे म मोहल्ला मे गुरुजी छोटी छोटी बच्चागा
 स्त्री के बच्चन कू पढाते हे । वस्तुत ये स्त्रीहार ब्रजभूमि के बिन बालवन की स्त्रीहार
 ही जो इन पाठशालान मे पढते हे । धीरे धीरे आधुनिकता के भाव के कारण जि परपरा
 ब्रजभूमि तेऊ तिरोहित हैती चली जा रही है । कहु कहु डडा चौप के जा सूर्य के दमन
 है जाय है । ब्रजभूमि के बच्चन के पढवे लिखवे की रोचकता ने सग खेलवे के प्रति
 अभिरुचि ब्रज सोव अ चर म मुरु ते रही है । बच्चन के, छरी छापरिन के युवकन के
 प्रौढन के अलग-अलग खेल ब्रज लोक मच प अपनी एक अलग स्वरूप राखे है । गेंद
 टप्पो, गिल्ली डडा गुल्लन गुल्ल काई डडा, कछुआ की नद मे डुबक डुबा, राजा भगी,
 कोरमार आल मिचीनी, किल किल काटे, ख्वाल क्षपट्टा पान ठीकरी, तडीक बडीक,

चूहा बिल्ली, झंझन कटोरा, चमक चादनी, चुन चुन मूंगा, मक्का आदि व्रज आचर के लहोरे-लहोरे घञ्चान ते लेके किशोरवय तक के बालवन के प्रसिद्ध खेल है तो गुटका, मक्को गिट्टा समदर व्रज की छरई छापरीन के लोक प्रिय खेल रहे हैं। अरु पंथा आदि युवान के गामन के लोकप्रिय खेल रह है। बँठे ठाले काऊ उमर के ग्रामीन अठारह गोटी, नौ गोटी छे गोटी, चगा पो आदि जसे खेल ते अपनो मनोरजन कर सके है।

हिंडोरे, रास लीला, सांझी कला अरु देवालय

व्रज धरा के लोकोच्छ्रव राधा अरु कृष्ण के माधुर्य भाव ते भरे भये है। सिंगरे व्रजधाम माहि लोकोच्छ्रव प जो उछाह, उमग, उल्लास देखवे कू मिले हैं वू भीतई दुलभ होय है। मूरज क प्रचंड आसप ते तपती विमल व्रज वसुधरा कू जसेई वादरन की नेहिल स्पस मिले है त्योई अपने तपन कू भूलके हिये मे नभ के वादरन म कारे व हैया की अनुपम छवि कू निहारवे लगे है व्रजधरा की उल्लास अरु उमग पै उछाह है के लोकोच्छ्रव की सुरुजात एक सग है जाम है। व्रज लोक कला हरियाली मावस, हरियाली तीज पै सलूनन मे हिंडोरे पै पाम बढाती भई मलाहरन मे झूम झूम उठे है। जग जग पै हिंडारे डरबो सुख है जाम है। व्रज ललना मोहला मोहला मे समवेत मुरन म मल्लार आनि गाती भई हिंडोरेन पै झूलवे नग जाय है ग्हाई व्रज के देवालयन मे हिंडोरे के उच्छ्रव सुख है जाम है। सलूने आते ई व्रज सस्वृति मे भैया भैन के पावन मिलन के सग मग जमाई लाला केऊ भाव बढ जाय है। सलूने अरु हरियाली तीजन पै समुरार जायके वूरो खायब की प्रथा व्रज मे विसेम महत्व राखे है। व्यग हास परिहास के सग सारी अरु साराहेरीन कू भीठो भीठो व्यग व्रज लोकगीतन की भीठी भीठी गमक भरी अनुपम धरो-हर हते। सामन मे सिंगरे व्रज मडल मे देवालयन म नित्य नये उच्छ्रव होय है। राज-स्थान के कामवन अरु जयपुर, नाथद्वारा कोटा आदि स्थानन के देवालयन म हिंडोरेन की आनन्द फूले लगे है। जाई समै रास के माध्यम सौ श्री कृष्ण लीलान की आनन्द रसिक जन ले है व दावन म श्री रामसुख जी, हरमोवि-वु बरपाज देवकीनन्दन अरु तेजपाल की रास मङ्गल भीतई प्रभावित करै है। बडे बडे विसाल मङ्गल बनाये जाय जिनम 10-10 हजार दर्सक रास लीला के आनन्द अरु व्रज के मिठास की पान करले रह हैं। व्रज की सस्वृति कू मन्दिर या देवालयन की जयवा सतन की सस्वृति कह दे तो वाई अतिसमाप्ति नई होयगी। रास लीला व्रज सस्वृति की मनोहर अभिव्यक्ति हते। व्रज की रास रगमच मूल रूपते श्री कृष्ण की बाललीला अरु बिनकी अय व्रज लीलान की मच है। गोडीग सप्रदाय के नारायण भट्ट न रासलीला म श्री कृष्ण की जीवन कू नाट्य रूपमाहि प्रस्तुत करिबे की परम्परा सुरु करी ही। रास बिलास श्री कृष्ण के एसी अतरंग लीला है जाये वूई भगत देखवे की अधिकारी है जाने सबीभाव कू सिद्ध कर लियो हाय। जि काम साधारन जन ते परे हैवे के कारण रासलीलान कू जन जन सब

पहीचायवे कू श्री नारायण भट्ट जीश्री रासनीवान कू कृष्णनीना व अनुरागन त जोरन को महनीय काम कीनी । जा तरिया रासनीना ते प्रचार प्रसार न ब्रज मस्तुति कू दूर दूर तानू पहीचाय दीनी । राम वास्तव म ऐसी रासनीना की मच है जामे प्रेम, अनु-राम ते दिव्य भाव भगत हृथ अरु गगिनन रू त्रिभोर कर देय है । कृष्ण की अवतार लीलान मे श्रीकृष्ण जनम पूतना वध, यमलाजुन उद्धार, माखनचोरी, बालियभन, गावर्धनधारन अ य राभसन जी वध, ब्रह्मा व्यामोह कुञ्जा उद्धार, कम वध आदि की गणना करी जाय सके है । जाके अलावा निरु जन म राधा कृष्ण की प्रेम लीला, तीन रूप बारी छय तीना मुदामा लीला बरखेन म स्यामा स्याम मिलन लीलान के रूप में आजऊ रासधारी कृष्ण की लीवान कू जन-जन तन पहीचायके ब्रज मस्तुति व अनुराग अरु वास्तव्य की सस्कृति कू घर-घर पहीचाय रहे है ।

सामन के जाते ई लोक सस्कृति, लोक उच्छ्रयाम ब्रजभूमि अरु ब्रज म बसे देवालयन कू सौदय की अनुपम छटा म डूबाय दे है । गरदकाल मे आस्विन वृश्च स्यारस ती भावस तानू देवालयन मे अरु ब्रज के लोगन व घर मे माहन अरु पूजन के रूप म ब्रज लोक सस्कृति के सौदय की अभिव्यक्ति होय है । इन दिनान म राजस्थान माहि स्थित पुष्टि सम्प्रदाय के प्रधान पीठ नाथद्वारा म श्रीनाथ जी के मंदिर म आरती दशन के पीछे जब हाथीपोल को दरवज्जो बंद है जाय तो बाके बाहर कमलचौक म साक्षी की कलाकृतिन को प्रदमन कियो जाय है । मंदिर के विभिन्न बागन ते कदली वृक्ष के पूरे पत्तान कू फूनघर मे लायी जाय है । फूनघर के फूलघरिया जी अरु बिनके नीचे काम करवे बारे सेवकगन अरु भगत लोक डठल कू काट काट के केसा के पत्तान कू भलग करै हैं । पत्तान ते कागज के भावेन ते चुगे, (छोटी कैंची) सौ काट के तरह तरह की आकृति बनाय लई जाय है । जि आकृति ब्रज अत्र ते सबधित होय हैं । इनम विधाम घाट गिरिराज, श्री कृष्ण सुरभि दारघाटी, माखन चोरे कृष्ण बाल सबा, गोपी यमुना जी के बाग, जग, मानसी गंगा आदि श्री कृष्ण लीला के खय लोला, मोर, कुड सरोवर नदी सरना गिरि जगल, नदी की किनारी, बाढ सखाड गनगीर की सबारी आदि आकृति इन पत्तान ते बनायी जाय है ।

जा तरिया श्रीनाथ जी के मंदिर म श्राद्ध ते सुरु के पंद्रह दिन तानू गायी निर्मान की गिरगी काम कस्ली वच्छ के पत्तान तई सम्पूरन होय है । राजस्थान के नाथद्वारा करीनी भरतपुर धौलपुर अरु देवालयन सौ प्रभावित जयपुर कोटा के घसनव जन अरु ब्रजवासीन के घर श्राद्ध पच्छ के औसर प भवारी कया गोबर ते साक्षी मजामे हैं । भरतपुर अरु करीमी मे 15 16 दिना तक ब्रज कुमारी दीवार व भ्रमण वीरन जेटी पाव पापला डाली मे बँटी साक्षी, दो तीन निकारी, चौबड, पान सुपारी मिठाई भरी दलिया, स्वस्तिक, अठखलिया, फूननाथ सिधाडे, लहगा परिया नसीनी पं चडती

साझी, लगडो बामन कानी कउआ, आदि बनाये हैं। नाथद्वारा की बवारी का दीवारन की पुताई करवे बापे गोबर से अनेक तरिया के पंगु पक्षी चाद सितारे भी चाई, एक बडो खापडिया चोर राजा रानी आदि बनाये हैं। ब्रजभूमि की लगडो बामन नाथद्वारा में खापडिया चोर बन गयी है। साझी के आखिरी दिना नाथद्वारा अरु राजस्थान की ब्रजभूमि में गोबर की कोट बनायी जाय है। नाथद्वारा में जा कोट में भी की चित्रन होय है अरु भिन्नी के बीजन से आख बनायी जाय है। राजस्थान में कुम्ह के बन मट्टी के राजा रानी बनाये जाय हैं। राजस्थान के वस्त्र देवालयन भऊ मा की सौंदर्य पूर निखार के सग खिल उठे है। पुष्टि सम्प्रदाय के कोटा के मधुरेश जी काकरोली के द्वारकाधीश जी, कामवन के गोकुल चन्द्रमा जी मदन मोहन जी, जयपुर के चैतन्य सम्प्रदाय के गोविंद दबजी, करौली के मदन मोहन जी अरु जयपुर के अमदिरन में राधा गोविंद राधा गोपालजी, गोपीनाथ जी में साझी की उपक्रम हर सा पूरे उत्साह के सग बनायी जाय है। जाई तरिया पैं टसू अरु साझी के गीत ब्रज लो कलान वैभव कू औरऊ बढ़ाय दे है।

देवालय की सगीत अरु ब्रजनारी के विविध गीत

पुष्टि सम्प्रदाय के देवालयन में सगीत कू आराधना की प्रमुख माध्यम मान गयी है। जाई कारन बिठठल नाथ जी ने चार शिष्य अपने पिताजी के अरु चार शिष्य अपने लैके अष्टछाप की स्थापना कीनी। अपने समै के इन आठ महान सगीतकार श्रीनाथ जी की विभिन्न शाकीन के समै बिनकी बाल लीला के मधुर ब्रज के गीतन क गायन कीनी। लिखवैयात्र तत्काल गीतनकू लिख लीनी। विदेशीन की जब देवालय विरोधी नीति सुरू है गयी तब ब्रज के इन मंदिरन कू हवेली के रूप में प्रकट कर दिख गयी। जब हवेली में जा कीतन सगीत कू गाये गये तो ब्र हवेली सगीत के नाम से विख्यात है गयी।

गंगा दसहरा एकादशी, सोमवती मावस सकरात, चन्द्र सूर्य पहन, जनमआर शिव चौदस, हारी, सलूने दसहरा दिवारी आदि प्रमुख उच्छ्रवन में ब्रज नारीऊ अप मन के भावन कू तरें तरें से प्रकट करे हैं। अब तो ब्रज नारीन ने 26 जनवरी 1 अगस्त जैसे रास्ट्रीय पवन पऊ लोकगीत रच डारे है। जि कहनी कि ब्रज लोक सस्कृति के लोकगीत अरु बिनकी वैभव पुगानी परम्परा का है जि भक्त्य नाथ। आज वै वैध्यानिक उपकरण अरु अय अनक आस्चयन पैं ब्रजभूमि की बपर एक से एक अनू लोकगीत गाये हैं।

ब्रज की नारीन के मोहते करुणारस के गीत बडी अनूठी भरी वदन के सग व्यक्त होय है। करुणा रस के जि प्रव धात्यक लिमे भये अलग अलग

भावना प्रधान गीत निश्चित है जा भाव अरु जमीन के अनुपम वैभव को प्रमानित करे है ।

वदन रम गीत रसीली गारी ब्रज लोक मंच

लोक कला प्रधान वदन रस के गीतन में दोना, चंदना वनजारा पनिहारीन, चन्द्रावली आदि जैसे गीतन की गणना है सके है । छोटे गीतन में वनजारा, पनिहारीन विजैरानी, चन्द्रावली आदि लोकगीत ब्रज ललना के लोकगीत है जो सामूहिक रूप में सामन के महिना में गाये जाय हैं । इन गीतन में कोऊ न कोऊ गारीमन की व्यथा वनित करी जाय है । उदाहरण को विजैरानी गीत में ऐसे पुरुष की कथा है जो अपनी नव परिनीता पत्नी को दूसरे पुरुष से हमके बात करवे पं मनेह करके सताव है । निर्दोष पत्नी पति के अत्याचार से डरये नाय धीरे धीरे अपनी सच्चाई से सदेह को मिटा दे है । जाई तरिया ब्रज के करुण रस मोरा नाम के गीत में बड़ी रमनीयता के संग चित्रण किया गया है । सही है कि ब्रज के जीवन के सबसे भीठी सबसी रसीली रूप ह्या के लोक-गीतन में मिले है । इन लोकगीतन में ब्रज युवति के कोकिल कठ से निकरे भये गीतन को सुनके तो कौन ऐसी पत्थर दिल को होयगो जो सुध बुध नाय भूलेगी । इन गीतन में सबनो रसीली स्वाद गारीन की है । ब्रज की गारीन को मिठास कहा जाय है दबतान को दुलम है । जब बाऊ भागवान के द्वार पे बरात जै रही हाय, बाजे बज रहे होय, धोरी नाच रही होय छोरा छोरी उल्लास में कूद रहे होय छई छापरी नये नय परिधानन से सजी होय । वा मने अनेक आभूषणन से सजी छत्री ब्रज वनिता लजायब वारी गीत गायबी सुरू करै है अरु जब बरात जैय को बैठ जाय है तो वे कोकिल कठी ऊ जैसे के छत या चोतरा पे अपनी मोर्चा सम्भार ले है । शीन घुघटन पे फरबने बोल बैनन सी अपने गीत सुरू कर दे है । अरु अपने मोहते रसीली गारीन को अमृत बिलरवे संग जाय है । व्याह मादी के ओसर पे पत्तर बाघबो, पडित को पत्तर खायवे को प्रोत्साहन देवे के रूप में बैयद को गारी गायवे अरु अनेक तरिया की हासमयी, व्यंग बाण छोरबो ब्रज संस्कृति की अनूठा अलौकिक सौंदर्य है । ब्रज गारीन के लावगीतन को अबई तानू नमबद्ध रूप में लेखन की काऊ तरिया की प्रयास नाय किया हो । ब्रज लोक संस्कृति के सरूप में ब्रजगारीन को सरूप देखवे को मित्र है । राजस्थान के भरतपुर की ब्रज लोक मंच की कला एक अपनी विनिष्ट स्थान राखे है । भरतपुर जिले के बलावार अपने अपने स्थानन में बिना काई तरिया के सरकारी प्रोत्साहन मिले बिना अपने मन के भावन को अभिव्यक्त करवे को विभिन्न लोक मंच व माध्यम सी भोतेरे बलावार अपने सुर दे रहे हैं । कामा में जाम व्योसायिन अरु व्योसायिक रूप में मंच जरूर बन गये । कामा डीग, भरतपुर रूपवास में लोक मंचीय कला के दोनू रूप देखे जा सके हैं । स्वांग भगत ख्याल झूलना गीत दोना व्याह जिहरी रामलोता, रासलोता जैसे नानारूप भरतपुर के अनेक लोक मंचीय कला व सरूप है ।

प्राचीन व्रज सस्कृति मोह (भरतपुर) उत्खनन

राजस्थान पुरातत्व विभाग ने भरतपुर आगरा रोड पर स्थित मोह गाम में व्रज सस्कृति के प्राचीन प्रमाण ढूँढ निकारे हैं। उत्खनन में पाँच सांस्कृतिक कालों में बाँटो गये हैं। ताम्रकाल से लेकर शुंग और कुषाण काल तक इन पाँच सांस्कृतिक कालों में बाँटो गये हैं। यक्ष की विराट प्रतिमा हज़ा आज़कू ठाड़ी है। लहौरी चामर की उत्तर भारत में पत्नी प्रयोग हज़ाई मिली है। 'जखिया' की मूर्ति हज़ा के गामन में आज़कू लगे हैं जो यक्ष पूजा की ही विगडो रूप हैं।

राजस्थान व्रजभाषा अकादमी ने जाग्रत में जागरिया प्रदेश माहि फैली व्रज कला और सस्कृति विसयक सामग्री को इकठ्ठी करिबे को प्रयास कीनी है। अबई जा विसै पै भीत कछु लिखे जायबे की आवश्यकता है। राजस्थान के मुख्यतः माहि व्रज सस्कृति की पीपुसधारा आज़कू हज़ा के निवासीन को उत्साह माहि डुबोये भये हैं। खड़ी बोली के प्रचार प्रसार के कारन आज व्रजभाषा को मात्र क्षेत्रीय बोली के रूप में मानी जाय है। व्रजभाषा तो सदीन तक सिंगरे भारत की काव्य भाषा रही है। स्यात सस्कृत भाषा पाछे व्रज भाषाई ऐसी भाषा रही है जाने हमारे सिंगरे देस को अपनो नेह पीनो है। सत और देवालय एवं श्री कृष्ण के प्रदेश की भाषा हैबे के कारन व्रजभाषा-काव्य के माध्यम से व्रज कला और सस्कृति देस के कोन कोने में गई है। वैष्णव सम्प्रदाय की व्रज भाषा व्रजई तो रही है। जाई कारन विदेशन में व्रज की छटा दीखवे में आवे है। सच तो ज़ि है के व्रज के सौंदर्य, लालित्य और भक्ति की पावन धारा से हमारे देस को जीवनसाँ ऐसा भाग हवे जो अछूतो है।



कचन करत खरौ कौ औपन्यासिक शिल्प

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी अपनी स्थापना के चौथे वरस में आपके हाथन में निमग्न ब्रजभाषा में 'कचन करत खरौ' उपन्यास भेंट कर रही है। ब्रजभाषा में गद्य में ऊँची सौरभ भरी सुगंध अरु वचन वक्रता भरी वाचस्पत्यता की भीनी भीनी रमणीक शक्ति भरी पड़ी है जो पद्य में है। यार्के प्रमाण आपकूँ भैया गोपाल प्रसाद मुद्गल के उपन्यास 'कचन करत खरौ' में मिलिगें।

'कचन करत खरौ' ब्रजभाषा में राजस्थान की घरती पै प्रकाशित पैलो उपन्यास है। या उपन्यास में राजस्थान के ब्रजभाषा भाषी भूभाग की कथा कूँ मून आधार बनायी गयी है। नारी प्रधान 'कचन करत खरौ' उपन्यास में लेखक ने तान पीलीन की कथा कूँ समेटये का प्रमसनीय प्रयास कीनी है। समाज के खजन में नारी कौ महत्व अरु बाके सघससील जीवन से निकरे भये चेतना के सुर कैसे दूटे भये परिवार के निर्माण की शृंखला कूँ एक एउ करके जोडे हैं यावौ साची खातो या उपन्यास कौ मूल केन्द्र बिन्दु रह्यो है। सघष के जालोक मई सक्को कम को पथ दीये है। मानव जीवन में अनेक उतार चढाव भाँमें है। भीनरे कष्ट होंय, अध विस्वास अरु रुढ़िवादिना के कारण भीतेरी पीडा झेलनी पड़े समाज के नये विचार, प्रगति की नरीन घारा की घनपीर विरोध करे है। परम्परा अरु नवीनता में टकराव होय है। ई आज की नाप हर युग की कथा है। पर समाज में ऐसे लगनशील अरु कमठ व्यक्तिक होंय हैं जो परम्परा कौ आदर करते भये नय विचारन की उवरा भूमि कूँ अपने कर्मठ कम की शक्ति से जोतकेँ बाय नवीन चेतना के अनुकूल बना देंय हैं। 'कचन करत खरौ' के नायक चकौर अरु चंदा याई तरिया के पात्र हैं। बम की मिस्था, इन दानू पात्रन की चेतना की मूलबिन्दु है। एक सभें तो एमोऊ आव है जब चंदा अवेसी रह जाये है। जीवन के स्थान स्थान पे बाय एक से एक असहनीय दुख झेलन पड़े। लग है के भू अब सदा सदा कूँ दूट जायगी, पर निरामक्त भाव से बम के प्रति निष्ठा चंदा कूँ जीवन निर्माण को एक नयी रास्ता आलोचित कर है। आविर में जीत बम निष्ठा की होय है। नायिका प्रधान

‘कचन करत खरौ’ उपन्यास में नारी के महत्व को समाज और परिवार की प्रगति के संग उपन्यासकार ने बखूबी ते दिखायवे को प्रयास कीनी है ।

कम की निष्ठा की आराधना के संग संग ‘कचन करत खरौ’ उपन्यास में ब्रजभूमि के जीवन को अनूठी प्रस्तुतिकरण करिखे की लेखक ने उल्लेखनीय प्रयास कीनी है । ब्रजभूमि के गाम की रीति रिवाज, उत्सव, पारिवारिक जीवन क उतार चढ़ाव के संग संग भोरे ब्रजवासीन की सिगरी जीवन शैली लेखक ने बखूबी या उपन्यास की घटना अथवा पात्रन के परस्पर वार्तालाप में उतारी है । ब्रजभूमि के पारिवारिक अथवा सामाजिक जीवन में बालक के जन्म से लेकर बाकी मृत्यु पर्यंत तक की परिस्थितीन में कहा कहा उतार चढ़ाव आमें, ब्याह सादी के औसर प बिचौलिया के सैं हूँ मिलते भये परिवारन के इस विस खण्ड खण्ड करिखे की प्रयत्न करै हैं । ये सिगरी ब्रजभूमि की जीवन शैली अथवा बिनकी भयाँदान के उतार चढ़ाव के स घष की ‘कचन करत खरौ’ उपन्यास में लेखक की कलम से सटीक बनन भयी है । १। तोसी मस्त मोला अथवा स्वाभि मानी ब्रजवासी के जीवन की सिगरी विसेशतान की निचोड़ ‘कचन करत खरौ’ उपन्यास को एक एक घटना में प्रतिबिम्बित भयी हैं ।

‘कचन करत खरौ’ उपन्यास में विद्वान उपन्यासकार ने औपन्यासिक शिल्प की आद्योपात्त निर्वाह किमी है । उपन्यास सिल्प की रक्षा करते भये लेखक ने बड़ी सादगी अथवा सरसता के संग करनीय कूयामे प्रस्तुत कीनी है । तीन पीढ़ी की कथा में एक नारी के स घष के उजागर कर उपन्यासकार ने सामाजिक अथवा पारिवारिक जीवन के सच्चे रचनात्मक विकास में निरासक्त कम के महत्व को मनोहर ढंग से प्रतिपादित कीनी है ।

औपन्यासिक शिल्प के निकष पर ‘कचन करत खरौ’ की विवेचना प्रस्तुत करनी चाह है ।

कथानक ब्रज अखर की है । सिगरी कथा भरतपुर, डीग, अऊ गामन के आस पास की है । उपन्यास की बध्य स क्षेत्र में यों है—

भरतपुर की चौखेला कम ब्याज पर बोहरगत करती । भली आदमी हो । गरीब गुरदान के साईं भलाई की सोचती । बाकी भई इक्कीती बेटी ‘बंदा’ । बोहरे की छोरी ठाट बाट सों रहेई । समे न पसटा ग्यायो । कई साल अकाल रह्यो याने बाकी कमर तोर दई । बूहर साल अपन आसामीन की छोरी भरती रह्यो । बाए अपने घर चलावे के लाले पर गए । इतै, बाकी छोरी सोलह बरस की है गई । बाकी

मैया अची भरु बाकी थू बाए सोदि सादि कँ गाई जा रही कँ छोरी के पोरे हाथ करे जाएँ । चोखे जहा थू जानी म्हाई मैन देन, मासमाय काम ए बिगार देतो । च दा रूपवती पढ़ी लिगी ह । सब काम म हुम्मार पर मासो हानत बिगार जावे ते कोऊ ब्याह की हा नाय करनी । चदा को कई बेर दिसारी भयी पर मार्ग म नई चढ़ी ।

अतोर म चदा नई हल निरासी । बाकी एर परिचित बालेज की साधी ही—
चकार । बाद विवाद म हमेसा पहुँची कँ दूसरी नम्बर पाती । च दा ऊ बाद विवाद में भाग लेती । दोनों की जान पहचान हे गई । एक पल दहेज के विराध म चकार न याजो जीत गई । बड़ी बाहोयाही मिली । चदा न बाते पूछी, दहेज के विराध म जो बात होठन भाँ कही हे थू होठन तबद रहेगी कँ जीवन म उनारी जाइगी ? ता मये चकोर न कही, या बात की उत्तर तो समई देगी पर हाँ मानू अपनी बात की धनी होनी चहए । इन बातन की बाद दिवावे ते ताई च दा न चकोर की नज़ टटारी । चकोर चदा भी प्रभावित तो हनई हो । चदा के घर की गिरी हासत न चकोर के मन में और सहानुभूति जगा गई । चदा न ईऊ बता गई कँ थू जाति ते बाढ़ई बापन है । चकोर तो गुन की गाहक ही । बान प्रस्ताव स्वीकार कर लिया ।

चदा न अपनी बात चिठठी के माध्यम सौ पिताजी सौ कहनी चाही । पाती लिपिक दिनकी डायरी मे घर गई । रात कू पाती पढ़ी और राधा कू सुनाई । सवेरे राधा न सिंगरी बात पूछी तो चदा न मैया कू सतोस दिवा दिमी । इतक चकार चदा ते तो ही करगी पर गाम म पहुँचते ई नथिया ए अतरजातीय ब्याह की बात पमद नई आई । बान चकोर कू समझायी पर चकोर न तो कसमाई नई मरयो । बाके अच्छे अच्छे ढोक लगा रहे पर चकोर ता बात की धनी ही । चकोर के अतरजातीय ब्याह की बात गाम वारेन कू नागवार गुजरी । चकोर अपनी बात पँ जमी रह्यो । गाम नाराज ह्यो तो गयो । तबई एम ए की रिजल्ट आयी । चकोर न एम ए दोष क्रियो । बितकू चदा नीऊ बी ए पास कर लिया । चकोर अतर जातीय ब्याह कर रह्यो हे या बात कू लँक गाम मे पचायत भई । किसोर सरपच भूला पच परमाल लम्बरदार न नथिया ऊ समझाई पर बात बँड गई । नथिया की सग देवे वारी बाकी घरम मैया बहोरी ही । नथिया अरु बहोरी के घर छेक दिय । बात ह्यो तबई नाय रही । चकोर की मईया पँ पत्थर बरसवे लगे । एक रात तो छप्पर म आग लगा गई । मैया बेटा बच तो गए पर गाम वारे न हमदर्दी के बोलऊ नई बोले । जब वे अऊ छोटिक चलवे लगे तो चकोर की नैकचरारी की कागज भरतपुर त आयी । मैया बेटा दुखी-दुखी भरतपुर पाँचे । भरतपुर मे चकार के गार राजेन्द्र न बाकू बग़ायवे म पूरी मदद करी । भरतपुर पाँचते हो

चन्दा अरु चकोर को ब्याह आये समाज मंदिर म सादगी सी भयो । चोखे, राधा अरु अचो नै चन्दा के पोरे हाथ करवै चैन की सास लई ।

ब्याह पाछे, चकोर के भाग्य न जोर मारो । बू आर ए एस भयो अरु धी धी ओ है के डोग मे ई आयो । थोरे दिनान मई बू चारो ओर पुजगो । एक दिन अऊ गाम बारे मकाच के सग भाफी मागवे आए अरु बाए अपने गाम बुलावे को नीतो दै गए । चकार नै अपना पुरानो भाव उठायके ताक मे रख दिथो । सब गाम बारेन सौ बू प्यार स मिथ्यो अरु दूसरे दिन अऊ पाँच गयो । म्हा भूब जलसा भयो । जब बू डोग बू लौट रह्यो । तबई एकसीडेट है गयो अस्पताल म बाने दम दम तोर दियो । बाई सभे चन्दा के छोरा भयो । नथिया ने अपने बेटा के मरवे की सुनी सी बाकी हाट-फेल है गयो । धूऊ चल बसी । रह गई चन्दा अरु बाकी गोद म एक दिन की छोरा । राजेद्र, राधा अरु चोखे चन्दा पछाती देखे परे रहे । चन्दा कू सोसल एजुकेशन आफिसर की नीकरी दिबाय के राजेद्र नै दम लई । राधा चन्दा कू डोग मे सम्हारती रही । चोखे अपनी मैया कू भरतपुर म सम्हारतो रह्यो । चन्दा न अपने बेटा दिवाकर कू पढायो लिखायो । पिलानी मे भी ई करवायो । पिलानी मे दिवाकर चुनावन मे अध्यक्ष चुनी गयो । बापे कातिराना हमला भयो पर जान बच गई । चन्दा नै म्हा जाइके अपन ब्योहार सौ सबको मन जीत लियो । एक अच्छी मैया को उत्तम ब्योहार देखके सब चन्दा के भक्त है गए । सबकू प्रेम की पाठ पढायो ।

दिवाकर भरतपुर आयके फेक्ट्री म इंजीनियर बन गयो । बाकी ब्याह सादगी सौ रजनी के सग भयो । रजनी धार्मिक बिचारन की महिला ई । एक बरस पीछे रजनी के छोरा भयो । नाम रखी गयो प्रभात । घर मे खुसी छा गई । थोरे दिन पाछ जनम आठै आई । घर मे घत राखी । रात कू प्रसाद सब दिवाकर अरु रजनी मंदिर कू गए । अचानक रजनीत नगर के चौराहे पे एकसीडेट है गयो । दुरभाग्य सी दोनू मारे गए । चन्दा पे और ब्रजपात भयो । का करती सहनी परी । हाँ चन्दा ने हिम्मत नई हारी । प्रभात कू लेके अऊ गाम पीची । अपनी पेंशन थ्रिचुटी को धन एक फारम बना-यब म लगा दियो । एक खोली छोरीन की स्कूल । आवासीय स्कूल बाकी पढाई सेवा भाव दखिब सब दग रह गए । दूर दूर तक नाम है गयो । प्रभात हू होनहार निकस्यो । बाने स्कूल म प्रथम आयके भूब नाम कमायो । एक पोत बाने एक लुटेरेन के गिरोह कू पकडवायब म कमाल कर दिखायो । बाकू राष्ट्रपति पुरस्कार मिल्यो । चन्दा सतुष्ट है गई के प्रभात बचन है गयो है । या तरिया सबकी सेवा करती रही । चन्दा कू एक रात लकृआ की अटंक भयो । चन्दा नैऊ जान लियो पंछी उडनो चाहे । बाने सब इकटठे किए ट्रस्टीन कू प्रभात सौप के कही, 'बाकी सादगी सौ ब्याह कर दीजो प्रभात

ते कही जब तुम आए जगत मे जग हासी तुम रोइ । ऐसी करनी कर चलहु तुम हमी
जग रोइ । 'इतनी कहकं चंदा सदा कू मोन है गई ।

या कथानक म यों ती अनौखे किशोर, मूला, परमास, रंगी, बहोरी, राजेद्र, दिवाकर, बनूआ, प्रभात, भरत आदि पुरुष पात्र हैं, पर चकोरई प्रमुख है । चकार की भृत्य पाछे दिवाकर अरु प्रभात उभर के आए हैं । बीच बीच म, राजेद्र, बहोरी भरत जैसे पात्रन के माध्यम सों कथानक आगे बढ़ी है महिमा पात्रन मे खदाई प्रधान है, राधा, अची नयिया सहयोगी पात्र हैं । पात्र घरनी व अपने बीच व है । बिनके क्रिया कलाप अपने जैसेई क्रियाकलाप हैं । जैसे समाज मे देखी है वैसेई पात्रन के माध्यम सों ज्यो की ज्यो उगार दियो है ।

दूसरे की बहबूदी कू देखिक जरवे, अरु कुटब बारे रंगी जैसे पात्र हैं । वने ती भजनानदी है पर मुल म राम बगल म छुरी बिनकी घरम बग्ग है । खड़ी छान उतारवे मई बिन मजा आवे बिनते कोऊ छोरान के नाते गोत पूछव की सहयोग मागे तो सुधे न्हो बात नाय कर । सी सी एहसान दिवाव । अनौखे जैसे पात्र हू हैं जो यसेणा के मारे भए है । अपने मित्र बोखे की मदद ती कर पर यसेणा के भूखे हैं । कबऊ कबऊ छद्म के झूलान मेऊ झूल । बदनामी की सुनिक हिल जाए । छोरा छोरी की ब्याह अच्छी है जाय ती चेहरा पे चमक आ जाय । किशोर, मूला, परमास जैसे सरपच अरु पच है, जो लकीर के फकीर है कं नई वातन नै अपने गरी नाय उतारै । जब चकोर बी डी ओ है जाए ती भय कं मारे बिनकी आल खुल । राजेद्र जैसे पार आजऊ मौजूद है जो बाहर में नवपुदक मडल बनाय कं न्हेंज के विरोध में घुजा ऊँची करै । बदलाव के तई नई मा यतान कू स्वीकारै । अपनी कतब्य निभाइवे में जीवन की सार समझे । चकोर के मर जावे के पीछ अपनी भाभी चंदा कू नीकरी दिवाय कई दम लै ।

दिवाकर की चरित्र बड़ी सतुलित अरु आदसमय है । बू पिलानी में अपने भानवीय गुनन सों सबन की है जाए । सब वाके है जाय । अपने बुद्धि बीसल सों अपनी अरु अपने कालेज की नाम करै । माही सरिया प्रभात दिवाकर मों हू आगे निकल जाए । बू मेघावी, दयालु सेवाभावी निर्भीक वाचक है । अपनी जान जोखिम में डार कंऊ सवा कर अरु नाम कमाने माही सों राष्ट्रपति पुरस्कार पावै ।

बोखे या कथानक में प्रारम मों ई दिखाई परै । मतमानसहत बाकी रग रग में बसी है । तबई ती घर की घरूआ बग्ग किसान की मदद करै । दयिया बूच जाए पर बू काऊ प जोर न जनावै । काऊ के खिलाफ नासिल डिगरी नाय करावै । दुखन नै देखे अरु झेले । समाज म 'बिन पइसा सब मून जब देखे ती अक्स दुस्त है जाय । घर

मे दिन रात मैया अरू बहू के बुचरके सुने । सी सी ताने सुने । हिम्मत नाय हार । परिस्थितीन सौं जूसे । बू दकियानूसी नाएँ— नएपन ए स्वीकार । नई पीढी सौं मेल करके चलै । चकोर या उप-यास को प्रमुख पात्र है जो कम के पय पै सकटन कू खेति कँ आगे बढै । बू मुसाफ़ बुद्धि, ताक़िक, कुसल वक्ता, कमठ, सहनसील, समाज सेवी, उदार हृदय, मितभाषी, मधुरभासी हूँ तबई तो सबके हृम्य को हार बन जाए । गाम के धवेडेन कू सहती भयी अग्यात अघकार म निक्स परे अपने हाथ पामन के बल पै । एक् दिए अरू तूफान की सी कहानी दिखाई परे । बाने हिम्मत हारके बैठनी तो सीखी ई नाएँ । नए बिचारन को युवक अवस्मात चल बसे ई न जानै कौनसी विडम्बना है । ई समथ सौं परे है । जो सबके हित मे रस है बाकी जीवन यो ही चली जाई ई रहम्य बनी रह्यो है ।

नारी पात्रन मे चढ़ा प्रमुख है । उप-यास की नायिका बूई है । कथानक के सिंगरे तान बाने बाए के औरै डोरै बुने भए हैं । जेसी बहू बयार पीठ तब तैसी दीज के अनुसार ठाट बाट सी रहवे बारी चढ़ा ओखा आते ही सादगी सी रहै । सकट के ममै स्वयं हल निकासवे बारी सकट मे सीना तान कँ ठाढो हेवे बारी गुनन की खान है । सज्जा सौं बिभूषित, समाज सेविका सहयोगिनी कममील, सवेदनसील आदि स्त्रीयोचित गुनन सी रची पची है समाज मे महिलामंडल बनावक बाल विवाह मौसर दहेज, बहु विवाह आदि को विरोध करै समूह विवाह अरू सादगी सौं विवाह करायक आदश उपस्थित करै । युगानुरूप नए नए कामन मे रुचि ले । छोरीन कू आवासीय पाठसाला, फाम, घरेलू ग्रामीण उद्योग खोलिकँ मसीन के युग मे आत्मनिभता की पाठ पढ़ावै । जो कोऊ बाके सपक मे आवे बाइ कू कचन बनाय दे । सही मायने मे चन्दा पारस है । राधा अरू अची सामा य नारी है । बेसुल मे सुखी अरू दुख म दुखी दिखाइ परै । अची अपनी परम्परागत बिचारधारा सौं प्रसित है । कबळ कबळ धुरपट्टीन सुनायके बायबेलो खडो कर दे । राधा हू पीछे रहवे बारी नाए । बू बोखे की बोखी खबर ले । नधिया नारी पात्रन मे दया की पात्र है जो जीवन भर गरीबी म रही है । मेहनत मजूरी करक छोरा स्थायक बनायी है । गाम बारेन ने बू दुत्कारी तऊ गाम की मोह नाय छोडो । गाम बारे जिन्न घर पजारी जब बाक पास आए तो बू खिल उठी रोम रोम नाच उठो । बाम डेबी की सम्या द तो कीई अतिस्थाक्ति नाय । या तरिया सौं गितेकऊ पात्र है बे समाज के लोगन की प्रतिनिधित्व करवे बारे हैं । नई पीढी अपने आप सोचयी कँ किन पात्रन की अनुसरन कर । किनकू छोडै ।

कथानक कू आगे बढ़ावे बारे सवाद याकी जान हैं । लोकभाषा म कहें कँ इनकू लोक बोली मे कहें । जैसी पात्र बैसेई सवाद । थोरे मे घनी बात कहवै बारे । गागर मे सागर की नाई । कहावत मुहावरेन सौं भरे पूरो एक उदाहरन देखो बोखे न रगो ते पूछी —

‘अजी कोऊ ओर छोरा बनाओ’

‘चौ, नई जचौ ?’

अजी जचौ तो खूब पर तेते पाम पसारिये जेती लाबी सोर ।’

‘जरे लाला यो कह ज्यों ज्या गोह मोटी होय त्यो-रपो बिल सकरी होय ।’

ठेठ ब्रज भाषा के ठाठ सम्वादन में बिल्वरे परे हैं । चक्कोर जब अंतरजातीय व्याहृ के ताई नैक मोह खोल दे तो लोगन के तरिया-तरिया के कपन देखो—

‘हमारी बिरनी हमसों म्याऊ’ कर । कल परसों को छोरा हमारी सामनी करे ।’

‘अजी राठ को साढ हँ रह्यो हे ।’

‘लाला ऊपर कू मत धूक’ ।’

‘बेटा गाम में रहचौ भूल जाइगो ।

‘अगर हमे मादूम होंतो तो ऐसी कीछई नई हीन देते जावँ आज मक्खी भिनभिना रही है ।

‘बेटा ज्वानी ॥ अघों मत बने । ज्वानी हम पैऊ आई । आगो पीछी सीचली ।’

इन वध्वन में स्वाभावित रूपन आप आ गई है ।

देस काल अह बातावरन की परिधि में ई उपन्यास आजादी के पीछ घन्नाल कू समेटे भए है । ब्रज अखर माहि सन् 1948 के पाछे समाज में का परिवर्तन भायो है । गामन में पुरानी लकीर पीटवे में अबई तब लोग खून बाधक पीछे पर जाय । पचायत बैठे ओर कहर डहावे में अबऊ पीछे नाय रहै । नए युग की लहर से अबई दूर अने इन रुढ़िन में बधे भए हैं । खास तौर से दहेज क भूत से सबई सताए भए हैं । तोऊ आसा की बिरल नई पीढी की खुलव होसतो दिखायो है । आजादी के पाछे पचायत समिति, महिला मन्त्र नवयुवक मन्त्र नई रोपनी लाइव हूँ है ।

उपन्यास जैसी बातावरन बगी झाँकी अनेकन ठौरन पे बिलसरी है । अऊ गाम में पचायत की रूप देखी—

गाम के मन्दिर में पचायत जुबे लगी । गाम के लोग अपने अपने फँटान नै बाध के इवठोरे है गए । सब अपनी अपनी मौछन पे हाथ फेरिबे लगे । गाम की इज्जत के ताई प्यान म त निक्सवे लगे । या समै ऐसी लगी कँ राम के धनुस तोरवे पँ विरोधी राजा बोलना क कह उठे होय का धनुस टूटब तेई व्याह धोरई है जान दिगे ।'

याही तरिया होरी की त्योहार मनाते समै बी बाताबरन चित्रित कियो है, सवन नै मिलके पहलँ धुरँदी की उत्सव मनायो । धूल घक्कड़ सौं हठिक, रग गुलाल की खूब होरी खेली । ब्रज के खूब रसिया गए । डप, डोल चग लवँ नवयुवक मडल भरतपुर की गलीन म निकस परी । 'आज बिरज म होरी रे रसिया-होरी गामते गामते होरी के रस मे डब गए । सवन के चेहरा रग अरु गुलाल म ऐमे रग गए कँ पहचानवे मऊ नाय आय रहे । सब एक दूसरे कँ गरे लग रहे । होरी की मिलन सवन के मन के मेल कू दूर कर रह्यो । दुबैर तब यम कँ मन्न खूर-चूर है गए ।'

याही तरिया भाय समाज मे व्याह कँ समै की चित्रन देखी — 'पण्डित लक्खीराम नै सुन्दर बेदी की रचना करी । चारो ओर हरदी, गुलाल भूँदी आटी अरु कई रगन की अल्पना माढी गई । बेदी के चारों ओर मु दूर मडप बनायो । केरा के पात चारो कोनेन पे लहरा रहे । बेदी के चारो ओर पत्तरन पे सामग्री सजाई गई । एक ओर ध्यो की पात्र रखी गयी जामे खुवा परयो । व्याह के ताई सिंगरी तैयारी है गई ।'

बानगी के रूप मे तीनों बदरहन भुक्तेरे हैं ।

या उप-यास की भाषा ठेठ ब्रजभासा है । सरल अरु सरस । सैली अपनी अनूठी है गई है कहावत मुहावरेन के प्रयोग ते । कहावत मुहावरेन न याके मिठास म और रस धोर दियो है । कोई ऐसी पन्ना नई होयगी जाम कहावत मुहावरे नई आए हय । कह कह ब्रजभाषा के सम उठू के शब्द आ गए है । बिभि भाषा को माधुय बढ़ायो है घटायो नाय । देखी चार लाईन — चौखे नै जब चकोर की बड़ाई सुनी तो बाछ खिन गई । सोचिबे लगी-अधे के हाथ बटार लग रही है । बाए ईऊ परसोकला याद आयो, मेव मरौ तब जाणिए जब चालीसा होय । बडे बूढ़े बह गए हैं, हरी सेतो ग्यावन गाय जब जानी जब भूहीतर आय । काऊ नै आधरी ते कही, तेरी भया आयो है । बाने कही भैना कह तो भीत रही हैं पर जब भुजा भरके भेट लुउ गी तब गानुगी । सोई चौखे नै कही, माटी मेड लग जाए तब है । मसखरान पे त भैस चोँल लई जाय तब है ।' और देखो दो साइन मुहावरेन भरी—'अपनी करनी पे बे अपने आप गडे जा रहे । पर अब पछताए होत का जब चिडिया चुग गई खेत । सब जानाफूसी करते याद

हमने अपने पामन आप कुल्हाड़ी मारी है । अब तो जैसी करनी वैसी भरनी है ।' याही तरिया धियावन उपयास म ठोर-ठोर पे दिसाई परे । रेखाचित्र की झलक देखो-चढ़ा के रूप बरनन म — 'बाकी आँखिन मे डल झील की गहराई, गालन पे सेवन की सत्ताई मासन म सासीमर, अरु निहात बाग की गद्य बरु बाकी देह माहि बेसर की झलक बाए कस्मीरन समझिये बू भीतई ।'

या उपयास की उद्देश्य कम अब भाग म कम प्रधान है यही गिड बरक दिगायी है । हम माने ग्यान सर्वोत्तम है पर ग्यान की चरम सीमा कम सचास है जो गीता की मंत्र है । कमयोगी की ली हर कम सोच कल्याण के ताई होय । चकोर अब चढ़ा के माध्यम मी तथ्य बू उजागर कियौ है ।

काव्य सौरभ

अज्ञानो

गुहरी

मममन चली अज्ञानविन मी मधुमाग मनी मधुरी मुगकारी ।
मधुम माँच की छवि मी कलजमन बाहर मी बरगमी ।
मममन वस वस मधु मधु मी मुरि म मुरि मी रिलरी रगगमी ।
कलम किंदन मधुमनी मी ममनी ममनी मम मम मधुमनी ।

मधुम मममन मी उमरी मममन मी मममन मी मममनी ।
मममन मममन मममन मी मममन मममनी मममनी ।
मममन मममन मममन मी मममन मममनी मममनी ।
मममन मममन मममन मी मममन मममनी मममनी ।

रत्नना माधुरी



1	आहे की बुलार (बहानी)	265
2	हड़ताल (एकाकी)	271
3	रोलत फाग कु वर गिरधारी (रत्नाचित्र)	281
4	भाव्य सौरभ	288

जाड़े को बुखार

चिरज की ठेठ गाम अघापुर। सवेरे को टम। गैय्या भैस चरवे कू जगल की आर जा रही ही ग्वारिया कधा पै लठिया घरे भग भग कँ एक् जगँ ते दूसरी आर भग रह ह। हिय हिय अढरई के सव्दन ते आकाश गूज रह्यो हो। बिन ग्वारियान म त एक् उी नाम हुतो सरमन। पागन की महीना। दोनो तरफ खेत हवँ। बीच म ते रस्ता जातो जाप गाडे की सीम बन रही ही। खेत मे जी चना पक् से गये। पवे खेतन क बीच म हरी हरी घास दूर ते देखवे त ऐसी लगती जैसे काऊ बिश्रकार में भूरे कागद के बीच बीच म हरे हरे-धब्बा लगा दीने होय। जिन डारन कू सरमन चराई कू लैजा रह्यो बिन मे तीस गैययान के सग चार पाव भैस अरु पद्मह सबारे हुते। सरमन कू आज चराई कू गैययान के सग भैस अरु लबार ऊ लैन पर गये। सग मे इतेक—पसु हुत अरु बिनकी लेजावे बारी ग्वारिया एक हो। का मजाल कि कोऊ गैय्या भैस खेतन की तरफ मोहड़ी ती करले। पर आज सरमन कू भैसन के सग लबारेऊ चरावे कू सग लेवे पर। भैस अरु लबारे को काम बाके बडे भइया चिरजी की हुतो। चिरजी भैसन कू रात कू पसर प ले जातो अरु लबारेन कू चरावे कू दिन म पोखर की तरफ ल जातो घू। म्हाई लबारे पानी पत्ता पी लेत अरु पोखर की घास ते व मोहडे को स्वादज बदल लेते। लवारे चरवे क बानून कू नाम जानते। गैय्या-भैस को तो लठिया छाया-छायन सील गई बँ छेत चरिवे के नाय होय। पर लवारे जो सग हुते। वे नैक-नैक वेर मे खेतन की तरफ चरवे कू घुस जाते। या बजै ते सरमन कू बड़ी भाग दोर करनी पर रही ही। वूरी अच्छी भरी के बाकी भाभी चाम्पी ने बेलन कू ले जाव की मना कर दई।

जब दू बलन कू बी सग ले जावे लगी ता बाकी भाभी ने बही—‘लाला जी बेलन कू मति ले जाओ। तुम्हारे भैय्या बीमार हैं तो का भयी मैं सी हूँ। बेलन की सेवा चाकरी बरि देऊगी, अरु लाला जी सों का छिपी है, रोजकू वे बीनसो चाकरी करे। सब मैं ई तो कर हू।

मुसकराय के सरमन ने कही—‘भाभी भोय पती है भँय्या कू बुम्बार तेनेई बुलायो है । तू रोज कहो करैई कि भँय्या दिनभर घर ते बाहर रहमे । मेरे पास एक मिनट नाय बैठे । अब तू आराम ते बाके पास बैठे भँया के माथे कू दाबती रहियो । बलन की झझट काय कू राखे ।’

आखन ने मटकाय कँ भाभी ने कही—‘लाला जी दोरानी कू आमन दया तुमारी जातऊ दोख जावेगी । चौबीस घण्टा बाते चिपक क रहोगे । तब देखिम तुम्हारी मर्दानगी ।’

सरमन ने कही—‘भाभी तौरस की होरी की भूल गई का । पदरै दिना की बात और हूँ जब दिखाऊंगी मर्दानगी तोऊ’ ।

भाभी ने मुसकराय के बायों हाथ हवा म नचाय के कहा—‘लालाजी देख लई तुमारी मर्दानगी । बू तो भरोसी की भोटिया बीच म आय गई नई तो तुम्हारी रगत औरऊ गोली है जाती ।’

‘अबकँ सखती कसर निकारनी है भोय । सरमन की इन बातन कू मुनिकँ लाट पे परे भँय्या चिर जी बड़ी रस ले रह्यो । परे परे बिन ने कही—‘तू सरमन कू कमजोर समझ रही है का ? तौरस पे धोखे ते तुमन नें पकर क या की गति बना दई ।’ इतेक कहकँ चिर जी ने सरमन ते कही—‘सरमन अबकँ होरी पे जाकी गोली दुरगति करकँ घर दीजो जाते ई दो चार बरस तो याय भ्यान रहवैयो ।’

भाभी ने हाथ मटकाय कँ कही—‘अजी तुमऊ जोर लग लीजो, दोनोन की मसीदा नई बनाय दऊँ तो मेरो नाम नई ।’

इतेक म चिर जी के दाजी पीरी म आय गये । वे हमेसा पीरी म घुसब त पहले खासो करे ह । पर आज बिनके दिमाक मे कछु चिन्ता ज्यादाई हती । या कारण वे खासबी भुल गये । सामई ते दाजी कू देखतेई चम्पी बहराय के कोठे म चली गयी ।

सरमन ते रह्यो भाय गयी । आखिरी वान पूछई नियो—‘दादाजी का बात हत ? तुम पबराय काय कू रहे हो ।’

दाजी की एब दम धियान भ ग भयो व बोले—‘बेटा बंद के पास गयो हो ।’ सरमन ने पूछी—‘बा बंद भाय मित्थी ?’

'बंद तो मिल गयी बू बहे रहो जारे की खुलार सुई तेई उतरेगी।' जाम कौनसी खास बात हूँ, जाय के सुई लगवाय सो । दो रूपया बाके हाथ मे धरियो घर बैठेई सुई लगा देगी ।'

दाजी ने सास खीच कै कही—'नाय बेटा मोय तो सुई ते डर लगे । तोरस भरोसी की छोरा मरती मरती बच्चों । सुई लगतेई बाने आख नटेर दई' । दाती भिचगई । बू तो भगवान की दसा कलू सुदी हूँ जाते बाकी सास बापिस आ गई । वैसे मरवे मे कलू कसर नाई ।'

बिरज मे जाहे के खुलार ते न जाने कितेक बच्चा, कितेक जवान अरु जाने कितेक लोग मौत के म्हीं मे समा जामे । बिरज के तीनई तो सबसेँ मयानक रोग है । जार की खुलार, मोतीखरा अरु माता । जारे के खुलार अरु माता ने हजारन बच्चान कू मौत की गोद मे भेजो है । छोटे छोटे दूध पीते अबोध बच्चा म्हींते कहूँ तो नाय सकै कि बिनकू जारी लग रही है । मौत से गामन मे बिछारे गरीब लोग ई ऊ नाय समझै कि ई खुलार बीमारी है । कई दफे व समझे कि बोई भूत प्रेत डेवी देवता को प्रकोप है गयी है । आजादी ते पहले तो गाम गाम मे बैरागी बने भोपार्न देवी प्रकोप के नाम पे न जाने कितेकन के प्राण हर लिए ।

बिरज के गामगाम मे जेठ ते लैकै चैत तक साइकिल पे बंद डाकदर बनेलोग पुई लगावे के नाम पे लोगन को ईलाज करवे धूमते फिरें । बिरज भूमि थोरी नीची हैवे ते चौमास की सबरी पानी इलटठा है जाय म्हीं । कई गाम तो छाती छाती पानी मे डूब जाय । ई पानी चैत तलक भरौ रहे । वामे मच्छर पैदा होय । जे मच्छर चार पाच महोना तलक बंद डाकदर बने फिरे लोगन की जेबन कू पइसान ते ऊपर तक सर देम । जे बंद डाकदर बस दो चार अंगरेजी दवाई अरु इन्जेक्शन को उपयोग करें बीमारन कू ठीक करवे कू । पाच पइसा की अंगरेजी गोली कू पीस के पुरिया बनाय लें । सब जाने एस-ग्रीन खुलार उत्तार । बाकी पुरिया द देम । बाते खुलार तो उतरेगीई । गाम वारेन कू इनकी दबाइन पे विस्वास है जाये । जा तरह पाच पइसा की गोली के जे लोग पाच-पाच रूपया एठ लेमे । पिछले दस बरस ते जारे की खुलार कू यानि मलेरिया खुलार हो डी टी पीअर के छिड़कावते खतम हो गई । पर अब तीन चार बरस ते मलेरिया बुयार फिर धीरे धीरे फलवे लगो है । अब जाके मच्छर हो डी टी ते ऊ नाय मरे । माता जरूर कम है गई हूँ । सरमन ने दाजी ते कही 'सुई तुम लगवाओ नाय फिर कलू दवाई-बवाई लाये कै नाय ।

दाजी बोले— “जी तीन पुरिया दीनी हतें बान। सवेर, दुपर अरु सजा कूँ संत से चाटवे की है। अरु बंद न कही कि जाते बुखार नई उनरें तो मूर्ई लगवानी परगी।”

सरमन बोली— ‘दाजी तुम तो चक्की है गए ही। मेरी कही मानो तो भैया कूँ मूर्ई ठुक्का देओ सुमरी बुखार-फुकार सब भाग जायगी। खोज कँ दाजी न कही— भनै कहदीनी नाय लगवाऊँ मूर्ई। भीत होवेगी तो बन चार बाग ले जाऊँगी छारा कूँ। दो चार मो रूपया खरब है जामिगे। छारा क प्राण तो बच जामिगे। बटा तू का ममज्ञगी। दाजी ने हाथ पसार कँ कही— बेटा इन हातन ते दस दस गन्डा खोद कँ तेरे भैया गाढे हते मरेठान म। तोय का याद होयगी। चार बरस की हो तू। तेरी भैया इन बदन नई भार डारो। आपदर न बुखार म बाक पट म सावन की पानी चढाय दीनी। घू पट के दरद ते डकराय डकराय कँ मरी हो।’

बजर आय गयी। बिरज के गामन म पसून कूँ चरवे कूँ बजर के नाम पँ घारी भीत जमीन छोर रई जाय। अब सरमन कूँ चिता नाय रही। आस पास खेत हते नाय। घू बजूर क पेड के नीचे मुस्ताब कूँ बैठ गयी। अकेले म बठतेई बाय धियान आयी कि आज कनेऊ नाय क्यो। एक बेर तो बाय भाभी प गुस्सा आयी। बूई तो रोज कलेऊ दैमती। भैया तो बरसन पहलई मर गई। कंधा पँ छरी स्वापी उतारी। कोन मे पोठरी मे रोटी बधी देखी। स्वापी की पाटरी खोल कँ देखी कि भाभी ने रोटी खाटी दई है कि नाय। गठ खोल कँ देखी। देखतेई बाल उठयो— अरे भाभी नैं तो आज पूआऊ घर दीने हतें।’

दो पूआ है। पूआ को छोटी सी दूक म्हाँ म धरतेई बाय अपन भैया की बीमारी की धियान है आयी। म्होड़े की पूआ म्होड़े म ई रह गयी। पूआ खावे की याकी खुसी रफूचकर है गई पूआ की गस्सा घूब दीनी। दूसरी पूआ लुटक के गिर गयी।

वेर वेर एवई बात बाके दिमाग म आ रही। बाने दाजी त मूर्ई लगवावे की चँ यह दई ? तोरस की घटना बा के दिमाग म घूमवे लग गई। भरोसी का छारा रोमन कूँ मूर्ई लगतई घर म रोआ-पीटी हवे लग गई। सकारे की बान हतो। चंत काई महीना हतो। घू निमट के आ रही। गाम वारे भरोसी के घर की तरफ भग रह्ये। पूछो कि का भयो है। ? सरमनऊ भैया कँ भरोसी क घर म घुस गयो।

माये ते सिमवत्ती सिमवत्ती भरोसी पोरीते ते निकर रह्यो । सरमन नें बिन ते पूछी-भरोसी भेइया का बात है ।

भरोसी कहू नाय बाल्यो-बस ऊपर बूँ दानो हाथ उठाय दीन । सरमन सीदी बोठे म पोहँचो । सात आठ बरस की छोरा बकराय रह्यो-कबकू मास नाय आय रई कबकू गरौ भीच नीचो कबकू सास नाय आय रई ।

भेइया रो रही । बू बह रही-गिराज बाबा मेरो छोग बल्यो । तुम आय कै बचाल्यो । ठण्डोती दब आमुगी ।

सरमन ने पूछी-‘का है गयी जाय भाभी ? रामने रामते धान कही-पाला जी बछामशी को बैर खुसार उतारवे कू सुई लगाय के गयी है । बस बू ता घर ते निररी अरु छोरा की ई दमा है गई । लाला जी मैने तुम्हारे भईयान ते भीत मना करी सुई मत लगायी । पर तुम्हारे भेइया माने ई नाय निपूते बंद नै ऐसी सुई लगाई हती जात छोरा की जि दसा है गई है ?

तोरस की जा घटना की याद बर कर सरमन की आवन ते नीर की क्षरी लग गई । राटी की पोटरौ हाथ ते खिसक गई । गइया न रोटी पै म्हीडो दै दीनी बाने गइया नाय हटाई ।

सरमन उठयो अरु सीधी गाम की तरफ भाग्यी । आज बाके पामन म बीजरी की सी बाल है गई । लठियाऊ नाय लीनी । रस्ता म ई साईबिल ते बंद जातो दीख्यो । बू जोर ते पुनारवे लग्यो ओ बंद जी ओ बंद जी ।’ बंद साईबिल मै उतरी । बाते पहलें तो सरमन भग के बाके पास पहुँच गयी । भगबेते बाकी सास धोक्नी तेऊ तेज चल रही बान बंद ते पूछी-‘बंद जी भइया कूँ सुई लगाई का तुमने ।’

बंद बाल्यो-तेरो डाकरा नाय लगबावे । लगबावे बिना खुसार तो उतरे नाय । बंद के म्हीं ते ई बात सुनक कि सुई नाय लयी सरमन को म्हीडो खुशी ते खित उठयो । चू एन छनऊ म्हा नाय बल्यो । मूनी भग दीनी घर कूँ । बंदऊ ठाडो कहू समझ नाय सक्यो कि का बात हती ?

भागतो भागतो मूछी घर पहुँची । घूरे के पास भाभी ऊपरा घाप रही । दूरते जोरते बोली 'भाभी आ भाभी भईया कैसे हते ?' भाभी ने बही—'माला जी अबई तम दोरन कू लेय नाय गय ।'

सरमन ने बही—'भाभी भईया कैसे हते ?'

भाभी बोली—ठीक हते । पुराने बास न सरकारी डाँकदर दवा दे गये हैं ।'

बस इतक सुनिके सरमन ने ठड़ी सास लई अरु दोरन के पाम चल दीनों ।

काव्य सौरभ

ब्रजबानी

सु बरी

हीरक सी कहना लिपटी प्रिय मोहक मोहन की मतबारी ।
गोपिन स भ उमगन सी ब्रज कु जन गस सुधारस बारी ।
पावन आखर म घुरके प्रिय कोमल भावन की उजियारी ।
फूलन न रम सी बिसरी प्रिय भगल जीवन म सुख कारी ।

प्रिय गोपिन के असुआन घुरी ब्रज वासिन क मन की पटरानी ।
नद नदन सी बिछरी जग रोवत ज्यों कुररी समि देख ज्ञानी ।
गिरिराज गिरी हिय म डरपो नत गोप लिये कपतो दु ख चानी ।
मुरली धर रे वनगम लिये ब्रज की सुधि ले सब रोवत प्रानी ।

मधु की महिमा सरिता रम की छवि मजु लिए उमगी चहकानी ।
अभिया रस मोहन के हिय की ब्रज मे घुर के बिसरी जगजानी ।
सदभाव सनह सुआरा म सरसी बरसी जग भगल छानी ।
सत चदन सतन न मन की जग चदन जाय कियो ब्रजबानी ।

एकाकी—

हडताल

पात्र—परिचं

रामजीलाल— कालिज मे हिन्दी अध्यापक

नेतराम पासोवाल—राजनीति शास्त्र के अध्यापक

मुरली मनोहर—दशन शास्त्र अध्यापक

छात्र—भूपेन्द्र कालिका प्रसाद (छात्रा चमेली) वं छात्र वं
अध्यापक

(निकट एकात कालेज की दिग जयल की सौ दृश्य हिन्दी के अध्यापक
श्री रामजीलाल अपने शिष्य भूपेन्द्र कू समझाते भये । दोनू ठाडे हैं)

रामजीलाल—बेटा ! भूपेन्द्र आज जब तुम वक्षा मे जाओ तब एक नयी कुछ
सबो करनी है ।

भूपेन्द्र—गुरुजी आप आग्या देओ बेसीई करयी जायगी ।

रामजीलाल—सबेरे 10 बजे पले तुम अकेले खुपचाप जायके 10 नम्बर के कमरा
मे आगे कि छोरिन की सीट पे चीक ते बडे बडे आखरन मे लिखोगे अरी मिया मर
गयी री ।'

भूपेन्द्र - गुरुजी काम है तो जायगी पर याते होयगी का ?

रामजीलाल — बेटा तुम अबई भीत बच्चा हो । तेरी समझ मे कछु नाय आवे ?

भूपेन्द्र—अब गुरुजी अपनी तो अकल थोडी भीटी है । समझ मे आज तो हुने पर
देर से आवे ।

रामजीलाल—वेदा जब तू याया लिख चुके तो बाहर आ जाइयो । पैलो पीरियड पोलिटिकल साइंस के प्रोफेसर नेतराम पालीवाल की होयगी । बाय की तो नाक काटनी है । कल ये मतलब उरझ गयो मोते । आज मासूम परेगी कि उरझवे को का मतलब होय ?

भूपेन्द्र—आपकी बात तो सही ह पर छोरी की टेबल पे लिखवे सी का होयगी ?

रामजीलाल—अरे ! लाला तू तो निपट मूरख है । जस ई छोरी आबेगी वू हाजिरी लेगी । व भडक जायगी । वा समै तुमे जमके छोरिन की पक्ष लेनी है अरु हडताल करनी है ।

भूपेन्द्र—हडताल कैसे होयगी या बात त ?

रामजीलाल—तू याकू छोटी सी बात समझ रह्यो है । अरे ! याके पीछे तो या पूरे कालेज की हडताल करवायी जा सके । तुमकूँ हडताल करवानी है या बात कू सके के हमारी बहनन की बइजजती भई । जब तानू दोपी कू पकरी नहीं जायगी हम बलास म नहीं जायेग ।

भूपेन्द्र—बाह ! गुरुजी का दिमाग पायी है आपनै ?

(भूपेन्द्र अरु रामजीलालजी जाये है)

दूसरी दृश्य

(कक्षा म अध्यापक जोर जोर से हाजिरी ले रह है । अध्यापक की नाम नेतराम पालीवाल है । साथ तीन टेबल पे छात्रा अरु पीछे चार प छात्र बैठे भय है)

अध्यापक—प्रमोद बिहारी !

एक छात्र—(ठंडो हैक म्हा पिचकाय के) यस सर !

अध्यापक—रामप्रसाद !

रामप्रसाद—(छात्रान की आवाज बालतो भया) हाजिर साब !

(पूरी बन्नास म हसी की आवाज)

(अध्यापक घबरायी सी । छोरा छोरिन की माऊ देये है । छोरा छोरी वा अध्यापक के देखते ई चुप है जाय । फिर हाजिरी लबो सुन्)

अध्यापक—महेन्द्र गुप्ता ।

महेन्द्र गुप्ता—(अचानक खांसते भये बैठे भय गरे की नकली आवाज बोलतीं भयं यस मैडम ।

(फिर बलास म एकदम हसी, अध्यापक फिर सामई देखै अरु बिनक देखतेई हु ऊ बढ है जाय । जैस बिरेक सगा दिये होय)

अध्यापक—कालिका प्रसाद ।

कालिका प्रसाद—(जोर से घुसते भये) जै गिराँज महाराज की । (पुन जोर हसी)

(अध्यापक क्रोध सी कालिकाप्रसाद की माऊ देखे है, बोळ अध्यापक ए देखत टेकी गरदन करके छोरिन की टेबिल माऊ देखके मुसकाव है । याय देखिक अध्यापक की क्रोध हुनो बढ जाय) अध्यापक ब्हाई आर यू टनिग योअर गरदन ।

कालिका प्रसाद—गुरुजी में का बरूँ कल सबेरे से मेरी निपूती जी गरदन बेर टेकी है रहो है ।

(दोऊ हाथन से लकटिया की लरिया गरदन छी सौधी करे है बलास मे दि हसी याते गुरुजी की क्रोध भीरऊ बढ जाय)

अध्यापक—(क्रोध म) कालिका प्रसाद ज गिराँज जी कहके तुम हाजिरी बोलो ह ई हाजिरी बोलवे को तुमारो अविष्ट व्योहार मोय नैकऊ पसद नांय । अपनी का किताब उठाओ अरु कसा ते बाहर चले जाओ ।

कालिका प्रसाद—(खांसते भये, पुन छोरिन की टेबिल माऊ नार करते भये । ब विमल भाव से) गुरुजी हम तो धनबासी ह । हम पैदा ते सँके मरये तानू गोबधन भक्ति करे ह । गिराँज जी अरु कृष्ण बस्देव हमारे देवता ह । बाकी सब झूठा ह । मैं तो गिराँज जी कीई सो नाम सियो है । गिराँज जी की नाम सये से बताओ आपनी अपमान है गयो ।

अध्यापक—बुप रह ! डोंट स्पीक !

कालिका प्रसाद—गुरुजी अबतो फँसतो होयगी के गिराज जी बहवा अशिष्टता हे के भक्ति है ।

(इतेक मेई अपने थला म ते एक चीज निकाय लँय है । बाय बहे प्रेम ते सू धे है । कला मे सब विद्यार्थी बाय देखक हसवे लगे हैं)

अध्यापक—ई बा है तुमारे हाथ मे । ई बलास है के सच्ची की दुफान है ।

कालिका प्रसाद—गुरुजी । ई तो अपनी अपनी पसद है । कोई बू गुलाब की फूल पसद है कोई बू कमल की फूल पसद है । (छात्रान की माऊ देखते भये) कोई कू चमेली की फूल पसद है ।

(चमेली नाम की एक छोरी कू दूसरी कू नोचती भई अपन कू तो गोभी कोई फूल पसद है ।)

कालिका प्रसाद—गुरुजी हमारे घर मे तो सात पीढ़ीन ते गोभी के फूल की चसन है ।

चमेली—(इतेक म चमेली नाम की छात्रा ठाढ़ी है क जोर ते कहे) सर हम लोगन कीऊ कछु इज्जत होय । हम या अपमान कू सहन नाय करिगी ।-

अध्यापक—का बा का बात है ।

चमेली—बात बा है टेबिल ए देखो अपनी आसन ते ।

(इतेक मेई भूपेद्र छात्र भयके आवे है । अरू टबिल प झुक के पढती भयी जोर जोर ते बोले है ।)

भूपेद्र—गुरुजी अब सहन नाय कियो जायगी । हमारी भवन की इज्जत है । काऊ दूसरी बलास के गुण्डा चटपटांग या टबिल पे निश मयी है । अरू हम बुप रहै ?

अध्यापक—(टेबिल के ढिग जाते भये) ठहर !

भूपेद्र—बा ठहर गुरुजी ? हमारी भवन की बेइज्जती है जाय अरू आप हमकू

ठहरवे कू कह रहे हो । जाकी । जाच होनी चइये । हमकू सम ते डूब भरवे की बात है ।
चलो सब ठाडे है जाओ ।

कानिका प्रसाद—छात्र एकता ।

भूपेन्द्र—जि दावाद ॥

कानिका प्रसाद छात्र एकता ।

समवेत सुर—जि दावाद ॥

(बक्षा खतम है जाय है अध्यापक चल दे है)

(कक्षा में त निकर के छोरा छोरी सग-सग जाय रहे है । आगे की बैंच पे
तीन लडकी बैठी है । पीछे 5-7 लडका है । भूपेन्द्र आगे जा रह्यो है अरु उत्तेजित छात्र
छात्रा नारे लगाते भये)

भूपेन्द्र—छात्र एकता ।

समवेत सुर—जि दावाद ॥

भूपेन्द्र—प्रोफेसर पालीवाल ।

छात्र—मुर्दावाद । मुर्दावाद ॥

(इतेक मेंई अध्यापक रामजीलाल बगल में हाजरी को रजिस्टर लये भये
म्हाते निकरे हैं)

रामजीलाल—भूपेन्द्र ची हत्ता कर रये हो ? अनुशासन क तो कोई चीज है ?

भूपेन्द्र—गुरुजी अनुशासन कू ना पुडिया में धरकें चाटें ? आप अनुशासन ।
अनुशासन ॥ कर रहे हो ह्यो हमारी भैनन की वेदज्जती है रही है ।

रामजीलाल—वा भयी ?

एक छात्र—गुरुजी हमारी क्लास की छात्रान की टबिलन पे जाने का डल जलूस
लिय दिया दूसरी क्लास के छोराम्हे ।

रामजीलाल—ये तो बुरी बात है ।

भूपेन्द्र—जाई कारन हमने हड़ताल कर दीनी है ।

छात्र—प्रोफेसर पानीवाल

समवेत गुरु—मुर्दाबाद ।

रामजीलाल—(दोनों हाथन से चुप रहवे की इमारी करते भय) आप लोग जो कुछ कह रयें हो वू सहो है । जो बल्ल भयी है बाकी में बडे त बडे सम्मन मे भत्स ना करे हूँ ।

एक विद्यार्थी—हाँ गुरुजी भीत मुन लीनी भत्सना ।

आपस म फिर बात चीत मुरु है जाये है । छात्र भूपेन्द्र सबन कू चुप करवे को इसारी करतो भयी)

भूपेन्द्र—चुप है जाओ लाला । हाँ तो गुरुजी का कहै रहयें हो आप ?

रामजीलाल—मेरे पास कहवे वू का है हम तो तुम्हारे गुरु है । हमारे पास कोई सकती नाय साक्त नाय । अब एक नैतिकता की साक्त हमारे दिग है । आप लोग छात्र हो । छात्रन कू अपनी नतव्य ध्यान रखनी चइये ।

छात्र—आप कस व्य की बात कर रयें है । पर बलास म जायकें तो देखो । हमारी बचन पें देखी है आपने ?

रामजीलाल—ओह ! तुम लोग बात समझ चीना रहे । तुम्हारी बात कोई तो मैं समझन कर रयी हूँ । आप लोगन क संग जो कुछ भयी है बातें बुरी बात इसरी कोई नाय है सके । कोई बात त असतोप हाय तो अपने अध्यापक ते कहनी चइये । अगर अध्यापक तुम्हारी बाजिब माँग पूरी नई कर सके तो तुम्हे सीधे प्रिंसिपल के पास जानो चइये । अगर प्रिंसिपल तुम्हारी माँग पूरी नई करे तो फिर हड़ताल करनी चइये । पर वलई हड़ताल को निनय करनी ठीक नाय ।

भूपेन्द्र—गुरुजी हमारी मुनवाई कोई नाय करै । अब तुमई बताओ पिछले सप्ताह हमने प्रिंसिपल साहब ते बहो हो क बालिब म एक वेण्टीन हानी चाइये । का हमारी माँग पूरी भई ?

रामजीलाल—कैण्टीन खुलेगी ! जरूर खुलेगी ! पर जी नो सोचो । अगर आप लोग हडताल करोगे तो जाते पढाई को कितने नुकसान होयगो ।

एक छात्र—(क्रोध में) गुस्जी आपकू पढाई की लग रयी है । ह्या तो हमारी इज्जत पेई हाथ साफ करयी जाय रह्यो है ।

भूपद्र चलो रे ! प्रिंसीपल के पास चलो ।

तीजी दृश्य

(मंच पे स्टाफ कम की दृश्य । एक कोने में पानी की घड़ा धरो है । पांच छे कुर्सी बिछी भई है । दीवार पे नेहरूजी अरु महात्मा गांधी के चित्र लगे भये हैं । कुर्सीन प दशन शास्त्र के अध्यापक श्री मुरली मनोहर, हिंदी के प्रोफेसर श्री रामजीलाल, राजनीति शास्त्र के श्री पालीवाल अरु ई अध्यापक और बैठे हैं)

रामजीलाल—(पालीवाल की तरफ देखते भये) पालीवाल जी जबई मैं क्लास ल के आय रह्यो हा । कल छई छापरे आपकू मुर्दाबाद कहते जाय रये है ।

पालीवाल—(कधा उचकाते भये) बूई गुण्डा है भूपद्र ।

रामजीलाल—मिने कई दफे प्रिंसीपल ते वही । पर बा बुढऊ न मेरी एक बात नाय सुनी । एक बन्मास गुण्डा सिगरे कालिज के बातावरन कू गदराय दे है । बाको एडमोशन ई नई होनी चइये ओ । प्रिंसीपल ने बाइस प्रिंसीपल पे डार दीनी । बाइस प्रिंसीपल ने कमेटी पे डार दीनी । एडमोशन कमेटी ने झट एडमोशन कर दीनी । या कालिज को बा बनगो ? ह्या तो जाकी पूछ उठाय के देखा सुसरी मादाई दीले है । माय तो पूरे कालेज में एकऊ तो मद की बच्चा नाय दीख्यो । जित देखो बितकू बघियाई बघिया भरी परी है या शिक्षा जगत में । बघिया बनाय के नाक में नकेल डार दीनी है । अरु सरनार ने नकेल को छोर प्रिंसीपल के हाथ में थमाय दीनी है । कह दीनी है बेटा बेटो बेटो खीचे जा बघियान कू । प्रिंसीपलऊ का करे बिचारी ? बाकी नकेल डाईरेक्टर के हाथ में है । डाईरेक्टर की नकल मिनीस्टर के हाथ में है ।

पालीवाल—(समति भये) का करयो जाय रामजीलाल जी । जित देखो बितकू नागनायई नागनाय घूमते फिरे हैं । जमानो भीतई खराब आय गयो है प्रोफेसर साहब । हमारे आपने जमाने में काक छात्र की हिम्मत ही वोऊ अध्यापक ते एक सद तो कह

जाय । और अब अनुशासन कालज्जन में कुतिया की तरियाँ फिफयातो फिरे है । जाको मन पर है बूई लतिया देय है याकू ।

रामजीलाल—जेई बात तो मैं प्रिंसीपल ते कट्ठो चाहू हू । आज जो कछु आपके सग है रह्यो है वत्त हमारे सग होयगो । आपकी इज्जत पूरे स्टाफ की इज्जत है । मेरी राय में तो तत्काल स्टाफ कॉसिल की मीटिंग होनी चाहिये । बड़ी गम्भीर मसला है ।

मुरली मनाहर—(घोती कुर्ता परिधान आबाज भौत पतरी । घोर कलियुग । ऊपर ते नीचे तानूँ सिगरो देश रसासल हू जाय रह्यो है । अब तो हाहात इतक खराब है गय है के स्वयं लीलाधर अवतार लेके धरती पे आ जाये तो बेऊ घबराय के हूा ते घोर परिणं स्वर्गलोक कू । खुल परंगी सबत्ती बिनकी बिरेस ।

रामजीलाल—आपकी बात सोलह आना सही है ।

मुरलीमनोहर—(भाषो खुजारते भये) चारो तरफ गुण्डान की राज है । अब तो जाक घर में दा चार गुण्डा है समाज कटक है बस म्हाई सुल चैन की बरखा है ।

रामजीलाल—प्रोफेसर साहब आप तो कछु ज्यादाई निरास है गये । ऐसी बात नाँय जि धरती अच्छे लोगन के कारनई टिकी भई है ।

मुरलीमनोहर—आप अच्छाई की बात करे हैं ।

रामजीलाल—अब हमारी कालिजई देखो । यामे कितेक प्रोफेसर आपकू गुण्डा लगे हैं ।

मुरलीमनोहर—भैया मेरे मोह कायकू खुलबाओ हो । तुम्हारो बातई त्यो । सब जग जानै है क भूपेन्द्र तुम्हारो चेला है ।

रामजीलाल—देपो प्रोफेसर साहब आप व्यक्तिगत आक्षेप कर रये हो ।

मुरलीमनोहर—साच बडो कटवी होय है । घुसकू पेट कू छील दे है ।

रामजीलाल—प्रोफेसर साहब एहमीगन बमेटी की मैं अनेतो सदस्य हो जान भूपेन्द्र के प्रयोग को विरोध कीनी हू ।

मुरलीमनोहर—हाँ हम सब जान है तुम्हार बिराघ के दस्तूर हू ।

रामजीलाल—जा जाना हा ?

पालीवाल—(रामजीलाल गू सम्बोधित करते भये) वधु छोड़ो।

राजीलाल—वा छोड़ो। बदतमीजी कीऊ हृद हीय है।

पालीवाल—अरे ! यार अब चुपक करो।

रामजीलाल—(खिन्न हो के पानी की घण्टी हाथ में धरते भये) भई ! मेरी मुरली मनोहर जो त कोई दुग्मनी घोरी है। पर सिद्धांत सिद्धांत, होम है।

मुरली मनोहर—देखो गुरु हम ठहरे मन के साफ। जो कल्ल मन में आवे है बाय कह डारे है। वपट अपने पास नाय वधु। जेई तो अपने जीवन की दरद है। जे अपने सग नाय है सवे के मोह से कल्ल कहे अरु मन में कल्ल मोचे।

रामजीलाल—जि बात तो मैं जानूँ हूँ। आप जैसे लोग तो समाज की श्रम है। (वापिस कुर्सी पर आय के बैठ जाये हैं)

मुरली मनोहर—(नकली हसी हसते भये) वू तो है।

चौथो दृश्य

11422

(प्रिंसीपल को कमरा। बड़ी टबिल वाले सामे चार कुर्सी धरी हैं। टबिल पे टेलीफोन धरो है। कुर्सी पे ड्रॉ अघ्यापक बैठे भये हैं। फाइल पढ़ते भये। अचानक घण्टी बजे है।)

प्रिंसीपल—प्रोफेसर साहब नैक उठइयो फून।

प्रोफेसर (फोन उठाय के बात करे हैं) यस सर। हा हैं प्रिंसीपल साहब।

प्रिंसीपल—(धीरे से) कौन है ?

प्रोफेसर—सर मिनिस्टर को पी ए बोल रह्यो है।

प्रिंसीपल—(मोह बिचकाते भये) यार काऊ कू कह दीनो। सुसरो एडमिशन की बात कर रह्यो ह्येयो (फोन लेते भये) हलो ! हलो ! हाँ मैं प्रिंसीपल बोल रह्यो हूँ। हाँ। पी ए साहब एडमिशन 48 परसेंट से कम पे नाय होय खैर कल दुपरी में भेज दीजो। क्रीघ (धोघ में फोन धरते भये) जित देखो सिफारिश।

प्रोफेसर—वा है गयो सर ?

प्रिंसीपल—वा गयो ? प्रिंसीपल को पी ए का बग्यो खुदा है गयो । यों कह है के चालीस परसेंट पे साइस म एडमीशन कर दयी ।

प्रोफेसर—(खुसामद करते भये) सर आपकी जवाब नई । जि ता आपकी हिम्मत है जो आपन उल्टो फटकार दीनी । मैं सर बीस बरस ते जा कालिज म पढाय रह्यो ह । जा बीच कोई दस प्रिंसीपल निकार दीन हयें । पर आप जैसे ईमानदार अरु बोलू प्रिंसीपल मैंने आज तानू नाय देख्यो ।

प्रिंसीपल—(फाइल देखते भये) पर प्रोफेसर साहब ईमानदारी कू कोन देख है । जेई तो हमारे बरीयर की सबन ते बढी कमी है ।

प्रोफेसर—नाय सर । जब कालिज की इतिहास लिखी जायगी तो बा सभ आपकी नाम सबन ते ज्यादा जगमगाय उठेगी ।

(इतेक में नारे बाजों की समस्त आबाज सुनाई परे है)

काव्य सौरभ

सुबरी

भभना करुना मकरद घुरी पग पजनि क कन सी मरसाई ।
 ब्रज बोधिन केलि कदव तरे रसधार वनी मधुरी हरसाई ।
 बासुरि भी ब्रज कु जन मे अभिराम लिए सुर म तरसाई ।
 नद नदन की अनुरागमयी वपमान लसी हिय मे बरसाई ।
 हीरक सी बरना दमकी बिजुरी नव फूलन सी महकानी ।
 प्रेमपगो पुष्कराजमयी शुभ भावन म उमगी चहकानी ।
 मापन नह सनी भमता उर म सुर मुरमयी मुसकानी ।
 मोर पखा मुधि कीमल पावन म तुलसी दल सी ब्रजबानी ।

खेलत फाग कु वर गिरधारी

ब्रज की पीर-पीर में होरी के पावन, सलीम मोठे मोठे औसर पै रमनीक अरु मन
 कू आनन्द ते तर करिबे बारी मधुर बियार, के जा उल्लास के साम^१ स्वयं कौ आनन्द
 फीकी है जाये है गारी में आनन्द की मधुर वैभव जा ब्रज भूमि की ई अपनी महिमा है
 जो अमन सायदे देखिबे नू मिले । हारी के अभिनन्दन कू नियताऊ तो अपनी तरफ
 ते पूरी पूरी तैयारी करै है । सुख सदन मदन भूम उठ है या फागुन माहि । सुहावन
 मन भावन काकिल के मोठे मोठे बन, गामते अय मोर चातक,^२ वृंदावन के तह लता
 बीराय बीराय फूल पत्ता, सुहावनो जमुना पुलिन, वेला, चमेली, माधवी, मृदु मजुल तमाल
 मुदित मधुवन की भीर सिगरेई तो जा फागुन माहि आयकें बिभोर हैकै भूम उठ है ।^३
 ऐस मोहन अरु अनूठे वातावरन माहि होरी कौ सुभागमन होय है । होरी कहा आवै
 मदमस्त है जायै ब्रज की धरती । भैया बाप, सास-नसुर ठाड़े ठाड़े सकुचाये से बिचारे
 टिकुर टिकुर देखते रहे, जा होरी के अल्हड़ औसर प पूरी तरिया राग-रग में भागती
 दीहती लज्जा अरु सकोच कू एक झटका में उतार फेंकती भई अपनी बिटिया एवं घर
 की गोरी कू जो साल भर सो लज्जा अरु सकोच में बिन के सामई लिपटी रही हती ।
 देवर, नन्दोई, जीजाते वू ठुमक ठुमक कैं होरी खेल ह एक ते एक सरसता भरे उपक्रम
 बनाइवे में बाकी सिगरी रूप रग जाय हैं । ईसुर न साल भर में एकई तो भीकी दीनी
 है जा निगूड़ी लाज ते बबिबे कौ, मन पसन्द फगुआ लबेकी अह समय भरे अल्हड़ जीवन
 के अनूठे आह्लाद कू लूटवै कौ । अनगऊ सज्जित हैयकें भूम उठै है । जूयनि जूयनि
 रमनी भूम उठै है जा ब्रज माहि ।^३

१ सुख सदन मदन कौ जोर मिलि झूमक हो,
 कोकिल बचन सुहावनो मिलि झूमक हो— सूरसागर

२ सूरसागर—२९०३

३ जूयनि जूयनि सुंदरी मिलि झूमक हो, जिनि जीवन लजत अनग मिलि झूमक
 हो ।

होरो मेलती एक गौरी उ पादीन व झुड़ ते निबमि के झूम उठी है बिनरी देवा दली सखीन की गिररी खुड़ झूम उठी है ।¹ इर गारी गिरघारी के पीताम्बर पकरि के झूम उठी है । इव स्थाम के हाथ ते गुरली लर झूम उठे हैं । इर प्यारी लती गारी दैमती झूम रही है । इव ललना अगुरिया की पौरन म जग काजर कू पिय की आगिन म हसि-हसि के अजित कर झूम उठे है ।² रगिर सिरामनि रगिया बजरान कू चारो ओर ते रग बिरगी ब्रजवासा घेर व मधु मायीन की तरिया झूम उठी है ।³ ललन गिरघारी त चीर हरण की बदली लैमती भई वे झूम उठे हैं । दीच-बोच म नवल अहीर के छोरा कू मार मार मोच नोच के झूम उठे हैं जि रस ते लवालव भरी भई अज बमिता । नेउ एक सखी में आगी दण्यो ना पीछी दण्यो वू झुड़ म ते निबकि के हरि हाथ पकरि के झूम उठी है । फिर काएं सिगरी सखी बाके जा होसना कू देव के बाई की तरिया झूम जाय है । कछु आगीसी मदभरी धुसवान के सग बजरान झूम उठे हैं । झूमती झूमती रम ते बाजरी भई एक सचना गारी देती भई मस्त है गई है ।⁴

इतेक मेई सूर की रस भरी गोपिभ्रं अपने प्रिय छैना गिरिघारी के सग संगीत की घाप छेव दीनी । बिनके मोहते अनायासई उल्लास की उभगती जि महारस बिनके मन माहि नाय समायो ती संगीत की पिरवती सहूरिन के द्वारा वू बहवे लग गयी । अरु मधई तो है के मज हारी जूई तो ऐसी त्योहार है । जाम मर्यादान की बघन खुई गर जाय है जा चमकते भये उल्लास के सामे । जाई कारन जा बिनासमय मनोरम फागु के त्योहार माहि जितेक खा-पी मकी जितेक आनंद लै सकी लै लनों उत्तम हतै चौके जीवन की ती का भरोसी ।⁵ परि का करै बु नवेली । जबई वु ललचाय के रगीले पै रग डारिबे की कोसिस करै है तो सामे घर के बडे-बूडे परि जाम हैं । उमडती

1 इक मल्ल निकसी झुड़ तै, मिलि झूमक हो तिनि पकरि लिए हरि हाथ मिलि झूमक हो ।

2 प्यारी कर काजर लियी मिलि झूमक हो—सूर

3 ज्यो घेरि रही मधुमनि, मिलि झूमक हो—सूर

4 इक गारी के उठी बाई मिलि झूमक हो—सूर

5 घरी घरी आनंद करि, जीवन जानि असार
खाई खेलि हम लोजिण फाग बरी त्योहार—सूर

अनुराग ठिठक जाव है । रोष उठ है आघरे सूर की लसाइ त भरी लली । थोरी भोत तो बड़े बूढेन की साज करनी परैई है । का करे बिचारी खीझ उठ है—ये गुरजन जा होरी की गुलाबी रंगीनी माहि बेरी है गय हनै । का करयो जाय जाते जि सहो होय ¹।

गोपीश्वालन के टोल वे टोल आपस मे मीठी गारी दले भय एक दूसरे कू हटाइवे मे गौरव लूट रह है । इने व मई होरी की रंगीनी माहि बाबरी भई एक रसभरी ललना ने हलधर कू पकरि लीनी अरु बाकी चोखी गत बनाय डारी । जा अनायास भय मोठे आक्रमन के सामई हलधर घबराय गए । ना करे । भगिबे अरु बचिबे के सिगर रस्ता बंद देख एक असहाय अबला की तरिया वे मृगनयनीन ते अनुनय विनय करिबे मने । बरुना की प्यासी थोरेई वे लली । थोरी देर मे बिनकी मनुजा पसोज गयो । गोपी बोली— 'हमार पाम पकरी ।' हलधर तो तैयार हते । कछू कराइ लेउ बस काऊ तरिया इनते प्रान बचि जाय । गोपिन वे जब पाम पकरिई लिए हलधर ने तो छोडि दीनो बिने हलधर कू ।² बली भैया हलधर की अकलि तो ठीक है गई । अब बिघ्न मोहन कू पकरवाय दीना । बाके नाक मौंह सिगरे बाजर ते पोत डारे ब्रज बालास । हलधरऊ नाय छोडा इत । हरद को सिगरी कलसाई बिनके माथे उडेल दीनो । बिचारे का करे । एक तो भली काम करो । माहन पकडवाय दीनो ।³ बाकी ई मीठी फल दीनो है ब्रज बालान भैया हलधर कू ।

गोपगन के सग ब्रजराज गारी देमतो फिर रहे है, ब्रज खोरिन माहि । फँट पाग पूरी तरिया कसिकै, बगल मे पिचकारी दावे एक जग ते दूसरी जग गामते कूवते बीच बीच मे कछू मधुर सी तान भरी सलीनी गारी देमतो जा रहे है । बरे बीर साकुरे बने । इतेक मैई छउजेन मे ललीन की पिचकारी की मूसलाधार बौछार आय परी बिनके माथे पै । सिगरी बाविर महल अटारी पिचकारी के जा अचानक भये सलीन के रग के आक्रमन ते तर है गई । ब्रजराज अपने भैया के सग मौंह फुलाये गारी देमतो छाती तान कै मँड-राय रहे है जा आक्रमन के सामई अपनी सिगरी चौकरी भूल गये । भगदड बधि गई बिनमे । जा रसीले सलीन के आक्रमन ते बचिक तो ब्रजराज भजि गये अपने भैया व

1 ये गुरुजन बेरी भए, कीजै बीन उपाय—सूर

2 सब गोपिन हलधर पकरि छाडे पाइ लगार्ई—सूर

3 तब मोहन हलधर पकराए, करहु तरुनि अपने मन भाए ।

नाक नयन मुख काजर लायी, हरद कलस हलधर सिर नायी ॥—सूरदास

होरी खेलती एक गोरी उ मादीन क झुड ते निवमि के चूम उठी है बि देवा दखी सखीन वी सिगरी झुड चूम उठी है ।¹ इन गोरी गिरधारी के पीताम्बर के चूम उठी है । इन स्वाम के हाथ ते मुरली खर के चूम उठ हैं । इन प्यारी गारी दैमती झूम रही है । इन ललना अगुरिया की पीरन मे जगे काजर कू फि आलिन म हसि-हसि के अजित नर चूम उठें है ।² रतिन सरोमनि रमिया बरार चारों आर ते रग बिरगी ब्रजवाला घेर के मधु भागीन की तरिया झूम उठी हैं ।³ गिरधारी तें घीर हरण वी बदलो लमती भई वे झूम उठें हैं । बीच बीच मे अहीर के छोरा कू भार भार, नोच नोच के झूम उठें ह जि रस ते लयालय भरी ब्रज वनिता । नेउ एक सखी में आगी देख्यो ता पीछी दख्यो वू झुड म ते निवमि हरि हाथ पवरि के झूम उठी है । फिर काएँ सिगरी सखी धाके जा होसल देव के बाई की तरिया झूम जायें हैं । कल्ल अनीली मदभरी मुनवान के ब्रजराज चूम उठें हैं । चूमती चूमती रस ते यावरी भई एक लवना गारी देती भई है गई है ।⁴

इतेक मेई सूर की रस भरी गोपिघ्न अपने प्रिय छैना गिरधारी के लग सगीत थाप छेव दीनी । बिनके मोहते अनायासई उल्लास की उमगती जि महारस बिनके माहि नाथ समायी तो सगीत की धिरकती लहरिन के द्वारा घू बहवे लग गयी । सबई तो है के ब्रज होरी जूई तो ऐसी त्योहार है जाम मर्यादान की बंधन नगर जाय है जा चमकते भये उल्लास के सामे । जाई कारन जा बिनासमय मनी फागु के त्योहार माहि जितेक सा पी सकी, जितेक आनन्द लें सकी ल सगौ उत्तम चीकें जीवन की तो का भरोसी ।⁵ परि का करे बु नवेसी । जबई बु ललचाय रगीले पै रग डारिजे की कोसिस करै हैं तो सामे घर के बडे-बूढे परि जाम हैं । उम

1. इक सखि निकसी झुड तें, मिलि झूमक ह्यो तिनि पकरि लिए हरि हाथ मि झूमव हो ।

2. प्यारी नर काजर लियो मिलि झूमक हो—सूर

3. ज्यो घेरि रही मधुमखि, मिलि झूमव हो—सूर

4. इक गारी पै उठी गई मिलि झूमक हो—सूर

5. घरी घरी आन द करि, जीवन जाति असार
साईं सेलि हमि लीजिए फाग बढी त्योहार—सूर

अनुराग ठिठक जाव है । रोय चठै है आघरे सूर की सलाई त भरी लली । थोरी भोत तो बडे बूढेन की लाज करनी परई है । का कर बिचारी खोज उठ है—ये गुरजन जा होरी की गुलाबी रंगीनी माहि बरी है गये हनै । का करयो जाय जाते जि सही होय ।

गोपीबालन के टोल के टोल आपस म मोठी गारी दैते भये एक दूसरे कू हटाइवे मे गौरव सूट रहे है । इतने मई होरी की रंगीनी माहि बाबरी भई एक रसभरी ललना ने हलधर कू पकरि लीनी अरु बाकी चोखी गत बनाय डारी । जा अनायास भय मोठे आश्रमन के सामई हलधर पधराय गए । का करै । भगिबे अरु बचिबे के सिगरे रस्ता बंद देख एक असहाय अबला की तरिया ब भृगतयनीन ते अनुनय बिनय करिबे नये । कहना की प्यासी थोरेई बे लली । थोरी देर मे बिनकौ मनुआ पसीज गयी । गोपी बोली— 'हमारे पाम पकरो ।' हलधर तो तैयार हुते । कछू कराइ लेउ बस काऊ तरिया इनते प्रान नबि जाय । गोपिन के जब पाम पकरिई लिए हलधर न ती छाडि दीनो बिजै हलधर कू । चली भैया हलधर की अकलि तो ठीक है गई । अब बिजै मोहन कू पकरवाय दीनो । बाके नाक मोह सिगरे काजर त पोत डारे ब्रज बालाश्र । हलधरक नाय छोडा इन । हरद की सिगरी कलसाई बिनके माये उडेल दीनो । बिचारे का करे । एक तो भली काम करी । मोहन पकडवाय दीनो । बाकी ई मोठी फल दीनो है ब्रज बालान भैया हलधर कू ।

गोपगन के सग ब्रजराज गारी देमते फिर रहे हैं, ब्रज खोरिन माहि । फेट पाग पूरी तरिया कसिनै, बगल मे पिचकारी दावे एक जग ते दूसरी जग मामते कूदते बीच बीच म कछू मधुर सी तान भरी सलीनी गारी देमते जा रहे है । बरे बीर बाकुदे बन । इतके मैई छुजने ते ललीन की पिचकारी की भूसलाधार बोछार आय परी बिनके माथे पै । सिगरी बालरि महल अटारी पिचकारी के जा अचानक भये ललीन के रंग के आश्रमन ते तर है गई । ब्रजराज अपने भैया के सग मोह फुलाये, गारी देमते छाती तान के मंड-राय रहे हैं जा आश्रमन के सामई अपनी सिगरी चौकरी भूल गय । भगदड मचि गई बिनम । जा रसीले ललीन के आश्रमन ते बचिबै तो ब्रजराज भजि गये अपने भैया क

1 ये गुरजन बेरी भए, कीजै कौन उषाय—सूर

2 सब गोपिन हलधर पकरि, छाडे पाइ लगाई—सूर

3 तब मोहन हलधर पकराए, बरहु तरुनि अपने मन भाए ।

नाक नयन मुख काजर लायो, हरघ कलस हलधर सिर नायो ॥—सूरदास

सग । लखीन ने भीतई कोसिम करी विाकू पकरिवे की पर हाथ नही आय वे । परि साकरी खौरि माहि आखिर वे फसई गये । गारी देमते हसते हसते ग्वाल बालन के मग व्रज खोरी म मडराय रहे है वे । धीरे त जायक च द्रावलि नें हसि कै पकरि लीन व्रज राज । जैसेई च द्रावलि नें हसि कै पकरि लीन व्रजराज । जैसेई च द्रावलि नें तिनकु पकरियो तो सग के सखा भजि कै दूरि ठारे है गये । इतेक मैई मिगरी मखी म्हाँ आ पहुँचो । व्रजराज की जा सभै की म्होडो देखिब लायक हो । जैसे साच्छान भोरो भडारी, बिचारो अति सूधो, एसो छोरा ठारी हाय जाअी लेनो देनी होरी के जा हुडदग ते । च द्रावलि नें कही-नाल बडे भोरे बनि रहे हो ।^१

एक सखी नें कही- जेई है व्रजराज बडे गाल फुलाय फुलाय कै इतें हमक होगी खेलिवे की जुनौती दीनी हतै । बडे जलकार ललकार कै बात करी है इतें ।^१ छट एक नें आव देखी न ताव हलको सौ गलुआ नौच डारी व्रजराज की । कोऊ काजर लगायवे लगी कोऊ रँगन ते बिनकी सरीर मलिवे लगी । कोऊ नें बिनकी मुरली ले लीनी अह कृष्ण बनि कै बजायवे लगि गई । इक बिनते कलू पूछे है । दूरि ठारे सखा अपने सखा कृष्ण की दुरगति देख रहे ह । थोरी सी देर पैले तो व्रजराज कसी डंग मारि रह है । रगबे की सखान के सामई । पै अब तो बिनकी खुद की मट्टी पलीत जो है रही है । जा कारन बिचारे बडे सरमाय रह है भीतइ मजाय रह है ।^२

होरी व्रज की गोरो गोरो, मीठो मीठो ऐसी अनिवचनीय भाव है जाम मन मैई प्रतीत कियो जा सके है । कु वर गिरधारी अपने भया मुवाहु मुनामा आदि सखान के सग होरी खेलते फिर रहे है व्रज की कुज गलीन म, बाखर बाखर म । गोपन की होरी जाकी सैना के सैनापति व्रजराज है । जा ललकार कू सुनि क ब्रजबासा का पाछ रह सकै है । बितते बयमानु दुलारी अपनी सिगरी सखीन के सग होरी खेलव कू निकसि परी । दोनो तरफ मोर्चा जम गये । दुदभी, ढाल, पखावज ३५ श्राव बिनके बीच म पतरी २ सुरीली मुरली की मीठी स्वर सहरी की आन न फैलाय रही है अजभूमि म । का बनन कर बाकी । नाय बसकी इन सदन की नाय बसकी इन भावन की । वम अनुभव करि-

- १ धजनि तँ छूटति पिचनारी, रग गई वाखरि महल अटारी ।
नाना रग गए रग बाग, बसदाऊँ तव उत ह्वै भागे ॥-मूर सागर
- २ घेरि लई सब खौरि साकरी पकर मदन गुपाय ।
गह्यो घाइ च द्रावली हसि कै, बह्यो भले हा सान ॥-मूरदाम
- ३ देखत सखा दूरि भए ठाढे, निरखत म्याम लजाई ॥-मूरदास

स्यो जा गारी के निव्य जानू बू । वरसाने की ललीन के वासन की मार के सामई
भजि गये सिगरे माप । एव एक गोपीनों एक एक गोप बू सम्हार लीनों । लाज-
वाज बिचारी न जाने बच की मजि गई । प्रजराज नदन दन नै अपनी बाहु उठाय उठाय
कै नाम लै लै के गारी देवो सुरु करि दीनों ।¹ बस अब का ओ । सिगरी सुदरी सिमट
आई जा अनोखी गारी दिवैया के ढिग अरु पकरि कै बाकी सबसी म्होडो कुमकुम ते
पौत डारों अरु माये पै वेनी मूष डारी । अपने बेटा की वरसाने की ललीन के हाथन जा
दुरगति कू दलिव नाँय रह्यो गयी जसोदा मिया प । मैवा आदि मगाय कै अरु भूपन
देय के ललीन के हाथ दुरगति हामते बचाय अपने बेटा देवकीन-दन गिरधारी कू मिया
नै ।²

चली ! मिया ने बचाय लीने । गोपीधों सोचो गोकुलनाथ कू फिर पकरनी चइये ।
दूसरे दिना वे गामती गामती झूमती घूमती नद की पौरी की तरफ चल दीनी । कुम-
कुम उबटन की भीनी-भीनी महव विनरं गोरे गोरे कनक तनपै कछू ज्यादाई खिल रही
है ।³ अनियारी आविन म पतरी पतरी बाजर की रेखा, चीर तिपाई की भीतई म हगी
लहगा । बिनके दसन अनार अधर बिबाफल कुच चकवा की तरिया सुसोभित हतै
बिनके मुखन की अपार सुदरता अरु भीनी भीनी चमक देखिक चढ़ाऊ लजाय गयी है ।
बस ऐसी लजीली ते सजीली भई ब्रज बनिता कछू रगीनी माहि उमडती घुमडती पहुँच
गई गामती गामती नद की पौरी प गिरधारी की गत बनाइये कू ।⁴ जा अचानक भय
हल्ला ते प्रजराज अपनी सिगरी चौकड़ी भूल गए । आय गई बिनकी अकलि ठिकाने ।
झटई बिन्न ग्वाल वाल अरु हलधर बुलाये जा होरी के भये अनूठे आक्रमन ते बचिबे
कू⁵ नर नारी, नारी नर से बन गये जा होरी क मनोरम ऊधम माहि । दोनों ओर ते

1 बाह उवाई कहत हो होरी, लै ल नाम देत प्रभु गारी ।—मूर सागर

2 बहुरि मिमिट ब्रज सुन्दरी पकरे गोकुलनाथ ।
नव कुमकुम मुख माडि के, वेनी मूषो माप ।
नव नदरानी बीच कियो, मैवा दिये मगाई ।
पट भूपन दियो सबनि की निरखि मूर बलि जाण ।—मूरदास

3 मूरसागर-2901—मूरदास

4 भूपन अग सजे सतनौरी गावति फाग नद की पौरी—मूर

5 सुनि सुदर वर बाहर आये हलधर ग्वाल गुपाल बुलाए—मूर

होरी को रसीली जुद्ध शुरू है गयी। कैसे अनूठे एकाकार है गये हैं।¹ गुलाल की मूठन ते सिंगरी आसमान गुलाल मई है गयी, धरती पे कुम कुम की कीच मच गई।² दोनों तरफ हाथन म पिचकारी लैय लय के लला लली मगिबे लगे। इतेक मेई राधा ने भीत बिचार करिके हलधर कू अपनी ललीन की संना मे बछू उत्कोच दैय के मिलाय लीनी।³ इतेक मई ओसर पाय के चन्द्रप्रभा स्याम की मुरली लैय के भजि गई। चकि वे च द्रावल के हाथ ते आखिन माहि चुपचाप काजर लगवाय रहे हैं।⁴

होरी के जा अनूठे अरू निगूढ एव अनिवचनीय आनंद माहि ब्रज बनिना इतक बावरी है गइ के बिनकू जा मस्ती मे पतीई नाय चलौ के रसिक सिरामनि देवकीन दन ब्रजराज ने बब बिनकू अपनी रसीली भुजान मे भरि लीनी।⁵ घर के बड बूढे टुकर-टुकर देख रये है। बिकी दुखदायी लाज ने वरस भर ओ सकुषाय के घर दीनी ललीन कू। डर के मारे म्होडे पे ते घू घट सरकायवे तब की हिम्मत नाय हनी बिनमे। परि आज ती होरी के जा अलहड अनुराग ने बिनकू इतेक साहसी अरू निर्भीक बनाय दीनी है के वे सिंगरे बडे बूढे तिनका के समान है गये।⁶ इतेक मई एक सखी हरद घोर लाई अरू ब्रजराज के सिंगरे म्होडे कू पोत डारी बाते। एक ने हईई कर डारी। वू पिय की मुख मले बली जा रही है। वू बिचारी का कर। कैसे बचे जा रस के ऊधमते जब बाने फगुआ दई डारी तबई बाक जा रस की रगीनी ते प्रान बचे। इतेक मई हलधर न बडी चतुरता ते बचि बचि के भजि रये मोहन कू आखिर पकरि लीनीई। हलधर ते क से बचते। बीच बीच मे घर के जे बडे बूढे मजा देखिबे कू आय के रग मे भग करि द है। ये बडे बुड होरी के जा रग मे बरी है गए है। इनते बचिबे की उपाय नाय सूझ रही ब्रज जुबतीन कू।⁷ फा बरे कीन सी रस्ता अपनाये इनते बचिबे की। राग राग

1 इक तन भर एक तन भई नारी खेल मय्यी ब्रज के बिच भारी-भूर

2 उडत गुलाल अरुन भए अवर कुम कुम कीच मची धरती पर-भूर

3 राधा मिलि इक मात्र उपायो, हलधर अपनी भीर बुलायो-भूर

4 भूर सागर-2901

5 भूर सागर-901

6 गुरजन घर सब मिलि देखे तिनको तरनी तून सम लेखे-भूर

7 य गुरजन बेरी भए बीजे बीन उपाउ-भूर

म रगे भये युवक युवतीन को दरबार नदराइ के घर माहि लम रयो हतै । फागु ब्रज को मनोरम त्योहार है । जाको जितेक आनंद लूट सकौ लूट लेउ । चौकि जा निस्मार जीवन को का भरोसो कब आखि बंद है जाय ।¹

ब्रज माहि उमडते होरी के जा रस कू, जीवन के अनुराग की जा रसधारा कू सुरमुनीऊ चित्रन नाय कर सके है जाको ।² किसोर बालक, बूढे, नारी सबई तो ब्रज माहि होरी न जा उल्लास मे डूब गये है ।³

आधरे कवि सूर के पदन के कछू असन के आधार पे ब्रज की हारी की रगीनी की जि प्रयास करी गयी हतै । ब्रज के गाम गाम मे आजऊ जि रगीनी साच्छात दली जा सके है । महाकवि सूरदास कू आधरो बतायो जायै है । कोऊ बाय जमा ध कहवै है । परि अब तुमई देख लेउ होरी की का कोई आधरो ऐसी चित्रन कर सकै है । सूर के तो पचास की उमर के आस पास बारी मोतिया बिंद भयो होइगी ।

- 1 घरी घरी आनंद करि, जीवन जानि असार
खाई खेलि हस लीजिये, फाग बहौ त्योहार—सूर
- 2 जो रस बाढयो खेलत होरी, सारब का बरनै जति भोरी—सूर
- 3 खेलत फागु रह्यो रस भारी,
बूढ किसोर बाल अरु नारी ।-सूर

काव्य सौरभ

सुंदरी

मेह सरसानी महकानी कूजन सी यह,
कुंजन मे प्यारी जलि गुंजन सी मानी है ।
मजुल प्रसंगन चादनी सग चदन ज्यों
अगन अनग छाई कामिनी सपाती है ।
प्रीतरस जानो रस रग पहचानी मारी
आए छवि बज पुंजन सी दहकानी है ।
मयकमुखी चाह चटकारी सुगधन तो,
मद-मद नूपुर धुनि सी मुसकानी है ।



पूरित प्रेम पराग पगी हरसी उमगी महकी ब्रजवानी ।
पीर बिहाल भरे दुख म सुख बज बनी दहकी ब्रजवानी ।
घोर दयी अमिया रस की उर प्यार भरी चहकी ब्रजवानी ।
गीतन के घन सों वरसी उर लामिनी सी दमकी ब्रजवानी ।



कीमल सी बृहती ब्रज कुंजन भावन म यहकी मनमाई ।
नूपुर सी रूनकी चूनकी रम फूलन कू भर के जगमाई ।
कंज बत्ती बनके उर म ब्रजबीधिन मे मधुरी मुखमाई ।
नैनन म प्रिय सैनन म ब्रज बैनन म मितरी भर साई ।

मिसरी लिपटे मधु माखन सी ब्रज सोतरि बैनन स सरसाई ।
घन सामन नह सुधारस सी ममता बन नैनन म हरसाई ।
मधुमासमयी छवि की फागुन सी नव यौवन सनन म मुसबाई ।
घन घूघट नेह दुसार दुरी उरदामिनो सी दमकी तरजाई ।



मदिश आसल सी यह पावन भावन मे सरस मन आई ।
मारन के धुन सी अति कोमल सावनसी बरस प्रिय आई ।
फागुन की छवि सी जगमें यह नेह सनी परम सहनाई ।
गापिन के असुआन धुरी ब्रज कु जन म हरस मधुराई ।



भाष भरे अतरान सनी ब्रज गोपिन के अधरान की बानी ।
मोहन के नव नह भरी अनुरागमयी मधुरी जगरानी ।
रस पूरित सागर म गिरके जग मगस जीवन ॥ महकानी ।
घोरत भक्ति निचारत ज्ञान य मोविंद के गुन गान की खानी ।



कचनार कली अति कोमल ज्यो छुति पूनम हीरक की चमकानी ।
सुभ लाल प्रवाण धुरी अनुराग गुलाब ललाम सनी महकानी ।
सरसात रही जग सोम मनोज प्रमोद विनोद सुधा बरसानी ।
प्रिय चंदमुखी छवि नीलम हूँ मदमात कली मधुरी रसखानी ।



नीरव से भयभीत भरे भव म मुग्ध भावन सी ब्रजबानी ।
साधक नेहिल सौरभ सी रसिया द्विय सावन सी ब्रजबानी ।
कोमल बालक के जग म निदिया सुख पावन सी ब्रजबानी ।
कवन से बिरहा सुर मे नव कुंदन गायन सी ब्रजबानी ।



1 नैनन नीर भरे असुआ घर बाहर रोम परी ब्रजमया ।
बैनन सोत भरी मय सो ब्रज बीधिन रोय दुरी ब्रजमैया ।

हाल हवाल व्यथा भरकै दुख म गिरती पजरी ब्रजमैया ।
नेह दुलार भरी ममता उर सूल रही हमरी ब्रजमैया ।



नैनन म भरकै अ सुआ ब्रज की जननी निन रोवत डोल ।
बैना मे सिसक हिवकी भर दाहन भीत भरे मुख बोल ।
सैना म कसना भरकै मन सीत भरी कपती हिय खोल ।
मन देर करै भुग्गी घर रे! तुमरी ब्रज मात दुरी जग डोल ।



रोवत रोवत डोलत है दुख दाहन मै जकरी ब्रजमैया ।
पूत सपूत गये उर भूल भरी ममता निखरी ब्रजमैया ।
रूठ गई सब नेह सनी कसना रस म बिखरी ब्रजमैया ।
आय सहाय करो ब्रजभूषण राम दुरी तुमरी ब्रजमैया ।

ओज मे ब्रज—

जगन म भुजदहन के जग जीहर काप भरे सबहारे ।
स्मदन पै षड हाथिन के दल बहुर बाँधि दिये मतवारो ।
रोर मची धनघोर तबी जब बीरन न भजते ललकारे ।
भूषन-भूदन के उर सो ब्रज ओज बनी भक्त फुकारे ।



गरजी दरसी जग बहुर सी पडव्य तोड भप्रजन सी ।
हुंकार उठी बनकै मतवारी जग म चक्र सुमन सी ।
भव भीषण भाव भरे जग डार उर प्रवल प्रताप गयदन सी ।
सागर सी उमड़ी जग-जीवन परमुराम हिय सदन सी ।



भर भूत मुभावन भू भरि के अरि जोत प्रचंड भवानी बनी ।
जग व दुखिया जीवन म भव भीषण दान बमान तनी ।

दुख दारिद कारा घरनी पै प्रलयवर सवर गान सनी ।
अरि मडन वाट गरे मजि बाघ फुफकार उठी सुम चण्डी बनी ।

बासुरी वादन—

ब्रज कु जन के रस की मरिता नद नदन के उर की उजियारी ।
पद पादप के मन की लहरी ब्रजवासिन के मन की किलकारी ।
बनितान सु प्रानन तानन सो दिन रैन ससेन सतावन बारी ।
मुरली घर के अधरान घरी रस पीवत है छक बासुरि प्यारी ।

।।

वेनु बजी ब्रज कानन म सुधि भूल गये रस म भरमाये ।
कूब उठे मुरवा मद पूरित प्रानन म मधु से हरसाये ।
कोयल के सुर पचम से ब्रज बाग तडाग हिये हरसाये ।
मद सुग घ समीर सने सुर पावन बोल लिये जग आये ।

□

माधन सी मरसी घरनी उर दामिन सी दमकी सुखकारी ।
पावन मी बरसी रस बारिस कु जन प्रीत भई मतवारी ।
भावन म यिरकै ब्रज रेनु सनेहमयी बनकै रतनारी ।
मोदमयी अधरान घरी मुरलीघर ने जब बासुरी प्यारी ।

□

नेहिल कूलन सीरभ सी रसधार बही ब्रज मे कछु प्यारी ।
कानन कु ज बछारन मे अनि गुजन पात भई रतनारी ।
नूपुर की धुनि सी सरसी ब्रज की घरनी मधु सी मतवारी ।
प्रिय ओठन मोहनकी सरसी उमगी ब्रज म जब बासुरी प्यारी ।

□

रस के मधुरे सुख सोत बहे हिय कोयल पचम सो सुर गमक्यो ।
घरनी ब्रज की सुधि भूल गई नव नूतन माव भर्यो जग दुरक्यो ।

घन सावन मोरन की धुनि मी ब्रज वीथिन म रस पावन धिरक्यो ।
मन मोहन की मुरली सुरसो बिरहा मन टीस भरयो जग लहक्यो ।

नैना-

घन सावन प्राण उसासन से बरसे परमे नव चदन से ।
सरसे बिहने नव वासुरि से रस कुजन म अलि नन्दन से ।
मधुरे सुर सग उमगन से बिकसै रसिया उर कुदन से ।
सुख स्याम सनह सुधारस से उन प्राण सने नद नन्दन से ।

ब्रज के सत-

रस मेघ भरे ब्रज मे बरसे बहु बार मनोहर भाव बुरे ।
दुर की मिठिया मधु पागरिया सब डूब गये उर नेह पुरे ।
रस पीत पराग सन उर मे प्रिय भाव भरे जग म सुधरे ।
जब बसित म तन व हिय सो निकसे ब्रज के जग भाव बुरे ।



सत के तप वचन सौ नित कुदन सी चमके ब्रजबानी ।
रास लिये रस कुजन म अलि गुजन सी महके रमबानी ।
भौतिक जीवन के दुख मे सुख सार मनी लहके मुसबानी ।
मृदु बदन म धिरक मधुरी प्रिय भावन म बहके हरसानी ।



फागुन लागत ही ब्रज म नित नूतन भाव खिले बलिहारी ।
टूट दिवें हरिय म उठै नव मौखन से महके नित भारी ।
टूट गये घर १ सब बघन बोलत दत्त सकें सब गारी ।
आसन द्वार बन्धी मद पावन साज दूरी सरमावन हारी ।

फागुन

प्रिय फागुन आय गयो जब सो ब्रज के रस रंग भये रतनारे ।
महकाय उठे उर कामिन के लरजें तरजें मद मे मतवारे ।
बरखा बरसी रसिया उर सो बिहसे निक्से रस रंग पनारे ।
जड जंमग भूल गये सुधि अपनी नव नेह दुलार भरे सब प्यारे ।



फागुन आय गयो जब सो रस रंग सरग भये कछु प्यारे ।
हाल विलास सुवास लिये मदभोद मनोज दिये सब डारे ।
भीत पराग परोस हिये रसवत सुवास सने चतुरारे ।
मजुस स ग उमगन मे रसपान करे कवि से रतनारे ।



बिलकत पगत दिगत समीर अनग सुगंध मज्जी महकानो ।
छलकत अनत मुरग सनो हरस त उमग बुलद सुहानो ।
सरसत कलिद तरगन सो रसवत पराग फलत लखानो ।
सहकत बसत अनत जबै मकरद कदम तरै दहकानो ।



रूप न नैन समाय रह्यो रसिया छलके बिखरो महकानो ।
आय बस्यो मन भीतर ज्यों पय फूलन भार सुगंध सजानो ।
आनद सार सुधा रस पूरित हूँ जग बीच सखे दहकानो ।
नेह पयोद लिये प्रिय स्नान दुर सरस बरस इठलानो ।



ऊषम आय मचाय दियो जग फागुन ने कर मोहित डारे ।
कुल वान की साज तजी सबने रस दूबत नेह भये सब प्रारे ।

जेठ लगे प्रिय देखर सो अरु दूब मये हिय मँजुल पारे ।
 दूब गया सिंगरो अरु घाम लिये रसिया मद म मतवारे ।



भैर भई हरि कु जन म छलिया छर मोद दुराय गयो री ।
 अनुराग उदै कर चेटक सो सुर बासुरिया वजवाय गयो री ।
 आचर के अबर मे प्रिय दामिन सो दमकाय गयो री ।
 हाय मरी सखि साज सन उर गीतन कू जग गाय गयो री ।



नव आनंद म महकी बहकी उर मोहन रे हिय जाय लगी री ।
 जग लाज तजी कुस बान सजी बस भूरत मो डर श्याम बसी री ।
 बहु भाति उठी छवि मजुल सा उठती गिरती फिर जाय फसी री ।
 नद नदन मँजु सरोवर म सखि दूब गई पथ भूल गई री ।



आचर खँचि भूजा भरि के छलिया छतिया रस चाल गयो री ।
 टापन की रस दासन मे अलि गुजन से सहकाय गयो री ।
 अबर क धन नावन सो मधुरी चपला वमकाय गयो री ।
 कु जन म सखि या सरिया मधुमास सुवास जगाम गयो री ।



फागुन आय गयो जय सौं तब सो ब्रज प्रीत भई मतवारी ।
 सब नारि बहै रस म बहकै कुल कान तजी बनकै रतनारी ।
 बीन रही मजनी अजम जिहि लाज रही बचिके सुचि प्यारी ।
 भूत गये कुल के सब वधन लाय सुरग बकै मिल गरी ।

होरी

बग बजे ढप ढाल बजे बहु बासुरि तान गुजे बज होरी ।
 सैल छे छलिया बनकै मन न भरे निगम हिय गोरी ।

साज दुरी सरमाय भजी रस रग मरी निपरी ब्रज खीरी ।
साजन की छवि मे उमगी सजनी प्रिय नेह करे उर चोरी ।



वोधिनि मे ब्रज म उमगी रसधार बहै निखरी सुभ प्यारी ।
मह सने रस के रसिया लख छाया रहे उर म छवि प्यारी ।
प्रीत सजे रस चदन से उर आय भरे सिंगरे नर नारी ।
धीरज टूट गयो रस की पियरी मधुरी सब देखत गारी ।



फाय भरे ब्रज मे चहुँ ओर स्नेह सजे नर नारि सुहावै ।
योधन की मद फूट चली तज लाज दुरी दुबकी सरमावै ।
भावन मे भरक सवरे मन मीत सुगीत भरे हरसावै ।
ठूँठ भये ब्रज लोगन मे मधुमास छयो दुबकयो मुसकावै ।



काहू के माखन मार गिराय के नैनन सी डरपाय के भागे ।
काहू के चौर ले वृष चढे अरु बैनन सरमात लगे ।
काहू के मोहित से मन मे छवि नह सरोज खिताय के भागे ।
या तरिया ब्रज के रसिया रस सोत बने महेके जय आगे ।



नेह भरे बदरा बरसै ब्रज भीज गयो सरबो हरसायो ।
टूट गये जड बघन ये सब मोहक कचन पावन छायो ।
भेद विभेद दुरे भय सों मन मगल मोहन सौ महकायो ।
डूब गयी धरनी ब्रज की रस पावन मोद मजा मुसकायो ।



गारिन मे धिरके गमकै महकै सिंगरी ब्रज अवर प्यारी ।
गारिन मे चहकै लहकै ठिठकै बहक ब्रज जीवन सारो ।

गारिन के घन के हिय मे ब्रज दामिन सो दमके बजमारो ।
गारिन के मधुरे रस मे बगराय उठो ब्रज है भतवारो ।



रग लिये मुसकात लला निकस्यो रस कु जन सौं हरसाई ।
झाड़िन की कछु ओर धरे तक नैनन की भर मूठ बसाई ।
साँस उसास फसी उर मे घर बघन भूल गई भरमाई ।
साज घुरी बन फागुन सो कुल कान तजी महकी मुसकाई ।



बालक स्याम भरे लिपटे सु गुलाल मने किलकै छवि छाई ।
जात भजे अपने घर आय गुलाल हरी मुख मात लगाई ।
मात उठी झट ते पकड़े मुख ते भगते अपने बाल क हाई ।
पास लडे वर नद बबा लखि मात गई हरखी मुसकाई ।



ग्वालन दामक सग सजे ब्रजराज चले प्रिय खेसन होरी ।
नेह तची निकसी बितते उमगी इक आय गई ब्रज गोरी ।
हाथ धरे पकडे मुसकाय लखे ब्रजराज सनेहिल भारी ।
प्रेम सरोवर स्याम गिरी भटकी सब भूल गई बरजारी ।



गोप गुपाल चले हरखे ब्रज खोरन म सब देवत गारी ।
पास दुर्यो कछु ग्वामिन टोल लिये भर हाथब म पिचकारी ।
देखत ई सब गोप भजे पकडे कमुक सलियान मुरारी ।
हाथहि जोड पडे पट पाम तब धर छाडि दिये बनवारी ।



हाथ रहे सु गुलाल सने अरु नैनन म उतरी छविबारी ।
पाम दिये चलाबै झट त्यों ब्रजराज नमे निक्से जित नारी ।

भूल गई सबरी सुधि यों छवि रूप पियो सजनी सुख प्यारी ।
पास गये ब्रजभूषण ज्यों बदरी चमकी नभ ते सज प्यारी ।



भूल गई सबरा अपनोपन स्याम गयो उर जाय समाई ।
जाय परी अटकी सुधि मे सुख स्याम सरोवर मे हरसाई ।
नेह भरी उरसी उमगी बिच मे उठती गिरकें सरसाई ।
लाल गुलाब भरी बदरी विजुरी बन ज्यों नभ नै बरसाई ।



लाय रही दगरे पकरें बसकें पुवकार सनेहिल नारी ।
भोर पसा छट लाय उतार उढाय दई नव चूनर भारी ।
काजर लाय लगाय सजाय करी चुटिया प्रभु साजन प्यारी ।
यार सखा दुवकें धुपकें बलवाय हसे लख या छवि प्यारी ।

सुधा समाज-

मूरज से जग के जग मे हमकी बन के प्रिय पासम हारे ।
कज कसी उर सीरम से नव प्रान भरी धनकें मतवारे ।
काट सबे जह बघन बू सुभ प्रान धरो कछु भूतन सारे ।
अपमान भरे दु स म बिलमे हिय भाव भरो मधु मे सुखवारे ।



बामन से निश्चल मन सी जग आगन मीरज से भर छाओ ।
साजन प्रीत भरी सजनी सभ आय बसो सुभ मे सह्राओ ।
दोषक से जरब जग मे उर नह प्रवास दुरो भर साओ ।
योवन से उमगे बनके प्रिय आम्बर म मिसरी बन जाओ ।

जाग उठी बन मानवता दुल के भव बधन तोड़न बारे ।
 जाग उठी प्रिय भारत के पजरे मन व बटु मँटन बारे ।
 जाग उठी सब बधन काट धिमाय सजाय प्रमोद हो प्यारे ।
 जाग उठी गिरि से सुभ पावन भाव भरो जग मे कछु यारे ।



भाव मनाहर प्रीत भरो कहना उर मानव म सरमाओ ।
 नैनन पीर दुरे असुभा सुख सावरिया हिय म दरसाओ ।
 मोतिन से प्रिय गीत बनाय भरो जग जीवन मे सुभ आओ ।
 नेह सनी सुख सौरभ की बरवा जग आगन मे बरसाओ ।



प्राप्तन मे सुभ वासुरिया रस गागरिया हिय म दुरकाओ ।
 फागुनिया मिठिया बनके नव सावरिया जग मे महकाओ ।
 बादरिया रस की चलिया सरसाय भरो हिय मे मुसकाओ ।
 पाखुरिया सुख कज कली लख कोमल भावन सी सहकाओ ।



भारत के दुल बधन मिग काट करा जग भगलकारी ।
 नेह भरे बदरा बनने बरसा उर ताप हरो बलिहारी ।
 दूद गये जिनके मनुभा फिग जाइ सजाय धरो सुखकारी ।
 पावन जीवन म महको बन मानव फूलन की फुलवारी ।



आखर के रस सागर सो नर नेह दुलार भरो हिय लाओ ।
 फूलन के रस म चहके मन मोद मनोज भजे हिय लाओ ।
 जीवन के सुभ नदन मे सुधि भूल भ्रम पथ कू दरसाओ ।
 बीत गये सुख प्रम सुधा रस साय भरा उर म उपजाओ ।



मानव जीवन पावन सावन गीत भरी बदरी बरमाओ ।
 सौर धरो उर के जर बधन सौरभ प्रेम सने हरमाओ ।

बामुरि के सुर भाव भरे जग नेह प्रमोद पगे परसाओ ।
फागुन से महको हिय म दुख पीर दुराय सजे मुमकाओ ।



जीवन नेह सुघा रस ले उर मागर पार भरो पहुँचाओ ।
सिराहित कालिख पोत धरो उजरे उर गीत भरे मुभ गाओ ।
द्वार परे मोहन के उर खोल भरो छवि पावन साओ ।
माखन चोर दुलार भरे दाशि नूतन धीर धरे सब आओ ।



आखर मे अमिया रस की भर जीवन मे मधुमी किसकारी ।
साय भरो मिसरी मधुरी उर भावन मे बहना बलिहारी ।
मानव से मानव लो बिन भूब सजे बगिया चितहारी ।
पावनता धरमे जग मे बनने सुभ मानवता मतवारी ।

साध कहूँ सुन भैया मेरे—

चोर पुकार करें दुख सों हमरो सब काम लिया जग नेता ।
रात बिदात करें हम कौसल ये दिन भास उड़ावत नेता ।
सतन स प्रिय भापण बोलत चोरत भास लाय जग नेता ।
या तरिया हमरो रजगार करें सब चौपट ये प्रिय नेता ।



डाट पाये लपट सिर धुनने अब बाप हमार भये सब नेता ।
भूखहि पट गयो जब मे सब या घरनी उतरे प्रिय नेता ।
हे भगवान मुनो विनती हमरो सब कौसल छीनत नेता ।
मीन महाय करे ब्रजभूषण चौपट आय करें यह नेता ।



बरमारन बालक भूखन रोवत काम लियो विनकी जब नेता ।
बिलखें भय सों सब घूरत हैं नभ चौपट डारत य छिलि नेता ।

दुतिया भर के बरमारन मे भय रोप भयो सख के छवि नेता ।
मान दियो हमरा धूर मिलाय भये कछु या सम नेता ।

प्रीत बसी बस नोटन म खुल घुस भयो जग मगलकारी ।
नोति अनोति भयभीत भयो जग रोवत डोलत खावत गारी ।
साँच उसास लाय अब काँपत मागत भीख पिटे दुतकारी ।
झूठ ससील मनोरम है जग डार दिये करके व्यभिचारी ।

11422

लापट की गति का पूछत हो जब सो अबतार भयो जग नेता ।
मागत भीख भगे भय डोलत रोय छुप लाखके जन नेता ।
हार गये सबरे गुरु लापट या घरनी उपजे जब नेता ।
डकराय भजो प्रिय लापट कौसल आय गये जब से प्रिय नेता ।

महगाई—

आरत भारत लोगन कू घर कूट धिसे बइती महगाई ।
हा हा भारत रोवत है विधना तुम हू न करो मुनवाई ।
कोन सहाय करे इनकी उर प्रान गरे अटके भय खाई ।
कस भये सिगरे नृप तो ब्रज भूषण पीर हरी दुखदाई ।



